हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

दावत व तब्लीग़

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

****

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — दावत व तब्लीग़ (1)

तक़रीरें — मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह.

मुरत्तिब — मौलाना शफ़ीक़ अहमद क़ासमी
व मौलाना अज़्फ़र जमाल क़ासमी

हिन्दी अनुवाद — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 1100

प्रकाशन वर्ष — अक्तूबर 2004

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ़्फ़र नगर 0131-2442408

मूल्यः — 75/-

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली -110002

विषय सूची

इन्तिसाब

मोहतरम मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी के नाम जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

इज़हारे शुक्रिया

जनाब मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी की ख़िदमत में जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के सदरुल्-मुदर्रिसीन उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में, जिन्होंने हर तक़रीर अव्वल से आख़िर तक पढ़कर तरतीब के सिलसिले में अपने इत्मीनन का इज़हार किया।

अ़ज़ीज़े ग्रामी मौलवी हाफ़िज़ ज़करिया के लिए दुआ़एँ जिनका टेपरिकार्डर इस किताब की तरतीब का ज़रिया बना।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

अपनी बात

शराबे कोहन फिर पिला साक़िया!
वही जाम गर्दिश में ला साक़िया!

(अ़ल्लामा इक़बाल)

कोई 21 नवम्बर 1994 ई० सोमवार का दिन था। घड़ी दिन के दस बजा रही थी। मैं मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के दफ़्तर में अपने काम में मशग़ूल था, मेरे मोहतरम और करम-फ़रमा जनाब अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी दफ़्तर में तशरीफ़ लाए।

कुछ ही दिन पहले वह ज़िला हरिद्वार के अनेक मुक़ामात पर एक चिल्ला लगाकर घर वापस हुए थे। पहले उन्होंने कुछ सफ़र की रूदाद और चिल्ले की कारगुज़ारी सुनाई और उसके बाद फ़रमायाः

''अजी शफ़ीक़! तुम एक काम कर डालते तो बड़ा अच्छा होता। बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा और बड़े काम की चीज़ें महफ़ूज़ हो जातीं। तुम्हारा ज़ौक़ भी है और अल्लाह ने साधन भी दिए हैं। मुझे यक़ीन है कि अगर तुम कोशिश करोगे तो यह काम बड़ी हद तक अन्जाम पा जाएगा''।

मैंने कहा हज़रत फ़रमाईए तो सही!

''दाई-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की तक़रीरें तरतीब दे डालो और उन्हें छपवा दो......'' मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब ने जवाब में इरशाद फ़रमाया।

मैं कुछ दिन तो कश्मकश में रहा। मिलने वालों और अपने दोस्तों

से मश्विरे भी करता रहा लेकिन इतने बड़े काम के लिए हिम्मत न हो रही थी ...... मदरसा रियाज़ुल उलूम गुरैनी के उस्ताज़े हदीस हमारे दोस्त और सबक़ के साथी जनाब मौलाना सआ़दत अ़ली साहिब क़ासमी इलाहाबादी की बातों ने और ज़्यादा प्रेरणा दी ...... फिर मैंने एक रात दस बजे के बाद अल्लाह की बारगाह में सर सज्दे में रखा और इतने बड़े काम को आसान करने और उसमें इख़्लास के लिए दुआ़एँ माँगीं, और काम की शुरुआ़त कर दी।

आज मैं बहुत ख़ुश हूँ और अल्लाह तआ़ला का बहुत ही शुक्र-गुज़ार, कि वह अहम और बड़ा काम जिसकी जानिब हज़रत मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब दामत बरकातुहुम ने तवज्जोह दिलाई थी, उसमें का कुछ हिस्सा मन्ज़रे-आ़म पर लाने की सआ़दत नसीब हो रही है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम के दीनी बयानों के मजमूए का नाम "दावत व तब्लीग़" रखा गया है, और यह "दावत व तब्लीग़" की पहली जिल्द है। इस किताब की दूसरी जिल्द इन्शा-अल्लाह जल्द ही पेश की जायेगी।

इस किताब के छपकर सामने आने में शायद बहुत देर लग जाती लेकिन अल्लाह तआ़ला बेहतरीन बदला और जज़ा इनायत फ़रमाये उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना अल्-हाज ज़मीर अहमद साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साहिबज़ादे मौलाना मुहम्मद अज़्फ़र जमाल साहिब क़ासमी को जिन्होंने मेरी तरह-तरह की मस्रूफ़ियात (व्यस्तताओं) को देखते हुए ख़ुद फ़रमाया कि मैं इस सिलसिले में हर मुम्किन मदद और सहयोग के लिए हाज़िर हूँ...... अल्लाह तआ़ला ने मौलाना अज़्फ़र जमाल साहिब को किताब लिखने और तरतीब देने का अच्छा ज़ौक़ दिया है। इस किताब की तरतीब में उनकी भरपूर मदद मेरे साथ रही।

हमें यक़ीन है कि अगर इस किताब को आप सच्चे दिल से पढ़ेंगे

तो इन्शा-अल्लाह दीन की वह दावत आपकी समझ में अच्छी तरह आ जाएगी जो दाइ-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब दामत बरकातुहुम ने दिल के पूरे दर्द और तड़प के साथ दी है।

अल्लाह तआ़ला हमारे हर काम में इख़्लास अ़ता फ़रमाएँ और दीन का दाई (दावत देने वाला) बनाएँ। आमीन

दुआ़ओं और मुफ़ीद मश्विरों का उम्मीदवार

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

उस्ताद मदरसा करामतिया
दारुल्-फ़ैज़, जलालपुर
ज़िला अम्बेडकर नगर (उ. प्र.)
तारीख़ 21 रमज़ान मुबारक 1416 हिजरी
11 फ़रवरी 1996 ई०

परिचय

अज़ हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब मद्-द ज़िल्लहू सदरुल्-मुदर्रिसीन मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर

हामिदंव्-व मुसल्लियन्। अल्लाह के रसूल ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उमूमी फ़रमान "फ़ल्-युबल्लिग़िश्- शाहिदुल् ग़ाइ-ब" (पस चाहिए कि जो मौजूद है वह उसको पहुँचा दे जो मौजूद न हो) ने उम्मत के हर उस आदमी पर जो दीन की बात सुनने या जानने वाला है, ज़रूरी कर दिया कि दीन की बात उन लोगों तक पहुँचाए जिन्होंने नहीं सुना, नहीं जाना। अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दों ने तब से अब तक इस फ़रमान पर अ़मल को जारी रखा, कभी तहरीर से, कभी तक़रीर से, कभी ख़ुसूसी समझाने-बुझाने से, कभी उमूमी सम्बोधन से। ग़रज़ जिस तरह का भी मौक़ा मयस्सर हुआ, उससे फ़ायदा उठाते हुए उसे ग़नीमत समझते हुए इस फ़रीज़े को अन्जाम दिया, और दे रहे हैं। लेकिन अल्लाह ने किसी भी काम की सलाहियत हर शख़्स को बराबर नहीं दी। हर शख़्स अपनी सलाहियत और योग्यता के अनुसार ही काम कर सकता है। किसी के बयान में जो रवानी, वज़ाहत और तासीर हो, ज़रूरी नहीं कि दूसरे के बयान में भी ये चीज़ें उसी दर्जे में हों। चुनाँचे कुछ बयान ऐसे असरदार (प्रभावकारी) होते हैं कि कहा गयाः

اِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا

यानी बाज़े बयान करने वाले जादू का असर रखते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की दीनी मेहनत से जुड़े हुए लोगों में इस वक़्त हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी (अल्लाह उनकी उम्र को लम्बी करे और उनके

फ़ैज़ को आ़म करे) भी अल्लाह के ऐसे चुने हुए बन्दों में से हैं, जिनके बयान की यही शान नुमायाँ है।

जहाँ में ग़लग़ले हैं उस ज़ात की जादू बयानी के
मगर जादू-बयानी वह कि जिसमें है दर्से ईमानी

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी के बयानात को और ज़्यादा आ़म करने की एक शक्ल यह भी थी कि उन बयानों को लिखकर किताबी शक्ल में शाया किया जाए। इससे जहाँ एक तरफ़ बयान की इशाअ़त (प्रसार) होगी तो दूसरी तरफ़ यह फ़ायदा भी हो सकता है कि दूसरों को उस अन्दाज़ पर बात करने का सलीक़ा मयस्सर होगा। वैसे तो अस्ल चीज़ बयान करने वाले और बात के कहने वाले के अन्दर का दिली दर्द और ज़ेहनी फ़िक्र है।

अज़ दिल ख़ेज़द बर दिल रेज़द

जो चीज़ दिल से निकलती है वह सीधी दिल पर असर करती है।

दर्द वाले और बेदर्द का रोना बराबर नहीं हो सकता। हज़रत मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया था कि जब तुम इख़्लास और सही फ़िक्र व दर्द के साथ दीन के दाई (दावत देने वाले) बनोगे तो अल्लाह तुम से वे हिक्मत की बातें कहलाएँगे जो तुमने पहले से सोचा न होगा।

अ़ज़ीज़म मौलवी शफ़ीक़ अहमद सल्ल-महू ने मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी के बयानात को किताबी शक्ल में लाने का सिलसिला शुरू किया है। इन तक़रीरों का मुसौदा मैंने पूरा एक-एक शब्द देखा है और इससे लाभान्वित हुआ हूँ। अल्लाह तआ़ला इख़्लास (नेक-नीयती) व साबित-क़दमी) नसीब फ़रमाए और उनकी इस कोशिश को बेहतरीन शक्ल में सामने लाये। आमीन

नबीह मुहम्मद

11 शाबान 1416 हिजरी
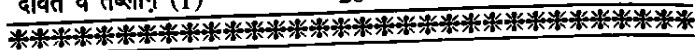
तक़रीर (1)

जो तब्लीग़ी इज्तिमा भोपाल में की गई।

मेरे मोहतरम दोस्तो!

चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

(इसी तकरीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (1)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِیْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ یَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ یُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَنَبِیَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا كَثِیْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥ اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَیْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ نَحْنُ اَوْلِیٰٓؤُكُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِیْهَا مَا تَشْتَهِیْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِیْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ٥ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِیْمٍ ٥ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَی اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ٥ وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ، اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ٥ (پارہ ۲۴)

وقال اللّٰه تعالٰی .... فَكَیْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ یَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ. (پارہ ۲۶)

हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं। एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है। दूसरी मन्ज़िल दुनिया के पेट की है। तीसरी मन्ज़िल क़ब्र के पेट की है और चौथी आख़िरत की है।

ये चार मन्ज़िलें हर इनसान की हैं। माँ के पेट के अन्दर तो अल्लाह पाक ने इनसान का बदन बनाया और उसमें रूह डाली, तंग जगह में और अन्धेरे के अन्दर।

दुनिया के पेट के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को इस लिए भेजा ताकि क़द्र-दानी वाले रास्ते पर चले और नाक़द्री वाले रास्ते को छोड़ दे। अल्लाह पाक की उसके ऊपर जो मेहरबानियाँ हैं उनकी क़द्र पहचाने और अल्लाह की बात मानता हुआ दुनिया से जाए।

थोड़ा-सा इख़्तियार थोड़े-से वक़्त के लिए

इस दुनिया के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार दिया है, थोड़े-से वक़्त के लिए दिया है। पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। पूरा इख़्तियार देते तो दुनिया में कोई बीमार न होता, कोई बूढ़ा न होता, कोई हारता नहीं, ज़्यादातर मौत को नहीं चाहते तो कोई मरता भी नहीं। लेकिन इनसान को अल्लाह पाक ने पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। थोड़ा इख़्तियार दिया है भले और बुरे का। यह हाथ अल्लाह पाक ने दिया है, इससे यतीमों और मिस्कीनों को जाकर रोटी तक़सीम कर सकता है। और इस हाथ के अन्दर यह भी ताक़त है कि दूसरे के हाथ से रोटी छीन सकता है। ये दोनों ताक़तें अल्लाह ने दी हैं।

माँ के पेट के अन्दर तो इनसान बिल्कुल मजबूर है। जैसा बनाया वैसा बन गया। लड़का बनाया या लड़की बनाया, काला बनाया या गोरा बनाया। ज़्यादा समझ वाला बनाया या कम समझ वाला बनाया। जैसा बनाया वैसा बन गया। वहाँ तो कोई इख़्तियार नहीं, जौनसे

ख़ानदान में और जौनसी क़ौम में पैदा कर दिया।

इस दुनिया में आने के बाद इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार है, थोड़े-से वक़्त के लिए। और वह थोड़ा वक़्त मौत तक का है। इसके अन्दर अगर अपने इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो यह आदमी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होगा। और अगर इसके अन्दर इनसान ने अपने इख़्तियार को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो दुनिया व आख़िरत में यह परेशान, तबाह व बरबाद होगा।

अल्लाह की नाराज़गी मुसीबत का सबब है

एक तो है अल्लाह की मर्ज़ी और एक है अपनी मर्ज़ी। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने में एक मुजाहदा (मेहनत) है। वह यह कि अपनी मर्ज़ी छोड़ देनी पड़ती है। और अपनी मर्ज़ी पर चलने के अन्दर शुरू में एक सहूलियत है, वह यह कि आदमी "जी चाही" पर चलता है। लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी के छूट जाने पर अल्लाह नाराज़ होता है। और अल्लाह पाक का नाराज़ होना बहुत बड़ी मुसीबत है।

ज़मीन व आसमान पैदा करने वाले अल्लाह हैं। चाँद व सूरज को पैदा करने वाले अल्लाह हैं, और इस इनसान को अन्धेरे के अन्दर और तंग जगह के अन्दर पैदा करने वाले जो अल्लाह हैं, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह हैं। जब वह नाराज़ हो जाते हैं तो आदमी बहुत परेशान हो जाता है।

फ़ौरन पकड़ नहीं

लेकिन इतनी मेहरबानी तो अल्लाह तआला फिर भी करते हैं कि जब इनसान अल्लाह को नाराज़ करने वाला काम करता है तो उसकी फ़ौरन पकड़ नहीं करते बल्कि उसके लिए हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फिर भी अगर वह हिदायत पर नहीं आता, सुधरता नहीं, फिर भी उसकी पकड़ नहीं करते।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔ़न की गुफ़्तगू

फ़िरऔ़न है, ख़ुदाई का दावा किया, लेकिन एक दम से उसकी पकड़ नहीं की। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को समझाने भेजा। उसने मज़ाक़ उड़ाया, फिर दूसरी बार समझाया फिर उसने मज़ाक़ उड़ाया। फिर तीसरी बार समझाया तो वह गुस्से में आ गया और उसने कह दियाः

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهاً غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ (پ ۱۹)

यानी अगर मेरे सिवा कोई और ख़ुदा तुमने माना तो तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा।

उसको तजुर्बा था। बहुत-सों को उसने जेलख़ाने भेजा था। हज़रत मूसा ने कहाः

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَىْءٍ مُّبِيْنٍ ٥ (پاره ۱۹)

यानी अगर मैं कोई खुली चीज़ तेरे पास ले आऊँ तो क्या फिर भी मेरे को तू जेलख़ाने भेजेगा?

उसके तो ज़ेहन में भी नहीं आया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम खुली चीज़ क्या लाएँगे?

तो उसने कहाः

"قَالَ فَأْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (پ ۱۹)

यानी फ़िरऔ़न ने कहा अगर तुम सच्चे हो तो लाओ।

हिदायत का सामान

अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डन्डे को ज़मीन पर डाल दिया तो वह बड़ा अज़्दहा बन गया और अपने हाथ मुबारक को बग़ल से निकाला तो वह बहुत चमकदार बन गया।

यह उसके लिए हिदायत का सामान और इन्तिज़ाम था। उसको

चाहिए था कि इस मोजिज़े (नुबुव्वत की निशानी) को देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की बात को मान लेता कि यह अल्लाह के भेजे हुए हैं।

लेकिन नहीं माना ...... फ़िर मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अज़्दहा पकड़ा वह डन्डा बन गया।

उस वक़्त तो फ़िरऔ़न थोड़ा सहम गया, डर गया, घबरा गया, लेकिन फिर उसने मीटिंग जमाई। जितने मिम्बर थे सबको जमा किया। फ़िरऔ़न और सारे के सारे दरबारियों ने मिलकर सोचा कि यह तो जादूगर है, इसके लिए जादूगर जमा करो। जादूगर जमा हो गए। देखने के लिए बड़ा मजमा इकट्ठा हो गया। जादूगरों ने अपना जादू डाला। उन्होंने रस्सियाँ डालीं और चारों तरफ़ साँप-बिच्छू दौड़ने लगे।

मूसा की लाठी और जादूगरों का ईमान

अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपना डन्डा डाला। वह अज़्दहा बन गया जो सारे साँपों को निगल गया। यह देखकर जादूगरों ने समझ लिया कि यह शख़्सियत जादूगर नहीं है। बल्कि यह अल्लाह के नबी हैं। फ़ौरन सब सज्दे में गिर गए और सबने कहा:

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ o رَبِّ مُوْسٰى وَ هَارُوْنَ o (پاره ۹)

यानी वे बोले कि हम ईमान लाए परवर्दिगारे आ़लम पर जो रब है मूसा और हारून का।

फ़िरऔ़न का ग़ुस्सा

फ़िरऔ़न को यह देखकर बड़ा ग़ुस्सा आया। उसने कहा मैंने तुम्हें इनाम देने के लिए कहा, अपना क़रीबी बनाने के लिए कहा, तुम मेरे आदमी होकर उनके बन गए। फिर बहुत नाराज़ होकर कहा:

لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ o (پاره ۹)

मैं तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा। तुम्हें इनाम तो क्या मिलता सूली पर चढ़ना पड़ेगा।

मज़बूत ईमान और आख़िरत की फ़िक्र

लेकिन उनका ईमान इतना मज़बूत हो चुका था और उन्हें आख़िरत की इतनी फ़िक्र हो चुकी थी कि उन्होंने कहा चाहे यह हमें सूली पर चढ़ा दे लेकिन हमारी आख़िरत न बिगड़े। क्योंकि आख़िरत का मामला हमेशा का है।

तो एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है और एक मन्ज़िल दुनिया के पेट की। इसके अन्दर आदमी अपनी मर्ज़ी पर चले या अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर चले, इन्हीं दो रास्तों पर यह चलेगा कभी इस रास्ते पर कभी उस रास्ते पर। कुछ लोग सीधे रास्ते पर चलेंगे कुछ लोग टेढ़े रास्ते पर।

क़ब्र की मन्ज़िल

उसके बाद तीसरी मन्ज़िल आएगी वह है क़ब्र की जो दुनिया में सीधे रास्ते पर चला होगा, क़ब्र की मन्ज़िल के अन्दर उसको बहुत राहत व आराम मिलेगा। और जो टेढ़े रास्ते पर चला होगा उसे बहुत तकलीफ़ होगी।

आँखों से ओझल

लेकिन क़ब्र के अन्दर राहत व आराम और क़ब्र के अन्दर की जो तकलीफ़ है, वह दुनिया में रहने वालों को दिखाई नहीं देती। इनको मालूम नहीं होती। और जो क़ब्र वाली ज़िन्दगी के क़ायल (मानने वाले) हैं अगर उसका बार-बार मुज़ाकरा न करें तो उनके ज़ेहन से भी उतर जाती है।

और क़ब्र वाली मन्ज़िल जो है वह क़ियामत तक रहेगी। अगर सुधरा हुआ और ईमान व आ़माल वाला आदमी क़ब्र के अन्दर पहुँचने

वाला होता है तो उसको मरने के वक़्त ही ख़ुशख़बरियाँ सुनानी शुरू कर दी जाएँगी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِنَّ الَّذِ يْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا (پاره ۲۴)

जिन लोगों ने कह दिया कि हमारा पालनहार और हमारा परवर्दिगार अल्लाह है, और उसके ऊपर वह मौत तक जमे रहे और इस यक़ीन के साथ जमे रहे कि अल्लाह पाक का हुक्म हमारी तबीयत के ख़िलाफ़ तो हो सकता है, हमारी तरबियत के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ (پاره – ۱)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

और दुआ भी मंगवाई:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ (پاره– ۱)

अगर अल्लाह को रब माना और उसके ऊपर मौत तक जमे रहे, तो क्या होगा?

تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ. (پاره– ۲٤)

मौत के वक़्त फ़रिश्ते उतरेंगे। और वे तीन बातें कहेंगे: एक तो कहेंगे:

اَلَّا تَخَافُوْا

यानी आगे क्या होगा, इससे घबराओ नहीं। तुम्हारे लिए कोई घबराने की बात नहीं। उसके बाद कहेंगे:

وَلَا تَحْزَنُوْا

और जो तुम्हारी दुनिया छूट गई, इसका भी ग़म मत करो। थोड़ा-सा छूटा है, मिलेगा बहुत ज़्यादा।

وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ (پاره– ۲٤)

और जौनसी जन्नत का तुमसे वायदा किया जाता था, उसकी

ख़ुशख़बरी ले लो।

और फिर वे फ़रिशते यूँ कहेंगे:

نَحْنُ اَوْلِيٰٓـئُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ (پاره– ٢٤)

हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत में भी हम तुम्हारे साथी हैं।

फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि दुनिया के अन्दर फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते और मौत आ गई तो फ़रिश्ते दिखाई देते हैं।

आज का "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) कल "ग़ायब" हो जाएगा। और आजका "ग़ायब" कल "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) हो जाएगा। जो आज दिखाई दे रहा है वह मौत पर दिखाई नहीं देगा, और जो मौत पर दिखाई देगा वह आज दिखाई नहीं देता।

दुनिया में इनसान को दिखाई देने वाली चीज़ें

आज इनसान को क्या दिखाई देता है? मुल्क, माल, रुपये-पैसे, सोना-चाँदी, दुकान, खेत, यह सब जितना मेरे हाथ में होगा उतनी ही मेरी ज़िन्दगी बनेगी।

क्या नहीं दिखाई देता?

यह कि मेरे अन्दर ईमान और आमाल होंगे तो मेरी ज़िन्दगी बनेगी, यह नहीं दिखाई देता। और जब मौत आएगी तो मुल्क व माल और रुपये-पैसे से जो कामयाबी दिखाई देती थी वह दिखाई देनी बन्द हो जाएगी और ईमान व आमाल पर जो कामयाबी मिलनी चाहिए वह दिखाई दे जाएगी। और उसकी तैयारी नहीं तो ईमान व आमाल न होने की बिना पर जो परेशानी बताई गई थी, नबियों ने, आसमानी किताबों ने जो परेशानी बताई थी अब वह परेशानी सामने आ गई। अब यह बहुत परेशान हो गया कि हो क्या गया?

तो आज जो दिखाई दे रहा है वह मौत के वक़्त दिखाई नहीं

देगा। और आज जो दिखाई नहीं देता वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत का डर

इसी बिना पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब ख़न्जर मारा गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वहीं गिर गए। ख़ून के फ़व्वारे छूटे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत परेशान हुए उनको लाकर लिटाया गया। वह यूँ कह रहे थे कि थोड़ी देर में दुनिया ग़ायब हो जाएगी और आख़िरत मेरे सामने आ जाएगी। पता नहीं मेरे साथ क्या मामला होगा?

ऐ अल्लाह! अगर तू मेरी नेकियों और बुराईयों को बराबर कर दे तो मैं इसके लिए तैयार हूँ। इसलिए कि बुराईयों की पकड़ पर जब अल्लाह आएगा तो अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कुछ तो सोचो कि आख़िरत में हमारे साथ क्या होगा?

न मालूम किसके साथ क्या हो?

मौत के बाद जब क़ब्र में रखा जाएगा तो कुछ पता नहीं कि किसके साथ क्या मामला होगा? अगर हम लोगों में दुनिया के अन्दर इसकी फ़िक्र आ गई, और क़दम-क़दम पर अपने मरने के बाद वाली ज़िन्दगी को सामने रखते रहे तो अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने वाले बनेंगे।

अल्लाह के हुक्म और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फल

यह तो होगा नहीं कि हम घर छोड़ दें, हम कारोबार छोड़ दें। जैसे हज़रत जी ने निकाह के बयान में जो चीज़ें इरशाद फ़रमाईं कि बीवी के मुँह में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ लुक़्मा भी डालेगा तो

उस पर भी सवाब मिलेगा। तो दुनिया के जो काम हम करेंगे अगर वे अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ करेंगे तो अल्लाह पाक हमारी दुनिया की ज़रूरतें भी पूरी करेंगे और उसपर सवाब भी देंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बेचैनी व बेक़रारी

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बेचैन थे, बड़े बेक़रार थे, रो रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया:

"अमीरुल मूमिनीन! आप इतने बेचैन व बेक़रार क्यों हैं? रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप से ख़ुश होकर इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आप से ख़ुश होकर तशरीफ़ ले गए। और आपके हाथों पूरे आ़लम में कितना दीन फैला और कहाँ-कहाँ कितना फैलता जा रहा है। तो आप इतने परेशान क्यों हैं?"

तो इसपर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा:

"ऐ रसूले करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के चचाज़ाद भाई! क्या यह बात तुम क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने भी कहोगे? इस लिए कि क़ियामत का दिन बड़ा भारी दिन है और हर इनसान का किया-कराया सामने आ जाएगा। और न मालूम आख़िरी फ़ैसला क्या हो?"

तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा कि "क़ियामत के दिन मैं अल्लाह के सामने यह बात कहूँगा।"

मेरे सर को मिट्टी में भर जाने दो
(हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सर मुबारक अपने बेटे की रान पर था। कहा कि बेटा! अपनी रान से मेरे सर को ज़मीन पर डाल दो

और गुबार में भर जाने दो। मेरा सर किसी की रान पर रहने के क़ाबिल नहीं।

परहेज़गारी कब आएगी?

एक बात ज़ेहन में रहे कि जितना अल्लाह पाक से ताल्लुक़ क़ायम होगा। जितनी अल्लाह पाक की मारिफ़त (पहचान) मिलेगी और जितना अल्लाह पाक का ध्यान होगा और जितना अल्लाह के राज़ी करने का जज़्बा होगा, उतना ही आदमी अल्लाह पाक से डरेगा। उतना ही अल्लाह पाक का तक़्वा और डर उसके अन्दर पैदा होगा।

और जितना आदमी अल्लाह पाक से दूर होता चला जाएगा और उसको अल्लाह पाक का ध्यान नहीं होगा, उतना ही वह आदमी गुनाहों के ऊपर जुर्रत करने वाला होता चला जाएगा और उतना ही वह आदमी ख़राबियों की तरफ़ चलता चला जाएगा और अल्लाह से दूर होता चला जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो इतना डर रहे हैं यह तक़्वा उनके अन्दर है जो अल्लाह पाक से जितना क़रीब होता है उतना ही अल्लाह पाक उसे तक़्वा (अपना डर और परहेज़गारी) देते हैं। और तक़्वा वाले के आमाल क़बूल होते हैं।

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ○ (پاره-٦)

तो मैं यह बात अर्ज़ कर रहा था कि आज जो दिखाई देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना बन्द हो जाएगा। और आज जो दिखाई नहीं देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा। और उस वक़्त आदमी कुछ कर नहीं सकेगा। तो फ़रिश्ते यूँ कहते हैं:

"نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ

यानी हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत के अन्दर भी। फ़र्क़ यह है कि दुनिया के अन्दर हम दिखाई नहीं देते थे

और आख़िरत के अन्दर हम दिखाई देते हैं।

फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते

इस वक़्त भी ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं। जैसा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़बर है कि जब अल्लाह पाक की बड़ाई, अल्लाह पाक की पाकी और अल्लाह पाक की वह्दानियत (उसका एक होना) बयान की जाती है तो ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते होते हैं।

और फ़रिश्ते ऐलान भी करते हैं:

هَلُمُّوْٓا اِلٰى حَاجَتِكُمْ

यानी आ जाओ अपनी ज़रूरत की तरफ़।

तो ऐ मेरे मोहतरम दोस्तो! वे फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ (پاره– ٢٣)

फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

आख़िरत और जन्नत में क्या मिलेगा तुम्हें?

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ○ (پاره– ٢٣)

तुम्हारा जो जी चाहेगा वह तुम्हें वहाँ मिलेगा। तुम्हारी मर्ज़ी में जो बात आएगी वह वहाँ तुम्हें मिलेगी। इसलिए कि तुमने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में कुरबान कर दिया।

अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी पर कुरबान कर दो

(अल्लाह का फरमान)

जब सही तरीक़े पर आदमी दस मन अनाज कुरबान करता है तो उसे सौ मन अनाज मिलता है। अगर आम की एक गुठली कुरबान

कर देता है तो उसे पूरा आम का पेड़ मिलता है।

तो यह माद्दी (भौतिकवादी) लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने नतीजे निकाल कर दिखाए और रूहानी लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने यह बता दिया कि अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी में कुरबान कर दो तो तुम्हारी मर्ज़ी उगेगी। और उगने के बाद फिर जो माँगोगे वह तुम्हें मिलेगा।

जन्नत की नेमतें

छोटे से छोटी जन्नत अगर किसी को मिली तो पूरी दुनिया से दस गुनी बड़ी जन्नत होगी। और उसके अन्दर सत्तर बहत्तर बीवियाँ होंगी और हज़ारों की तायदाद में ख़िदमत करने वाले होंगे, और जन्नत की ज़मीन की मिट्टी ज़ाफ़रान की होगी। और पत्थर, कंकर हीरे-जवाहिरात के होंगे। और जन्नत की ईंटें सोने-चाँदी की होंगी और उनके जोड़ने का गारा मुश्क का होगा। और जन्नत में जाने वाला हर मर्द और हर औरत ३० . ३३ वर्ष की जवानी की उम्र वाला होगा, और करोड़ों साल के बाद भी बुढ़ापा नहीं आएगा, और ऐसी ज़िन्दगी मिलेगी कि करोड़ों साल के बाद भी मौत नहीं आएगी। और कपड़े ऐसे मिलेंगे जो कभी मैले नहीं होंगे। और खाना ऐसा मिलेगा जो पेट में जाकर गन्दगी नहीं बनेगा।

बस अब अगर मैं ज़्यादा तफ़सीलात की तरफ़ उतरूँगा तो जन्नत का शौक़ तो ख़ूब पैदा होगा और उसके मुक़ाबले में जहन्नम की तफ़सीलात की तरफ़ अगर हम उतरेंगे तो डर भी बहुत लगेगा। लेकिन बयान का वक़्त इसी में पूरा हो जाएगा और जहन्नम से बचने और जन्नत के अन्दर दाख़िल होने की जो तैयारियाँ हमें दुनिया के अन्दर करनी हैं वे कैसे करनी हैं? इसके लिए वक़्त नहीं बचेगा।

जन्नत का शौक़ तो पैदा हो जाएगा और जहन्नम का डर तो पैदा हो जाएगा लेकिन ईमान और आमाल के ज़रिये हम तैयारी कैसे करें?

इसके लिए वक़्त बचेगा नहीं। तो इस वजह से हम ज़्यादा तफ़सील पर नहीं जाएँगे। थोड़ा शौक़ पैदा हो गया थोड़ा ख़ौफ़ पेदा हो गया, फिर इस दुनिया के अन्दर कैसे हमें रहना है, यह बात बताई जाती है।

अल्लाह पाक की मेहमानी

तो फ़रिश्ते यूँ कहेंगे कि जो तुम्हारा जी चाहेगा वह यहाँ तुम्हें मिलेगा। जो तुम्हारी ज़बान माँगेगी वह तुमको यहाँ पर मिलेगा। और ग़फ़ूरुर्रहीम की तरफ़ से तुम लोग मेहमान होगे, अल्लाह पाक की मेहमानी होगी। और मेहमान के लिए मेज़बान उसके जी में जो चीज़ होती है वह भी देता है, ज़बान से जो माँगे वह भी देता है और मेज़बान बहुत-सी चीज़ ऐसी देता है जो मेहमान ने माँगी भी नहीं। उसके जी ने भी नहीं चाहा फिर भी वे चीज़ें लाकर रख देता है। क़िस्में बदल-बदलकर आती रहती हैं।

तो ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक देंगे जिनको किसी आँख ने देखा नहीं होगा और किसी कान ने सुना नहीं होगा और किसी दिल में कभी उसका ख़्याल नहीं गुज़रा होगा। ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक जन्नत के अन्दर देंगे।

जादूगरों का ईमान लाना और फ़िरऔन को दावत

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुजुर्गो! मैंने अर्ज़ किया था कि वे जो जादूगर थे उन जादूगरों ने तय कर लिया कि हम अब ईमान तो छोड़ेंगे नहीं, चाहे यह हमको सूली पर लटका दे। और उन्होंने फ़िरऔन से भी कह दियाः

فَاقْضِ مَآاَنْتَ قَاضٍ (پاره- ١٦)

तेरा जो जी चाहे कर ले हम तो ईमान ला चुके।

बल्कि उन जादूगरों ने फ़िरऔन को भी दावत दी और उसका असर यह हुआ कि चारों तरफ़ जो मजमा इकट्ठा हुआ था उसके

अन्दर से बहुत बड़े मजमे ने वहीं कलिमा पढ़ लिया। अब चारों तरफ़ ईमान वाले बन गए।

फ़िरऔन की हठधर्मी

यह सारा इन्तिज़ाम था फ़िरऔन की हिदायत का। वह बिगड़ा हुआ और भटका हुआ था। लेकिन एक दम से अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की।

इनसान अगर अल्लाह को नाराज़ करने वाले काम करे तो अल्लाह पाक एक दम से उसे नहीं पकड़ते बल्कि अल्लाह पाक उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फ़िरऔन के सुधरने का अल्लाह पाक ने इतना बड़ा इन्तिज़ाम किया। यहाँ तक कि उसकी बीवी जो थी वह भी ईमान वाली बन गई। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा, वह भी ईमान वाली बन गई। लेकिन यह सारा हो जाने के बावजूद फ़िरऔन जो था वह ईमान पर नहीं आया।

कभी इनसान जब हठधर्मी पर उतरता है तो चाहे कितना ही उसकी समझ में बात आ जाए मगर वह अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ता। और फिर उसके ऊपर ऐसी ज़ोर की मार पड़ती है कि होश खट्टे हो जाते हैं। क्योंकि लात का भूत बात से नहीं माना करता। जब तक कि उसके ऊपर अच्छी तरह से लात न पड़े। यह लात का भूत था उसने बात से नहीं माना।

बुलाएँ मूसा अपने रब को

(फ़िरऔन की बद-कलामी)

ख़ैर! यह मज्लिस ख़त्म हो गई। फिर उसने अपना दरबार जमाया। बजाए हिदायत पर आने के अपना दरबार जमाया और दरबार जोड़कर यह कहने लगा कि मेरे को छोड़ दो ताकि मूसा को क़त्ल कर दूँ। फिर मूसा अपने अल्लाह से दुआ़ माँगते फिरें, फिर देखें

कि क्या होता है?

ये सारे दुआ से डराते हैं, ज़रा देखें तो सही कि उनकी दुआओं से क्या होता है?

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ (پاره-۲۴)

यानी छोड़ दो! मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ। अब माँगें यह दुआ देखें क्या होता है?

उसके ज़ेहन में यह था कि दुआ से कुछ होता नहीं। ये ख़्वाह-मख़्वाह की बातें हैं।

इतना बड़ा जुर्म उसने किया कि एक नबी के क़त्ल का मन्सूबा बना रहा है, लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला ने उसको नहीं पकड़ा।

मैं यह बार-बार इसलिए कह रहा हूँ कि अगर ग़लतियों के बावजूद कोई मुसीबत न आये तो इससे यह न समझ लेना कि मुसीबत नहीं आएगी। मुसीबत आनी है और अल्लाह की पकड़ होनी है, लेकिन यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि अल्लाह पाक हिदायत का सामान करते हैं और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। ताकि मेरा यह बन्दा हिदायत पर आ जाये और मरने के बाद वाली जो बड़ी परेशानियाँ हैं उन परेशानियों से यह बच जाए। यह अल्लाह पाक की बहुत बड़ी इनायत और मेहरबानी है।

तो मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि फ़िरऔन जो था उसने इतनी ना-मुनासिब हरकतें कीं और अल्लाह को नाराज़ किया लेकिन अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की। यहाँ तक कि उसने नबी के क़त्ल का इरादा किया कि मेरे को छोड़ो मूसा को क़त्ल करूँ और यह दुआ माँगें। उनकी दुआ से क्या होता है?

कबूलियत का वायदा

दोस्तो और बुज़ुर्गो! दुआ का मामला ऐसा है कि अल्लाह पाक का

वायदा है:

اُدْعُوْنِیْ اَسْتَجِبْ لَکُمْ (پارہ-۲۴)

तुम मेरे से दुआ माँगो मैं क़बूल करूँगा।

यह अल्लाह पाक का वायदा है, बिल्कुल पक्का वायदा। लेकिन इसमें एक शर्त है, वह यह कि दुआ की क़बूलियत में रुकावट डालने वाली कोई चीज़ न हो।

दुआ क्यों क़बूल नहीं होती

बाज़ चीज़ें दुआ की क़बूलियत में रुकावट डालती हैं- एक तो हराम खाना और कपड़ा। इससे दुआ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ माँगी तो वह क़बूल नहीं होती।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَقْبَلُ الدُّعَآءَ عَنْ قَلْبٍ لَاهٍ

यानी अल्लाह तआला ग़ाफ़िल दिल की दुआ क़बूल नहीं करता।

आदमी ख़ूब ध्यान से दुआ माँगे और ध्यान से दुआ माँगने का जो वक़्त है वह आख़िरी रात का वक़्त है। चारों तरफ़ सन्नाटा हो जाता है। उस वक़्त बन्दा होता है और बन्दे का अल्लाह होता है, और अल्लाह पाक अपनी मेहरबानियों के साथ मुतवज्जह होते हैं। उस वक़्त अल्लाह से माँगिए।

और दिन में भी माँगिए। माँगने से तो चूकिए नहीं। लेकिन माँगें तो ध्यान से माँगें।

तो पहली चीज़ यह कि खाना कपड़ा हराम का हो तो दुआ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ माँगी तो क़बूल नहीं होती।

दावत के काम का छोड़ना

दुआ के क़बूल न होने का सबब

और तीसरी चीज़ बता दूँ बे-तकल्लुफ़, वह यह कि दावत का

काम न करे तो दुआ़ क़बूल नहीं होती। और मैं नहीं कहता अल्लाह के प्यारे नबी कहते हैं:

مُرُوْابِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

भली बातें बताया करो और बुरी बातों से बचाया करो। यानी दावत का काम करो। कहीं तुम लोगों पर वह दिन न आ जाए कि तुम दुआ़ करो और तुम्हारी दुआ़ क़बूल न हो।

तो क्या मालूम हुआ कि दावत का काम जब छूट जाता है तो दुआ़ क़बूल नहीं होती।

घबराएँ नहीं

लेकिन एक बात आप से अ़र्ज़ कर दूँ। आप हज़रात घबरा न जाएँ कि हमारा खाना तो हराम का, कपड़ा तो हराम का और दावत का काम हम करते नहीं, तो हमारी दुआ़ तो क़बूल होगी नहीं। तो फिर दुआ़ माँगने से क्या फ़ायदा?

नीयत तो करें

तो देखो भाई! इस वक़्त हम जितने भी लोग यहाँ बैठे हैं, फ़ौरन खाना और कपड़ा हलाल का बनाना तो मुश्किल है लेकिन यह तो हो सकता है कि हम सब नीयत कर लें कि हमारा जो खाना और कपड़ा हराम का है हम इन्शा-अल्लाह उसको धीरे-धीरे हलाल बनाने की कोशिश करेंगे। नीयत तो कर सकते हैं। नीयत कर लें और उसके बाद धीरे-धीरे कोशिश करते रहें।

दूसरी बात यह है कि दावत के काम को हमने काम नहीं बनाया तो यह न समझें कि अब हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी। क्यों माँगें दुआ़? नहीं! बल्कि हम लोग यह नीयत कर लें कि इन्शा-अल्लाह दावत के काम को हम अपना काम बनाएँगे और उसके बाद हम कोशिश करें ...... और कोशिश के लिए भी हमारे बड़े यह नहीं कहते

कि बस एक दम से कूद पड़ो। धीमे-धीमे होगी कोशिश।

तो बहरहाल! मेरे दोस्तो! नीयत करने के बाद ख़ूब दुआ माँगो और उसके बाद हाथ-पैर मारते रहो, दावत के काम में आगे बढ़ने के लिए भी और खाना व कपड़ा को हलाल बनाने के लिए भी।

बन्दे की मस्लेहत पर नज़र

लेकिन देखो! दुआ की क़बूलियत के अन्दर एक बात ज़ेहन में रखना। ईद का दिन था। हमारे मौजूदा हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहुम का बयान था। उसमें यह फ़रमाया कि आख़िरत के बारे में तो बन्दा जो माँगता है, अल्लाह पाक उसे दे देते हैं। लेकिन दुनिया के बारे में बन्दा जो माँगता है उसमें उसकी मस्लेहत को सामने रखते हैं।

दुआ के क़बूल होने की पाँच तरतीबें

अब इसके अन्दर आप हज़रात ज़ेहन में रख लें कि दुनिया के बारे में अगर आप हज़रात दुआ माँगेंगे तो उसकी क़बूलियत के अन्दर पाँच तरतीबें हैं।

पहली तरतीब

एक तरतीब तो अल्लाह पाक की यह है कि जो माँगा अगर वह मस्लेहत के मुनासिब है तो उसे अल्लाह पाक फ़ौरन और जल्दी से दे देते हैं। रात को माँगा और सुबह को मिल गया।

इतना बड़ा मजमा बैठा है, मेरे ख़्याल में आप हज़रात भी बहुत-सी बार देख चुके होंगे कि रात को माँगा और दिन को मिल गया ...... एक तरतीब तो यह है।

दूसरी तरतीब

दूसरी तरतीब यह है कि बन्दे ने माँगा वही जो मस्लेहत के

मुनासिब है लेकिन जल्दी देना मस्लेहत के मुनासिब नहीं है बल्कि देर से देना मुनासिब है। अल्लाह पाक देते तो वही चीज़ हैं जो माँगी है लेकिन रुला-रुलाकर देते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, फिर देते हैं। क्योंकि तेरा रोना जो है अल्लाह को बहुत पसन्द है। तो अगर तेरा काम बन गया तो मेरे सामने रोयेगा कौन?

तेरा रात को रोना मुझे बड़ा अच्छा मालूम होता है और जब तू रात को बिलबिलाता है और तिलमिलाता है तो मैं बड़ा ख़ुश होता हूँ।

तो मैं यह कहता हूँ कि हमारे सैकड़ों काम बन जाएँ इससे ज़्यादा अच्छा यह है कि अल्लाह को यह बन्दा पसन्द आ जाए। अल्लाह यह कहते हैं कि यह मेरे को पसन्द है।

तो कई बार अल्लाह पाक दुआ के क़बूल करने में जो चीज़ माँगी वही देते हैं लेकिन देर से देते हैं ...... यह दूसरी तरतीब है।

तीसरी तरतीब

और एक तीसरी तरतीब भी है कि बन्दे ने जो चीज़ माँगी वह उसकी मस्लेहत के मुनासिब नहीं है। तो अल्लाह पाक वह चीज़ नहीं देते बल्कि वह चीज़ देते हैं जो उसकी मस्लेहत के मुनासिब होती है ...... और बन्दे की मस्लेहत के मुनासिब क्या चीज़ है? इसको अल्लाह ख़ूब जानते हैं...... तो जो चीज़ माँगी वह तो नहीं मिली और अल्लाह पाक ने कोई और चीज़ दे दी जो मस्लेहत के मुनासिब है तो यह भी दुआ क़बूल हो गई।

हज़रत मरियम की अम्माँ जान ने माँगा था बेटा, बैतुल-मक़्दिस की ख़िदमत के लिए लेकिन अल्लाह पाक ने दे दी बेटी। अम्माँ जान बहुत परेशान हुई कि बैतुल्-मक़्दिस की ख़िदमत बेटी क्या करेगी?

لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى (پارہ-٣)

अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि लड़का होता तो वह ऐसा न होता

जैसी यह लड़की है, यह एक नबी की माँ बनेगी और उसके मानने वाले करोड़ों होंगे।

हम मुसलमान भी मानते हैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को...... तो माँगा लड़का और मिली लड़की।

तो कई बार ऐसा होता है कि अल्लाह पाक से जो चीज़ माँगो वह नहीं मिलती। और मिलती है मस्लेहत के मुनासिब कोई दूसरी चीज़....... यह तीसरी तरतीब है।

चौथी तरतीब

और एक चौथी तरतीब भी है। चौथी तरतीब यह है कि जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला। दुनिया की जो चीज़ माँगी वह बिल्कुल नहीं मिली, लेकिन आसमान से कोई बला और मुसीबत आ रही थी, अल्लाह पाक ने इस दुआ़ पर उस बला और मुसीबत को रोक दिया।

उस बला का रुकना बहुत अच्छा है, क्योंकि वह अगर मिल जाता और बला भी आ जाती तो जो मिलता वह भी उस बला में ख़त्म हो जाता और जो पहले का था वह भी सारा ख़त्म हो जाता, और आदमी परेशान हो जाता।

यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बाज़ मर्तबा वह नहीं देते तो माँगा है और दुआ़ के माँगने पर अल्लाह पाक आने वाली बला को रोक देते हैं।

एक मिसाल

मिसाल के तौर पर आपके तीन लड़के हैं और तीन बहुएँ हैं, और रहने के मकान दो हैं। दुकानें भी दो हैं तो आप चाहते हैं कि मेरे मरने से पहले तीसरे लड़के के लिए मकान और दुकान हो जाए। आप इन्तिज़ाम भी कर रहे हैं और अल्लाह के सामने रो भी रहे हैं लेकिन तीसरी दुकान और तीसरा मकान आपको मिलता नहीं।

हो सकता है कि ऊपर से कोई बला आने वाली हो, अल्लाह पाक ने उसे रोक दिया हो और तीसरा मकान व दुकान न दिया ...... और अगर तीसरी दुकान व मकान अल्लाह पाक दे दें और बला को आने दें और उस बला में तीनों दुकान व मकान हलाक हो जाएँ और तबाह हो जाएँ। तो यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बला को रोक दिया और तीसरी दुकान व मकान नहीं दिया।

और इसमें कोई घबराने की बात भी नहीं, आदमी थोड़ी तकलीफ़ उठा ले, सारा बरबाद हो जाए उससे तो अच्छा है।

और अब तो अल्लाह पाक ने हम लोगों के लिए इतनी आसानी कर दी। मियाँ-बीवी का एक जोड़ा जमाअ़त के अन्दर चला जाए और जब वह वक़्त पूरा करके आये तो दूसरा जोड़ा चला जाये। तो दो घरों के अन्दर गुज़ारा भी हो जाएगा और दीन की दावत भी पूरे आ़लम में चलेगी। और हिदायत फैलने का सामान भी हो जाएगा।

तो चार तरतीबें बताईं- जो माँगा कभी वह फ़ौरन मिलता हैं, जो माँगा कभी वह देर से मिलता है, जो माँगा वह नहीं मिला मस्लेहत के मुनासिब कुछ और मिला, और जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला लेकिन आने वाली बला रुक गई।

पाँचवीं तरतीब

और एक पाँचवीं तरतीब भी है कि जो माँगा अल्लाह ने उसे अपने पास सुरक्षित कर दिया और दुनिया में बिल्कुल नहीं मिला। और क़ियामत के दिन अल्लाह पाक ने वह दे दिया तो बहुत बढ़िया बनाकर दिया। और बहुत आला क़िस्म का दिया और बहुत ज़्यादा दिया।

क़ियामत के दिन यह देखकर आदमी तमन्ना करेगा कि जितनी मैंने दुनिया के अन्दर दुआएँ माँगी थीं सारी आख़िरत के लिए सुरक्षित हो जातीं तो ज़्यादा अच्छा था। यह तमन्ना करेगा और सोचेगा कि दुनिया में जो दुआएँ क़बूल हुईं और मुझे जो मिला वह तो मौत के

वक़्त छूट गया।

तो अल्लाह के यहाँ दुआ के क़बूल होने की ये पाँच तरतीबें हैं।

फ़िरऔन की ग़लत सोच

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! वह फ़िरऔन जो था उसने सोचा कि माँगें यह दुआ, देखूँ इनकी दुआ से होता है क्या? तो जो बिगड़े हुए लोग होते हैं वे यही सोचते हैं कि इतनी-इतनी दुआऐं उनकी हो रही हैं और चल रही हैं लेकिन उनके काम तो बन नहीं रहे। इस सिलसिले में मैंने आप से अ़र्ज़ किया कि ये पाँच तरतीबें हैं।

जादू वो जो सर चढ़कर बोले

तो फ़िरऔन ने जब कहा:

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی وَلْیَدْعُ رَبَّهٗ (پاره-٢٤)

कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को क़त्ल करूँ और यह बुलाएँ अपने रब को।

यह इतना बड़ा जुर्म था कि अल्लाह तआ़ला फ़ौरन पकड़ करते। लेकिन अल्लाह पाक ने इतने बड़े जुर्म पर फ़ौरन नहीं पकड़ा बल्कि उसकी हिदायत का सामान कर दिया। वह यह कि दरबार के अन्दर से दरबारी खड़ा हो गया और खड़े होकर फ़िरऔन के भरे दरबार में दावत देनी शुरू कर दी। वह दरबारी ईमान ला चुका था। लेकिन मस्लेहत के तौर पर अपने ईमान को छुपा रखा था। लेकिन जब उसने देखा कि फ़िरऔन, मूसा अ़लैहिस्सलाम के क़त्ल के बारे में कह रहा है तो फ़ौरन खड़ा हो गया।

फ़िरऔन के दरबार में उसके दरबारी की तक़रीर

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَكْتُمُ اِیْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ (پاره-٢٤)

ऐसी शख़्स को तुम लोग क़त्ल करने का इरादा कर रहे हो जो यह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह अल्लाह की तरफ़ से दलीलें लेकर आया है।

ख़ूब ज़ोर की तक़रीर की और पिछले वाक़िआत भी सुनाए आगे क़ियामत का दिन आने वाला है वह भी सुनाया। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ज़माना भी सुनाया। दुनिया का बे-हैसियत होना भी सुनाया। आख़िरत कैसी अ़ज़ीमुश्शान है यह भी सुनाया। ये सारी बातें अच्छी तरह से जमकर सुनाईं।

फ़िरऔ़न भी बैठा हुआ था और उसके सारे दरबारी मिम्बर पार्लियामेंट सारे के सारे बैठे हुए हैं और सब सुन रहे हैं, फ़िरऔ़न भी सुन रहा है। और उसने कहा:

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَى اللّٰهِ ، اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ٥ (پاره- ۲۴)

याद करो मैं जो बात कहता हूँ। जिस तरह ख़ुदा बहुत-सी क़ौमों को तबाह कर चुका है इसी तरह ख़ुदा तेरे को भी तबाह व बरबाद करेगा और आईन्दा तेरे को जहन्नम में जाना पड़ेगा...... जो कुछ मैं कहता हूँ तेरे को याद आएगा। और मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ और अल्लाह अपने बन्दों को देखता है।

उसने खड़े होकर अल्लाह तआ़ला की ताक़त का ख़ूब बयान किया। ज़बरदस्त तरीक़े पर बयान किया और हम लोगों को भी अल्लाह की क़ुदरत और उसकी ताक़त को जा-जाकर दुनिया भर में बयान करना है।

अल्लाह बड़ी ताक़त वाले हैं।

अल्लाह जो हैं वह बड़ी ताक़त वाले हैं। बड़ी क़ुदरत वाले हैं। अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में सारी दुनिया की ताक़तें जो हैं ये

मकड़ी के जाले हैं, उनकी कोई हैसियत नहीं। जैसे मकड़ी के जाले की कोई हैसियत नहीं रहती इसी तरह इन सारी ताक़तों की कोई हैसियत नहीं।

फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ताक़त मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो गई। और आईन्दा चलकर दज्जाल और याजूज-माजूज की ताक़तें मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो जाएँगी।

मकड़ी जाला कब तानती है?

लेकिन मकड़ी जाला कब तानती है? जब घर वीरान हो चुका हो। मकड़ी आबाद घर में जाला नहीं तानती...... इसी तरह आज जितने मकड़े और मकड़ियाँ जाला तान रहे हैं। यह उस वक़्त जाला तानते हैं जब दुनिया दीन की दावत से वीरान हो जाए। तालीम के हल्क़ों से वीरान हो जाए। अल्लाह के ज़िक्र से वीरान हो जाए। और उम्दा व ऊँचे अख़्लाक़ से वीरान हो जाए।

न काला न गोरा, बुनियाद बस ईमान है

ईमान वालों का आपस में मिलना और जुड़ना और क़ौमी व ख़ानदानी चीज़ों का न उठाना...... चाहे क़ौम का हो या न हो, ख़ानदान का हो या न हो, रंग का हो या न हो, लेकिन ईमान वाला है तो आपस में एक-दूसरे का इक्राम (अदब व सम्मान) करके ऐकता और संगठन को पैदा करे, जितनी ऐकता और संगठन पैदा करेंगे अल्लाह की मदद साथ होगी।

وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ (پاره–١٠)

इख़्तिलाफ़ से बचो

आपस के अन्दर खींचातानी मत करो। अगर आपस में खींचातानी

और झगड़ा करोगे तो दो नुक़सान होंगे:

एक तो कम हिम्मत हो जाओगे, और दूसरों के अन्दर से तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। ये दो बातें अल्लाह पाक ने बयान फ़रमाईं।

अपनी घरेलू तरतीब के अन्दर भी आपस में खींचातानी और तकरार मत करो। अपनी क़ौम के अन्दर अपने ख़ानदान के अन्दर और जौनसा दीनी काम कर रहे हो उसके अन्दर।

ये दीन का काम करने वाले भी आपस में तकरार और खींचातानी न करें। यह कोई न कहे कि यह तो यूँ कर रहा है, वह तो यूँ कर रहा है। हर एक दूसरे को कुसूरवार क़रार देकर यह उसके ख़िलाफ़ लिख रहा है, वह इसके ख़िलाफ़ लिख रहा है। नहीं:

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پارہ– ۱۰)

आपस में खींचातानी और तकरार मत करो वरना तुम कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।

तो दुनिया जब अख़्लाक़ से वीरान हो जाती है, इख़्लास से वीरान हो जाती है, दीन की दावत से वीरान हो जाती है तो फिर उसके अन्दर मकड़े और मकड़ियाँ जाले तानते हैं।

मकड़ी का फ़ख़्र और उसका हश्र

जैसे वीरान घर के अन्दर मकड़ी ने जाला तान दिया और कबूतरी ने घौंसला बना दिया और घौंसले के अन्दर अण्डे भी दिए। अब इस जाले के ऊपर घौंसले के तिनके गिर रहे हैं और अण्डे के छिलके गिर रहे हैं...... अब मकड़ी फ़ख़्र (गर्व) में आ गई कि तिनके पर तिनके और छिलके पर छिलके मेरे जाले पर गिरे लेकिन मेरा जाला नहीं टूटा। और फिर यह मकड़ी जो जाती है तो छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े उसे मिल गए। उन्हें वह खा गई। अच्छी मोटी-ताज़ी हो गई और बड़ा फ़ख़्र और घमंड उसमें आ गया। फिर मकड़ी अपने

प्रोग्राम बनाने लगी, कभी इधर से उधर जा रही है, कभी उधर से इधर आ रही है।

अब जब मकड़ों ने देखा कि मकड़ी ख़ूब कूद-फाँद रही है तो उन्होंने भी अपने जाले तान दिए। तो पूरा घर मकड़ी और मकड़ों के जालों से भर गया।

दुनिया भर की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं

ख़ुदा-ए-पाक की क़सम! दुनिया भर की ताक़तें ये मकड़ी के जाले हैं। अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में इनकी कोई हैसियत नहीं है।

अगर दुनिया को दीन से आबाद किया जाए। दुनिया को इनसानियत से आबाद किया जाए और दुनिया को नेक आमाल से आबाद किया जाए तो इन मकड़ियों के जालों को अल्लाह पाक साफ़ कर देगा। अल्लाह तआला की ताक़त के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है।

और यह बात मैं नहीं कहता हूँ मेरा अल्लाह कहता है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا، وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ، لَوْكَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٥ (پاره-٢٠)

यह अल्लाह पाक कहते हैं कि ये सारी की सारी ताक़तें मकड़ी के जाले हैं। मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब कोई घर को आबाद करना चाहता है तो सब से पहले जाले साफ़ करता है और जालों को साफ़ करने में देर नहीं लगती। झाड़ू ली और चारों तरफ़ फेर दी, तो मकड़ी भी ख़त्म और जाला भी ख़त्म। देर नहीं लगती।

अ़ज़ाब की एक झाड़ू से फ़िरऔन के मुल्क का जाला साफ़ हो गया

जिस तरीक़े से फ़िरऔन इसके बावजूद कि अल्लाह ने उसकी

हिदायत का इतना सामान किया लेकिन फिर भी वह हिदायत के ऊपर नहीं आया और अपनी हठधर्मी के ऊपर रहा।

तो फिर अल्लाह पाक ने जब इरादा किया मिस्र को दीन से आबाद करने का और देखा कि यह हठधर्मी करने वाला मान कर नहीं देता तो अब इस ज़हरीले फोड़े का ऑप्रेशन करना है और इस ज़हरीले फोड़े को उखाड़ कर फेंक देना है। यह अल्लाह पाक ने जब तय किया तो अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की एक झाडू आयी और फ़िरऔ़न के मुल्क का जाला साफ़ हो गया।

विज़ारत और दौलत का जाला ख़त्म

और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की दूसरी झाडू आयी तो हामान की विज़ारत (मंत्री पद) का जाला साफ़ हो गया। और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की तीसरी झाडू आयी तो क़ारून के धन दौलत का जाला साफ़ हो गया। इन सारे जालों को साफ़ करके अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल के लिए मिस्र के अन्दर दीन के चालू करने की एक फ़िज़ा बना दी।

अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है

आज भी अल्लाह पाक इसी ताक़त के साथ हैं। हम सारी दुनिया से कहते हैं कि अल्लाह की ताकत को मानो। अगर अल्लाह की ताक़त को नहीं मानोगे और अल्लाह की ताक़त को नहीं तस्लीम करोगे तो जब तक अल्लाह पाक तुम्हें ढील देगा उस वक़्त तक तुम्हें पता नहीं चलेगा। लेकिन जिस वक़्त अल्लाह की पकड़ आएगी तो ऐ दुनिया के सारे धन दौलत वालो! अल्लाह की पकड़ से किसी की कोई ताक़त बचा नहीं सकती।

इसलिए मैं कहता हूँ कि सारी दुनिया के अन्दर जमाअ़तों में फिरो। और फिर-फिरकर जमकर अल्लाह की ताक़त बयान करो।

हम कमज़ोर हैं

हम उस अल्लाह के मानने वाले हैं जो बड़ी ताक़त वाला है। हम लोगों से अपनी ताक़त नहीं मनवाते। हमारी कोई ताक़त नहीं।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پاره– ۵)

इनसान को बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है। अपनी तो कमज़ोरी का एतिराफ़ करना है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं

ताक़त वाला तो अल्लाह है। वह इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि एक हुक्म दे दिया, और देखो कैसा आसमान व ज़मीन बना दिया। इतनी बड़ी ताक़त वाला अल्लाह है कि रोज़ाना तक़रीबन तीन लाख से ज़्यादा बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चे को दो-दो आँख देता है, रोज़ाना छह लाख आँखें सपलाई करता है लेकिन उसके ख़ज़ाने के अन्दर कोई कमी नहीं आती। हर इनसान की सूरत अलग बनाता है, आवाज़ अलग बनाता है, मिज़ाज अलग बनाता है, जज़्बा और भावना अलग बनाता है, लेकिन उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती।

तो उस अल्लाह की ताक़त को और अल्लाह के ख़ज़ानों को जमकर बयान करना है, पूरे आ़लम में, खुसूसी गश्तों में और उमूमी गश्तों में बयान करना है। लेकिन तरतीब के साथ। बे-तरतीबी के साथ नहीं। अगर बे-तरतीबी के साथ बयान करोगे तो लोग अल्लाह पाक का मज़ाक़ उड़ाएँगे और हम मज़ाक़ उड़वाने वाले बनेंगे। हमें अल्लाह पाक का मज़ाक़ नहीं उड़ावाना। जमकर दावत देनी है और उसे सीखना है और उसके लिए जमाअ़तों में फिरना है। और उसके लिए मक़ामी काम करना है, और जमकर यह बात कहनी है कि अल्लाह की ताक़त को मानो।

قُمْ فَاَنْذِرْ ٥ وَرَبَّکَ فَکَبِّرْ ٥ (پاره– ۲۹)

अल्लाह की बड़ाई बयान करो

खड़े हो जाओ और अल्लाह से डराओ और अल्लाह की बड़ाई को बयान करो। अज़ान के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, तकबीर के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, नमाज़ के अन्दर बार-बार अल्लाहु अकबर। जनाज़े की नमाज़ पढ़े तो अल्लाहु अकबर चार बार, बच्चा पैदा हो तो दाएँ कान में अज़ान और बाएँ कान में तकबीर पैदा होते ही कान के अन्दर अल्लाह की बड़ाई पड़ गई। जानवर ज़िबह करे तो "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर"। ईद का दिन आए तो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰـهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु व लिल्लाहिल् हम्दु।

तो ईद के दिन भी अल्लाहु अकबर, जनाज़े की नमाज़ हो तो अल्लाहु अकबर, बच्चा पैदा हो तो अल्लाहु अकबर।

फ़ज्र की नमाज़ से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है। रात को सोते वक़्त तस्बीहे-फ़ातिमी पढ़ते हैं तो उसमें भी **सुब्हानल्लाहि** 33 बार फिर **अल्हम्दु लिल्लाहि** 33 बार फिर **अल्लाहु अकबर** 34 बार, नमाज़ के बाद भी यह तस्बीह पढ़ी जाती है।

पूरी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़

फ़ीजी से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है और चारों तरफ़ अल्लाहु अकबर की फ़िज़ा बन जाती है। उसके बाद फिर फ़िजी के बाद वाले जो देश हैं, आस्ट्रेलिया के अन्दर यह आवाज़, फिर न्यूज़ीलैण्ड के अन्दर यह आवाज़, फिर आस्ट्रेलिया के बाद चलो फ़िल्पाइन है, जापान है, कोरिया है। वहाँ पर ये आवाज़ें लगनी शुरू हो गईं। उसके बाद फिर आगे चलो मलैशिया है, इण्डोनेशिया है, थाईलैण्ड है, बंगलादेश है, सीलोन है, बरमा है, वहाँ पर अल्लाहु अकबर की

आवाज़। सारी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़ लग रही है...... खुश क़िस्मत हैं वे लोग जो आगे बढ़ें और अल्लाह की बड़ाई बयान करें। मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह की बड़ाई तस्लीम करने वालों और अल्लाह की बड़ाई बयान करने वालों के साथ ही अल्लाह की मदद है।

बेईमानों के मुतालबात

और यह जो बेईमान लोग हैं, इन्होंने हर ज़माने के अन्दर दूसरे अम्बिया से भी यह बात कही और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से भी यह बात कही गई:

قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ٥ (پارہ–۲۳)

क़ियामत का कौन इन्तिज़ार करे। हमारे लिए तो क़ियामत वाला अ़ज़ाब आज ही उतार दो।

यह उन बेईमानों ने कहा, लेकिन अ़ज़ाब नहीं आया। क्यों नहीं आया? इसलिए कि अल्लाह पाक फ़ौरन नहीं पकड़ करते बल्कि हिदायत का सामान और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं।

फिर उन्होंने कहा:

اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٥ (پارہ–۹)

अगर यह कुरआन तेरा कलाम और तेरी किताब है तो आसमान से हमारे ऊपर पत्थर बरसा दे और हमें बरबाद कर दे।

लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब फिर भी नहीं आया।

तो फिर उन्होंने उछलना-कूदना शुरू किया कि देखो ना! कुछ भी नहीं हो रहा है। फिर कुरआन की सूरतें और आयतें उतरीं और पिछले नबियों के क़िस्से सुनाए कि पिछले नबियों के ज़माने में भी लोगों ने ऐसे ही कहा था। देखो अल्लाह पाक ने आख़िर में जाकर उनको कैसा ग़ारत किया। और अल्लाह पाक की बड़ाई तस्लीम करने

वालों की और नबियों की बात मानने वालों की अल्लाह तआला ने कैसी मदद की।

और बेईमान लोग यही कहते रहे कि ये तो पुरानी कहानियाँ हैं। आज करके बताओ।

अल्लाह की मदद आ गई

फिर उसके बाद **बदर** का क़िस्सा हुआ। और अल्लाह पाक ने करके बता दिया। अब उनके होश खट्टे हो गए। अब लोग समझे कि वाक़ई ये जो अल्लाहु अकबर कहने वाले हैं इनके साथ अल्लाह पाक की मदद आ गई। अब उनसे ज़्यादा छेड़ख़ानी नहीं करनी।

आज भी जब यह बात कही जाती है कि सारी दुनिया के आदमी कहते हैं कि अरे बदर का क़िस्सा सुनाया, नबियों का क़िस्सा सुनाया, हज़रत उमर फ़ारूक़ का क़िस्सा सुनाया, अरे आज करके बताओ।

करने वाली ज़ात अल्लाह की है

तो भाई करने वाले हम तो हैं नहीं, करने वाली तो अल्लाह की ज़ात है। वह मस्लेहतों को जानती है कि कितने मुजाहदे के बाद दीन के काम करने वालों की मदद करनी चाहिए। और कितने बिगाड़ के बाद मुजरिमों की पकड़ करनी चाहिए।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से मुतालबा

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से भी उन बेईमानों और मुजरिमों ने कहा:

فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفاً مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ (پاره– ۹)

अगर तुम सच्चे नबी हो तो आसमान के टुकड़े हमारे ऊपर गिराकर हमें तबाह कर दो।

तो हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने इसका जवाब दिया:

قَالَ رَبِّیْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (پاره–١٩)

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने यूँ कहा कि जो तुम्हारे करतूत हैं उसको अल्लाह जानता है।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! कितने जुर्म पर किसको पकड़ना और कितने मुजाहदे पर किसकी मदद करना है यह अल्लाह की मस्लेहतों और हिक्मतों के साथ है। इसमें हमें दख़ल नहीं देना।

लेकिन देखो! एक बात ज़ेहन में रहे कि कहीं दो-चार बार अल्लाह की मदद आ गई तो ख़ुदा न करे दीन का काम करने वालों में फ़ख़र (गर्व और घमंड) न आ जाए। अपनी कमज़ोरियों का एहसास रहे कि हम बिल्कुल कमज़ोर हैं।

इनसान इतना कमज़ोर, इतना कमज़ोर है कि जिसकी कमज़ोरी की कोई हद नहीं, और अल्लाह पाक इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि जिसको आप सुन रहे हैं।

हमारी चुनौती

इनसान इतना कमज़ोर है कि अगर लाखों आदमी मिलकर सैकड़ों साल तक मेहनत करें तो सारे मुल्क व माल वाले और सारे वैज्ञानिक (साईसदान) मिलकर मछली की एक आँख नहीं बना सकते, मच्छर की एक टाँग नहीं बना सकते, मक्खी का एक पर नहीं बना सकते। चुनौती है पूरी दुनिया को...... नहीं बना सकते।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پاره–٥)

पैदा किया गया है इनसान को कमज़ोर।

अपनी कमज़ोरी को मानो और अल्लाह की ताक़त को मानो। तो फिर अल्लाह की ताक़त तेरी हिमायत में आ जाएगी तो दुनिया भर में तेरे बेड़े पार होंगे। और आख़िरत में भी तेरे बेड़े पार होंगे।

यह जो इतना चीख़-चीख़कर हम अल्लाह की बड़ाई को बयान करते हैं। यह हम अपनी ताक़त नहीं बतला रहे हैं। हमारी कोई ताक़त

नहीं। हम तो इतने कमज़ोर हैं कि हम को मारने के लिए पिस्तौल और तलवार की भी ज़रूरत नहीं। एक आदमी आकर हमें एक घूँसा मार दे और हमारी मौत का वक़्त आ चुका है तो हम उसी वक़्त मर जाएँगे। हम तो इतने कमज़ोर हैं। हम अपनी ताक़त को नहीं मनवा रहे हैं। हमारी कोई ताक़त नहीं।

अल्लाह सब का है

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला जो अल्लाह है वह अल्लाह मुसलमानों का भी है और ग़ैर-मुस्लिमों का भी है। हम उस अल्लाह की ताक़त को मनवा रहे हैं।

ख़ुदा की ताक़त को मानोगे तो बेड़े पार होंगे। यह आवाज़ पूरी दुनिया के अन्दर लगानी है। खेतों में भी लगानी है। मकानों में भी लगानी है। दुकानों में भी लगानी है। दावत के ज़रिये अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ को हर जगह लगाना है।

और तुम्हारे ज़ेहन में कहीं आए कि इस मजमे के सामने तुम चीख़ रहे हो यह आवाज़ तो लगानी चाहिए जो बड़े बड़े मुल्कों को चलाने वाले हैं उनको जाकर कहना चाहिए। इस मजमे के सामने कहने से क्या फ़ायदा?

नहीं! बल्कि हमारे सामने तो जितना हमारा बस होगा उतना हम अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ लगाएँगे। गश्तों के अन्दर, ख़ुसूसी गश्तों के अन्दर, जितना आवाज़ लगाना बस में है उतनी आवाज़ लगाई जाएगी। और जहाँ हमारे बस से बाहर है वहाँ तक आवाज़ का पहुँचाना यह अल्लाह का काम है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी का गश्त और बेक़रारी

देख लो! सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी को। जब हज़रत

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम लश्कर लेकर चले तो वह चींवटी बड़ी परेशान हो गई। उसने देखा कि लश्कर आ रहा है और तुम सारी रौंदी जाओगी। तो तुम अपने बिलों के अन्दर घुस जाओ। यह चींवटी बेक़रार हो गई और उसने गश्त शुरू कर दिया और चींवटियों से यह कह दिया कि तुम बिलों के अन्दर घुस जाओ।

قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ (پارہ– ۱۹)

उसने यूँ कहा कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लश्कर को पता नहीं चलेगा और तुम सारी रौंदी जाओगी। इसलिए अपने बिलों के अन्दर जल्दी से घुस जाओ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उसके बस में नहीं था कि इतने बड़े हाकिम और इतने बड़े नबी तक अपनी बात पहुँचाए तो जितना उसके बस में था उसने किया, हालाँकि वह चींवटी ग़ैर-मुकल्लफ़ (शरीअ़त के अहकाम की पाबन्द नहीं) है, और आप हज़रात का बिस्तरे लेकर चारों तरफ़ घूमना-फिरना और आवाज़ें लगाना हम और आप इसके मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार और पाबन्द) हैं।

जब ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी ने आवाज़ लगाई तो अल्लाह पाक ने यह आवाज़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा दी और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम वहीं पर मुस्कुरा दिए।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا (پارہ– ۱۹)

हंसने लगे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम कि देखो चींवटियों के बचाने का कैसा इन्तिज़ाम कर रही है।

और यह आवाज़ सिर्फ़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक नहीं पहुँची बल्कि चींवटी की यह बात सारे मजमे तक पहुँच गई।

हालाँकि चींवटी अगर हमारी रान पर हो तो हम पहचान नहीं सकते और बात तो पहुँचना दर किनार। लेकिन हज़ारों साल के पहले

चींवटी की आवाज़ लगी और हज़ारों साल के बाद रमज़ान शरीफ़ के महीने में और भी दूसरे वक़्तो में सूरः नमूल पढ़ी जाती है और करोड़ों मुसलमान इस बात को सुनते हैं।

कुल मुख़्तार अल्लाह है

तो अल्लाह ऐसा क़ादिरे मुतलक़ (कुल मुख़्तार) है कि ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी की आवाज़ को जो दर्दभरी आवाज़ थी उसको हज़ारों साल के बाद लाखों और करोड़ों इनसानों तक पहुँचा दिया।

तो हम और तुम बिस्तर उठाए-उठाए सारी दुनिया के अन्दर फैलकर अल्लाह की बड़ाई को बताएँ हमारा वह अल्लाह क़ादिर है कि जहाँ तक हमारी आवाज़ नहीं पहुँचती वहाँ तक वह हमारी आवाज़ को पहुँचा दे। आवाज़ का लगाना हमारा काम है और आवाज़ का पहुँचाना अल्लाह का काम है।

देर है अन्धेर नहीं

हर ज़माने में यह बात होती है कि तुम्हारा इतना बड़ा अल्लाह तुम्हारी मदद क्यों नहीं करता?

लेकिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर मदद आई साढ़े नौ सौ साल के बाद, और दूसरे नबियों पर भी मदद आई एक मुद्दत के बाद।

अल्लाह पाक ख़ूब मुजाहदे (मेहनत और तपस्या) कराकर और ख़ूब आज़माईशों में डालकर रूहानियत के अन्दर ज़बरदस्त ताक़त पैदा करता है। और उसके बाद हैरत-अंगेज़ (आश्चर्यजनक) मददें लाता है।

हर नबी को उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने जिनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था, और जिनको अपने धन दौलत पर घमण्ड था और जिन्हें अपने मजमे के बड़ा होने पर घमण्ड था, हर ज़माने के अन्दर नबियों से उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने यह कह दिया कि तुम हमारी बस्ती से निकल जाओ नहीं तो हम तुमको ख़त्म कर देंगे। या तो हमारे जैसे बनकर रहो, और अगर

हमारे जैसे बनकर नहीं रहते तो हमारी बस्ती और हमारे शहर से निकल जाओ।

अल्लाह का वायदा

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला ख़ुदा इसका जवाब देता है कि अगर तुम सुधार का काम करने वालों को निकालने की फ़िक्र करते हो तो हम तुमको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे। और सुधरे हुए लोगों को हम यहाँ पर बसाएँगे। यह अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में हमें बताया।

हर नबी जब दावत का काम लेकर उठा तो भटके हुए लोगों ने उसको ख़ूब सताया और ख़ूब बुरा-भला कहा:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَا اَوْلَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا

(پارہ—۱۳)

नबियों से उस ज़माने के बिगड़े हुए लोगों ने और अपनी मर्ज़ी पर चलने वाले लोगों ने कहा:

"या तो हमारे जैसे बन जाओ, और अगर हमारे जैसे नहीं बनते तो हम तुमको इस बस्ती से निकाल देंगे।"

यह उन्होंने कहा, क्योंकि उनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था। लेकिन ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला ख़ुदा, चाँद और सूरज का पैदा करने वाला ख़ुदा और जन्नत व जहन्नम का पैदा करने वाला ख़ुदा, समुद्रों को पैदा करने वाला ख़ुदा, आसमान से पका-पकाया खाना उतारने वाला ख़ुदा, समुद्र में बारह रास्ते बनाने वाला ख़ुदा, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को जेलख़ाने से निकालकर मिस्र के ख़ज़ाने को उनके क़दमों में डालने वाला ख़ुदा और क़ादिरे मुतलक़ उस अल्लाह ने क्या ख़बर दी:

فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ٥ (پارہ—۱۳)

अल्लाह पाक ने आसमानी वह्य (पैग़ाम) भेजी कि जो तुमको अपनी बस्ती और अपने शहर से निकालने के लिए कह रहे हैं हम उनको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे:

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ، (پاره-١٣)

और ज़मीन पर उनके बाद हम तुमको बसाएँगे।

तो जो यह मक्का के बेईमान लोग थे, उनके साथ भी अल्लाह पाक ने यही मामला किया।

उन लोगों ने आपस में प्रोग्राम बनाया कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को या तो क़त्ल कर दें या उनको कहीं पर घेरकर रख लें, या उनको बाहर कर दें।

कुआँ खोदने वाले के सामने कुआँ होता है

लेकिन अल्लाह पाक ने बता दिया कि बदर के अन्दर वही क़त्ल हुए जो क़त्ल करने की फ़िक्र करते थे और वही क़ैद हुए जो क़ैद करने की फ़िक्र करते थे। और उन्होंने ही अपने वतन को छोड़ा जो आपको वतन से निकालने वाले थे।

उन बेईमानों ने तीन बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सोची थीं और वे तीनों बातें उनके साथ हो गईं। और अल्लाह पाक ने ईमान वालों से कहा:

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ
النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○ (پاره-٩)

नवाज़िश और करम का ज़िक्र

अल्लाह पाक कहता है ऐ ईमान वालो! याद करो उस दिन को जब तुम थोड़े-से थे और ज़मीन के अन्दर मक्के वाले तुम्हें बहुत कमज़ोर समझ रहे थे और तुमको डर था कि लोग हमे उचक लेंगे

और लोग हमें नामालूम क्या कर डालेंगे। तो अल्लाह पाक ने मदीना मुनव्वरा में तुम्हें ठिकाना दिया और अल्लाह पाक ने ग़ैबी मदद तुम्हारे साथ की और अल्लाह पाक ने पाक रोज़ी तुमको दी। ताकि तुम अल्लाह पाक का शुक्र करो।

तो मेरे दोस्तो! दूसरे ज़माने के क़िस्से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुनाए तो उन बेईमानो ने कहाः

"ये तो कहानियाँ हैं"

लेकिन अल्लाह पाक ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में वह काम करके बता दिया तब उनके हौसले टूटे और उनके होश खट्टे हुए।

हम कहते हैं कि आज भी हमारा अल्लाह उसी ताक़त के साथ है और यह अल्लाह सिर्फ़ हमारा नहीं है बल्कि यह पूरी इनसानियत का अल्लाह है।

सब बे-हक़ीक़त

अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में राकेट और ऊँट दोनों बराबर हैं। और अल्लाह की कुदरत के मुक़ाबले में डंडा, तलवार और ऐटम बम यह सब बराबर हैं। खुदा उसी मुकम्मल कुदरत के साथ है।

पूरी दुनिया को दावत

हम सारी दुनिया को डंके की चोट पर दावत देते हैं कि ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले खुदा की ताक़त को तस्लीम करो तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर नहीं करोगे तो जब तक ढील देगा पता नहीं चलेगा और जिस दिन अल्लाह पाक की पकड़ आएगी उस दिन अल्लाह की पकड़ से कोई नहीं बचा सकेगा।

हमने यह सारे नबियों के क़िस्से सुनाए और नबियों को उनकी बस्ती वालों ने जो कुछ कहा अल्लाह पाक ने वह्य (अपना पैग़ाम) भेजी और उन बेईमानों को दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर दिया।

ईमान वालों को अल्लाह पाक ने बसाया और यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी कर दिया, और आज के बारे में बता दूँ।

आख़िरत का ख़ौफ़ आबादी और ख़ुशहाली का सबब

हमारा अल्लाह यह कहता है कि जैसे मैंने उनको बसाया और आबाद किया और भटके हुए लोगों को बरबाद किया अगर क़ियामत तक किसी को आबाद होना है तो अल्लाह के सामने खड़े होने का डर पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला की वईदों (सज़ा की धमकियों, डाँटों) का और धमकियों का डर पैदा हो जाए। अगर अल्लाह पाक का डर पैदा हो गया। अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन खड़े होने का डर और अल्लाह पाक ने जो वईदें बताई हैं अगर इसका डर पैदा हो जाए तो हम उन सारे बस्ती वालों को आबाद रखेंगे, बरबाद नहीं करेंगे। खुद अल्लाह पाक कहते हैं:

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ٥ (١٣)

तो देखो पूरी दुनिया के अन्दर आख़िरत के ख़ूब चर्चे किए जाएँ। हर जगह आख़िरत के चर्चे किए जाएँ। अपने बीवी बच्चों के सामने भी, अपने ग्राहकों के सामने भी और जहाँ भी जाओ वहाँ पर आख़िरत के ख़ूब चर्चे करो। पूरे आ़लम के अन्दर आख़िरत के चर्चे करो।

तो अगर आख़िरत के चर्चे ख़ूब किए और दुनिया के बसने वाले इनसान क़ियामत के दिन खुदा के सामने खड़े होने से डर गए और क़ियामत के दिन की खुदा की धमकियों से डर गए तो अल्लाह पाक उनको बरबाद नहीं करेगा। बल्कि आबाद रखेगा।

सब के बेड़े पार हों

हम पूरी दुनिया की आबादी चाहते हैं। हम दुनिया की बरबादी

नहीं चाहते। हम लोगों को बरबाद कराना नहीं चाहते, हम पूरी दुनिया के इनसानों के बेड़े डूबोना नहीं चाहते। हम उन सब इनसानों के बेड़े पार कराना चाहते हैं।

अगर अल्लाह पाक की ताक़त को मान लें तो अल्लाह पाक सब के बेड़े पार कर देगा।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को डराना

اِنَّـآ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰی قَوۡمِہٖۤ اَنۡ اَنۡذِرۡ قَوۡمَکَ (پارہ-۲۹)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा कि अपनी क़ौम को डराओ।

जैसे पिस्तौल लेकर बन्दूक़ लेकर और उसके अन्दर गोली डालकर आदमी बन्दूक़ की नाली यूँ सीधी कर दे। वह सिर्फ़ डरा रहा है देख ठीक हो जा। देख पिस्तौल। तो इस तरह तुम डराओ। लेकिन गोली मत मार देना। तो इसी तरह अल्लाह के अ़ज़ाब को माँगना नहीं है। सारी दुनिया को अ़ज़ाब से डराना है। लेकिन साथ में अल्लाह ने यह भी कह दियाः

مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ یَّاۡ تِیَھُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌo (پارہ-۲۹)

अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आए इससे पहले-पहले डराओ।

लेकिन जब अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आ जाएगा तो फिर किसी के हटाने से नहीं हटेगा।

तो अल्लाह पाक नाराज़ होकर पूरी दुनिया पर अ़ज़ाब लायें इसके पहले पूरी दुनिया में चलकर अल्लाह के बन्दों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया जाए।

ذٰلِکَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامِیۡ وَخَافَ وَعِیۡدِ o

हमें अपनी ज़िन्दगी के आमाल को भी ठीक करना है, ईमान के अन्दर ताक़त पैदा करनी है, आमाल के अन्दर ताक़त पैदा करनी है,

रमज़ान के महीने के अन्दर रोज़ा रखना है, रमज़ान के महीने में सवाब भी बहुत बढ़ जाता है।

ज़कात न देने का वबाल

और जिन लोगों पर ज़कात फ़र्ज़ है उन्हें ज़कात देनी चाहिए इसलिए कि अगर वे ज़कात नहीं देते तो यह माल जो है उसके पतरे बनाकर माल वाले को क़ियामत के दिन दाग़ा जाएगा। और वह माल जो है वह अज़्दहा बनाकर उसकी गर्दन के अन्दर डाला जाएगा। और वह उसे डसेगा।

और यह ज़कात का माल बग़ैर ज़कात के माल में मिल जाए तो यह दूसरे माल के ऊपर भी वबाल लाता है। भाई! जब साल पूरा हो जाए तो आदमी ज़कात के माल को बाहर निकाल दे, रोलिंग में न ले, अगर रोलिंग में लिया तो ख़तरा है, डर है कि कहीं दूसरे माल के ऊपर भी वबाल न आ जाए। अगर एक दम से देने का तेरे लिए मौक़ा नहीं है और हक़दार नहीं मिलते तो भी उसे अलग कर दे।

आमाल के असरात

इसलिए कि जैसे दुनिया की चीज़ों में असरात होते हैं उसी तरह इनसान के आमाल के अन्दर भी असरात हैं। अगर इनसान अच्छे अ़मल करता है तो जन्नत की नेमतें तैयार होती हैं। और अगर इनसान बुरे अ़मल करता है तो जहन्नम का अ़ज़ाब और जहन्नम के अंगारे और हथकड़ियाँ तैयार होती हैं। जैसे अगर सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह पढ़े तो जन्नत के अन्दर पेड़ तैयार होते हैं। और अगर ज़कात न दे तो वहाँ पर साँप तैयार होता है। हर भले और बुरे अ़मल की एक शक्ल बनती है।

चीज़ों के सही और ग़लत इस्तेमाल के परिणाम

जैसे मैं एक महसूस की जाने वाली मिसाल दूँ:-

दिया सलाई है दिया सलाई। अब उसको किसी आदमी ने यूँ रगड़ा और रगड़कर उसको लकड़ी के ऊपर लगा दिया और लकड़ी जल गई। और उस लकड़ी से दूसरी लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार देगें बिरयानी क़ोरमे और पुलाव की तैयार हो गईं। एक दिया सलाई का यह सही इस्तेमाल है।

और अगर उसी दिया सलाई को रगड़कर पैट्रोल की टंकी में डाल दिया तो वहाँ फ़ौरन आग के शोले भड़कने लगेंगे। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर बीस हज़ार दुकानें जो राशन की थीं उसके अन्दर डाल दिया तो उनके अन्दर आग भड़क गयी, फिर एक लकड़ी लगाकर रूई के गोदाम में डाल दिया तो रूई के गोदाम जलकर ख़त्म हो गये।

तो एक दिया सलाई का ग़लत इस्तेमाल आग के शोलों को लाता है और एक दिया सलाई का सही इस्तेमाल पुलाव और ज़र्दे की देगें पकवाता है।

इसी तरह सवा पाँच (5¼) फ़िट के इनसान का बदन, इसका अगर सही इस्तेमाल हुआ। नमाज़ों के अन्दर, तालीम के हल्क़ों के अन्दर, अल्लाह के ज़िक्र के अन्दर, कुरआन पाक की तिलावत के अन्दर, और दूसरों के साथ अच्छे अख़्लाक़ के बरतने के अन्दर।

ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अच्छे अख़्लाक़ बरतने की तालीम

मुसलमानों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। आप अपने घर के ऊपर बैठे हुए हों और किसी बुढ़िया के चीख़ने और कराहने की आवाज़ आई, आपने अपनी बीवी को फ़ौरन भेजा और पाँच सौ रुपये देकर भेजा, देखा तो वह एक ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औरत थी। और उसको पाँच सौ रुपये दे दिये।

यह हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है

कि ग़ैर-मुस्लिम भी परेशान हाल हो तो उसकी भी परेशानी दूर करने की कोशिश की जाए। इसके अन्दर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मामला न रहे।

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

अगर किसी मुसलमान ने किसी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबा ली तो ऐसे मौक़े पर हम मुसलमानों को उस ग़ैर-मुस्लिम की हिमायत करनी होगी और मुसलमान को समझाना होगा कि भाई यह ज़मीन वापस कर दे वरना सातों ज़मीनों में से यह ज़मीन निकाल कर तेरे गले के अन्दर तौक़ बनाकर पहनाया जाएगा। इसको वापस कर दे।

हम इसको मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मसला नहीं बनाएँगे। यहाँ पर तो ग़ैर-मुस्लिम मज़लूम है और मुसलमान ज़ालिम है। अगर मुसलमान ज़ालिम हो तो उसके साथ हमदर्दी यह है कि उसको ज़ुल्म से रोका जाए। इसलिए कि:

नाव काग़ज़ की कभी चलती नहीं

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

दीनदार बेटा और दुनियादार बाप

तो मुसलमान अगर ज़ुल्म कर रहा है तो हम उसकी ठोड़ी में हाथ डालकर कहें कि अरे तेरा बाप है, मुसलमान है, उसने ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाई है। तू जा अपने बाप को समझा कि अब्बा जान! यह ज़मीन वापस कर दो। लेकिन अब्बा जान चूँकि अच्छे माहौल में नहीं रहे थे उनके अन्दर दुनिया की मुहब्बत बहुत है इसलिए अब्बा जान कहते हैं कि बेटा मैं तो वापस नहीं करता।

अब आपने देखा कि मेरा बाप क़ियामत के दिन बड़ी मुसीबत में आएगा। इसलिए कि वह इस बेचारे ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाए बैठा है। तो आपने अब्बा जान के साथ हमदर्दी की और यूँ कहा कि अब्बा

जान! जितनी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन आपने दबाई है मैं उतनी ज़मीन आपको देने के लिए तैयार हूँ। मेरी ज़मीन ले लो, ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दे दो।

अपनी ज़मीन देना बतौर अख़्लाक़ के होगा और ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन वापस करना यह बतौर इन्साफ़ के होगा।

लेकिन बाप ऐसा दुनियादार निकला कि उसने यूँ कहा कि बेटा तेरी ज़मीन भी लूँगा और उसकी ज़मीन भी नहीं छोड़ूँगा। कुछ लोग इसी तरह के होते हैं। जब उम्रें ज़्यादा हो जाती हैं तो माल की मुहब्बत बढ़ जाती है। हाँ! अगर अल्लाह ही किसी की हिफ़ाज़त करें तो और बात है।

हक़ को हक़ कहना है

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! बाप माना नहीं और वह बात कचेहरी के अन्दर गयी तो कचेहरी के अन्दर जज के सामने भी उसके बेटे को कहना होगा कि जज साहिब! यह मेरे अब्बा हैं। इनका सम्मान करना मेरे ज़िम्मे ज़रूरी है, इनका अदब करना मेरे लिए ज़रूरी है। लेकिन मेरे अब्बा जैसे अल्लाह के बन्दे हैं उसी तरह यह ग़ैर-मुस्लिम भी अल्लाह का बन्दा है। मैं गवाही देता हूँ कि यह ज़मीन ग़ैर-मुस्लिम की है। मेरे अब्बा की नहीं।

यह हमको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है, इसके अन्दर मुस्लिम ग़ैर-मुस्लिम के मसले को नहीं लाना चाहिए।

दुकान से भी दावत का काम

आपने सुबह दुकान खोली, दुकान के अन्दर आप चावल भी बेचते हैं और न मालूम क्या-क्या चीज़ें बेचते हैं। आप पचास रुपये के दस किलो चावल देते हैं। दुकान खुली, लोग आ गए। सबको आपने दस-दस किलो चावल दिए।

तुम्हारे मौहल्ले की एक ग़ैर-मुस्लिम बुढ़िया है यह भी सुबह-सुबह

लकड़ी टेकते हुए तुम्हारी दुकान पर पहुँच गई और उसने जाकर यूँ कहा कि पचास रुपये के मेरे को चावल दे दो। उसको आपने बजाए दस किलो के बीस किलो दे दिए। इसलिए कि उसकी परेशानी से आप वाक़िफ़ थे। अब वे जो दूसरे ख़रीदार थे, लाला जी, सरदार जी और वह मुतवल्ली जी भी थे जिन्होंने बोर्ड लगा दिया था कि हमारी मस्जिद में कोई बयान न करे, तो ये सारे के सारे चीं-चीं करने लगे कि इसको पचास रुपये में बीस किलो और हमको दस किलो। तो आपने कहा देखो! मेरा भाव तो पचास रुपये में दस किलो का ही है, और जो मैंने इस बूढ़ी औ़रत को दस किलो ज़्यादा दिए यह हमदर्दी के तौर पर हैं। यह मेरे मौहल्ले की औ़रत है और मैं रात को इसकी चीख़ व पुकार को सुनता हूँ।

उसके बाद आपने फिर उस बुढ़िया से पूछा बड़ी बी! रात को तुम कराहती बहुत हो क्या परेशानी है?

तो उस ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औ़रत ने यूँ कहा कि मेरे सात बेटे हैं। मैंने उन सब की शादियाँ कर दीं, वे अपनी बीवियों को लेकर चले गए और मेरी कोई ख़ैर-ख़बर नहीं लेता। यह कहकर वह रोने लगी। जब वह रोने लगी तो उसका रोना देखकर आपको भी रोना आ गया।

क्यों?

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअ़त के लिये कुछ कम न थे कर्रो-बयाँ

इबादत के लिए तो फ़रिश्ते बहुत हैं। इनसान को दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया है।

लेकिन देखो यह मतलब नहीं कि इबादत के वास्ते नहीं पैदा किया।

وَمَاخَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ (پارہ-٢٧)

जिन्नात और इनसान को अल्लाह पाक ने इबादत करने के लिए

पैदा किया और इनसान की इबादत ऐसी होगी कि लोगों का दर्द भी दिल के अन्दर पैदा करेगी।

तो आप रोने लगे। वह बूढ़ी भी रो रही है। वे सारे के सारे देख रहे हैं और ताज्जुब कर रहे हैं कि कोई रिश्तेदारी नहीं और फिर भी इतनी हमदर्दी कर रहा है। फिर आपने अपने बेटे से कहा कि बेटा! यह जो तुम दुकान के अन्दर तौलने और बेचने का काम करते हो तो वह ज़रा नौकरों के हवाले कर दो और तुम इस बड़ी बी को अपनी मोटर साइकिल पर बैठाओ और बैठाकर अस्पताल में दाख़िल करो और यह लो तीन हज़ार रुपये यह डॉक्टर को एडवांस दे दो। और मैं फ़ोन करता हूँ कि इस बड़ी बी के इलाज का जो ख़र्चा होगा वह मेरी दुकान से तुम्हारे पास पहुँच जाएगा। और बेटा बड़ी बी की ख़िदमत के लिए कोई औ़रत तजवीज़ करो। उस औ़रत की जो तन्ख़्वाह होगी वह भी हम देंगे।

बेटा मोटर साइकिल पर बैठाकर उस बड़ी बी को लेकर चला गया। आपने टेलीफ़ोन भी कर दिया।

अब यह सब देखकर लाला जी भी ख़ुश, सरदार जी भी ख़ुश, मुतवल्ली जी भी ख़ुश। अब ये सारे मानूस हो गए। और जब ये मानूस हो गए तो अब उनको अल्लाह से जोड़ने की फ़िक्र करो।

अब आपने कहा कि लाला जी और सरदार जी और मुतवल्ली जी मेरा जी यूँ चाहता है कि आप लोग मेरे घर पर आएँ और बैठकर एक वक़्त हम सब खाना खाएँ और चाय पियें। आपका अख़्लाक़ देखकर सब ख़ुशी-ख़ुशी आपके यहाँ आ गए। आपने जो उनको रोटी खिलाई तो उसके साथ-साथ ईमान की बातें भी पिलाईं। वे बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए।

कम-ख़र्च बाला-नशीं

फिर आपके बच्चे की शादी तय हुई। आपने उन लोगों को अपने

लड़के की शादी में बुलाया, सब उसमें भी ख़ुशी-ख़ुशी आ गए।

आप तो अरबपती खरबपती हैं, लेकिन आपने अपने लड़के की शादी जो कि वह चन्द हज़ार में की। अब मुतवल्ली जी कहने लगे कि इतने बड़े मालदार और शादी में ख़ाली चन्द हज़ार ख़र्च किए! तो आपने कहा देखो हमारे लड़के रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की लड़कियों से अफ़ज़ल (बेहतर) नहीं हैं। जब उन लड़कियों की शादी सीधे-सादे तरीक़े पर हुई तो हमारे लड़के की शादी भी सादे तरीक़े पर होगी।

शादी के पैसे बचाकर क्या किया?

और मुतवल्ली जी! यह जो शादी के पैसे मैंने बचाए तो इसका मैंने बैंक बेलैंस नहीं किया बल्कि मैंने यह पैसे जो बचाए तो उसके ज़रिये बहुत-से ग़ैर-शादीशुदा (अविवाहित) लड़के और लड़कियों की शादियाँ कर दीं।

मैंने कॉलोनी बनाई

और मैंने एक कॉलोनी भी बनाई है। उस कॉलोनी में मैंने एक कमरा अपने और अपनी बीवी के लिए, एक कमरा मेरे बेटे और उसकी बीवी के लिए और बाक़ी जितने कमरे थे उनके लिए मैं ग़रीबों के पास गया और मैंने उनसे बातचीत की और कहा कि देखो तुम पिछत्तर रुपये हर महीने का किराया देते हो और पच्चीस साल से तुम किरायेदार हो। हमारी कॉलोनी का कमरा बारह हज़ार में बना है। हर महीने अगर तुम एक सौ रुपये दोगे तो एक साल में बारह सौ रुपये होंगे। इस तरह दस साल में उसकी पूरी क़ीमत अदा हो जाएगी। तो तुम दस साल में मकान के मालिक बन जाओगे। और इसमें तुम पच्चीस साल से किरायेदार ही हो।

इस तरह वे लोग मेरी कॉलोनी में आकर बस गए। उनमें से बाज़ों ने हर महीने एक सौ के बजाय दो सौ दिए किसी ने पाँच सौ

दिए और वह कॉलोनी पाँच साल में फ़्री हो गई।

उनमें से कुछ आदमी पैसे नहीं दे सके लेकिन हमने उनकी इज़्ज़त पर हाथ नहीं डाला। दूसरे रास्ते से हमने उन तक ज़कात के पैसे पहुँचा दिए, हदिये के पैसे पहुँचा दिए। हमने उनको ज़लील नहीं किया।

हम उन ग़रीबों को अपनी कॉलोनी के अन्दर बग़ैर पैसों के भी कमरा दे सकते थे लेकिन अगर उन ग़रीबों को हम बग़ैर पैसे का कमरा दे देते तो फिर ये ग़रीब माँगकर खाने वाले बन जाते। उन ग़रीबों को हम अपनी जूती नहीं बनाना चाहते। हम तो उन ग़रीबों को अपने सर की टोपी बनाना चाहते हैं कि इज़्ज़त व आबरू के साथ ये रहें, तो तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हें अपनी कॉलोनी भी दिखा दूँ।

कॉलोनी में ईमान की मजलिस और ईमान की बातें

अब लाला जी, सरदार जी, मुतवल्ली जी यह कॉलोनी देखने गए तो चारों तरफ़ ग़रीब आबाद। एक कमरा उनका और एक कमरा उनके बेटे का। बीच में मस्जिद बनी हुई। उसमें कोई जमाअ़त आ रही है कोई जा रही है। कहीं तालीम के हल्के तो कहीं अल्लाह का ज़िक्र, कहीं ईमान की मजलिस। बड़ी चहल-पहल, न कोई दरबान रखने की ज़रूरत पड़ती है न और कुछ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! यह सारा मन्ज़र (दृश्य) लोगों ने देखा तो बड़े ख़ुश हुए और उन लोगों ने कहा कि सारी दुनिया के अन्दर तो छीना-झपटी है। सब लेने वाले बने हुए हैं इसलिए लड़ाई है। और तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देने का मिज़ाज बनाया है। छीनने के बजाय बाँटना। तुम्हारे नबी ने तो बाँटना सिखाया। जितना बाँटेगा उतना जोड़ होगा, जितना छीनेगा उतना तोड़ होगा।

तोड़ के रास्ते

पूरे आ़लम में छीनने का मिज़ाज है। झूठ, सूद, धोखा, ग़बन,

ख़ियानत, नाप-तौल में कमी, चोरी, डकैती ये सारे छीनने के रास्ते हैं।

पूरी दुनिया का निज़ाम जो है वह "लेने" की बुनियाद पर है। अगर देगा भी तो लेने के लिए देगा। और यह बात भी बता दूँ कि जो लेने वाला बनेगा वह कंगाल बनेगा और जो देने वाला बनेगा अल्लाह उसके दिल को ग़िना (मालदारी और बेनियाज़ी) से भर देगा।

अब तुम यह कहोगे कि मौलवी साहिब! देना- देना- देना, ... सदक़े के अन्दर देना, हदिये के अन्दर देना, अपने रिश्तेदारों को देना, ग़रीबों को देना और ग़ैर-मुस्लिम को देना। तो तुम लोगों के ज़ेहन में यह बात आई होगी कि मौलवी साहिब! तुम तो बस देना- देना- देना, की ही बात करते हो, कहीं लेने की जगह भी तो बताओ?

खुदाई ख़ज़ाने, लेने की जगहें

तो मैं लेने की जगह भी बता दूँ। लेने की जगह खुदा के ख़ज़ाने हैं। एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला बन्दों की तरफ़ देने के लिए। अल्लाह से लेने वाला बन और अल्लाह का प्यारा बन और बन्दों को देने वाला बन और अल्लाह की मख़्लूक़ का प्यारा बन।

तू अल्लाह का भी महबूब और प्यारा होगा और बन्दों का भी महबूब होगा। तेरे चेहरे को देखकर लोगों को खुशी होगी कि देखो कैसा भला आदमी है।

तो मेरे दोस्तो! अगर देने का जज़्बा बना और लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही का जज़्बा बना तो बड़ी बरकतें आप अपनी नज़रों से देखोगे, और अगर छीना-झपटी का जज़्बा बना तो उसके अन्दर सिवाय लड़ाई-झगड़े के और कुछ नहीं।

हमदर्दी वाले लोग

मैं एक मिसाल दूँ। हल्वा है हल्वा। पाँच आदमी खाने वाले बैठे और ये पाँचों आदमी एक दूसरे की हमदर्दी करने वाले, तो पाँचों ने

सोचा कि दूसरे खा लें, मैं न खाऊँ। इसलिए कोई नहीं खा रहा है। फिर एक ने हिम्मत की। लुक़्मा उठाया और एक के मुँह में डाला, इस तरह चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला। फिर उसने लुक़्मे उठाए और फिर चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला।

और यह भी जो थे हमदर्दी वाले थे, छीना-झपटी वाले तो थे नहीं। उनके अन्दर भी ईसार और हमदर्दी का जज़्बा था। उन्होंने कहा कि भाई! ख़ुद तो खाते नहीं और हमको खिलाते हो, तो उन लोगों ने भी एक-एक लुक़्मा लेकर उसके मुँह में डाला और इस तरह हल्वा जो था वह ख़त्म हो गया और आपस में मुहब्बतें बढ़ गईं।

अब वे चारों यूँ कहते हैं कि तुम कितने भले आदमी हो कि हमने तो तुमको एक लुक़्मा खिलाया और तुमने हमको दो लुक़्मे खिलाए। तो यह यूँ कहता है कि मेरे से ज़्यादा भले तो तुम हो कि मैंने तुमको दो-दो लुक़्मे खिलाए और तुम चारों ने मिलकर मेरे को चार लुक़्मे खिलाए।

देखो! बाँटने वाला फ़ायदे में रहा, देने वाला नफ़े में रहा। लेकिन यह उस वक़्त होगा जब ईसार (अपनी ज़रूरत पर दूसरे की ज़रूरत को प्राथमिकता देना) और हमदर्दी की वह सिफ़त पैदा हो जाए जो बताई जा रही है।

हिर्स वाले और लालची लोग

इसके मुक़ाबले में वह हल्वा लेकर पाँच आदमी बैठे और ये पाँचों लालची हैं, और हिर्स रखते हैं और छीना-झपटी वाले हैं। ये पाँचों बैठे और पाँचों के ज़ेहन में यह है कि सारा हल्वा मैं अकेला खा जाऊँ। लेकिन खा नहीं सकते इसलिए कि दूसरे भी ऐसे ही लालची बैठे हैं।

अब खाना जो शुरू किया तो थोड़ी देर में हल्वा ख़त्म! अब उनकी बातें सुनो!

उनकी बातें तो मुहब्बत की थीं जिन्होंने ईसार व हमदर्दी का

मामला किया। और इनकी बातें आपस के अन्दर लड़ाई-झगड़े की हैं।

उनमें से एक ने यूँ कहा कि अरे लालची कहीं के! मैंने जितनी देर में एक लुक़्मा खाया तू उतनी देर में तीन लुक़्मे खा गया। और तीन लुक़्मे खाने वाला यूँ कहने लगा कि तेरा जो एक लुक़्मा था वह मेरे छह लुक़्मों के बराबर था। इसलिए तेरे को देर लगी।

कम ज़्यादा तो दोनों को मिला, जो देने वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला, सब को दो-दो लुक़्मे और एक को चार लुक़्मे। और जो छीना-झपटी वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला। लेकिन वहाँ जो कम ज़्यादा मिला वह मुहब्बत के साथ मिला। और यहाँ जो कम ज़्यादा मिला, यह दुश्मनी के साथ मिला।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए इबादत के रास्ते से, और दूसरा हाथ फैला बन्दों को देने के लिए अख़्लाक़ के रास्ते से। अल्लाह से लेकर अल्लाह का महबूब बन, और बन्दों को देकर बन्दों का महबूब बन।

बात समझ में आ गई ना! आप हज़रात के ……

तो देखिए बात अब लम्बी करूँ तो लम्बी होती चली जाएगी। अब यह पाक ज़िन्दगी जो हम सुन रहे हैं, नबियों की सुनी, रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुनी। जो नबियों के ज़माने में अल्लाह पाक ने किया वह क़ियामत तक करते रहेंगे। यह अल्लाह का वायदा है।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ٥ (پاره-٢٩)

नेक काम करने वालों के जैसा जो काम करेगा तो अल्लाह पाक उनके साथ वही मामला करेंगे जो नबियों के साथ किया। ग़ैबी मदद होगी।

और बावजूद इसके अगर भटके हुए लोग सुधार पर नहीं आते तो फिर अल्लाह पाक का मामला उनके साथ क्या होगा? जो क़ौमे

आद के साथ हुआ।

كَذَالِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ٥ (پ-٢٩)

उन मुजरिमों के साथ हमारा वही मामला होगा, ग़ैबी पकड़ का।

दावत की फ़िज़ा कैसे बने?

इसलिए दावत की एक फ़िज़ा बनाई जाए। दावत की फ़िज़ा बनाने में ईमानियात की जड़ लगे और तालीम के हल्क़ों का पानी हो और क़ुरबानी की खाद हो और चारों तरफ़ गुनाहों से बचने की बाढ़ हो। और ज़िक्र, तिलावत, रोना-धोना, बिलबिलाना उसकी फ़िज़ा हो।

जैसे पेड़ एक दम से नहीं उगता बल्कि उसके लिए पहले ज़मीन हमवार की जाती है। जड़ लगाई जाती है और बहुत कुछ किया जाता है।

गर्म आँसू और ठण्डी आहें

तो अगर दीन का पेड़ लगाना है तो पहले दावत की ज़मीन हमवार करो। ईमानियात की जड़ लगाओ। तालीम के हल्क़ों का पानी दो। और इसी तरह क़ुरबानी की खाद दो और गुनाहों से बचने की बाढ़ लगाओ और ज़िक्र व तिलावत और रोना-धोना, बिलबिलाना, तिलमिलाना, गर्म-गर्म आँसुओं का बहाना, ठण्डी-ठण्डी आहों का भरना उसकी फ़िज़ा हो। और इस्लाम के जो रुक्न हैं उनका तना हो और उसके पास रहन-सहन और मामलात का अ़द्ल और इन्साफ़ के साथ चलाने का पेड़ हो और उसके ऊपर अख़्लाक़ के फल हों और अख़्लाक़ के फल के अन्दर इख़्लास का रस हो, तो अब दीन का पेड़ तैयार हो गया। अब दूर-दूर से लोग आयेंगे।

तू तीर आज़मा हम जिगर आज़माएँगे

लेकिन जो भटके हुए लोग होंगे वे क्या करेंगे?

वे नीचे से पत्थर मारेंगे तो पेड़ जो है वह ऊपर से फल देगा। ये

तो नीचे से मारेंगे पत्थर और वह पेड़ ऊपर से फेंकेगा फल।

लेकिन मुझे डर लग रहा है कि ये जितने बिगड़े हुए लोग हैं कहीं उनकी हिम्मतें बढ़ न जाएँ कि यह तो बावले बेवकूफ़ हैं। चलो उनको पत्थर मारते रहो और ये फल देते रहेंगे।

हवा के रुख़ पर थूकने वालों के मुँह पर आता है

सारी दुनिया के भटके और बिगड़े हुए लोग कान खोलकर सुन लें कि हमारा काम तो यह होगा कि तुम मारोगे पत्थर और हम बरसाएँगे फल। लेकिन ज़मीन व आसमान का बनाने वाला अल्लाह यह कहता है कि ओ पत्थर मारने वाले! वह पत्थर तेरे ही ऊपर आकर लौटेगा।

اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ . (پاره- ١١)

तेरी शरारत तेरे ही ऊपर आएगी।

हर चे बर मास्त अज़् मास्त

हमारे ऊपर जो कुछ भी है वह हमारी ही वजह से है।

जो कुछ तुम्हारे ऊपर आएगा वह तुम्हारी करतूत ही तुम पर फेंकी जाएँगी।

इसलिए भटके हुए लोगों को हम अल्लाह से डराते हैं। चाहे सुधरे हुए लोग अख़्लाक़ बरतें लेकिन अल्लाह पाक जब देखेगा कि हद से आगे बढ़ रहे हो तो फिर अल्लाह पाक इतनी ज़ोर की पकड़ करेगा जिसकी कोई हद नहीं।

चार मन्ज़िलें जो मैंने पहले बताईं

मैं अपने बयान को जल्दी ख़त्म करना चाहता हूँ अल्लाह करे कि जल्दी ख़त्म हो जाए। मैंने चार बातें और चार मन्ज़िलें बताईं। माँ का पेट, दुनिया का पेट, क़ब्र का पेट और आख़िरत, लेकिन क़ब्र और आख़िरत जो है वह आँखों से ओझल है।

चार मर्हले

और दुनिया के अन्दर भी चार मर्हले हैं। एक मर्हला तो है दावत के वजूद का। दूसरा मर्हला है तरबियत के अन्तराल का। जब आदमी दावत के काम के ऊपर लग जाएँगे तो एक वक़्फ़ा (अन्तराल) तरबियत का आता है।

सब्र और शुक्र दोनों में इम्तिहान

कभी अल्लाह नेमतें डालते हैं कि बन्दा शुक्रगुज़ारी करता है या नहीं। कभी अल्लाह पाक तकलीफ़ें डालते हैं कि बन्दा सब्र करता है या नहीं।

अगर कुरआन व हदीस और सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी को सामने रखकर उसने तरबियत के वक़्फ़े (अन्तराल) को भी पूरा किया और दावत के काम को बनाया और उसके ऊपर जो उतार-चढ़ाव और हालात आएँ उनमें अल्लाह व रसूल के कहने के मुताबिक़ अपनी तरबियत करता रहा तो उसके बाद के जो दो काम हैं वे अल्लाह के हैं...... अल्लाह की तरफ़ से उनका वायदा है।

देखो मेरे दोस्तो! जब दावत की फ़िज़ा (माहौल) बनेगी तो ईमान का पानी मिलेगा। और जब ईमान का पानी मिलेगा तो ज़ाहिरी आमाल तैयार होंगे। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा, ख़ैरात वग़ैरह।

ये ज़ाहिरी आमाल मक़बूल भी होते हैं ग़ैर-मक़बूल भी होते हैं। इनको मक़बूल कराने का तरीक़ा यह है कि अपने अन्दर ईमानी सिफ़तें पैदा की जाएँ और ईमानी सिफ़तों में तक़्वा (परहेज़गारी) है। अल्लाह पर भरोसा है, सब्र है, शुक्र है। जब ये सिफ़तें पैदा हो जाएँगी तो अल्लाह ख़ुश होंगे। और जब अल्लाह ख़ुश होंगे तो आमाल मक़बूल होंगे और ग़ैबी मदद आएगी।

गुमराह लोगों की तीन क़िस्में

और जब अल्लाह पाक ग़ैबी मदद करेंगे तो भटके हुए लोगों की

तीन क़िस्में बन जायेंगी। एक क़िस्म तो वह होगी जो सुधर जाएगी। दूसरी क़िस्म वह होगी जो सहम जाएगी। और तीसरी क़िस्म वह होगी जो हठधर्मी पर आ जाएगी।

ये तीन क़िस्में भटके हुओं की हो जाएँगी।

क्या से क्या बन गए?

देखिए! अबू जहल का बेटा, हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बन गए। अबू जहल का भाई हज़रत हारिस बिन हिशाम बन गए। अबू सुफ़ियान की बीवी हज़रत हिन्दा बन गईं। रिज़्वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन।

मेरे मोहतरम दोस्तो! एक मजमा तो वह होगा जो हिदायत पर आ जाएगा और एक मजमा वह होगा जो हिदायत पर नहीं आएगा, लेकिन सहम (डर और घबरा) ज़रूर जाएगा।

जैसे बनी नजरान का वफ़्द (डेलीगेशन) रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और उन्होंने देखा कि अगर हमने इनके साथ 'मुबाहला' (विवादित मसले को ख़ुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे पर बद-दुआ़ करना कि जो हक़ पर न हो वह बरबाद हो जाये) कर लिया और क़स्मा-क़स्मी कर ली तो हम सारे बरबाद हो जाएँगे। तो ये वहीं पर सहम गए और जिज़्या (टैक्स) देना तय कर लिया। तो एक क़िस्म सहम जाती है।

अहले बातिल की हैसियत कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल से ज़्यादा कुछ नहीं

लेकिन एक तीसरी क़िस्म हर ज़माने में होती है जो हठधर्मी पर उतर आती है। फ़िरऔन, क़ारून, हामान की तरह। और क़ौमे आ़द की तरह।

जब वह तीसरी क़िस्म हठधर्मी पर उतरती है तो फिर वह अहले

हक़ पर छा जाती है। अहले बातिल और भटके हुए लोग अहले हक़ पर, सुधरने वालों पर और काम करने वालों पर छा जाते हैं।

कैसे छा जाते हैं?

जैसे बारिश का पानी गिरता है तो नालियाँ और नाले चलते हैं तो उसके ऊपर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है, या जैसे सोने-चाँदी के ज़ेवर और ताँबे-पीतल के बरतन आपको बनाने हैं तो आप नीचे आग जलाते हैं तो उसके ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है। तो जैसे आग जलाने से सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है और जैसे बारिश का पानी बरसने से नाले और नालियों के अन्दर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है। इसी तरह अहले बातिल (गुमराह और सही रास्ते से भटके हुए लोग) कूड़े-कबाड़े और मैल-कुचैल की तरह अहले हक़ के ऊपर छा जाएँगे। लेकिन यह कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा और सोना-चाँदी, पीतल-ताँबा और पानी बाक़ी रहेगा।

तो इसी तरह अल्लाह पाक भटके हुओं को कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह फेंक देगा और जो अहले हक़ होंगे वे बाक़ी रहेंगे, हर ज़माने में हमारा अल्लाह यह करता आया है।

फ़िरऔन और उसका लश्कर तबाह

फ़िरऔन का पूरा लश्कर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह बनी इस्राईल और मूसा अ़लैहिस्सलाम पर छा गया। अल्लाह पाक ने उसको फेंक दिया और मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल बच गए।

जालूत नाकाम, तालूत कामयाब

इसी तरह जालूत यह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया, लेकिन अल्लाह ने उसको फेंक दिया और हज़रत तालूत बाक़ी रहे और फिर उनको कैसा नवाज़ा।

अबू जहल और क़ैसर व किस्रा की बरबादी

इसी तरह जंगे बदर का क़िस्सा हुआ, तो अबू जहल का मजमा कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया। लेकिन अल्लाह पाक ने उसे फेंक दिया और दीन व ईमान वाले बाक़ी रहे।

इसी तरह ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के अन्दर बनू नज़ीर के यहूदी और बनू ग़त्फ़ान के लोग ईमान वालों के ऊपर छा गए। कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह, अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया। और हक़ दुनिया के अन्दर बाक़ी रहा।

इसी तरह हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर के अन्दर, क़ैसर व किस्रा (ईरान और रूम के बादशाह) बड़ी भारी ताक़तों वाले, ये सहाबा के ऊपर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गए। अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया और ईमान वाले बाक़ी रहे।

इस ज़माने की मुझे कुछ नहीं कहनी, वक़्त भी नहीं और वक़्त में गुन्जाईश भी नहीं, हाँ! आगे जो होने वाला है जिसकी ख़बर अल्लाह ने दी और रसूल ने दी, वह यह कि दज्जाल अपने हज़ारों लश्करों के साथ ईमान वालों पर और अहले हक़ पर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएगा। लेकिन अल्लाह पाक उसको और उसके लश्कर को उठाकर फेंक देंगे।

याजूज और माजूज की तबाही

फिर आख़िर में आएँगे याजूज और माजूज।

اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ.(پارہ-١٦)

यह याजूज और माजूज जुल्क़रनैन की दीवार को तोड़कर चारों तरफ़ छा जाएँगे। ये लोगों को मार डालेंगे। समुद्र का पानी भी पी जायेंगे और ईमान वालों पर छा जाएँगे और ईमान वाले पहाड़ों के ग़ारों (गुफाओं) में छुप जाएँगे।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝

(پارہ–۱۷)

अल्लाह बताता है कि देखो मैं उन असहायों और बेबसों की कैसे मदद करता हूँ।

अल्लाह पाक याजूज और माजूज की गर्दनों पर फुंसी निकाल कर उन सबको फेंक देगा और ईमान वाले बाहर निकलेंगे, दुआ़ मागेंगे। बारिश बरसेगी और बड़ी बरकत होगी। याजूज और माजूज जो एक मुसीबत बन चुके होंगे उनको अल्लाह तआ़ला दूर कर देंगे और चारों तरफ़ दीन व ईमान और हिदायत फैली होगी।

तो आईन्दा के दज्जाल और याजूज-माजूज जब कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएँगे तो अल्लाह उन्हें फेंक देगा। जो अल्लाह पहले कर चुका है वह अल्लाह बाद में भी करेगा। और वह अल्लाह उसी ताक़त के साथ आज भी मौजूद है।

और यह मिसाल मैं नहीं दे रहा हूँ ज़मीन आसमान का पैदा करने वाला अल्लाह दे रहा है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! ईमान और हिदायत का बीज जो अल्लाह ने 'आ़लमे अरवाह' (रूहों की दुनिया) में हर इनसान के अन्दर डाला है। यहाँ तक कि अबू जहल और फ़िरऔ़न के दिल में भी डाला है, लेकिन वह बीज उगकर पेड़ कब बनता है? जब आसमानी 'वह्य' (अल्लाह के पैग़ाम) का पानी मिले। आसमानी 'वह्य' का पानी मिले तो पूरा दीन का पेड़ बनेगा।

दीन के पेड़ को ज़ाया होने से बचाएँ

और इस दीन के पेड़ को ज़ाया, तबाह और बरबाद करने वाली कुछ ख़राबियाँ होती हैं।

एक तो दुनिया-तलबी (यानी दुनिया के पीछे भागना) दूसरे

ख़ुदग़र्ज़ी (स्वार्थी होना) तीसरे हसद, चौथे तकब्बुर, पाँचवे रिया और दिखावा, और न मालूम क्या-क्या ख़राबियाँ होती हैं।

ये सारी ख़राबियाँ दीन के पेड़ को तबाह और बरबाद कर देती हैं। तो इसके लिए इश्क़े-इलाही (अल्लाह से मुहब्बत और ताल्लुक़) की आग लगनी चाहिए जो इन सारी ख़राबियों को जलाकर ख़ाक कर दे।

आसमानी पैग़ाम के पानी से तो बीज उगकर पेड़ बनेगा और उस पेड़ को ज़ाया और बरबाद करने वाली जो ख़राबियाँ हैं, दुनिया-तलबी, ख़ुदग़र्ज़ी, तकब्बुर, हसद, एक-दूसरे को उखाड़ना-पछाड़ना वग़ैरह इसको जलाने के लिए इश्क़े-इलाही की आग दिल के अन्दर लगेगी तो ये सारी चीज़ें जलेंगी।

अल्लाह पाक कई जगहों पर आग और पानी की मिसाल देते हैं। क़ुरआन पाक के पहले पारे के अन्दर भी आग और पानी की मिसाल है और जो मैं यह बता रहा हूँ इसके अन्दर भी अल्लाह पाक आग और पानी की मिसाल देते हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह भटके हुए लोगों को अल्लाह तआला फेंक देंगे और सुधरे हुए लोग दुनिया के अन्दर बाक़ी रहेंगे। और पूरी दुनिया के अन्दर अमन व अमान आ सकता है, करने वाली ज़ात अल्लाह की है।

आग और पानी की मिसाल

अब मैं वह आयते करीमा आपके सामने पढ़ दूँ जिसको मैंने बहुत तफ़सील से बयान किया:

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا (پاره-١٣)

यह तो अल्लाह पाक ने पानी की मिसाल दी। नालियाँ और नाले बहे और कूड़ा-कबाड़ा छा गया। आगे अल्लाह पाक आग की मिसाल देते हैं:

وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ، (پارہ–١٣)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि पानी के ऊपर जो कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है और जो तुम आग जलाते हो सोने-चाँदी के ज़ेवर और दूसरे सामान बनाने के लिए, तो सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है।

كَذَالِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ، (پارہ–١٣)

अल्लाह पाक इसी तरह हक़ और बातिल की मिसाल देते हैं।

हक़ जो है वह तो पानी और सोने-चाँदी की तरह है। और बातिल जो है वह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह है।

फिर आगे अल्लाह पाक क्या करते हैं?

فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ا (پارہ–١٣)

यह कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल जो है, यह फेंक दिया जाता है।

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ.

और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस पानी और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस सोना-चाँदी ही बाक़ी रहता है।

كَذَالِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ.(پارہ–١٣)

अल्लाह तआ़ला इसी तरह मिसाल दे-देकर समझाता है।

और दोस्तो! एक बात ज़रा मुझे और कहनी है। वह यह कि नीचे ख़ालिस पानी हो और ख़ालिस सोना और चाँदी हो तो ऊपर का कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा। लेकिन अगर नीचे के पानी में भी कूड़ा-कबाड़ मिला हुआ है और नीचे के सोना-चाँदी में भी अगर मैल-कुचैल मिला हुआ है तो यह अच्छी निशानी नहीं है।

इसलिए दीन का काम करने वालों को चाहिए कि दीन के काम के साथ कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल न मिला हो। यानी दुनिया-तलबी (दुनिया कमाने का लालच) और ख़ुद-ग़र्ज़ी न हो। अगर दुनिया-तलबी

व ख़ुद-गर्ज़ी हो तो गोया ख़ालिस पानी और ख़ालिस सोने-चाँदी के अन्दर कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल मिल गया और इसके लिए ज़रूरी है एक तो अल्लाह पाक से रो-रोकर दुआएँ माँगना और एक अपनी निगरानी करना। हर आदमी अपनी निगरानी करे और क़ुरबानियों के अन्दर आगे बढ़ जाए।

हर आदमी दावत के काम को अपना काम बनाए

और यह नीयत कर लो कि जब तक दुनिया के अन्दर ज़िन्दा रहना है हम दावत के काम को अपना काम बनाएँगे। इस नुक्ते को सामने रखकर हमें काम करना है। मर्दों को भी करना है, औरतों को भी करना है और बच्चों को भी करना है।

क़ुरबानी देने से ही दीन की फ़िज़ा बनेगी

जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने ज़माने का यह मजमा तैयार कर दिया है और बहुत बड़ी क़ुरबानियाँ दे-देकर उन्होंने काम किया है और पूरे आ़लम में उसकी फ़िज़ाएँ बनी हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु किस क़द्र देख-भाल करते थे और बेचैन व फ़िक्रमन्द (चिन्तित) रहते थे, आज भी अल्लाह का फ़ज़्ल है, उसका करम है, उसका एहसान है कि बहुत-से घराने अल्लाह पाक ने ऐसे खड़े कर दिये जो अल्लाह के बन्दों के लिए फ़िक्रमन्द रहते हैं। और हर तरह की क़ुरबानियाँ देते हैं।

दीनदार और समझदार बीवी

एक आदमी की साल भर की तश्कील हुई। वह तैयार हो गया। बीवी से जाकर मश्विरा किया, बीवी बड़ी दीनदार थी, बीवी ने कहा तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ बच्चों की तरबियत और उनकी देखभाल मैं करती रहूँगी। इस तरीक़े से अल्लाह के रास्ते में जाना मेरे लिए तो मुश्किल है। तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ। तुम अल्लाह के

दीन का काम करोगे तो अल्लाह पाक मुझे भी सवाब देगा।

शौहर अल्लाह के रास्ते में चले गए और बीवी अपने बच्चों की ख़ैर-ख़बर लेती रही। ईद का दिन आया तो मौहल्ले के जो बच्चे थे उस तब्लीग़ में गये हुए आदमी के बच्चों को चिढ़ाने लगे और कहने लगे कि तुम्हारे अब्बा तो जमाअ़त में गए और हमारे अब्बा हमारे पास हैं। और हमारी तो ईद है और देखो कैसे अच्छे-अच्छे कपड़े और देखो कैसा अच्छा-अच्छा खाना। हम तो घूमने-फिरने जाएँगे। तुम्हें कौन ले जाएगा?

ये छोटे बच्चे थे रोने लगे। हिचकियाँ मार-मारकर रोए और रोते-रोते माँ के पास आए। ज़िन्दगी में यह पहली ईद थी कि बच्चों के अब्बा जमाअ़त में चले गए। अब ये बच्चे माँ को लिपट गए और लिपट कर ख़ूब रोए और माँ भी रोई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ में कुरबानी और भलाई की दुआ़

मेरे दोस्तो! यह दीन कुरबानी से चला है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी इस दीन के लिए ख़ूब-ख़ूब कुरबानियाँ दी हैं।

ताइफ़ (मक्का शरीफ़ के क़रीब यह एक शहर है) के अन्दर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इतने पत्थर पड़े कि आप बेहोश होकर गिर पड़े। ज़ैद इब्ने हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु साथ हैं। कन्धे पर उठाकर उतबा के बाग़ में ले आए और पानी का छिड़काव किया तब जाकर आँख खुली। फ़रिश्ते आए और यूँ कहा कि अगर आप कहो तो हम दोनों पहाड़ों को मिलाकर उन्हें तबाह और ग़ारत कर दें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं! अगर ये नहीं मानते तो हो सकता है कि उनकी औलाद माने। और आपने फ़रमाया कि हमें उनका बेड़ा ग़र्क़ नहीं करना है। हमें उनके बेड़े पार करने हैं। ये नहीं मानते तो इनकी औलाद मानेगी।

अब उनकी औलाद में कौन था? वह क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ वाले थे जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाई।

हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी

सिर्फ़ ईमान ही नहीं लाए बल्कि दीन के दाई बने

अब क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ की नस्ल चली और उसमें हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि पैदा हुए और उन्होंने हिल और सिन्ध का सफ़र किया। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी लोगों ने देखी और देखकर वे सारे ईमान वाले बने। और उनकी नस्ल चली।

हमारे मुल्क के जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं और हमारे पड़ोस के दो मुल्कों के अन्दर जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं, इसके अन्दर असर है हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और उनकी जमाअ़त की कुरबानी का। बीच में और भी बहुत-से दाई (दीन की दावत देने वाले) आए मैं उनका इनकार नहीं करता।

और यह मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी जो थे यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ की कुरबानी पर बाद में पैदा हुए। तो हम लोगों को जितना भी ईमान मिला है यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ वाली कुरबानी पर मिला है।

बच्चे हंस पड़े

बहरहाल! मैं आपको वह वाकिआ़ सुना रहा था कि बच्चे और माँ ख़ूब लिपटकर रोये। जब रोने से फ़ारिग़ हो गए तो माँ ने बच्चों को बैठाया और माँ ने यूँ कहा देखो बच्चो! मौहल्ले के बच्चों की ईद आज है और कल बासी, परसों ख़त्म। और हमारी ईद जो जन्नत में आएगी वह हमेशा ताज़ी रहेगी और बढ़ती रहेगी। और जन्नत में जाकर क्या-क्या मिलेगा वे सारी आयतें पढ़कर सुनाईं। जन्नत के

अंगूर कैसे? जन्नत की खजूर कैसी? जन्नत का दूध कैसा? वहाँ का शहद कैसा? ये सारी बातें सुनकर बच्चे हंस पड़े और बच्चों ने कहा बस अम्माँ हमारा तो काम बन गया। हमारी तो ऐसी ईद होगी जो कभी बासी ही नहीं होगी।

ये बच्चे बाहर गए। फिर वे बच्चे आए। उन्होंने चिढ़ाया। इन बच्चों ने कहा बैठो, सारे बच्चे बैठ गए।

बच्चे भी दीन के दाई

उन्होंने यूँ कहा कि देखो! तुम्हारी ईद तो कल बासी और परसों तो ख़त्म। और हमने अपनी माँ से सुना है कि हम को जो जन्नत की ईद मिलेगी वह बासी नहीं होगी, वह हमेशा ताज़ी रहेगी। और भी जन्नत की सारी नेमतें उन बच्चों ने गिनानी शुरू कीं तो वे सारे बच्चे ख़ामोशी से बैठकर सुनते रहे।

तो एक तरफ़ अब्बा ईद के दिन दीन की दावत में लगे हुए। यह बीवी भी दीन की ख़िदमतगार और बच्चे भी दावत दे रहे हैं...... यह मन्ज़र हमें पूरे आ़लम के अन्दर क़ायम करना है। करने वाले अल्लाह हैं हमें हाथ-पैर मारने की कोशिश करनी है।

बहरहाल! उन बच्चों के अब्बा जो थे वह जौनसे इलाक़े में फिर रहे थे उस इलाक़े वाले तब्लीग़ के काम को अच्छा नहीं समझते थे। उनके ज़ेहन में किसी ने यह डाल दिया था कि ये तब्लीग़ का काम करने वाले दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ते। और तब्लीग़ का काम करने वाले जो हैं, उनके दिलों में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एहतिराम (सम्मान और अदब) नहीं, और ये औलिया-अल्लाह को नहीं मानते। यह उनके दिमाग़ में किसी ने डाल दिया था, तो गाँव वालों ने जमाअ़त के लोगों को गाँव में ठहरने नहीं दिया। उन लोगों ने गाँव से बाहर पेड़ों के नीचे बसेरा किया।

दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई

गाँव वाले भी बेचारे माज़ूर हैं मजबूर हैं, वे बजाय उनकी बात

सुनने और मानने के उनकी पिटाई करते हैं...... मारने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार रहे हैं और मार खाने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार खा रहे हैं। असल मुजरिम तो वे हैं जिन्होंने उनको ग़लत-फ़हमी के अन्दर डाला।

और ऐसे लोग जब लग जाते हैं तो वे काम भी ख़ूब करते हैं।

पासबाँ मिल गए काबे को सनम-ख़ाने से

लग गया एक सरफिरा और बिल्कुल बिगड़ा हुआ जमाअ़त में। अल्लाह ने उसे क़बूल कर लिया और तौफ़ीक़ बख़्शी। एक जगह पर वह जमाअ़त लेकर गया। गाँव के लोगों को किसी ने ग़लत-फ़हमी में डाल रखा था। जमाअ़त के पहुँचने से एक शोर मच गया। निकालो, मारो, पीटो। फिर गाँव वालों ने जमाअ़त को निकालने के लिए एक शराबी को भेजा, अब वह आया और गालियाँ देने लगा। बुरा-भला कहा और कहा कि निकल जाओ, हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वालो!

अब यह जमाअ़त का जो अमीर था, यह भी किसी ज़माने में ऐसा ही सरफिरा रह चुका था। उसने भी ज़ोर से यूँ कहा, अरे हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वाले को तू सिर्फ़ गालियाँ देता है, नामर्द कहीं के! हिजड़े! शर्म नहीं आती, अरे उनको तो गोलियों से भून देना चाहिए।

इसलिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान? फिर उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने अक़्दस के बारे में बातें बतानी शुरू कीं और ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से कहीं। तो उस शराबी का मुँह उधर फिर गया। आया, बैठा और बैठकर बात सुनी, और उसने कहा हमको बहुत धोखे में रखा गया।

इसके बाद वह बाहर निकला और आस्तीनें चढ़ाईं और गाँव के लोगों से कहा कि चलो सारे के सारे उनकी बात सुनो, नहीं तो अब

तुमको मारूँगा।

सारे लोग आए और बात सुनी। आज. वहाँ से न जाने कितनी जमाअतें निकल रही हैं। यह हमारे सरफिरे जो होते हैं ना! तो यह भी ज़रा मौके़-महल पर थोड़े खुरदरे बनते हैं लेकिन मैं उनकी हिम्मत नहीं बढ़ाता, इसलिए कि हर जगह खुरदुरापन नहीं चलता। खुरदुरेपन से कहीं-कहीं मामला ख़राब हो जाता है। इसलिए सख़्ती की इजाज़त नहीं है। नर्मी के साथ जितना काम हो उतना अच्छा है। और सख़्ती करना हर एक का काम भी नहीं है।

हज़रत उमर बहुत रोये

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़्ती की नक़ल हर आदमी न उतारे क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अन्दर सख़्ती के साथ तक़्वा (परहेज़गारी और अल्लाह का डर) भी था।

ताजिरों (व्यापारियों) का एक क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा में आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को फ़िक्र हुई कि कहीं चोरी न हो जाए। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु खुद पहरेदार बन गए और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ को साथ में ले गए और तहज्जुद की नमाज़ भी दोनों हज़रात ने वहीं पढ़ी।

क़ाफ़िले से बार-बार एक बच्चे के रोने की आवाज़ आती थी। हज़रत उमर रज़ि० जाकर उसकी माँ से फ़रमाते थे कि बच्चे को क्यों रुलाती है? रात के आख़िरी हिस्से में फिर उस बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जाकर फ़रमाया कि तू अच्छी माँ नहीं है, तेरे लड़के को रात भर क़रार नहीं आया। वह औ़रत बोली ऐ खुदा के बन्दे! तूने मुझे परेशान कर दिया। बात यह है कि मैं इसका दूध छुड़ाना चाहती हूँ मगर वह अभी छोड़ता नहीं। इसलिए बेक़रार रहता है। आपने कहा कि इसका दूध इतनी जल्दी क्यों छुड़ाती है? औ़रत ने कहा उमर बिन ख़त्ताब वज़ीफ़ा उसी बच्चे का

मुक़र्रर करते हैं जो दूध छोड़ चुका होता है। तो मैं इस बच्चे का दूध छुड़ा रही हूँ ताकि इसका भी वज़ीफ़ा मुझको मिलने लगे और हमारा ख़र्च पूरा हो।

जब यह बात हज़रत उमर को मालूम हुई तो हज़रत उमर बहुत रोये और यूँ कहा कि उमर! न मालूम तेरी हुकूमत के अन्दर कितने बच्चों को उनकी माएँ रुला रही होंगी। और क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने जब तेरी पेशी होगी तो बच्चों के रोने का तू क्या जवाब देगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने पूरा क़ियामत का मन्ज़र था। वह बहुत रोये।

इनसान का अ़मल उसके गले का हार

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने ये सारी आयतें थीं:

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ٥ (پاره - ١٥)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हर इनसान का भला या बुरा अ़मल वह उसके गले का हार है। और क़ियामत के दिन रजिस्टर खुला हुआ हर आदमी के सामने आयेगा। और भला व बुरा उसके अन्दर लिखा होगा।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ، كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ٥ (پاره-١٥)

अपना रजिस्टर तू ख़ुद पढ़ ले और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

तेरे रजिस्टर में जुर्म की धाराएँ क्या हैं, वह तो देख ले। और किस जुर्म की क्या सज़ा है वह क़ुरआन में देख ले जो अ़र्शे-इलाही के पास लटका हुआ है। और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

आदमी हैरान हो जाएगा कि की हुई हर छोटी-बड़ी चीज़ वहाँ

सामने आ जाएगी। और आदमी कहेगाः

مَالِ هٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا وَوَجَدُ وْامَاعَمِلُوْا حَاضِرًا، وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ٥ (پاره-١٥)

क्या हो गया इस रजिस्टर को कि छोटी-बड़ी कोई चीज़ नहीं छोड़ी। और जो कुछ किया वह सारा सामने आ गया। और अल्लाह पाक किसी के ऊपर ज़ुल्म नहीं करता।

ये सारी आयतें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने थीं। वह हिचकियाँ मार-मारकर रोये। फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई उसमें भी हिचकियाँ बंधी हुई थीं।

हज़रत उमर का फ़रमान

जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अपने काम करने वालों को जमा करके यूँ कहा कि न मालूम कितने बच्चे रो रहे होंगे, बच्चों का वज़ीफ़ा पैदा होते ही मुक़र्रर कर दिया जाए। और हर जगह इस तरह के फ़रमान के पत्र लिख दिए जाएँ ताकि कोई माँ अपने बच्चे को रुलाए नहीं। तो हज़रत उमर की सख़्ती की नक़ल तो लोग उतारते हैं लेकिन उनके तक़्वे और परहेज़गारी की नक़ल नहीं उतारते।

इसलिए मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! इस तक़्वा को हमें अपने अ़न्दर पैदा करना है और जैसे वह अल्लाह के रास्ते में जाने वाला, उसकी बीवी और बच्चे सबने कुरबानियाँ दीं और उनकी कुरबानी के ऊपर पूरा इलाक़ा काम के ऊपर खड़ा हो गया, हम और आप भी चारों तरफ़ और पूरे आ़लम में फैल जाएँ और हर तरफ़ काम करें।

मेहनत चारों तरफ़

हम एक तरफ़ मक़ामी काम भी करें। घर वालों को नमाज़ की ताकीद करें, हमारी अपनी नमाज़ भी कभी ज़ाया न होने पाए। ख़ूब ख़ुशू व ख़ुज़ू (ध्यान और आ़जिज़ी) वाली नमाज़ें हम पढ़ रहे हों, घरों

के अन्दर तालीम के हल्क़े हों और ढाई घन्टे मस्जिद को आबाद करने के लिए दे रहे हों। गश्त भी कर रहे हों और रातों को उठकर ख़ुदा के सामने रो भी रहे हों।

जमाअ़तों में फिरकर नबियों वाला ग़म पैदा करें

मेरे मोहतरम दोस्तो! चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

जमकर बैठें और मजमे को जमाने का सवाब लें

अब आप हज़रात से मेरी गुज़ारिश है कि जैसे जमकर आप हज़रात ने बयान सुना, अब हमें तश्कील करनी है। इस तश्कील के अन्दर भी आप हज़रात को जमकर बैठना है। अगर आप जमकर बैठे और आपके बैठने की वजह से तश्कील क़ाबू में आ गई तो इन्शा-अल्लाह आपको इसका सवाब मिलेगा। और उसे क़ियामत के दिन आप अपनी आँखों से देख लेंगे।

जमकर बैठो। मजमे के जमाने का सवाब लो। और उठकर मजमे को उखाड़ने वाले न बनो।

मस्जिद के बाहर एक बहुत बड़ा मजमा हमारे प्यारे दोस्तों का है। न मालूम उनको कितनी ठंडक लग रही होगी। अल्लाह पाक उनकी इस क़ुरबानी को क़बूल करे। वहाँ पर भी तश्कील करने वाले काग़ज़-क़लम लेकर पहुँच जाएँ। और लोग खड़े हो-होकर चार-चार

महीने के नाम लिखवाएँ छह-छह महीने के, आठ-आठ महीने के, साल-साल के, डेढ़-डेढ़ साल के नाम लिखवाएँ।

जो लोग पहले नाम लिखवा चुके हैं और उनकी तरतीब भी बन चुकी वे लोग मेहरबानी करके नाम न लिखवाएँ। इस वक़्त तो वे लोग अपना नाम लिखवाएँ जो नये हैं।

मेरी दिली दुआएँ

जो भी इस वक़्त में नाम लिखवाए जो भी अपने वक़्त को बढ़ाए मेरा जी चाहता है कि उनके लिए हम दुआ करें कि ऐ अल्लाह! उनके जान व माल में, उनके ईमान में, उनकी आबरू में, उनके घर में, उनके कारोबार में, उनकी हर लाईन में अल्लाह पाक बरकत नसीब फ़रमाए। और अल्लाह पाक उनकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत (चैन-सुकून) के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरा फ़रमाए।

यह दुआ उन लोगों के लिए है जो आए थे सिर्फ़ बयान सुनने और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। या जो आया था एक चिल्ले के लिए और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। अब खड़े हो-होकर अपने नाम लिखवाओ। अल्लाह क़बूल करे। चारों तरफ़ से आवाज़ें आएँ और चारों तरफ़ से नाम आएँ।

और तुम लोग सारे के सारे जमकर बैठे रहो, जी चाहता है कि तुम्हारे लिए भी यह दुआ करूँ कि अल्लाह पाक तुम्हें बैठने का बहुत बड़ा बदला दुनिया व आख़िरत में नसीब फ़रमाए। क्योंकि तुमने हम पर रहम किया...... और बोलो भाई...... नया नाम चाहिए और अगर पुराना नाम हो तो वक़्त बढ़ाकर बोलें।

चार-चार महीने के ढेर लगा दो। ताकि पूरे मुल्क में पैदल जमाअ़तें बनकर जा सकें इन्शा-अल्लाह...... अल्लाह पाक कामिल और पूरी क़ुदरत वाला है।

लोगों को कलिमे भी याद नहीं। नमाज़ भी याद नहीं। ख़ुशनसीबी होगी, बोलते रहो भाई।

दुआ

اَللّٰهُ لَآاِلٰهَ اِلَّاهُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، الٓمّٓ ، اَللّٰهُ لَآاِلٰهَ اِلَّاهُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ، يَآاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ٥ رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ٥ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ، اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنَّا، اَللّٰهُمَّ اِنَّانَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مِنْهُ مَالَمْ نَعْلَمْ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَاسَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَااسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ٥

ऐ अल्लाह! तू हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारी तमाम ग़लतियों से दरगुज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम तेरे क़ुसूरवार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! हम तेरे ख़तावार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! तू हमारी ख़ताओं को माफ कर दे।

ऐ अल्लाह! यह पूरा का पूरा मजमा तेरे सामने हाथ फैलाए बैठा है। ऐ अल्लाह! इसके हाथ फैलाने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू रुश्द व हिदायत के और रहमतों के दरवाज़े खोल दे। मुसीबतों, बलाओं, परेशानियों और गुमराही व बेदीनी के दरवाज़ों को बन्द फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ज़ल्ज़लों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ख़ून बहाने से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हवा के तूफ़ान से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारा बन जा और हमें अपना बना ले।

ऐ अल्लाह! हम सब का अपने-अपने वक़्त पर ईमान पर ख़ात्मा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम कमज़ोर हैं, हम ज़ईफ़ हैं,

ऐ अल्लाह! तू ज़ईफ़ों का रब है।

ऐ अल्लाह! तू हमारे हाल पर रहम व करम का मामला फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आ़लम के अन्दर दीन के फैलने की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तेरे करोड़ों बन्दे बग़ैर ईमान के जी रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तू ऐसी ग़ैबी सूरतें पैदा फ़रमा कि जो ईमान वाले नहीं हैं वे ईमान वाले बन जाएँ।

ऐ अल्लाह! हम लोगों के ईमान के अन्दर तू ताक़त पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! मज़बूती पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की क़ौमों की हिदायत के फ़ैसले फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहूम (1) को सेहत व ताक़त और हिम्मत व आ़फ़ियत अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू बीमारों को मुकम्मल शिफ़ा अ़ता फ़रमा और जल्द अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! परेशान हाल की परेशानियों को दूर फ़रमा।

ऐ अल्लाह! क़र्ज़दारों के क़र्ज़ों की अदायगी की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

---

(1) हज़रत का इन्तिकाल हो चुका है। अल्लाह तआ़ला जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम से नवाज़े। आमीन

ऐ अल्लाह! जो लड़के और लड़कियाँ शादी के क़ाबिल हों, उनके लिए बेहतरीन जोड़ा तू अपने करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने ज़बान से दुआओं के लिए कहा हो या ख़त लिखा हो या इसके तलबगार रहे, ऐ अल्लाह! तू उन सब की और हम सबकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरी फ़रमा। और उन सब की और हम सब की दुनिया व आख़िरत की परेशानियों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर, तू ख़त्म फ़रमा। और इसकी क़द्रदानी तू नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आलम के अन्दर इस वक़्त जो हालात हैं, ऐ अल्लाह! बड़े परेशान करने वाले हालात हैं। ऐ अल्लाह! तू ही उन परेशानियों को दूर कर सकता है।

ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िज़ा पूरे आलम के अन्दर बनने लगे। ईमान की फ़िज़ा बनने लगे। ईमान की हवाएँ चलने लगें। ऐ अल्लाह! हिदायत क़ायम होने लगे। ऐ अल्लाह! तू हिदायत की सूरतें पैदा फ़रमा।

उसके लिए जो हठधर्मी करने वाले और जो ज़िद्दी क़िस्म के लोग हैं, जो इसमें रोड़ा बनते हैं, रुकावट बनते हैं और उनके दिलों पर मोहरें लगी हुई हैं। ऐ अल्लाह! तू उनके सरग़नों (बड़ों) को और उनके जत्थों को और इसी तरह उनके अड्डों को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू क़ादिरे मुतलक़ है।

ऐ अल्लाह! तू बातिल को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हक़ को पूरे आलम के अन्दर चालू फ़रमा।

ऐ अल्लाह! बातिल की आवाज़ों को बे-असर फ़रमा। और हक़ वाली आवाज़ असर डालने वाली (प्रभावकारी) फ़रमा।

ऐ अल्लाह! यह पूरा मजमा दो दिन से मुस्तक़िल तेरे दीन की बातों को सुन रहा है। और शौक़ से सुन रहा है।

और सुनता ही नहीं बल्कि अमल के लिए भी खड़ा हो रहा है।

ऐ अल्लाह! इनके सुनने और बैठने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! न मालूम कौन तुझे कितना पसन्द आ चुका हो, इसको हम नहीं जानते। ऐ अल्लाह! तू अपनी नाराज़गी से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

अपनी रज़ामन्दी हमें नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारा कोई ठिकाना नहीं है।

ऐ अल्लाह! आज तक तेरे नाराज़ करने वाले काम हमसे जितने भी हुए हैं तू अपने फ़ज़्ल से उन्हें माफ़ फ़रमा।

और तेरे राज़ी करने वाले काम तेरी मेहरबानी से जितने भी हुए हैं, तू अपने फ़ज़्ल व करम से क़बूल फ़रमा।

और आगे भी ऐ अल्लाह पूरी ज़िन्दगी तेरे को राज़ी करने वाले कामों की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा।

और तेरे को नाराज़ करने वाले कामों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम सब के बाप-दादों की, नाना-नीनी और दादा-दादी और जितनी भी ऊपर की पुश्तें इस्लाम की हालत के अन्दर गुज़र चुकी हैं, ऐ अल्लाह! तू उनको क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा। और उनकी क़ब्रों को नूर से रोशन फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी क़ियामत तक आने वाली नस्लों को दीन की दावत के लिए क़बूल फ़रमा।

हमें नमाज़ों को उनके आदाब के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की मुहब्बत को हमारे दिलों से आ़फ़ियत के साथ निकाल दे। और ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िक्र हमारे दिलों के अन्दर आ़फ़ियत के साथ पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! नाहक़ की तरफ़दारी और हक़-तल्फ़ी से ऐ अल्लाह!

तू हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू दुश्मनों के हम पर हंसने से हमारी पूरी-पूरी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमें अपनी रहमत के दामन में ले ले।

ऐ अल्लाह! हम तेरे कमज़ोर बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! जो कुछ हमें माँगना चाहिए था, वह हम माँग नहीं सके, बग़ैर माँगे तू हमें अपने फ़ज़्ल व करम से इनायत फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ बारिश की ज़रूरत है, वहाँ पर रहमत की बारिश अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ लोग परेशान हैं, मुसीबत में हैं, ऐ अल्लाह! उनकी मुसीबतों को अपने लुत्फ़ व करम से तू दूर फ़रमा।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ٥ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِ نَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَ سَلِّمْ، سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउ़ल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व बारिक् व सल्लिम्। सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल् इ़ज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून। व सलामुन् अ़लल् मुर्सलीन। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

तक़रीर (2)

यह तक़रीर 2 नवम्बर 1990 ई० को बंगले वाली मस्जिद देहली में हुई।

जो अल्लाह से डरने वाले और अपने परवर्दिगार से डरने वाले हैं, उनकी जमाअ़तें बन-बनकर जन्नत की तरफ़ चलेंगी। और जन्नत के दरवाज़े पहले से उन्हें खुले मिलेंगे और पहरेदार फ़रिश्ते यूँ कहेंगे:

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خَالِدِيْنَ ٥ (پاره– ٢۴)

सलाम पहुँचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो। सो दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा-हमेश रहने के लिए।

नींद तो पूरी हो जाएगी क़ब्र के अन्दर, नाश्ता मिलेगा अ़र्श के साए के नीचे, पानी मिलेगा हौज़े-कौसर का। और दोपहर का खाना मिलेगा जन्नत में, और रात वहाँ आएगी नहीं। अब हमेशा के लिए मज़े उड़ाओ क्योंकि तुमने अल्लाह को रब माना। अल्लाह ज़रूरतें पूरी करते थे वह तुमने अल्लाह की मेहरबानी समझी। और ज़मीन व आसमान देखकर तुमने अल्लाह को पहचाना। हर हाल में तुमने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपने बदन को तुमने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (2)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ o

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ نَحۡمَدُهٗ وَنَسۡتَعِيۡنُهٗ وَنَسۡتَغۡفِرُهٗ وَنُؤۡمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيۡهِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنۡ شُرُوۡرِ اَنۡفُسِنَا وَمِنۡ سَيِّئَاتِ اَعۡمَالِنَا، مَنۡ يَّهۡدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسۡلِيۡمًا كَثِيۡرًا كَثِيۡرًا. اَمَّا بَعۡدُ!

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दिलों के अन्दर अल्लाह की रबूबियत (यानी उसके रब होने) का यक़ीन अगर उतर जाए तो सारे दीन पर चलना आसान हो, और दुनिया के अन्दर की बलाएँ भी अल्लाह दूर फ़रमाए। आख़िरत की तकलीफ़ों से भी अल्लाह महफ़ूज़ रखे। और दुनिया के अन्दर भी अल्लाह नेमतों के दरवाज़े खोले और आख़िरत के अन्दर भी अल्लाह जन्नत इनायत फ़रमाए।

अ़हदे अलस्त

'रूहों के आ़लम' के अन्दर सारे लोगों को जमा करके अल्लाह ने पूछा थाः "अलस्तु बि-रब्बिकुम्" (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? तुम्हारा पालने वाला नहीं हूँ?) तो सब की रूहों ने कहा कि तू हमारा रब है।

अबू जहल और फ़िरऔ़न की रूहों ने भी यह कहा। ईमान वालों

की रूहों ने भी यह कहा। इसलिए कि वहाँ पर अल्लाह ही थे। इम्तिहान की कोई चीज़ नहीं थी।

यहाँ इम्तिहान है। जो ज़रूरतें पूरी करने वाले अल्लाह हैं वह दिखाई नहीं देते और जहाँ से ज़रूरतें पूरी होती दिखाई देती हैं हक़ीक़त में वहाँ से ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं। करने वाले अल्लाह हैं, दिखाई देता है असबाब (संसाधनों) में।

ये असबाब यहाँ पर इम्तिहान के दर्जे में हैं। वहाँ पर यह इम्तिहान तो था नहीं। वहाँ पर तो सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह थे। तो सब की रूहों ने कह दिया कि अल्लाह आप हमारे रब हैं।

قَالُوْا بَلٰى (پارہ— ۹)

सबने कहा बेशक आप हमारे रब हैं।

और इसी तरह जब क़ियामत का दिन आएगा तो ये जितने ज़ाहिरी असबाब और साधन हैं, ये वहाँ पर नहीं होंगे।

दुकान, खेत, घर-बार, सोना-चाँदी, रुपये-पैसे वहाँ नहीं होगा। वहाँ पर अल्लाह ही अल्लाह होंगे और उनका ग़ैबी निज़ाम।

अफ़सोस और ना-उम्मीदी

जो आज ग़ैब (आँखों से ओझल) है वह सब खुला हुआ सामने आएगा। उस वक़्त में कट्टर से कट्टर बेईमान और काफ़िर भी अल्लाह को रब कहेगा।

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحاً اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ○ (پارہ— ۱۲)

यह काफ़िर कहेगाः

"ऐ हमारे रब! हमारी आँख खुल गई। हमारे कान खुल गए। अब हमको दुनिया में वापस कर दे, अब हम अच्छे काम करेंगे। हमें यक़ीन आ गया"।

अब हमारे सामने बात आ गई कि अच्छे आमाल पर क्या मिलता

है और बुरे आमाल पर क्या बरदाश्त करना पड़ता है। वह हमारे सामने आ गया। दुनिया के अन्दर हमारे कान खुले हुए नहीं थे। और हमारी आँखें खुली हुई नहीं थीं। इस बिना पर हमको दुनिया के अन्दर दिखाई देता था चीज़ों में, और अल्लाह ने रखा था अ़मलों के अन्दर।

नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ

यह अल्लाह की तरफ़ से इम्तिहान है कि अल्लाह ने रखा है अ़मलों में और दिखाते हैं चीज़ों में, और मुकल्लफ़ (पाबन्द) बनाया है इस बात का कि जहाँ तुम्हें नज़र आता है वहाँ से यक़ीन को हटाओ। और जहाँ की हम ख़बर दे रहे हैं उसपर यक़ीन लाओ। नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ और ख़बर वाले रास्ते पर यक़ीन को लाओ।

नज़र तो आता है मुल्क व माल और रुपये-पैसे से ज़िन्दगियों का बनना और ख़बर है ज़िन्दगियों में बनने की ईमान और नेक आमाल पर।

नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा व ख़ैरात जो भी अ़मल हम करेंगे उस पर ज़िन्दगी बनेगी, यह ख़बर है।

अब जिन अ़मलों में ज़िन्दगी बनने की ख़बर है। ज़िन्दगी का बनना उसके अन्दर छुपा दिया।

आमाल के ख़राब होने में ज़िन्दगियों का उजड़ना यह भी छुपा हुआ है और आमाल के अच्छे होने में ज़िन्दगियों का बनना छुपा हुआ है। ज़ाहिर होगा उसके वक़्त पर। और असल ज़ाहिर होने का जो वक़्त है वह है मौत का। लेकिन अल्लाह तआ़ला ख़राब अ़मल वाले को किसी मौक़े पर दुनिया में भी अनोखे तरीक़े से पकड़ते हैं। और अच्छे अ़मल करने वाले को किसी मौक़े पर अनोखे ढंग से नवाज़ते हैं। 'अनोखे' का लफ़्ज़ याद रखना।

ज़ाहिरी तरतीब में सब बराबर

एक तो ज़ाहिरी तरतीब है। ज़ाहिरी तरतीब में तो मुसलमान हो या काफ़िर, सब बराबर। बादल सबके खेतों में बरसेगा। अनाज सबके खेतों में होगा। और फल सबके बाग़ीचे में आएँगे। और मुर्ग़ियाँ सबकी अण्डे देंगी। दूध के जानवर सबको दूध देंगे। तो यह ज़ाहिरी तरतीब तो सबके लिए बराबर। एक नबी है उसको भी पत्थर मारा गया तो ख़ून निकला। नबी पर भी जादू किया जाए तो असर होगा। और एक काफ़िर को भी पत्थर मारो तो उसको भी लगेगा। और अगर काफ़िर को भी शहद चटा दो तो शहद उसको भी मीठा मालूम होगा। तो जितनी ज़ाहिरी तरतीब अल्लाह ने दुनिया में क़ायम की है उसमें सबको बराबर कर दिया।

आज का ग़ैब कल आँखों के सामने होगा

लेकिन अल्लाह का जो ग़ैबी निज़ाम है, छुपा हुआ। जिसकी ख़बर नबियों के ज़रिये और आसमानी किताबों के ज़रिये दी वह छुपा हुआ जो ग़ैबी निज़ाम है वह खुलकर मौत के वक़्त सामने आएगा।

आज का जो ग़ैब है यह मौत पर आँखों के सामने होगा। और आज जो दिखाई दे रहा है यह मौत पर छुप जाएगा। आज जो दिखाई देता है वह मौत पर छुपेगा और आज जो छुपा हुआ है वह मौत पर दिखाई देगा।

इस वक़्त में हमारे सामने चीज़ों से ज़िन्दगियों का बनना यह दिखाई देता है लेकिन आमाल अगर ख़राब हों तो ज़िन्दगियों का उजड़ना यह दिखाई नहीं देता। इस वक़्त में फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देतीं। लेकिन मौत आई और आदमी क़ब्र में गया तो जो दिखाई देता था वह बन्द हो गया। मुल्क और माल से जो ज़िन्दगी बनती दिखाई देती थी और जिस पर आपस में

लड़ाई-झगड़े, फ़ितने-फ़साद होते थे वह सारा का सारा मौत के वक़्त में बे-असर हो गया।

क़ब्र के साँप को दुनिया का डंडा नहीं मार सकता

अब क़ब्र के अन्दर अगर साँप आए तो दुनिया का डंडा उसे मार नहीं सकता। क़ब्र में जो आग लगी तो दुनिया का पानी उसे बुझा नहीं सकता। क़ब्र के अन्दर अंधेरा आ गया तो दुनिया की लाईट उसमें उजाला नहीं ला सकती।

इन सारी चीज़ों से काम न बनना यह मौत पर समझ में आ गया। और आमाल से काम का बनना यह भी समझ में आ गया।

असल कामयाबी नमाज़ पढ़ने में है

अगर मैं नमाज़ पढ़ता तो दाहिनी तरफ़ से जो अ़ज़ाब आया है, नमाज़ उसे रोकती। लेकिन आदमी ने नमाज़ को छोड़कर लाख रुपये का ड्राफ़्ट निबटाया।

नमाज़ी ने तो लाख छोड़ा, नमाज़ पढ़ी, और बेनमाज़ी ने नमाज़ छोड़ी और लाख रुपया लिया। तो मौजूदा ज़माने में तो लाख वाला बड़ा कामयाब दिखाई दिया और नमाज़ पढ़ने वाले की जेब में पाँच पैसे भी नहीं आए।

लेकिन नमाज़ के अन्दर जो कामयाबी है वह छुपी हुई है। जो क़ब्र में ज़ाहिर होगी। और लाख रुपये लेकर जो नमाज़ छोड़ी उसके ऊपर जो बरबादी है यह भी छुपी हुई है, यह क़ब्र के अन्दर सामने आएगा।

क़ब्र के अन्दर जब दाहिनी तरफ़ से अ़ज़ाब आया तो नमाज़ रोकती, वह थी नहीं, और लाख रुपया जो है वह यहाँ काम नहीं आता, तो मरने के वक़्त तो सब की समझ में आ गया। लेकिन मरने के वक़्त जो समझा तो काम का नहीं। तो आदमी क़ियामत के दिन कहेगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी आँख खुल गई।

ग़ैब पर ईमान लाना क्या है?

जैसे पहली रात का चाँद देखने के लिए खड़े हुए। एक आदमी तेज़ निगाह वाला, एक आदमी कमज़ोर निगाह वाला। तेज़ निगाह वाले ने बताया कि देखो वह चाँद है। कमज़ोर निगाह वाला कहता है कि भाई मेरे को तो दिखाई नहीं देता। वह कहता है कि पेड़ के ऊपर बादल के बीच में देख ले। बोले पेड़ दिखाई देता है, बादल दिखाई देता है, चाँद नहीं दिखाई देता।

अब यह कहने लगा कि झूठे! चाँद कहाँ है। दिखाई तो देता नहीं। मग़रिब की नमाज़ के बाद गए ज़रा मतला (उदयस्थल) साफ़ हो गया। बोले इधर आ, दिखाई दे रहा है? जी हाँ! दिखाई दे रहा है, तू सच्चा है।

तो उस आदमी ने उसकी ख़बर को सच्चा नहीं माना बल्कि अपनी नज़र को सच्चा माना। आदमी की ख़बर को सच्चा मानता तो जब चाँद नहीं दिखाई देता था उस वक़्त भी कहता कि भाई! मेरी निगाह कमज़ोर है और तू है सच्चा। तो आज अगर इसने नबी की बात को और अल्लाह तआला की बात को सच्चा माना इसके बावजूद कि जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देते, फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, तो फिर उसकी क़ीमत अल्लाह देंगे। उसपर अल्लाह दुनिया में भी हालात बनाएँगे और मरने के बाद के भी हालात बनेंगे।

जो अल्लाह व रसूल की बात को सच्चा माने इसका नाम "ईमान बिल्ग़ैब" (ग़ैब पर ईमान लाना) है।

हिमालय पहाड़ बड़ा है, राई का दाना नहीं

हिमालय पहाड़ बहुत बड़ा है। लेकिन अगर आप अपनी दोनों आँखों के अन्दर राई का दाना डाल दें। एक राई का दाना इधर और एक राई का दाना उधर। अब उसके बाद पहाड़ को देखें, वह पहाड़

दिखाई नहीं देगा। तो अगर कोई कम-समझ आदमी यूँ कहे कि राई का दाना इतना बड़ा, इतना बड़ा कि हिमालय पहाड़ से भी बड़ा। वह कैसे? इसलिए कि राई का दाना आ गया तो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता। तो हिमालय पहाड़ से राई का दाना बड़ा।

इसी तरह आमाल पर जो आख़िरत में जन्नत मिलेगी और जो आख़िरत में बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे उसका मुक़ाबला इस दुनिया के साथ पड़ जाए तो यह कम-समझ आदमी इसके दिल की आँख बन्द है वह भी इस दुनिया को बड़ा समझता है। जिसकी हैसियत एक मच्छर के पर के बराबर भी नहीं।

जब मुक़ाबला पड़ गया आमाल का और चीज़ों का तो यह चीज़ों को लेता है, आमाल को छोड़ता है। क्योंकि आमाल के अन्दर जो कामयाबी है वह ओझल बन गई। इस दुनिया की वजह से जो मच्छर के बराबर भी नहीं, वह इस दुनिया को बहुत बड़ी चीज़ समझता है। जैसे उसने राई के दाने को बड़ा समझा।

राई के दाने की वजह से जो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता तो उससे कहा जाएगा कि भाई राई का दाना बड़ा नहीं। तू यूँ मत कह कि राई का दाना हिमालय पहाड़ से बड़ा है। यह राई के दाने की बड़ाई नहीं, यह तेरी आँख की छोटाई है। तेरी आँख इतनी छोटी है कि राई का दाना तेरी आँख में आ जाए तो हिमालय पहाड़ भी न दिखाई दे, तो यह तेरी आँखों की छोटाई है, राई के दानों की बड़ाई नहीं।

समझ का फ़र्क़

यह तेरी समझ की कमज़ोरी है। यह दुनिया बड़ी नहीं। दुनिया तो मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। और यह बात मरने के वक़्त फ़िरऔन की भी समझ में आ गई। अबू जहल की समझ में भी आ गई। लेकिन उस वक़्त का समझ में आना बेकार। उस वक़्त अगर माना तो उसने अपनी नज़र को माना। अल्लाह व रसूल की ख़बर को

नहीं माना।

क़ियामत के दिन यह सारा पर्दा साफ़ हो जाएगा और जो आज दुनिया का पर्दा आँखों के सामने है वह क़ियामत के दिन साफ़ हो जाएगा।

अल्लाह तआला कहते हैं:

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ٥ (پاره-٢٦)

हमने पर्दा हटा लिया तो तेरी आँख बहुत तेज़ी के साथ देख रही है, जन्नत को, जहन्नम को, और आमाल की तासीर को।

अनोखी मदद

मेरे मोहतरम दोस्तो! अच्छे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की मदद का आना छुपा हुआ है। बुरे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की पकड़ का आना यह भी छुपा हुआ है।

लेकिन अल्लाह तआ़ला दुनिया के अन्दर भी भले काम करने वालों को अनोखी मदद दिखा देते हैं। अनोखी मदद देखकर उसकी क़द्र करनी चाहिए। और अगर अनोखी मदद देखकर आदमी उसकी क़द्र न करे तो फिर उस पर वबाल आता है। जैसे अनोखे तरीक़े पर अल्लाह ने आसमान से खाना उतारा ईसा अ़लैहिस्सलाम के कहने पर जब यह उनके साथियों ने कहा, जब वह आसमान का खाना आया तो उन्होंने नाक़द्री की तो उनके ऊपर वबाल आया।

अनोखे तरीक़े पर जो मदद आती है उसकी क़द्र करनी भी बहुत ज़रूरी है। और उसकी क़द्र करना क्या है? उसकी क़द्र करना अल्लाह का शुक्र करके और ज़्यादा अल्लाह की बात का मानना है। यह उसकी क़द्र करना है।

साहिबे मक़ाम की सोच और फ़िक्र

एक आदमी दिल्ली का रहने वाला है। उसके सामने लाल क़िला,

कुतुब मीनार और चाँदनी चौक, ये चीज़ें रोज़ाना उसके सामने आती हैं। गुज़रता है और देख लेता है।

लेकिन जो आदमी बाहर का है कभी दिल्ली आया। अब वह जो देखने गया जब फिर वापस जाएगा तो हर वक़्त उसके तज़किरे करेगा कि साहिब वहाँ की चाँदनी चौक ऐसी, वहाँ का कुतुब मीनार ऐसा और वहाँ का लाल क़िला ऐसा। एक आदमी जो उसी जगह पर रहता है उसका अन्दाज़ अलग है। तो दीन का काम करते-करते अगर साहिबे मक़ाम बन जाए तो हर वक़्त उसके साथ मददें ही मददें होती रहेंगी। और उसे इस पर ताज्जुब इसलिए नहीं होगा क्योंकि यह तो अल्लाह का वायदा है, यह तो होना ही चाहिए। अल्लाह ने जो चाहा वह हो गया। तो इस पर उसमें तकब्बुर पैदा नहीं होगा।

और एक आदमी के साथ कभी-कभार कोई अनोखी मदद हो गई, झलक देख ली। और यह आदमी साहिबे मक़ाम नहीं है। जैसे एक तो दिल्ली का रहने वाला है और एक कभी-कभार आने वाला है।

इसी तरह दीन का काम करने वालों में एक बनता है साहिबे मक़ाम, तो उसके साथ दिन-रात मददें आती हैं, और मददों पर उसके दिल के अन्दर तकब्बुर और बड़ाई नहीं पैदा होती।

वह समझता है "हय्-य अ़लस्सलाति" और "हय्-य अ़लल्-फ़लाहि" का मफ़हूम कि नमाज़ पढ़ो, कामयाबी मिलेगी। अल्लाह ने कह दिया तो कामयाबी मिलना तय है। क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ हमने माँगी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। क्योंकि नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَنْ مَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क व अग़्निनी बि-फ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! हराम से बचाते हुए अपने हलाल ज़रिये से तू मेरी किफ़ायत फ़रमा! और अपने फ़ज़्ल के ज़रिये तू मुझे अपने

अ़लावा हर किसी से बेपरवाह फ़रमा दे।

जो आदमी यह पढ़ेगा, उसका क़र्ज़ा अदा होगा। और मैंने यह दुआ़ पढ़ी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। तो यह अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो कहा वह हो गया। दुआ़ माँगी और काम बन गया।

तो दीन का काम करते-करते जो साहिबे मक़ाम बन जाए दिन-रात उसके लिए मददें आयेंगी। लेकिन अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि उसके अन्दर फ़ख़्र, तकब्बुर और दिखावा वग़ैरह पैदा नहीं होगा।

मैं बुज़ुर्ग बन गया

और जब कभी-कभार कोई झलक मदद की देख ली, तो हर दम उसी का तज़किरा करता रहेगा। जहाँ बैठेगा, मैं फ़लाँ जगह जमाअ़त में गया था वहाँ यूँ हुआ। और मैं इतने काम छोड़कर गया था। जब वापस लौटा तो सब काम बन गए। अब फ़ख़्र के तौर पर हर जगह इसी को बयान करता रहेगा। और उसके अन्दर बड़ाई के आने का ख़तरा है।

और जो साहिबे मक़ाम होगा उसके अन्दर यह बात नहीं होगी। और जब साहिबे मक़ाम नहीं होगा तो उसकी दुआ़ पर काम बना तो समझेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया। ज़बान से तो नहीं कहेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया लेकिन दिल के अन्दर ख़्याल करेगा कि अब तो मैं कुछ बन गया।

चीज़ों में तासीर...... इनसान का तजुर्बा और अ़मल में तासीर...... ख़ुदा का वायदा

लेकिन आपने कभी नहीं देखा होगा कि एक आदमी शहद मुँह में डाले और उसका मुँह मीठा हो जाए तो वह यूँ कहे कि साहिब! मैं

बहुत बड़ा बुज़ुर्ग बन गया।

वह कैसे?

इसलिए कि शहद मुँह में जाते ही मेरा मुँह मीठा हो जाता है। और मैं बर्फ़ के पास जाता हूँ तो मेरे को ठंडक लगती है। और मैं आग के पास जाता हूँ तो मेरे को गर्मी मिलती है। और जब ख़ुशबू वाले की दुकान पर जाता हूँ तो मेरे को ख़ुशबू मिलती है। मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अल्लाह के बन्दे! ख़ुशबू तेरे को आने लगी, और आग से गर्मी आने लगी तो इसमें बुज़ुर्ग कैसे बना?

कोई ऐसा कहता भी नहीं, लेकिन अगर नमाज़ पढ़ने पर काम बना तो यहाँ यह आ जाता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

चीज़ों के अन्दर की तासीर तो इनसान का तजुर्बा और अ़मल के अन्दर की तासीर ख़ुदा का वायदा है। अब ख़ुदा का वायदा अगर पूरा हुआ तो उसपर यह यूँ समझने लगता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अब जब बुज़ुर्ग बनने का ख़्याल शैतान ने दिल के अन्दर डाला तब यहीं से यह गिरना शुरू हुआ।

अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

لَا تُزَكُّوْآ اَنْفُسَكُمْ (پاره– ۲۷)

अपने आप को बुज़ुर्ग मत समझो। अपने आपको यूँ न समझो कि मैं बहुत पाक-साफ़ बन गया।

यह अल्लाह ही जानता है:

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى (پاره– ۲۷)

तक़्वे वाला (परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाला) कौन है, यह अल्लाह ही जानता है।

कमी और कोताही की तलाश

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब दीन का काम करते रहोगे और उसके

अन्दर अल्लाह की तरफ़ से आज़माईश की घाटियाँ भी आती रहती हैं। अगर उन आज़माईश की घाटियों के अन्दर भी इनसान जमा रहा और लगा रहा, फिर अल्लाह की मदद आई, फिर आज़माईश की घाटी आई, फिर अल्लाह की मदद आई। फिर आज़माईश की घाटी आई तो अल्लाह तआला वह दिन लायेंगे कि आदमी साहिब मक़ाम बने।

और साहिबे मक़ाम बन जाने के बाद अगर आमाल के ज़रिये उसके काम न बने तो यह आदमी फ़ौरन सोचेगा कि मेरे आमाल में कमी कहाँ से आई। इसको यह शुब्हा नहीं होगा कि साहिब! मैंने फ़लाँ अ़मल किया फिर भी उसका असर नहीं ज़ाहिर हुआ। मैंने दुआ़ माँगी फिर भी मेरा काम नहीं बना। और मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ फिर भी मुझे कामयाबी नहीं मिली। और मैं क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ माँगता हूँ फिर भी मेरा क़र्ज़ा अदा नहीं होता...... यह उसकी ज़बान पर नहीं आएगा। उसकी ज़बान पर क्या आएगा?

मैं अ़मल कर रहा हूँ लेकिन उस अ़मल की तासीर ज़ाहिर नहीं होती। मालूम ऐसा होता है कि मेरे अ़मल में कोताही और कमी है।

कोताही और कमी की तलाश में लगे और कोताही की तलाश करते-करते अगर आदमी तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, और अगर यह तौबा व इस्तिग़फ़ार आदमी को करनी आ गई तो मैं सच कहता हूँ कि वह सारी कोताही को साफ़ कर देगा।

तो भाई कोताही को ढूँढते रहो। उसको ठीक भी करते रहो। अल्लाह से माँगते भी रहो। आदमी जब तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है। और आदमी जब गिड़गिड़ाता है और बिलबिलाता है तो वह सारी कमी और कोताही जो है अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा व इस्तिग़फ़ार से पाक व साफ़ करके उसको बहुत ऊँचे मुक़ाम पर ले जाते हैं।

अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा

वह गुनाहगार जो शर्मिन्दगी के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाये वह अल्लाह को बहुत ज़्यादा पसन्द है,

उस दीन का काम करने वाले के मुक़ाबले में जिसको दीन का काम करके तकब्बुर और घमंड पैदा हो।

एक आदमी दीन का काम कर रहा है, और उसके अन्दर फ़ख़्र पैदा हो गया तो यह अल्लाह तआला के नज़दीक नीचे उतरेगा। और वह आदमी है तो गुनाहगार, लेकिन उसके अन्दर नदामत (शर्मिन्दगी) पैदा हो गई और वह गिड़गिड़ाने लगा तो यह अल्लाह तआला के नज़दीक मक़बूल हो गया।

दावत की फ़िज़ा किस लिए?

यह जो दावत की फ़िज़ा है। यह इसलिए है कि उसके अन्दर अल्लाह को बार-बार बोलते, सुनते ग़ैब का यक़ीन और छुपी हुई चीज़ों का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाए।

यही बदन है सवा पाँच फ़िट का। इसका इस्तेमाल अगर कुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ हुआ, तो इसके अन्दर अल्लाह की मददें छुपी हुई हैं। और इसका इस्तेमाल अगर कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हुआ तो इसमें अल्लाह की तरफ़ से पकड़ छुपी हुई है। इसमें मदद भी छुपी हुई है और पकड़ भी छुपी हुई है। और यह आदमी को मालूम होगा मौत के वक़्त। दुनिया के अन्दर तो कभी-कभार और मौत के वक़्त में तो बिल्कुल पक्की।

दिया सलाई का करिश्मा

मैं इसकी एक मिसाल दूँ। दिया सलाई है दिया सलाई। इसके अन्दर बिरयानी की देगें भी छुपी हुई हैं...... दिया सलाई जलाई और लकड़ी सुलगाई उस लकड़ी से और लकड़ी। फिर और लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार बिरयानी की देगें उस दिया सलाई के अन्दर छुपी हुई हैं, जब उसको सही तरतीब से इस्तेमाल किया गया।

और इसी दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं।

पचास लाख गैलन पैट्रोल का बहुत बड़ा टेंकर है। उसमें सोलह साल के लड़के ने एक दिया सलाई जलाकर डाल दी। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर जहाँ पलास्टिक की दुकानें थीं वहाँ पर डाल दिया। अब वहाँ से भी शोले शुरू हो गये। फिर उसमें लकड़ी लगाकर रूई का जो गोदाम था उसके अन्दर डाल दिया, अब शोले पर शोले, चारों तरफ़ आग ही आग।

तो इस दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं और इस दिया सलाई के अन्दर बिरयानी की हज़ारों देगें भी छुपी हुई हैं।

आदमी के इस्तेमाल के तरीक़े पर अगला सारा निज़ाम चलता है।

ग़ैबी मदद और पकड़ की बुनियाद

बिल्कुल दिया सलाई की तरह यह हमारा बदन है। इसी बदन के अन्दर, इस्तेमाल अगर सही हो गया तो अल्लाह की मदद। और अगर इस्तेमाल ग़लत हो गया तो अल्लाह की पकड़।

लेकिन अल्लाह की मदद और पकड़ का जो असल वक़्त है वह है मौत का। लेकिन कभी-कभार ग़ैबी मदद और ग़ैबी पकड़ अल्लाह तआ़ला दुनिया के अन्दर भी दिखा देते हैं।

जैसे दूसरे ज़माने में नबियों के मानने वाले थे। तायदाद उनकी थोड़ी, ताक़त उनकी कम, सरमाया उनके पास बहुत थोड़ा, लेकिन उन्होंने अपने बदन का इस्तेमाल नबी के बाताए हुए तरीक़े पर किया तो उनके साथ अल्लाह की मदद आई। शुरू के अन्दर तो कुछ दिखाई नहीं दिया तो दूसरे मज़ाक़ उड़ाने लगे। और आज भी इस तरह के लोग कहते हैं कि:

"तुम कहते हो कि अल्लाह बहुत बड़े हैं। तुम कहते हो कि अल्लाह इतनी बड़ी ताक़त वाले हैं। तुम पिछले वाक़िआ़त भी सुनाते हो। नूह अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में अल्लाह की मदद कश्ती वालों पर यूँ आई। फ़लाँ ज़माने में यूँ आई। अब तुम्हारे अन्दर क्यों नहीं आ

रही? तुम तो बहुत परेशान हो। तुम्हारी तो हर जगह कटाई होती है, पिटाई होती है, मारा जाता है, तुम्हारी दुकानों में आगें लगाई जाती हैं, तुम्हारे आदमियों को क़त्ल किया जाता है और तुम कहते हो कि अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है।"

अल्लाह सबसे बड़ा है

जब देखो ये बेचारे "अल्लाह बड़ा है" की आवाज़ें लगा रहे हैं।

अज़ान में अल्लाह बड़ा। नमाज़ में जब तकबीर कही जाती है तो अल्लाह बड़ा। जब नमाज़ शुरू होती है तो उसके अन्दर हर जगह अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर। रुकूअ़ में जाए तो अल्लाहु अक्बर सज्दे में जाए तो अल्लाहु अक्बर। उठे तो अल्लाहु अक्बर। यहाँ तक कि बच्चा माँ के पेट से आया तो सीधे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर और उल्टे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर, जनाज़े की नमाज़ हो तो उसके अन्दर अल्लाहु अक्बर। तो तुम लोग अल्लाह को बहुत बड़ा कहते हो हालाँकि तुम अल्लाह को बड़ा कहने वाले इस क़द्र परेशान हो कि दूसरे आकर तुमको मारते हैं, लूटते भी हैं, काटते भी हैं, तुम्हारा मज़ाक़ भी उड़ाते हैं, गालियाँ भी देते हैं। लेकिन तुम हो कि एक ही रट लगी हुई है कि अल्लाह बड़ा है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने बेशुमार हैं

तो इतना बड़ा अल्लाह, तुम उसको कहते हो कि आसमान भी बनाया, ज़मीन भी बनाई, चाँद भी बनाया, सूरज भी बनाया और 'मनी' (वीर्य) के दो क़तरों से कितना बढ़िया इनसान भी बनाया, और उस अल्लाह पाक को इतना बड़ा तुम कहते हो कि उसके ख़ज़ाने बेशुमार हैं।

जितने इनसान बनाए अल्लाह ने हर एक को अलग-अलग सूरत दे दी। और हर एक को अल्लाह ने अलग-अलग आवाज़ दे दी। उसके ख़ज़ाने में सूरतें बेशुमार, उसके ख़ज़ाने में आवाज़ें बेशुमार।

रोज़ाना तीन लाख बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चा नई सूरत और नई आवाज़ लेकर दुनिया में आता है। शक्ल भी नई लाता है, आवाज़ भी नई लाता है। और ख़ुदा के ख़ज़ाने से तीन लाख बच्चे छह लाख आँखें भी लेकर पैदा होते हैं लेकिन ख़ुदा के ख़ज़ाने में से आँखों का स्टॉक ख़त्म नहीं हुआ।

तुम्हारे अल्लाह की मदद तुम्हारे लिए क्यों नहीं?

जब तुम कहते हो कि अल्लाह इतना बड़ा है और अल्लाह बड़े ताक़त वाले हैं। इतने ताक़त वाले हैं कि बग़ैर खम्बे के आसमान को थाम रखा है। इतने बड़े अल्लाह की जो अनोखाी मददें हैं जिनको तुम पिछले वाक़िआत के अन्दर बताते हो कि किसी पर अनोखी मदद आई इस तरह कि आग को ठण्डा कर दिया और किसी के लिए छुरी को कुन्द कर दिया और किसी को मछली के पेट के अन्दर हज़म न होने दिया। और किसी की मदद इस तरह आई कि जेलख़ाने से उठाया और मिस्र के सारे ख़ज़ानों का मालिक बना दिया।

ये सारी मददें तुम पिछले ज़माने की बताते हो तो वे मददें तुम्हारे लिए क्यों नहीं आतीं?

कुरआनी बातें भी बताते हो और अल्लाह की तारीफ़ भी करते हो, अल्लाह को बड़ा भी कहते हो। अल्लाह बड़ा है यह तुम्हारी ज़बान की नोक पर होता है, तो फिर तुम पर मदद काहे को नहीं आती?

दोस्तो! ये बातें कोई नई नहीं हैं जो हमारे ज़माने में कही जा रही हैं। इस तरह की बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में और हर नबी के ज़माने में कही गईं।

लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब कलिमा-ए-तय्यिबा की दावत देनी शुरू की और अल्लाह की बड़ाई बयान करनी

शुरू की तो "फ़-कब्बिर्" (अल्लाह की बड़ाई बयान कीजिए) के साथ अल्लाह रब्बुल् इज़्ज़त ने "क़ुम् फ़-अन्ज़िर्" भी कहा (कि खड़े हो जाओ और लोगों को डराओ) लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ। अल्लाह की बात नहीं मानोगे तो अल्लाह की पकड़ को तुम बरदाश्त नहीं कर पाओगे।

और भाई! डराने में तो यही कहेंगे ना...... कि अल्लाह बड़े हैं। नहीं मानोगे तो देखो! जहन्नम होगी उसमें साँप होंगे बिच्छू होंगे। हथकड़ियाँ होंगी। बेड़ियाँ होंगी। भूख-प्यास होगी। पिटाईयाँ होंगी। आग होगी। अंधेरा होगा। अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत बड़ा है।

और अल्लाह से डराने के लिए पिछले वाक़िआत सुनाए जाते हैं। देखो! फ़िरऔन ने अल्लाह की नहीं मानी तो अल्लाह ने कैसी पकड़ की। और देखो! फ़लाँ क़ौम की कैसी पकड़ हुई। तो भाई! तुम भी अल्लाह से डरो।

अल्लाह को एक मानो

अल्लाह को एक मानो। एक से ज़्यादा ख़ुदा न मानो। अगर एक से ज़्यादा ख़ुदा मानोगे तो तुम्हारे जितने अच्छे अ़मल होंगे क़ियामत के दिन उनका बदला तुम्हें नहीं मिलेगा। ये सारी बातें उन्हें समझाते रहे।

ख़राब और खोटे लोगों की बातें

लेकिन जो बग़ैर ईमान वाले खोटे और ख़राब लोग थे उन्होंने उनको तकलीफ़ पहुँचानी शुरू की और हर तरह की तकलीफ़ पहुँचाते रहे। और तक़लीफ़ पहुँचाते-पहुँचाते यह भी कहते थे कि भाई तुम अल्लाह को बड़ा कहते हो कि अल्लाह ऐसा, अल्लाह ऐसा, पिछले वाक़िआत और कहानियाँ भी सुनाते हो, लेकिन वह अल्लाह तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर रहा?

तो मेरे भाई! पिछले लोगों में भी जो ख़राब लोग थे वे भी इसी तरह की बातें करते थे।

क़ौमे नूह का मुतालबा

नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ९५० साल तक यही कहती रही। आख़िर में आकर उसने यूँ कहा:

فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰادِقِيْنَ ٥ (پاره– ١٢)

तुम धमकी देते हो अल्लाह की पकड़ आएगी, अज़ाब आएगा। इसके लिए क़ियामत का इन्तिज़ार कौन करे? अगर तुम सच्चे हो तो लाओ ना। तुम पकड़ यहीं ले आओ।

उसके बाद अल्लाह ने ख़बर दी कि सैलाब आने वाला है तुम कश्ती बनाओ। अब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कश्ती बनाई तो वे सारे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

पानी का कहीं नाम व निशान नहीं और यह कश्ती बना रहे हैं। तब्लीग़ का काम करते-करते इन्होंने लकड़ी का काम शुरू कर दिया। कर रहे थे तब्लीग़ और बन गए बढ़ई।

वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कहा:

قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ٥ (پاره– ١٢)

तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो और हम तुम्हारे बारे में ताज्जुब करते हैं कि इतना बड़ा अज़ाब आ रहा है और तुम्हें हंसी सूझ रही है?

और उसके बाद आई अल्लाह की पकड़। ज़ोर की पकड़ आ गई। जब पकड़ आ गई तो कुछ नहीं कर सके।

हर चीज़ का एक वक़्त है

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कुरआन पाक उतरता रहा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पिछले वाक़िआत सुनाते रहे, और ये ख़राब क़िस्म के लोग उस वक़्त भी कहते रहे:

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ○ (پاره– ٧)

"यह तो पुराने लोगों की कहानियाँ हैं"।

और वे लोग कहा करते थे कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी मदद काहे को नहीं करता?

उन हज़रात ने कहा कि मदद करने का एक वक़्त है और तुम्हारी पकड़ करने का भी वक़्त है। और अल्लाह ने वह वक़्त हमें बताया नहीं। हाँ! इतना कह दिया है कि:

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ○ (پاره– ٢٧)

मजमा तुम्हारा हारेगा, पीठ फेरकर भागेगा।

यह अल्लाह की ख़बर है:

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ○ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ○ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ○ (پاره– ٢٣)

और पहले हो चुका हमारा हुक्म अपने बन्दों के हक़ में जो कि रसूल हैं। बेशक उन्हीं को मदद दी जाती है। और हमारा लश्कर जो है बेशक वही ग़ालिब है।

अल्लाह के लश्कर वाले लोग

और अल्लाह का लश्कर कौन है? जो अल्लाह को एक माने, बड़ा माने और नबियों के तरीक़े पर चले।

पिछले ज़माने में जिन लोगों ने नबियों की बात मानी वे अल्लाह के लश्कर। और क़ियामत तक जो भी नबियों के तरीक़े पर चलेगा वह अल्लाह का लश्कर होगा। हम नबियों वाला काम करें और ऐसे कामों से बचें जिनके करने वाले अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हुए और गुमराह लोगों के कामों से बचें और उन लोगों के जैसे काम करें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया। हम उन लोगों में से न बनें जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, और उन लोगों में से न बनें जो

रास्ते से भटक गये। हम उन लोगों में से बन जायें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया, तो जैसी नबियों के साथ अल्लाह की मदद आई वैसी क़ियामत तक आती रहेगी।

करने के तीन काम

हमें तीन काम करने हैं:

एक उन लोगों में से निकलना जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं। दूसरे गुमराह और भटके हुए लोगों से दूर रहना। तीसरे उन लोगों में शामिल होना जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया।

नबियों वाली तरतीब पर तीन चीज़े हैं:

एक तो दीन का सीखना। दूसरे दीन पर चलना और तीसरे दीन के फैलाने की कोशिश करना।

तो जिसने दीन सीखा नहीं और सीखे बग़ैर चला तो उसपर ख़तरा है कि वह कहीं गुमराह न हो जाए।

और एक यह कि दीन को सीख लिया और जान लिया लेकिन वह दीन पर चलता नहीं। इल्म है लेकिन अ़मल नहीं। जानता है लेकिन करता नहीं। तो उसके लिए ख़तरा है कि कहीं वह उन लोगों में शामिल न हो जाये जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ।

कमी और ज़्यादती से बचो

यह ईसाई जो थे उनके अन्दर था 'इफ़रात' (हद से आगे बढ़ना)। और यहूदी जो थे उनके अन्दर थी 'तफ़रीत' (जितना हुक्म है उसमें कमी और कोताही करना)। ईसाइयों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को बढ़ाया तो ख़ुदा कह दिया। और यहूदियों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को घटाया तो ज़िना की औलाद कह दिया।

ईसा अ़लैहिस्सलाम न तो ख़ुदा हैं और न ख़ुदा के बेटे हैं। यह अल्लाह के महबूब बन्दे और रसूल हैं। और उनकी किसी भी तरह

तौहीन जायज़ नहीं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जानना और न करना यह अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ लोगों वाला रास्ता है, और न जानना और करना, सीखे बिना करना इसमें डर है कि कहीं गुमराह लोगों के रास्ते पर न चला जाये।

सिराते मुस्तक़ीम इख़्तियार करो

और आदमी वह है जो दीन को सीखता भी है और दीन पर चलता भी है। तो अल्लाह से उम्मीद है कि वह उस गिरोह से भी निकल गया जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं और उस जमाअ़त से भी निकल गया जो गुमराहों की है। अब उसे उस जमाअ़त में दाख़िल होना है जिस पर अल्लाह तआ़ला का इनाम है।

हम दुआ़ माँगते हैं:

اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ (پارہ– ١)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू हमें सीधे रास्ते पर चला।

"इहदिना" का तर्जुमा करूँ?

सीधा रास्ता बता ...... चला ...... और पहूँचा।

यह है जामा मस्जिद का रास्ता। यह तो हुआ "बता" और चल मैं चलता हूँ तेरे साथ, और साथ चलने के बाद आख़िर तक पहुँचाया। बता...... चला...... और पहुँचा।

मुजाहदा, हिदायत के लिए क़ानून और नियम

अल्लाह ने कहा कि मैं यह करूँगा, लेकिन किसके साथ? कि जो आदमी ख़ुद भी कोशिश करे। करने वाला तो अल्लाह है लेकिन जितनी कोशिश अल्लाह ने बन्दे को बताई उतनी कोशिश यह करे तो अल्लाह उसे दिखाएँगे, अल्लाह उसे चलाएँगे और उम्मीद है कि अल्लाह उसे पहुँचा भी देंगे। लेकिन शर्त यह है कि जो अल्लाह ने

कहा वह हम करें:

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. (پاره– ٢١)

और जिन्होंने मेहनत की हमारे वास्ते हम समझा देंगे उनको अपनी राहें।

देखो! एक है दीन का जानना और एक है दीन पर चलना। दीन को अगर जान लिया और चला तो उम्मीद है कि 'मग़ज़ूब अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जाएगा और उम्मीद है कि 'ज़ाल्लीन' (जो जमाअ़त सही रास्ते से गुमराह हुए) से भी निकल जाएगा। और अगर जानता है और चलता नहीं है तो 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) में जाने का डर है।

और अगर चलता तो है दीन पर लेकिन सीखे बग़ैर चलता है तो यह 'ज़ाल्लीन' (गुमराह और राह से भटके हुए लोगों) में चला जाए, इसका डर है।

हर काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर

और एक आदमी जमाअ़तों में फिरा, नमाज़ भी सीखी और तय किया कि पूरी ज़िन्दगी जो गुज़ारूँगा तो नबवी तरीक़े की तहक़ीक़ करके गुज़ारूँगा। औलाद की तरबियत का नबवी तरीक़ा क्या है? इसको सीख लिया। औलाद ज़रा बड़ी हो गई तो फिर क्या करना है? उसकी शादी होने लगी तो क्या करना है? औलाद के लिए कारोबार की तरतीब बनानी है तो उसमें क्या करना है?

ग़रज़ यह कि इनसान पर ज़िन्दगी के जो मर्हले (दौर) आते हैं, उन मर्हलों की वह तहक़ीक़ करे कि उसमें अल्लाह के हुक़ूक़ क्या हैं? और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा क्या है?

तो वह एक तरफ़ जानता भी है और एक तरफ़ चलता भी है, तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि यह 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जायेगा।

नुबुव्वत का काम बाक़ी है

अब उसे आना है "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में। तो एक तीसरा काम और करना पड़ेगा। और वह है दीन की कोशिश करना। क्योंकि नबियों का आना तो अल्लाह ने बन्द कर दिया लेकिन नबियों का काम अल्लाह ने बन्द नहीं किया। नबियों का जो काम था वह आ़म हो गया यहाँ तक कि पढ़ा बे-पढ़ा ग्रेजुएट, मालदार, ग़रीब, काला, गोरा सब के सब नबियों वाला काम करें। यह अल्लाह ने सब के सुपुर्द कर दिया है। अब हमको "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में आना है। हम दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! तू हमको सीधे रास्ते पर चला। और सीधा रास्ता किसका है? सीधा रास्ता उनका है जिन पर तूने इनाम किया है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है:

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

जिन पर तूने इनाम किया उनके रास्ते पर चला।

इनाम वाले लोग

और इनाम वाले कौन लोग हैं? यह भी अल्लाह ने बता दिया:

فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصَّالِحِيْنَ .(پاره –۵)

जिन पर अल्लाह ने इनाम किया वे चार क़िस्म के लोग हैं: अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन।

नबियों ने हर तरह कोशिश की और दावत का काम किया। सिद्दीक़ नबी तो नहीं होता लेकिन बिल्कुल नबी की तरतीब के ऊपर काम करता है। सिद्दीक़ीन ने भी दावत का काम किया और कोशिश की। और शुहदा तो वे हैं जो दीन का काम करते-करते अपनी जान दे

डालें। "अन्अम्-त अ़लैहिम" (यानी वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) वाले रास्ते पर जिसे चलना है उसे दीन की कोशिश करनी है।

और सालिहीन, (नेक लोग) सालिहीन का ऊँचा मुक़ाम यह है कि ख़ुद नेकी करना और दूसरों के अन्दर नेकी का लाना।

وَزَكَرِيَّاوَيَحْيٰ وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ، كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَo (پاره-٧)

और हज़रत ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास अ़लैहिमुस्सलाम, ये सारे के सारे सालिहीन में से थे।

जान व माल नबवी तरतीब पर

तो भाई! एक है दीन का सीखना, दूसरा है दीन पर चलना और तीसरा है दीन की कोशिश करना। और यह मुश्किल बिल्कुल नहीं।

यही हमारा सवा पाँच फ़िट का बदन होगा और यही हमारी उम्रें जितनी अल्लाह ने दी होंगी, और यही हमारा पैसा जितना अल्लाह ने दिया वह होगा। बस इसकी तरतीब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर आ जाए। आदमी के पास दो हज़ार है उसकी तरतीब दे दे। पन्द्रह करोड़ है तो उसकी तरतीब दे दे। अब रही उम्र चाहे अल्लाह ने तीस साल दी हो चाहे अस्सी साल दी हो। उम्र के बारे में तो आदमी को मालूम नहीं कि कब पूरी होगी। इसका कुछ पता नहीं। लेकिन इस वक़्त हम जौनसी उम्र में हैं, उम्र के एतिबार से हम नबवी तरतीब पर आ जाएँ। और जितना हमारे पास माल है उस माल के एतिबार से हम नबवी तरतीब पर आ जाएँ।

अल्लाह तआ़ला यह नहीं देखते कि किसने कितना माल लगाया और कितनी जान लगाई, अल्लाह यह देखते हैं कि कितने में से कितना लगाया। बस उसके एतिबार से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मामला होता है।

एक आदमी के पास पाँच सौ रुपये हैं। वह कुल पाँच सौ ले

आया और पैदल जमाअ़त में चार महीने के लिए तैयार हो गया। और दूसरा आदमी करोड़पती है, वह पैंतीस हज़ार रुपये लेकर आया कि मैं आस्ट्रेलिया की जमाअ़त में जाने के लिए तैयार हूँ।

पैंतीस हज़ार वाले की तरफ़ सब की निगाह जाएगी और पाँच सौ रुपये वाले की तरफ़ निगाह नहीं जाएगी। लेकिन अल्लाह का मामला क्या होगा? पाँच सौ रुपये वाला पूरा माल ख़र्च करने वालों में होगा। और यह पैंतीस हज़ार जो लेकर निकला तो हो सकता है कि यह उसके माल का हज़ारवाँ हिस्सा हो। एक आदमी के पास चार लाख हैं और एक आदमी के पास एक लाख हैं। चार लाख के अन्दर एक लाख लगा दिया। और एक लाख वाले ने एक का एक लगा दिया तो एक लाख लगाने वाले को जो जन्नत मिलेगी वह उससे चार गुना ज़्यादा मिलेगी। क्योंकि उसने पूरा लगाया और इसने चौथाई लगाया।

सिद्दीक़ के लिए हैं ख़ुदा व रसूल बस!

ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपना पूरा माल लाए वह छोटी-सी गठरी बनी। और हज़रत उमर फ़ारूक़ अपना आधा माल लाए फिर भी वह बहुत बड़ा गट्ठर बना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु समझे कि आज मैं हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सवाब में आगे निकल जाऊँगा।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने छोटी-सी गठरी पेश की और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बहुत बड़ा गट्ठर पेश किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह नहीं पूछा कि तुम लाए कितना? इसलिए कि वह तो सामने है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा कि तुमने घर में कितना छोड़ा? उन्होंने कहा कि घर इतना ही छोड़कर आया हूँ। आधा लाया हूँ और आधा घर पर है। और सिद्दीक़े अकबर से पूछा कि तुमने घर कितना छोड़ा? बोले मैं अल्लाह व रसूल का नाम छोड़कर आया हूँ। तो छोटी गठरी वाले का सवाब बड़े गट्ठर

से बढ़ गया। क्योंकि यह पूरा है।

सब के लिए अवसर

अब हमारा यह मालदार तबक़ा जो होगा वह कहेगा कि यह मौलवी साहिब जो हैं वह ग़रीबों की बड़ी हिमायत कर रहे हैं। उनके तो पाँच सौ पर भी ज़्यादा सवाब और हम पैंतीस हज़ार ख़र्च करें तो भी कम सवाब।

लेकिन भाई! जान लगाने में मालदार ग़रीबों से बढ़ेगा। यह ग़रीब आदमी अगर पच्चीस मील पैदल चले तो यह उसकी आ़दत है। वह मेहनत का आ़दी है। लेकिन मालदार आदमी जो घंटी बजाता है तो उसके दस आदमी काम करने वाले आते हैं। उसने कभी थैली भी हाथ में नहीं उठाई तो यह मालदार आदमी अगर एक मुख़्तसर-सा बिस्तर लेकर एक मस्जिद से दूसरी मस्जिद तक जाए तो उम्मीद है कि उसको पच्चीस मील पैदल चलने से ज़्यादा सवाब अल्लाह देंगे। तो क़ियामत के दिन सेठ लोग जो हैं, उनको जान लगाने का ज़्यादा सवाब मिलेगा।

और माल लगाने के अन्दर उम्मीद है कि ग़रीबों को ज़्यादा सवाब मिलेगा। इसलिए के उनके पास थोड़ा माल है। उस थोड़े में से लेकर वे चलते हैं।

तीन चीज़ें

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक तो है दीन का जानना और एक है दीन पर चलना, और एक है दीन की कोशिश करना। ये तीन चीज़ें अगर आ गईं तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि हम सीधे रास्ते पर आ गए। "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) वाले रास्ते पर और अल्लाह तक पहुँचाने वाले रास्ते पर और अल्लाह की मददों को लाने वाले रास्ते पर।

लेकिन मैं फिर याद दिला दूँ कि वे मददें हैं छुपी हुई। और वह

आदमी जो टेढ़े रास्ते पर चल रहा है और उसके आमाल ख़राब है उसके ऊपर अल्लाह की तरफ़ से परेशानियाँ आने वाली हैं, वे भी छुपी हुई हैं।

वह इसका मज़ाक़ उड़ाएगा। तेरह साल तक मज़ाक़ उड़ा लेकिन दीन की बात बदली नहीं।

मस्जिद और बाज़ार की आवाज़ का फ़र्क़

भाई! मस्जिद वालों की बात बदला नहीं करती। बदर की लड़ाई के अन्दर ख़ूब मुजाहदा आया लेकिन बात वही। "अल्लाह बड़े" फिर मदद आई, फिर वही अल्लाह बड़े।

अ़सर के बाद का बयान आपने सुना होगा कि बूढ़े कहते "हमारी तदबीरों से जीते" जवान कहते "हमारी मेहनत से जीते" और अल्लाह कहता है कि न तो बूढ़ों की तदबीर, न जवानों की मेहनत बल्कि "हमारी मदद से जीते" अब यह माल में जहाँ कहूँग वहाँ लगेगा।

तो भाई! मदद आई तो भी "अल्लाहु अक्बर" और अगर कोई मुजाहदा आया तो भी "अल्लाहु अक्बर" ख़न्दक़ के अन्दर मुजाहदा आया तो भी अल्लाहु अक्बर। हर जगह अल्लाह ही बड़े। चाहे कितनी तकलीफ़ आ जाए अल्लाह ही बड़े।

यह मस्जिद वाली आवाज़ नहीं बदलती। बाज़ार की आवाज़ बदलती रहती है।

ख़रीदार दुकानदार से कहता है "ले पैसे और ला चीज़ें" मेरे पैसों से मेरा काम नहीं बनता, तेरी चीज़ों से मेरा काम बनेगा। ले पैसे और ला चीज़ें।

और दुकानदार की आवाज़ क्या है? चीज़ों से मेरा काम नहीं बनता है, तेरे पैसों से मेरा काम बनता है। पैसे दे चीज़ ले।

ख़रीदार की आवाज़ अलग, बेचने वाले की आवाज़ अलग, शाम तक ये आवाज़ें चलती रहती हैं। अब यह छोटे दुकानदार का माल

सारा बिक गया और पैसे आ गए। अब यह पैसे लेकर बड़े दुकानदार, थोक विक्रेताओं के पास गया। सुबह से शाम तक तो उसकी यह आवाज़ थी कि मेरे सामान से नहीं होता है। अब यह कहता है कि पैसे मेरे पास हैं। इससे मेरा काम नहीं बनता। तेरे पास जो सामान है उससे काम बनता है।

"ला सामान, ले पैसे"

सुबह को कुछ आवाज़ शाम को कुछ आवाज़, ख़रीदार की अलग आवाज़, बेचने वाले की अलग आवाज़।

ये जितने बाज़ारी लोग होते हैं ना! मुल्क और माल वाले, रुपये और पैसे वाले, सोना और चाँदी वाले, दुकान और खेत वाले, ओ़हदा और डिग्री वाले, इनकी आवाज़ें बदलती रहती हैं। इनकी बातें बदलती रहती हैं। लेकिन मस्जिद वाली जो आवाज़ है "अल्लाहु अक्बर" यह नहीं बदलती। चाहे जितनी परेशानी व तकलीफ़ आ जाए लेकिन ज़बान पर अल्लाहु अक्बर, अल्लाह बड़े हैं।

पालने वाले अल्लाह हैं, इसका यक़ीन ज़रूरी

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) पर चलने के लिए ज़ेहन बनना ज़रूरी है। और सबसे पहला ज़ेहन क्या बनेगा?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए साबित हैं जो सारे जहानों का रब है और सब की ज़रूरतें पूरी करने वाला है।

'आ़लमे अरवाह' (रूहों की दुनिया) के अन्दर तो सबने कह दिया कि "ऐ अल्लाह! तू ही रब है"। क़ियामत का दिन आएगा तो सारे मुश्रिक व काफ़िर भी कहेंगे ऐ अल्लाह! तू ही हमारा रब है"। जैसे मैंने "रब्बना अब्सर्ना" वाली आयत आप हज़रात को सुनाई।

तो पिछली लाईन बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) है, अल्लाह रब है।

अब यह बीच की लाईन है दुनिया की ज़िन्दगी। बस यह लाईन भी हो जाए वाज़ेह (स्पष्ट) और पिछली कड़ी पिछली कड़ी से मिल जाए और अगली कड़ी अगली कड़ी से, तो बिल्कुल सिराते मुस्तक़ीम हो गया। इस दुनिया की ज़िन्दगी में लाईन वाज़ेह (स्पष्ट) करना बहुत ज़रूरी है।

पिछली लाईन बिल्कुल स्पष्ट। सारे लोग ही कहेंगे अल्लाह रब है। लेकिन असल मसला जो है वह इस दुनिया की ज़िन्दगी का है। इसके अन्दर आदमी कह दे कि अल्लाह रब है।

अल्लाह तआ़ला बार-बार याद दिलाते हैं:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

करता-धरता अल्लाह है, वह तो दिखाई नहीं देता। दिखाई क्या देता है? कारोबार के चलने से मेरी ज़रूरतें पूरी हुईं, यह दिखाई दिया और यक़ीन बना, वह जो लाईन 'सिराते मुस्तक़ीम' (सीधे रास्ते) की स्पष्ट थी वह अब गड़बड़ हो गई। अगर आदमी के दिल के अन्दर यह बात आ गई कि मेरी ज़रूरतें पैसों से पूरी होती हैं और पैसे मेरे को कारोबार से मिलते हैं। अगर यह बात ज़ेहन में आ गई तो वह लाईन हट गई। अब यह सीधे रास्ते पर नहीं रहा। इसलिए बार-बार मुज़ाकरे की चीज़ है।

ज़रा सोचो

बेशक आपने होटल के अन्दर जाकर दस रुपये में खाना खाया। लेकिन होटल में जो आपने दिल चाहा खाया उसके बारे में ज़रा सोचो कि वह किस तरह आप तक पहुँचा। उसके अन्दर पूरा निज़ाम (सिस्टम) इस्तेमाल हुआ। बादलों का, सूरज का, चाँद का, सितारों का, ज़मीन का, आसमान का और उसमें करोड़ों-करोड़ आदमी हज़ारों साल

तक इस्तेमाल होते रहे। इस तरह चलते-चलते वह चावल आपके पेट में पहुँचा।

आपने जो सालन खाया उसके अन्दर मिर्च कहाँ से आई? उसकी भी नस्ल चली, नमक कहाँ से आया? तेल कहाँ से आया? जिस जानवर का आपने गोश्त खाया उसकी भी हज़ारों साल से नस्ल चली, नर मादा मिले, औलाद हुई। फिर नर मादा मिले फिर औलाद। इस तरह यह बोटी आपके हलक़ में गई। आपने कचूमर खाया। सिरका खाया तो यह सारा लम्बा-चौड़ा काम दस रुपये के अन्दर नहीं हो सकता।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

ज़रूरतों को पूरी करने वाला अल्लाह है।

यह जो हमने कपड़े पहने, इसके अन्दर जो धागा इस्तेमाल हुआ वह रूई से बना, और रूई की भी हज़ारों साल से नस्ल चली। अगर इस तरह हम ग़ौर करते रहें तो हक़ीक़त खुलती चली जाएगी कि ज़रूरतों का पूरा करना यह अल्लाह का काम है। दस रुपये से हमारी ज़रूरत हरगिज़ न पूरी होती। यह अल्लाह ने करम फ़रमा दिया और दस रुपये में ज़रूरत पूरी कर दी। करने वाला अल्लाह है।

जिस्म के एक-एक अंग की अहमियत

फिर देखो कि अल्लाह तआ़ला ने कितनी बड़ी-बड़ी ज़रूरतें पूरी कीं। आँखें दीं। कान दिये। ज़बान दी। हाथ दिये। पैर दिये। अ़क़्ल दी। दमाग़ दिया। ये सारी चीज़ें हमारी ज़रूरत की हैं।

इसके अन्दर से एक चीज़ भी अगर फ़ेल हो जाए तो देखिए आदमी कितना परेशान होगा। अगर आँख फ़ेल हो गई तो...... हम पर यह दौर गुज़र चुका। बिल्कुल नहीं दिखाई देता था। अब जो

दिखाई देता है तो हम यही कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरा करम हुआ कि छह महीने के अन्दर तूने दोनों आँखों का ऑप्रेशन कराकर रोशनी वापस कर दी। और कितने लोगों के बारे में तो हमने सुना कि बड़े से बड़े डॉक्टर ने आँख का ऑप्रेशन किया लेकिन फ़ेल हो गए।

इसी तरह हमारे कान हैं, ज़बान है, गुर्दा है। गुर्दे का काम अगर ख़त्म हो जाए तो आदमी का ज़िन्दा रहना मुश्किल है। रोज़ाना कई-कई सौ रुपये ख़र्च करो तब जाकर बाहर से वह चीज़ डॉक्टर डालते हैं जो गुर्दे से बनती है, और वह भी ज़्यादा दिनों तक नहीं चलती। आख़िर आदमी की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है।

फिर हमारे हाथ हैं, पैर हैं, जिसका हाथ कटा हुआ हो, देखिए उसको कितनी उलझनें होती हैं।

तो अल्लाह हमारी ये सारी ज़रूरतें पूरी करते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۝

''अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन'' (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

अल्लाह बेनियाज़ है

और उन ज़रूरतों के पूरा करने में अल्लाह तआ़ला की कोई ग़रज़ नहीं।

दुनिया के अन्दर अगर कारख़ाने वाला मज़दूर को पैसे देता है तो वह अपना काम लेता है। और मज़दूर अगर कारख़ाने में काम करता है तो उसकी ग़रज़ यह होती है कि मेरे को पैसा मिलेगा। बड़ी हुकूमत अगर छोटी हुकूमत की मदद करती है तो बाद में अपना कोई मतलब निकालती है। आ़म तौर पर दुनिया में ऐसा ही है कि कोई आदमी अगर किसी का काम करता है तो उसमें कोई मतलब ज़रूर छुपा होता है। और अल्लाह तआ़ला सब की ज़रूरतें पूरी करते हैं। इनसानों की भी जानवरों की भी, हमको दुकान दे दी। लेकिन जानवरों के पास तो

कोई कारोबार नहीं। अल्लाह उनकी भी ज़रूरतें पूरी करते हैं। और यह ज़रूरतों का पूरा फ़रमाना, यह अल्लाह की मेहरबानी ही मेहरबानी है। "अर्रहमानिर्रहीम।

मेरे बन्दे भूलना मत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का) के अन्दर तो यह बताया कि ज़रूरतें अल्लाह ही पूरी करते हैं। बार-बार अल्लाह याद दिलाते हैं, मेरे बन्दे भूलना मत! इसलिए कि तू जाएगा दुकान पर, फिर तेरा ज़ेहन बनेगा कि पैसों से मेरा काम बनता है, और चीज़ों से मेरा काम बनता है।

मेरे प्यारे बन्दे देख! तेरे को बार-बार याद दिलाता हूँ। "आ़लमे अर्वाह" में तू कह चुका है, क़ियामत में भी तू कहेगा। आज कह! तेरा आज का कहना मोतबर होगा। और दिल से कहना मोतबर होगा सिर्फ़ ज़बान से कहना मोतबर नहीं। ईमान उस वक़्त बनेगा जब तू दिल से कहेगा। तो आप मस्जिद के अन्दर ज़बान से सीखें और दिल के अन्दर उतारें। "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" ज़रूरतों को पूरी करने वाले अल्लाह हैं। हमारी ज़रूरतें, हमारी औ़रतों की ज़रूरतें, हमारे बच्चों की ज़रूरतें, सब की ज़रूरतें अल्लाह तआ़ला ग़ैब से पूरी फ़रमाते हैं।

छोटी सी बच्ची है, साल डेढ़ साल की। जब आप उसको लुक़्मा दोगे तो वह मुँह सामने करेगी। कान नहीं करेगी। इतनी सूझ-बूझ अल्लाह ने उसको भी दी। तो ज़रूरतों को पूरी करने वाले अल्लाह हैं। "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन"।

मेहरबानी ही मेहरबानी

और यह जो ज़रूरतें अल्लाह पूरी करते हैं:

اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

उनकी मेहरबानी ही मेहरबानी है।

अल्लाह की किसी से कोई ग़रज़ नहीं है। "अल्लाहुस्समदु" (अल्लाह बेनियाज़ है) अल्लाह बे-ग़रज़ है। लेकिन जब अल्लाह हमारी ज़रूरतें अपनी मेहरबानी से पूरी कर रहे हैं, और यह सारा ज़मीन व आसमान बनाया ताकि उसको देखकर अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) मिले। ईमान आए और हमारे अन्दर यह बात आ जाए कि जो इतना बड़ा ज़रूरतों को पूरा करने वाला है, हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिए।

ख़ुदा का शुक्र क्या है?

और उसका शुक्र यह है कि यह जो बदन सवा पाँच फ़िट का है, इसको हम अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल करें। यह उसका शुक्र है।

दो क़िस्म के लोग और उनका अन्जाम

अब दो क़िस्में इनसान की हो गईं। एक तो शुक्रगुज़ार और एक नाशुक्रे। शुक्रगुज़ार तो इस बदन को अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल करें। अल्लाह की ग़ैबी ताईद उनके शामिले हाल होगी। और जिन्होंने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ बदन को इस्तेमाल नहीं किया उन्होंने नाशुक्री की और नेमत की नाशुक्री की। तो फिर उनके लिए अल्लाह की पकड़ होगी। उसका आख़िरी और फ़ाईनल जो फ़ैसला होगा वह क़ियामत के दिन होगा।

क़ियामत के दिन दो ग्रुप हो जाएँगे:

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ○ (پاره– ۲۳)

ऐ मुज्रिमो! अलग हो जाओ।

और जो ईमान वाले होंगे, उनसे फ़रिश्ते कहेंगे:

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا، حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ○

(پاره-٢٤)

जो अल्लाह से डरने वाले और अपने परवर्दिगार से डरने वाले हैं, उनकी जमाअतें बन-बनकर जन्नत की तरफ़ चलेंगी। और जन्नत के दरवाज़े पहले से उन्हें खुले मिलेंगे और पहरेदार फ़रिश्ते यूँ कहेंगे:

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ○ (پاره- ٢٤)

सलाम पहुँचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो। सो दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा-हमेश रहने के लिए।

जन्नत में रात नहीं आएगी

नींद तो पूरी हो जाएगी क़ब्र के अन्दर, नाश्ता मिलेगा अ़र्श के साए के नीचे, पानी मिलेगा हौज़े-कौसर का। और दोपहर का खाना मिलेगा जन्नत में, और रात वहाँ आएगी नहीं। अब हमेशा के लिए मज़े उड़ाओ क्योंकि तुमने अल्लाह को रब माना। अल्लाह ज़रूरतें पूरी करते थे वह तुमने अल्लाह की मेहरबानी समझी। और ज़मीन व आसमान देखकर तुमने अल्लाह को पहचाना। हर हाल में तुमने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपने बदन को तुमने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ○

ऐ अल्लाह! जब आप हमारी ज़रूरतों को पूरी करते हैं और मेहरबानी के तौर पर पूरी करते हैं और आपकी कोई ग़रज़ नहीं और क़ियामत के दिन आप शुक्रगुज़ार और नाशुक्रे दोनों की लाईनें अलग-अलग कर देंगे, और फिर आख़िरी फ़ैसला होगा। इस बिना पर ऐ मेरे महबूब अल्लाह! मैं तेरी ही इबादत करता हूँ और तुझ ही से

मदद माँगता हूँ

अल्लाह की मानो और उसी से माँगो

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही मानते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। मानेंगे तो सिर्फ़ तेरी, और माँगेंगे तो सिर्फ़ तुझसे।

हाँ! अगर तूने इजाज़त दी दूसरे से माँगने की तो वह भी तेरे ही से माँगना हुआ। तूने कहा कि नबी की बात मानो, तो तेरी ही बात का मानना हुआ। तूने कह दिया कि सहाबा के पीछे चलो तो भी तेरी ही बात माननी हुई। तूने कह दिया कि अपने ज़माने के अल्लाह वालों के कहने के मुताबिक़ चलो:

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ (پاره-۲۱)

और पैरवी करो उसकी जो मेरी तरफ़ रुजू हो।

तो यह भी तेरा ही मानना हुआ। तेरी ही मानते हैं और तुझ ही से माँगते हैं।

"इय्या-क नअ्बुदु" के क्या मायने हैं?

अल्लाह जो कह दे हम वह करें।

और "इय्या-क नस्तअ़ीनु" के क्या मायने हैं?

हम जो कह दें अल्लाह वह कर दे।

"हय्-य अ़लस्सलाति" के क्या मायने हैं?

अल्लाह जो कह दे हम वह कर दें।

"हय्-य अ़लल् फ़लाहि" के क्या मायने हैं?

हम जो कह दें वह अल्लाह कर दे।

नज़र बन्दे की मस्लेहत पर

हम जो कहेंगे अल्लाह वह करेगा शर्त यह है कि जब वह हमारी मस्लेहत के मुनासिब हो। और अगर हम ने वह कह दिया जो हमारी मस्लेहत के मुनासिब नहीं तो अल्लाह वह करेगा जो हमारी मस्लेहत के

मुनासिब होगा।

तो यह भी अल्लाह का करम है कि हम जो माँगें बिल्कुल वही नहीं देते। बल्कि वह देते हैं जो हमारी मस्लेहत के मुनासिब होता है।

अल्लाह ने माँगना भी सिखाया

अल्लाह तआ़ला ने हमको सिखा दिया कि जो तुम अल्लाह से मदद माँगोगे तो क्या माँगोगे?

अगर इनसान के हवाले हो जाता तो न मालूम कोई क्या माँगता, कोई क्या माँगता, छोटी-छोटी चीज़ें माँग लेते। कोई कहता मेरा पानी मीठा हो जाए। कोई कहता मेरे लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं, लड़का हो जाए। कोई कहता मुझे यहाँ पहुँचा दीजिए कोई कहता वहाँ पहुँचा दीजिए। कोई कुछ कोई कुछ। लेकिन अल्लाह ने इसको भी ज़िक्र किया और माँगना भी हमें सिखाया:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَo

ऐ अल्लाह! हमें सीधा रास्त बता, उस पर चला और पहुँचा।

वह सीधा रास्ता किसका?

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ.

उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ o

जिन पर न तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और जो न रास्ता भटके। नबियों वाला रास्ता।

और फिर अल्लाह की कितनी मेहरबानियाँ, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़बर दी कि जब बन्दा कहता है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

तो अल्लाह जवाब देता है:

حَمِدَنِیْ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की।
जब बन्दा कहता है:

اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

अर्रह्मानिर्रहीम
तो अल्लाह जवाब देता है:

اَثْنیٰ عَلَیَّ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ व प्रशंसा की।
बन्दा कहता है:

مَالِکِ یَوْمِ الدِّیْنَ ٥

मालिकि यौमिद्दीन।
तो अल्लाह उसका जवाब देते हैं:

مَجَّدَنِیْ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की।
और फिर जब बन्दा कहता है:

اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ٥

इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन।

ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

तो अल्लाह कहते हैं, इसमें तो मेरी भी है और तेरी भी। इबादत तो मेरी और मदद तेरी। शुरू की तीन आयतें उसके अन्दर तूने मेरी ही तारीफ़ की। और "इय्या-क नअ्बुदु" में इबादत तो मेरी और "व इय्या-क नस्तअ़ीनु" में मदद तेरी।

तो ये साढ़े तीन आयतें तो मेरी और अगली साढ़े तीन आयतें जो हैं: "व इय्या-क नस्तअ़ीनु" से लेकर आख़िर तक की, तो ये मेरे बन्दे की।

नमाज़ की तरह नमाज़ के बाहर भी हमारा बदन अलाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल हो

तो अब इस ध्यान से जब नमाज़ पढ़ेंगे तो हमें नमाज़ के अन्दर कितना मज़ा आएगा। मैं कहता हूँ कि दुनिया की किसी चीज़ के अन्दर वह लुत्फ़ और मज़ा नहीं है जो नमाज़ के अन्दर है।

जैसे हमने अपने बदन को नमाज़ में अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया तो जब हम नमाज़ से बाहर जाएँ तो वहाँ पर भी अल्लाह के बन्दे हैं। कारोबार के अन्दर और घर के अन्दर भी हमारा बदन अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल हो। और फिर दूसरों के अन्दर भी यह बात लाई जाए। ताकि उनका बदन भी अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल हो।

अल्लाह की बड़ाई बयान करके अल्लाह की ताक़त से डराओ

قُمْ فَاَنْذِرْ، وَرَبَّکَ فَکَبِّرْ (پارہ-۲۹)

देखो भाई! अल्लाह की मानो और अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत बड़े हैं। लेकिन न मानने वाले कहते हैं कि काहे को डरें? आप कहिए कि देखो पहले जो लोग नहीं डरे उनके साथ क्या हुअ? वह तुम्हारे साथ भी होगा। इसलिए उन्हें अल्लाह से डराओ।

जैसे पिस्तौल हो पिस्तौल से डराओ। यूँ नाली करके यानी पिस्तौल छोड़ो नहीं, बस डराओ।
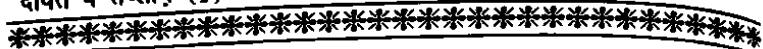
अल्लाह की पकड़ गोया पिस्तौल से गोली छूट गई

लेकिन जब लोग नहीं डरे तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने जिन बातों से उन्हें डराया था वह बात उनके सामने ले आए और पिस्तौल की गोली छोड़ दी। पानी की शक्ल में, हवा की शक्ल में, लंगड़े मच्छर की शक्ल में और छोटे परिन्दों की शक्ल में। इस तरह अल्लाह तआला ने अनोखे तरीक़े से उनकी पकड़ की।

कारतूस की जगह बन्दूक़ है, न कि रूमाल और प्याला

देखो एक बात सुन लो! कारतूस से शेर तो मरता है मगर वह कब मरेगा? जब कारतूस अपनी जगह पर हो। और कारतूस की जगह क्या है? बन्दूक़। बन्दूक़ के अन्दर कारतूस हो तो शेर मरेगा। और अगर कारतूस को आपने ले लिया रूमाल में और यूँ ही डाल दिया तो इन्शा-अल्लाह बिल्ली भी नहीं मरेगी।

यह दुनिया में जो सारे ख़राब क़िस्म के लोग उछल-कूद कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि कारतूस को रूमाल में लेकर या प्याले में लेकर डाला जा रहा है और समझ रहे हैं कि अल्लाह की मदद आएगी जिस तरह पहले अल्लाह की मदद आती थी।

पूरे बदन का क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल कारतूस का पिस्तौल में आना है

लेकिन यह नहीं देखते कि जो अल्लाह की मदद आती थी यह उस वक़्त होता था जब यह सवा पाँच फ़िट की बन्दूक़ और पिस्तौल अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल होता था।

इस सवा पाँच फ़िट की बन्दूक़ में आँख है। तो क़ुरआन ने जो बात आँख के बारे में कही वह आँख के अन्दर दाख़िल हो। पैर के बारे में जो बात कही वह पैर में दाख़िल हो। इसी तरह जब पूरे बदन

में कुरआन व हदीस वाली बात दाख़िल हो जाएगी तो यह समझो कि कारतूस जो है वह पिस्तौल में आ गया और बन्दूक़ में आ गया।

और अगर कुरआन में तो है हदीस में भी है, किताबों में भी है, तक़रीरों में भी है लेकिन बदन के अन्दर जारी नहीं हुआ तो यह समझो कि कारतूस पिस्तौल के अन्दर और बन्दूक़ के अन्दर नहीं आया। ऐसे कारतूस से बिल्ली भी नहीं मरती।

आप बिल्ली को मार रहे हैं। बिल्ली मज़ाक़ उड़ा रही है। कुत्ते भी मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। शेर भी मज़ाक़ उड़ा रहा है। तुम कहते हो अल्लाहु अक्बर। अल्लाह बहुत बड़े हैं उससे डरो, वह कह रहे हैं कि देखो कुछ नहीं किया तुम्हारे अल्लाह ने तेरह साल से।

इसके बाद फिर बदर की लड़ाई के अन्दर वह कारतूस छूटा। और उसमें उनके सत्तर बड़े-बड़े चौधरियों का ऑप्रेशन हुआ। और जब उनके ज़हरीले फोड़ों का ऑप्रेशन हुआ तो दूसरे लोग जो थे वह कहने लगे कि यह अल्लाह बड़ा अल्लाह बड़ा कहते थे। दखो इनके साथ अल्लाह की मदद आई। भाई चलो! हम भी अल्लाह को मानें। जो अल्लाह ऐसे कमज़ोरों की मदद करता है हम भी उस अल्लाह को मानें।

अब अबू सुफ़ियान भी अल्लाह को मानने पर आ गए। अबू जहल का बेटा भी आ गया। अबू जहल का भाई भी आ गया। ये सारे ही अल्लाह के मानने पर आ गए।

दुआ और मेहनत में जोड़ ज़रूरी

हम रोज़ मस्जिद में "इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम" की दुआ माँग रहे हैं लेकिन जब घर में जाते हैं, कारोबार में जाते हैं तो नबियों के दुश्मनों का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं।

भाई दुआ और मेहनत के अन्दर जोड़ होना चाहिए। आज जो पूरी दुनिया में मुसलमान परेशानियों में मुब्तला हैं, उसकी वजह यह है

कि दुआ उसकी एक लाईन पर जा रही है और मेहनत दूसरी लाईन पर जा रही है।

दुआ माँग रहा है यह नबियों वाली, और जब मस्जिद से बाहर निकला तो मेहनत कर रहा है नबियों के दुश्मनों वाली।

भाई देखो! जैसी दुआ माँगे, उसी के मुताबिक़ मेहनत हो। दुआ माँगे कि ऐ अल्लाह! मेरे को औलाद दे, तो उसे शादी भी करनी चाहिए। दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह! खेती में बरकत दे, तो उसे खेत में हल भी चलाना चाहिए।

दुआ माँगी, अल्लाह औलाद दे और शादी करता नहीं, दुआ माँगी कि खेती में बरकत दे और खेती करता नहीं।

जाना है मुम्बई और सवार हुए कोलकाता की रेल पर

इसको एक मिसाल से समझो। एक आदमी को मुम्बई जाना है और मुम्बई की ट्रेन खचाखच भरी हुई है। सामने एक दूसरी रेल ख़ाली मिल गई उसमें बैठ गया। वह थी कोलकाता वाली। और उसमें बैठकर दुआ माँगनी शुरू की कि ऐ अल्लाह! मेरा खाना हलाल का, मेरा कपड़ा हलाल का और मैं तब्लीग़ में भी लगा हुआ हूँ। दुआ की क़बूलियत की सारी शर्तें मेरे अन्दर पाई जा रही हैं। और ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ माँग रहा है। कि ऐ अल्लाह! मेरे को ख़ैरियत के साथ मुम्बई पहुँचा दे और ख़ुद दुआ माँगने के साथ-साथ सऊदी भी फ़ोन करा दिया वहाँ इसके लोग बैतुल्लाह शरीफ़ में और मस्जिदे नबवी में भी दुआ माँग रहे हैं और पूरे आलम के सारे औलिया-अल्लाह को फ़ोन करा दिए कि मैं ख़ैरियत के साथ मुम्बई पहुँच जाऊँ।

बैठा है कोलकाता की रेल में और दुआ माँगी जा रही है मुम्बई पहुँचने की। मस्जिद में आकर दुआ माँगता है नबियों वाली और बाज़ार में जाकर मेहनत करता है नबियों के दुश्मनों वाली। तो दुआ में

और मेहनत में टक्कर हो गई। तौले भर की ज़बान तो हिल रही है मुम्बई के लिए और ढाई मन का बदन हिल रहा है कोलकाता के लिए।

मस्जिद में तौले भर की ज़बान हिल रही है नबियों वाली दुआ़ के लिए, और जब मस्जिद से बाहर जाता है तो ढाई मन का बदन जो हिल रहा है वह उन लोगों वाले रास्ते पर है जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और जो लोग गुमराह हुए। तो दुआ़ और मेहनत में मुताबक़त (जोड़) नहीं रही। इसलिए हम यह कहते हैं कि जो दुआ़ मस्जिद में आकर ज़बान से माँगी जाती है, वैसी ही मेहनत मस्जिद से बाहर जाकर भी हो।

चारों तरफ़ से दुआ़एँ हो गईं लेकिन जब ट्रेन पहुँचेगी तो इन्शा-अल्लाह कोलकाता पहुँचेगी, मुम्बई नहीं।

रोज़ाना करोड़ों मुसलमान नबियों वाली लाईन की दुआ़ माँग रहे हैं "इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम" (ऐ अल्लाह! हमको सीधे रास्ते पर चला) लेकिन अल्लाह कहता है कि मैं तुझे सीधा रास्ता दिखाऊँगा, चलाऊँगा पहुँचाऊँगा लेकिन तू मेहनत भी तो नबियों वाली कर।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (پارہ–۲۱)

जब तू चलना शुरू कर देगा तो तेरा रास्ता खुलता रहेगा। यहाँ से खड़े-खड़े देख रहा है तो रास्ता तो तुझे बन्द दिखाई देगा। बस तू चलता रह, तेरा रास्ता खुलता जाएगा।

चार महीने मश्क़ के लिए

अब तुम कहोगे कि भाई फिर कारोबार और घर छोड़ दें? नहीं! बिल्कुल नहीं! बस चार महीने देकर अपने बदन को क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल करने की मश्क़ कर लो, तो इन्शा-अल्लाह यह कारतूस जो है वह पिस्तौल के अन्दर और बन्दूक़ के अन्दर आ जाएगा।

कुरआन के अन्दर अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ ، (پاره–١٩)

मुसलमानों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रखें।

आदमी नज़रें नीची करने वाला बन गया तो कुरआन की आयत उसकी आँख के अन्दर आ गई।

पैरों के बारे में अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا (پاره– ١٩)

ज़मीन पर तवाज़ो और आ़जिज़ी के साथ चलते हैं।

लो भाई! कुरआन की आयत का असर उसके पैर में भी आ गया।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

يَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (پاره– ٤)

ग़ौर करते हैं ज़मीन व आसमान की पैदाईश में।

तो गोया कुरआन की आयत उसके दिमाग़ के अन्दर आ गई।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला तक़्वा व तवक्कुल के बारे में भी कुरआन में फ़रमाते हैं:

"और तक़्वा व तवक्कुल की जगह है दिल"।

तो गोया उसके दिल के अन्दर भी कुरआन की आयत आ गई।

मेरे मोहतरम बुजुर्गो और दोस्तो! बदन के तमाम अंग कुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल हों, इसके लिए अपने वक़्त को फ़ारिग़ करें और चार महीने अल्लाह के रास्ते में लगाएँ।

तक़रीर (3)

विदोशों के लिए जमाअ़तों की तश्कील के सिलसिले में 8 फ़रवरी 1993 ई० को बंगलौर के इज्तिमा का ख़िताब

नबी करीम के बाद नुबुव्वत के काम को नुबुव्वत के अन्दाज़ पर करना, यह है ख़िलाफ़त यानी अल्लाह का ख़लीफ़ा होना। और यह ख़िलाफ़त वाला रास्ता जो अल्लाह पाक ने ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़रिये बताया क़ियामत तक आने वाला जितना दौर होगा उसके अन्दर तेईस साल का नबी पाक का दौर, फिर ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर और उसके बाद जब तक सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन एक भी दुनिया के अन्दर रहे, उनकी ज़िन्दगी क़ियामत तक के लिए नमूना है।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा
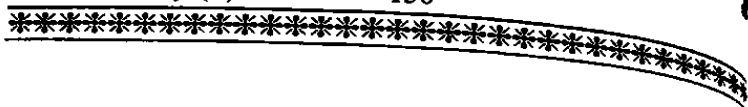
तक़रीर (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

ज़िन्दगी गुज़ारने के दो रास्ते

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो!

दुनिया के अन्दर ज़िन्दगी बसर करने के दो रास्ते हैं। एक रास्ता तो है सीधा और दूसरा रास्ता टेढ़ा है।

सीधा रास्ता अल्लाह की रज़ामन्दी को पहुँचाता है। सीधे रास्ते पर चलने वाले पर दुनिया के अन्दर इम्तिहान पेश आते हैं, आज़माईशें पेश आती हैं और अल्लाह पाक की मदद भी आती है।

साथ ही सीधे रास्ते पर चलने वाले के अन्दर रूहानी ताक़त बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। यह अन्दर ही अन्दर बढ़ती रहती है। दूसरे को दिखाई नहीं देती। यहाँ तक कि जो टेढ़े रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें भी वह दिखाई नहीं देती। बल्कि वे यह समझते हैं कि वह भी यूँ ही है। और टेढ़े रास्ते पर जो चलता है वह ख़ुदा की नाराज़गी वाले रास्ते पर चलता है और वह आदमी ख़ुदा से दूर होता जाता है।

आम तौर से टेढ़े वाले रास्ते पर चलने वाले की ज़िन्दगी आज़ाद होती है। जी चाही, मन चाही, मनमानी, दुनिया-तलबी और ख़ुदगर्ज़ी वाली होती है।

दुनिया ही में जहन्नम का मन्ज़र

टेढ़े रास्ते पर चलने वाले हर आदमी का ज़ेहन यह होता है कि अपना जज़्बा पूरा हो जाए और हर आदमी जब अपना जज़्बा पूरा करने पर आता है तो उसे इसकी फ़िक्र नहीं होती कि उससे दूसरे आदमी का जज़्बा पूरा हुआ या टूटा, इस तरह वह अपना जज़्बा पूरा करने के लिए बहुत-सों के जज़्बों को तोड़ता है। अब जिनके जज़्बे टूटे हैं वे भी इसी ख़्याल के हैं। वे भी अपना जज़्बा पूरा करने पर तुले हुए हैं इसलिए बाज़ मौक़े ऐसे आते हैं कि बहुतों के जज़्बे टूटने के बाद एक जज़्बा पूरा होता है। और जिन-जिनके जज़्बे टूटे हैं वे सब इन्तिज़ार में रहते हैं कि अगर हमारा मौक़ा आयेगा तो हम मिलकर अपना जज़्बा पूरा करेंगे। तो जब कई लोगों के जज़्बे तोड़कर एक आदमी अपना जज़्बा पूरा करता हैं तो गोया उसने जितनों के जज़्बे तोड़े उनको अपना दुश्मन बना लिया।

अब वे सारे मिलकर इसका जज़्बा तोड़ने की फ़िक्र में रहेंगे और मौक़े की तलाश में रहेंगे। अब यह रास्ता इनसान के लिए बड़ी उलझन का रास्ता है। इसके बावजूद कि उसके हाथ में मुल्क हो, माल हो, रुपया-पैसा हो, सोना-चाँदी हो, कारख़ाना हो, कपड़े का मिल हो, रहने का मकान भी बहुत बड़ा हो, उसके पास मजमा और जत्था भी ज़्यादा हो, लेकिन दुनिया के अन्दर ही उसे जहन्नम का मन्ज़र दिखाई देता है। अन्दर से उसे चैन नहीं होता। उसे सुकून नहीं होता।

दुनिया और आख़िरत दोनों जगह राहत ही राहत

उसके मुक़ाबले में जो आदमी सीधे रास्ते पर अ़मल करने वाला

होता है, उसको भी मुजाहदे पेश आते हैं। आज़माईशें आती हैं, इम्तिहानात आते हैं, लेकिन ये मुजाहदे, ये तकलीफ़ें और ये आज़माईशें अल्लाह की तरफ़ से उसकी रूहानी ताक़त को बढ़ाने के लिए आती हैं। उन मुजाहदों व आज़माईशों के अन्दर उसका ईमान और ज़्यादा बढ़ जाता है और ईमान जितना ताक़तवर होता है, अल्लाह की हिमायत उतनी ही उसके साथ ज़्यादा हो जाती है। अल्लाह की मदद उतनी ही उसके साथ ज़्यादा हो जाती है। फिर तो उसके लिए दुनिया व आख़िरत दोनों जगह राहत ही राहत है।

मौत का मामला

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! एक मामला मौत का है। मौत का मामला ऐसा है कि जिसका वक़्त आ गया, जिस जगह पर आ गया और जिस तरह से आ गया, उसे वहाँ पर मरना ही है। और मौत कब आएगी? कहाँ आएगी? यह किसी को नहीं मालूम। इसे तो बस अल्लाह तआला ही जानते हैं।

लेकिन अगर हिजरत करने वाला मरा तो वह अल्लाह की बात मानते-मानते मरा, अल्लाह को खुश करके मरा।

ऐसे शख़्स की मौत के वक़्त में फ़रिश्ते आएँगे। इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे। तसल्ली देंगे कि आगे का ग़म मत करो। पिछले का ग़म मत करो। आगे के बारे में ख़ौफ़ मत करो और जौनसी जन्नत का तुम से वायदा किया जाता था उसकी खुशख़बरी ले लो।

अल्लाह का ज़ाहिरी निज़ाम और ग़ैबी निज़ाम

अल्लाह पाक अपनी क़ुदरत से कई काम तो ऐसे करते हैं जो इनसान को दिखाई देते हैं। और कई काम ऐसे करते हैं जो इनसान को दिखाई नहीं देते।

जो काम अल्लाह पाक इनसान को दिखाते हैं उसका नाम है

"ज़ाहिरी निज़ाम"। और जो काम अल्लाह पाक इनसान को दिखाते नहीं उसका नाम है "ग़ैबी निज़ाम"। अब ग़ैबी निज़ाम इनसान की हिमायत में आए या उसके ख़िलाफ़ हो, वह इनसान को दिखाई नहीं देता। और ज़ाहिरी निज़ाम यह इनसान की मस्लेहतों के तहत है, उसके मुवाफ़िक़ पड़ रहा है या मुख़ालिफ़, यह सब कुछ इनसान को दिखाई देता है। इन्हें ज़ाहिरी आँखों से दिखाई देता है। और इनसान के हवास बख़ूबी इसे महसूस करते हैं। जब इनसान अपने देखे पर चलता है तो समझ-बूझकर चलता है।

ज़ाहिरी निज़ाम का हाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैंने तीन बातें बताईं:-

एक तो आँखों देखे पर चलना।

दूसरे समझ-बूझकर चलना।

तेसरे अपने गुर्दे यानी अपनी ताक़त पर चलना।

और फिर नतीजा निकलता है।

इनसान जो काम करता है अल्लाह तआला उसका नतीजा भी देते हैं। यह इनसान को जो नज़र आता है वह पूरा नहीं आता। उसे थोड़ा नज़र आता है। और जितना इनसान को नज़र आता है उसमें से जो समझ में आता है वह उससे भी थोड़ा है। आदमी को जो दिखाई देता है अव्वल तो वह थोड़ा है। उसे पूरा दिखाई नहीं देता है। माँ के पेट के अन्दर था पूरी माँ दिखाई नहीं देती थी। दुनिया के पेट के अन्दर आया तो पूरी दुनिया दिखाई नहीं देती।

जहाँ इनसान रहता है यह घिरा हुआ है। घेरने वाले इसे पूरा नहीं देखने देते। इसी तरह ज़माना भी इनसान को पूरा दिखाई नहीं देता। जो ज़माना गुज़र चुका वह इनसान के हाथ से निकल चुका और जो ज़माना आने वाला है वह इनसान के क़ाबू में नहीं। ले-देकर इनसान के सामने वह ज़माना है जो मौजूदा है। अब मौजूदा ज़माना वह

ज़माना है जो बाक़ी नहीं रहता है। अब इस वक़्त में सात बजकर दस मिनट हुए हैं। थोड़ी ही देर में साढ़े सात बज जाएँगे। थोड़ी देर के अन्दर पूरा दिन चला जाएगा। तो मौजूदा ज़माना इनसान के पास बाक़ी नहीं रहता।

इनसान पीछे से आगे की तरफ़ जा रहा है और ज़माना आगे से पीछे की तरफ़ जा रहा है। अब यही बंगलौर के अन्दर थोड़ी देर के लिए इनसानों से जो टच हुई तो यह मौजूदा ज़माना है, यही इनसान के पास महफ़ूज़ और मौजूद रहने वाला है। पिछला ज़माना तो बाक़ी नहीं रहा रहा, अगला ज़माना अभी हाथ नहीं आया। और यह मौजूदा ज़माना भी हाथ में नहीं रहेगा।

मौजूदा ज़माने का हाल और क़ियामत तक के लिए रहबरी

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातें और अफ़आ़ल (काम), इससे हमें क़ियामत तक रहबरी मिलती रहेगी। इसके लिए तेरह साल मक्का मुकर्रमा के और दस साल मदीना मुनव्वरा के हमारे लिए रहनुमा और रहबर हैं।

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो उसके बाद आपका लाया हुआ जो पाक तरीक़ा था वह ख़त्म नहीं हुआ। वह बराबर क़ियामत तक उम्मत में चलता रहेगा। इसके लिए मेहनत चलती रहेगी। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद जो ज़माना आया है, यह ज़माना इससे पहले कभी नहीं. आया। और भी नबी इस दुनिया से पर्दा फ़रमा गए लेकिन उनके बाद समझदार क़िस्म के लोग दूसरे नबी की आमद का इन्तिज़ार करते थे। जो लोग दीनदारी चाहते थे, जो लोग अमन व सुकून चाहते थे, जो लोग अल्लाह से ताल्लुक़ चाहते थे।

वे लोग इन्तिज़ार करते थे कि कोई नबी आए। फिर वह नबी आते थे तो साथ देने वाले थोड़े-से होते थे और मुक़ाबला करने वाले ज़्यादा होते थे। एसा हाल हर जगह ही था लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुनिया से पर्दा फ़रमा जाने के बाद अब कोई नबी आने वाला नहीं।

नबी के बाद आपके ख़लीफ़ाओं के दौर से रहबरी

अब नबी वाला काम नबी वाले तरीक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चले जाने के बाद कैसे हो?

एक तो नबी की मौजूदगी ख़त्म, जिस ज़माने के जो नबी होते थे वह बता देते थे कि अब नबी कौन होगा। लेकिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला काम आपके बताए हुए तरीक़े पर आपके दुनिया से जाने के बाद कैसे करना है इसके बारे में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस उम्मत को ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के हवाले फ़रमा कर तशरीफ़ ले गए और यूँ इरशाद फ़रमायाः

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَo (الحديث)

तर्जुमाः तुम लोग मेरा रास्ता मज़बूत पकड़ो और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का तरीक़ा मज़बूत पकड़ो।

तो नबी करीम के बाद नुबुव्वत के काम को नुबुव्वत के अन्दाज़ पर करना, यह है ख़िलाफ़त यानी अल्लाह का ख़लीफ़ा होना। और यह ख़िलाफ़त वाला रास्ता जो अल्लाह पाक ने ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़रिये बताया क़ियामत तक आने वाला जितना दौर होगा उसके अन्दर तेईस साल का नबी पाक का दौर, फिर ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर और उसके बाद जब तक सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन एक भी दुनिया के अन्दर रहे, उनकी ज़िन्दगी क़ियामत तक

के लिए नमूना है। इसलिए सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अज्मईन के पर्दा फ़रमा लेने के बाद जो भी दौर आया उसके अन्दर हमारे जितने भी दीन के बड़े, मशाईख़, उलमा और अल्लाह वाले थे उनके वक़्त में हालात पेश आए तो उन्होंने कुरआन में देखा, हदीस में देखा और सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की ज़िन्दगी में देखा और ग़ौर किया। उसके अन्दर बेचैन हुए। बेक़रार हुए। अल्लाह से दुआएँ माँगीं और अल्लाह पाक ने उनके लिए रास्ता खोल दिया। फिर उन्हें रास्ता दिखाई देने लगा, और यह क़ियामत तक होता रहेगा।

नुबुव्वत के बाद

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहला काम

दौरे नबवी से हमें क्या-क्या सबक़ मिला, दौरे ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से हमें क्या-क्या सबक़ मिला। अब हमारे ऊपर जो हालात आएँगे।

हमारे अपने घरेलू हालात आएँगे। हमारे अपने ख़ानदानी हालात आएँगे। या हमारे अपने क़ौमी हालात आएँगे। या हमारे अपने मुल्की हालात आएँगे। या हमारे ऊपर आलमी-पैमाने (विश्व स्तर) पर जो हालात आएँगे।

इन सारे हालात में क्या करना है, वह इससे हमें मालूम हो जाएगा। तेरह साल पहले दौरे नबवी के जो हालात थे वे ईमान की दावत के थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नुबुव्वत मिलते ही जो सबसे पहला काम किया वह कलिमे की दावत का था। फ़रमाते थेः

اَيُّهَاالنَّاسُ! قُوْلُوْا لَآاِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا (الحديث)

जब आपने यह दावत दी तो लोगों ने जल्दी नहीं मानी लेकिन जिसने मानी पुख़्तगी से मानी। कलिमे की यह दावत क्या थी? ऐ लोगो! ला इला-ह इल्लल्लाहु कह लो तुम कामयाब हो जाओगे। यानी

इस बात का इक़रार कर लो, दिल में यक़ीन पैदा करो कि सिवाय अल्लाह के कोई इबादत करने के क़ाबिल नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

दावत के ज़रिये करने के काम

अल्लाह पाक करता-धरता हैं। और अल्लाह पाक की कुदरत बड़ी विशाल है, उसके ख़ज़ाने बड़े अपार हैं। इसलिए अल्लाह पाक की इबादत और उसकी बात मानना ज़रूरी है। तब दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी बनेगी। चाहे आदमी मालदार हो या ग़रीब हो, चाहे हालात मुवाफ़िक़ हों या मुख़ालिफ़ हों, उसके साथ मजमा थोड़ा हो या ज़्यादा, लेकिन जिसे अल्लाह हिदायत न दे उसकी ज़िन्दगी बिगड़ गई।

दोस्तो! दावत की लाईन से ये करने और समझाने के काम हैं।

तकलीफ़ें अस्थाई हैं

दावत की इस राह में तकलीफ़ें आती हैं। सहाबा पर भी तकलीफ़ें बहुत आईं। उन तकलीफ़ों में आदमी के घबरा जाने का अन्देशा है। आदमी घबरा जाएगा तो ख़ुद-बख़ुद छोड़ देगा। ऐसे मौक़े पर कुरआन पाक से रहनुमाई मिलेगी। कुरआन पाक की आयतों में चन्द बातें होती हैं, एक तो यह कि उसमें आख़िरत की ज़िन्दगी बयान की गई है ताकि आदमी के ज़ेहन में यह बात बैठ जाए कि यह आ़रजी (अस्थाई) ज़िन्दगी है, असली नहीं। असली ज़िन्दगी आख़िरत की अभी बाक़ी है।

तमाम अम्बिया की दावत का हासिल और मग़ज़

मक्का मुकर्रमा के अन्दर जो कुरआन पाक उतरा। एक तो उसमें क़ियामत का तज़किरा बहुत हुआ। दूसरे जन्नत और जहन्नम का तज़किरा बहुत मिलगा। और पिछली उम्मतों का तज़किरा भी कसरत से मिलेगा। कि उनके नबियों ने दो बातों की दावत दी: एक कलिमे की

और एक नमाज़ की। जैसे-

يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ (پاره– ۸)

ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो। सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। "अल्लाह की इबादत करो" इसमें नमाज़ आ गई। और "सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के क़ाबिल नहीं" इसमें "कलिमा" आ गया। यह कलिमा ताक़त वाला बन जाए और नमाज़ जानदार बन जाए तो अल्लाह की मदद मिलेगी।

क़ुरआन में पिछले वाक़िआत को किस लिए दोहराया गया?

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो!

अस्सी आदमी ऐसे होंगे तो कोई इनसान और पूरी की पूरी क़ौम भी उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती। चुनाँचे क़ौमे आ़द पूरी की पूरी चन्द आदमियों का मुक़ाबला नहीं कर सकी। अल्लाह की तरफ़ से एक हवा आई और वे सारे फ़ना हो गए।

तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कलिमे की दावत शुरू की और जिसने कलिमा पढ़ा उसने भी दावत देनी शुरू की, उस पर तकलीफ़ें आईं और उस वक़्त क़ुरआन का नुज़ूल (उतरना) हुआ तो उसमें पिछले वाक़िआत आए ताकि आदमी को तसल्ली हो। पस नबियों पर और उनके मानने वालों पर तकलीफ़ें तो आईं लेकिन आख़िर में अल्लाह की मदद भी आई।

न मानने वालों के साथ ख़ुदा का मामला

नबियों और उनके मानने वालों की दावत जिसने नहीं मानी और क़बूल नहीं की तो उनको ढील दे दी गई। उन्हें ख़ूब कूदने-फाँदने दिया गया और फिर आख़िर में इतनी ज़ोर से अल्लाह पाक ने पछाड़ा कि

वे उठ भी नहीं सके, हमेशा के लिए ख़त्म हो गए। जैसे बदन में कोई फोड़ा होता है तो अन्दर कील भर जाती है, फिर उभरता है। इसी तरह जो ग़लत लोग हैं उन्हें अल्लाह पाक फोड़े की तरह थोड़े वक़्त के लिए उभरने देते हैं। उभरता है, फूलता है और जब भर जाता है जैसे फ़िरऔन ज़हरीला फोड़ा था, कहता था:

اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى

कि देखो मैं सबसे ऊँचा हूँ।

तो अल्लाह पाक ने उसे ऊँचा होने दिया, कील भरता रहा और फिर फट गया।

तो जिसके अन्दर ख़राबी भरी होगी और ख़राबी के ज़रिये जो ऊँचा हुआ तो अल्लाह पाक बीच में से उसे फाड़ देंगे। यह अल्लाह का निज़ाम है ताकि क़ियामत तक आने वाले इन वाक़िआत से तसल्ली लें।

कुरआन पाक की तालीम की ज़रूरत

कलिमे की दावत शुरू हुई तो तकलीफ़ें शुरू हुईं। तब तालीम के हल्के शुरू हुए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन और बहनोई तालीम ही तो कर रहे थे। अब घर-घर तालीम होने लगी। और तालीम में क्या होता था, कुरआन पाक ही तो पढ़ते थे।

दावत और तालीम का आपस में ताल्लुक़ और फ़र्क़

कुरआन पाक की एक तो है तिलावत यानी तालीम के तौर पर पढ़ना, और एक है दावत के तौर पर पढ़ना। इसी तरह सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर, एक तो है इसको ज़िक्र के तौर पर पढ़ना। एक है अल्लाह की पाकी बयान करना। अल्लाह की बड़ाई बयान करना। अल्लाह की तारीफ़ दूसरे के सामने बयान करना। अब यह दावत बन जाएगी। तन्हाई में बैठकर

याद करें तो ज़िक्र, दूसरे के सामने यह बात करेंगे तो दावत होगी। चाहे बीवी ही के सामने क्यों न हो। और फिर दावत वाली सारी मददें अल्लाह पाक लानी शुरू फ़रमा देंगे।

दावत की राह में सिर्फ़ तकलीफ़ ही नहीं मदद भी आती है

एक तरफ़ तो दावत व तब्लीग़ का काम शुरू हुआ। उस पर तकलीफ़ें आईं तो तालीम चली। इस राह में कई बार अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ख़ुशगवार माहौल भी अ़ता फ़रमाया, अच्छे हालात भी आए। नुस्रत व मदद के वाक़िआ़त भी हुए। ऐसा नहीं कि मक्का मुकर्रमा में बस तकलीफ़ ही तकलीफ़ थी। मक्का मुकर्रमा में भी अल्लाह पाक की नुस्रत व मदद शामिल थी। चुनाँचे अबू जहल ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में कोई ग़लत मन्सूबा बनाया, वह गया। उसने सोचा कि मैं रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाऊँ। इरादा ही किया था कि फ़ौरन पीछे हट गया। उसने बयान किया कि मुझे तो कुछ पर वाले दिखाई दिए। और मुझे बुहत डर लग गया। इसलिए पीछे हट गया। अगर वह आगे बढ़ता तो फ़रिश्ते उसे नोच डालते।

तो बाज़ मौक़ों पर यह बात भी हुई कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ ग़ैबी मदद हुई और हैरत-अंगेज़ तरीक़े पर हुई। ख़ास तौर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह के साथ हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब हिजरत करने लगे तो यह छुपकर नहीं गए बिल्कुल सबके सामने डंके की चोट पर गए। तो देखिए दोनों क़िस्म के हालात मक्का के अन्दर पेश आए।

हज़रत ज़माद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ

एक बहुत बड़े शायर, बहुत बड़े मुक़र्रिर हज़रत ज़माद रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का तशरीफ़ लाए। बेईमानों ने उनके कान भर दिये कि देखो हमारे यहाँ यह किस्सा हुआ है। उनकी (हुज़ूरे पाक की) बात तुम मत मानना। और देखो! सुनना भी नहीं। इसलिए कि जो भी उनकी बात सुनता है वह असर ले लेता है।

बहुत बड़ा शायर है और ख़तीब है। लेकिन अपने कान में उंगली डाल दी ताकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई बात मेरे कान में न पड़े। लोगों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ इशारा करके दिखाया कि देखो! यह वही शख़्स है इससे बचते रहना। कुछ देर तो बचते रहे फिर ख़्याल आया कि मैं कोई बेवक़ूफ़ आदमी नहीं हूँ। मैं तो खुद मजमे को हिला देने वाला हूँ। मजमे के ज़ेहन को फैर देने वाला हूँ। मुझे कौन फैरेगा? यह ख़्याल आया और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे-पीछे घर गये और घर जाकर कहा कि आप क्या बात करते हैं?

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके सामने दावत पेश की। बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए और वहीं कलिमा पढ़ लिया। कलिमा पढ़कर वापस जाने लगे तो लोगों ने चेहरा देखते ही पहचान लिया कि यह भी फिर गए। फिर वह अपनी क़ौम के अन्दर गए। अल्लाह पाक ने उनसे कितना ज़बरदस्त काम लिया, यह सब कुछ हमें तारीख़ और सीरत की किताबों से मालूम है।

मुश्किलों का हल

इस राह में दोनों हालतें पेश आती हैं। एक तरफ़ तो मुजाहदा, मुसीबत में घिरना, आज़माईश और तकलीफ़ें, यह भी हुआ। दूसरी
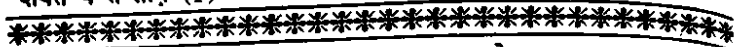
तरफ़ मदद के हालात आए। उन्हीं हालात के अन्दर रहकर इलाज तलाश करना है। अगर सिर्फ़ मुवाफ़िक हालात आयें तो इनसान इतरा जाए। इसका ख़तरा है। और मुख़ालिफ़ हालात आयें तो घबरा जाए। इसका अन्देशा है।

अब इनसान के लिए जो हल (समाधान) बताया गया है वह यह कि अल्लाह पाक का ज़िक्र करना और कुरआन पाक की तिलावत करना है। जितना अल्लाह पाक का ज़िक्र करेगा। जितनी तिलावत करेगा और दुआ माँगेगा, उसी क़द्र अल्लाह पाक से ताल्लुक होगा। और अल्लाह पाक से ताल्लुक हुआ तो मुवाफ़िक हालात के अन्दर बजाए इतराने के शुक्र करेगा। और मुख़ालिफ़ हालात के अन्दर बजाए घबराने के सब्र करेगा। और सब्र करेगा तो अल्लाह की ताकत साथ में होगी। बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है। और शुक्र करेगा तो अल्लाह की नेमतें बढ़ेंगी जैसा कि कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अगर तुम शुक्र करोगे तो हम और इज़ाफ़ा कर देंगे।

तो दोनों हालतों के अन्दर यह तरक्की करता चला जाएगा। अगर ज़िक्र करेगा, तिलावत करेगा, दुआ माँगेगा तो अल्लाह पाक से ताल्लुक जुड़ेगा। तो तकलीफ़ों के अन्दर भी अल्लाह पाक से करीब होगा और नेमतों के अन्दर भी।

इक्रामे मुस्लिम की अहमियत

एक तरफ़ कलिमे की दावत, एक तरफ़ तालीम के हल्के, अल्लाह का ज़िक्र और कुरआन पाक की तिलावत और दुआओं का माँगना, यह शुरू हुआ, वहीं एक बात और भी हुई जो भी कलिमा पढ़ने वाला होता था वह अपनी पूरी क़ौम में अकेला, पूरे ख़ानदान में अकेला, बाकी पूरी कौम ख़िलाफ़ है, पूरा ख़ानदान ख़िलाफ़ है। तो फिर हर ख़ानदान का अकेला अकेला कलिमा पढ़ने वाला बहुत परेशान होगा।

इसलिए कि पूरा-पूरा ख़ानदान एक तरफ़ और यह आदमी अकेला एक तरफ़। तो यह अकेला आदमी क्या करे, इसका इन्तिज़ाम अल्लाह पाक ने यह किया कि जिसने कलिमा पढ़ा वह एक दूसरे का इक्राम करे। और कलिमे वाले एक बन जाएँ। उनके अन्दर एकता आ जाए। जिसे हम "इक्रामे मुस्लिम" कहते हैं।

इक्रामे मुस्लिम और इस्लामी भाईचारे के नमूने

कलिमे वाले आपस में यह न देखें कि यह मेरी क़ौम का है या नहीं। देखो हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनको इस्लाम लाने के बाद तकलीफ़ हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो क़बीला बनू तमीम के बहुत बड़े सरदार थे, उन्होंने ख़रीदकर आज़ाद कर दिया। कोई ख़ानदानी जोड़ नहीं, सिर्फ़ इस बिना पर कि उन्होंने कलिमा पढ़ा है। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इक्राम किया।

इसी तरह हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए यह देखने के लिए कि दावत देने वाला जो शख़्स खड़ा हुआ है, क्या हैं? कैसे हैं? यह भी उनको मालूम है कि लोगों को उनसे मुलाक़ात का इल्म हुआ तो यह ख़ुद मारे जाएँगे।

हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने लेजाकर चुपके से खाना खिला दिया। हालाँकि कोई ख़ानदानी जोड़ नहीं। तो इक्रामे मुस्लिम जिसका चौथा नम्बर है उसके ज़रिए कलिमे वालों के अन्दर इत्तिहाद और एकता पैदा हुई। और जितनी एकता कलिमों वालों और दावत वालों में पैदा हुई उतना ग़ैर-कलिमे वालों पर अल्लाह की तरफ़ से रौब पड़ना ही था।

कलिमे वालों की आपसी खींचातानी का नतीजा

अब अगर ईमान वाले, दीन का कलिमा पढ़ने वाले और कलिमे

की दावत का काम करने वाले लोगों के बीच कशाकश (खींचातानी) रही तो उसका एक नुक़सान तो यह है कि कमज़ोर होंगे। और दूसरा नुक़सान यह होगा कि दूसरों के अन्दर से रौब निकल जाएगा:

فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ (پارہ- ١٦)

यानी तुम्हारे अन्दर आपस में कशाकश होगी तो तुम कमज़ोर हो जाओगे और तुम्हारी हवा (धाक) उखड़ जाएगी।

तो इस बिना पर जो कलिमे वाले थे उन्होंने एक-दूसरे का इक्राम किया और कलिमे वालों में एकता और इत्तिहाद पैदा होता चला गया। अगरचे थोड़े-से थे।

पूरी इनसानियत की फ़िक्र ज़रूरी है।

अच्छा अब इस पर भी ग़ौर करो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरे आ़लम के लिए नबी बनकर तशरीफ़ लाए। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जो उम्मत है उसके एक-एक आदमी को अल्लाह पाक ने पूरे आ़लम के लिए पैदा किया। एक-एक उम्मती पूरे आ़लम के लिए है। पूरे आ़लम की फ़िक्र करने वाला अपनी भी, घर वालों, ख़ानदान वालों, क़ौम वालों की भी फ़िक्र करे। क्योंकि हम रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उम्मती हैं।

दावत की राह में ख़र्चों और कारगुज़ारी के सिलसिले में ज़रूरी हिदायात

अब ज़ाहिर है कि जो पूरे आ़लम की फ़िक्र करता है, उन तक अल्लाह की बात पहुँचाता है, तो आप जानते होंगे कि इन कामों में कोई आमदनी नहीं है, कोई भी काम करना हो, तो उसमें आमदनी की ज़रूरत होती है। पैसे होने चाहिएँ। यहाँ भी अभी आप कहेंगे कि भाई मैं तो जाने के लिए तैयार हूँ तो आप से पूछा जाएगा कि कितना ख़र्च

करने के लिए तैयार हो। अगर साल भर के लिए जा रहे हो तो कितना ख़र्च करोगे। अगर चार महीने के लिए जा रहे हो तो कितना ख़र्च करोगे। और मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! ख़र्चे के साथ चूँकि दीन का काम और दावत का करना है तो यह भी पूछा जाएगा कि तुमने ये चार महीने, साल भर काम में लगाये या नहीं?

बाहर दूसरे मुल्कों के लिए कैसे लोगों की जमाअ़त तश्कील दी जाए

अब अगर आपने चार महीने लगाये हैं मगर बीस-पच्चीस साल पहले, तो फिर बाहर मुल्कों के लिए तश्कील करने वाले कहेंगे "कि तुमने पच्चीस साल पहले चार महीने लगाए तो ऐसे आदमी को हम बाहर नहीं भेजा करते। बाहर मुल्कों में तो ऐसे आदमी को भेजते हैं जो मक़ामी काम करता है और साल का चिल्ला तो कम से कम देता ही रहे। सालाना, माहाना, हफ़्तेवारी और रोज़ाना की जो तरतीब है वह करता रहे। ताकि उसके अन्दर दीन की दावत की फ़िक्र आए। इनसानियत का ग़म आए और नबियों वाला दर्द आए।

कम सलाहियत वाले भी हैरत-अंगेज़ कारनामे अन्जाम देते हैं

नबियों वाला दर्द, इनसानियत का ग़म, दीन की फ़िक्र अगर आ गई तो बहुत-सी बार कम सलाहियत वाले आदमी से भी अल्लाह पाक इतना काम ले लेते हैं कि आप हैरान रह जाएँगे।

जमाअ़तें ज़्यादा आ गईं, कोई अमीर मिलता नहीं, जो पढ़े-लिखे हैं वे सारे एक जमाअ़त में चले जाते हैं। उनसे अगर कहा जाए कि भाई दो-दो आदमी इन बेपढ़े लिखे लोगों मे लग जाओ, तो वे तैयार नहीं होते। हालाँकि उन्हें तैयार हो जाना चाहिए। ऐसे लोगों के साथ

मिलकर अच्छा-ख़ासा मुजाहदा (मेहनत और कोशिश) करना पड़ेगा। और उसी मुजाहदे के अन्दर रूहानी तरक़्क़ी होगी। उसी मुजाहदे में अल्लाह पाक रास्ता खोलेंगे।

लेकिन ये पढ़े-लिखे लोग आ़म तौर पर तैयार नहीं होते। लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल है कि अब तैयार होने लगे हैं और पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ों को लेकर जाने लगे हैं। लेकिन फिर भी कई बार बेपढ़ों की जमाअ़तें ज़्यादा होती हैं।

बेपढ़ों की कारगुज़ारियों के मिसाली वाक़िआ़त

एक मौक़े पर बेपढ़ों की जमाअ़त ज़्यादा थी। कोई ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। तो समझा कर उनको भेज दिया कि तुम यहाँ से जमाअ़त लेकर जाओ, तुम में से एक आदमी को हम अमीर बना देते हैं। अब जहाँ जाओगे तुम्हें पढ़े लिखे आदमी मिलेंगे। उन पढ़े-लिखे आदमियों की ख़ुशामद करना और यह किताब (फ़ज़ाइले आमाल) देना ताकि तुमको पढ़कर सुना दें। और उनसे अपने कलिमे वग़ैरह ठीक करना। और छह नम्बर उन लोगों के सामने पेश कर देना। इस तरह एक जमाअ़त बेपढ़ों की यहाँ से निकली। और पढ़े-लिखों से उन्होंने अपनी नमाज़ भी दुरुस्त कर ली, किताब भी सुनी और पढ़े-लिखे लोगों से उन्होंने बयानात भी करवाए। बस्ती के इमाम साहिब जब कभी खड़े होकर बयान करते तो सिर्फ़ लान-तान शुरू कर देते। लोग उनकी बात सुनने को तैयार नहीं होते। कि अरे भाई! उनका बयान मत कराओ। यह खड़े होते हैं तो लोगों पर लान-तान शुरू कर देते हैं। इधर यह जमाअ़त जो गई थी उसने इधर-उधर से लोगों को जमा करना शुरू किया। इमाम साहिब से अपनी सूरः फ़ातिहा (अल्हम्दु शरीफ) ठीक कराई। उनसे किताब सुनी, फिर इमाम साहिब से कहा "इमाम साहिब! बयान आप करें लेकिन छह नम्बर के अन्दर बयान करना है।"

अब छह नम्बर के अन्दर इमाम साहिब को जो बाँध दिया तो उन्हें जैसे हाथी के सर पर कौआ बैठा हुआ है। बार-बार ख़्याल लगा रहता कि छह नम्बर से हटा तो नहीं। इस तरह छह नम्बर की पाबन्दी के साथ उन्होंने बयान शुरू किया। उसके बाद फिर एक बड़े मियाँ खड़े हो गए कि भाई इसी को सीखने के लिए हम लोग चल रहे हैं। हम तो बेपढ़े लिखे लोग हैं, तुम लोग पढ़े लिखे लोग हो। तुम हमारे साथ चलो ताकि हमारी नमाज़ ठीक हो जाए।

तो इस तरह उन्होंने लोगों की तश्कील की। इमाम साहिब की भी तश्कील की। किसी की तीन दिन की, किसी की चिल्ले की, यहाँ तक कि चार महीने की भी जमाअ़त थी।

एक जगह का और मैं आपको क़िस्सा सुनाऊँ। एक जमाअ़त एक जगह गई। वहाँ पूरा का पूरा गाँव कलिमा छोड़ चुका था और मस्जिद के अन्दर घोड़े बंधे हुए थे। यह जमाअ़त वहाँ पर गई। गाँव वालों ने कहा कि भाई! जब हमारे पास कलिमा था तो तुम लोग आए नहीं। और अब हम लोग कलिमा छोड़ चुके हैं तो तुम लोग आए हो। क्या फ़ायदा तुम्हारे आने का? अब उनके दिल में आख़िरत का ग़म और दीन का दर्द तथा आख़िरत की फ़िक्र पैदा हुई। यह जमाअ़त हिचकियाँ मार-मारकर रो रही है कि यह पूरा का पूरा गाँव हमेशा के लिए जहन्नम में जाएगा। दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे। तो देखो ज़्यादा पढ़े-लिखे लोग नहीं हैं लेकिन इनसानियत का ग़म और नबियों वाला ग़म अल्लाह पाक ने दिया ख़ूब रोये। गाँव वाले ताज्जुब करने लगे कि भाई! तुम रोते क्यों हो? हम तुमको खाना दे देंगे।

उन लोगों ने कहा कि खाना तो हमारी देगची में मौजूद है।

अरे भाई अगर तुमको पैसे चाहिएँ तो हम तुमको पैसे दे दें?

उन्होंने कहा "देखो हमारे पास पैसे भी मौजूद हैं"

भाई! सर्दियों में कम्बल न हो तो कम्बल दे दें?

उन्होंने कहा कि "देखो! कम्बल भी मौजूद है"

गाँव वाले पूछने लगे, "फिर रोते क्यों हो?"

देखो! कैसा असर पड़ता है। इनसानियत का जब ग़म, दर्द और फ़िक्र होती है तो उसका असर ज़रूर पड़ता है, असर पड़े बग़ैर नहीं रहता।

ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु किस क़द्र मुख़ालिफ़ थे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़ का उन पर असर पड़ा।

हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर असर पड़ा।

अबू जहल के बेटे हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर असर पड़ा।

हज़रत इक्रिमा के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ़

जब मक्का मुकर्रमा फ़तह हो गया तो अबू जहल का बेटा इक्रिमा निकल कर भाग गया। उनकी बीवी मुसलमान हो चुकी थीं। इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सोचा कि मक्का में रहना ही नहीं है। किसी दूसरी जगह चले गए। बीवी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि हज़रत! मेरे मियाँ को अमान दे दीजिए। जब अमान मिलेगी और अच्छे माहौल को देखेगा तो क्या अ़जब है कि अल्लाह उसे जन्नत वाला रास्ता दिखा दें। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसे अमान दे दी। अब बीवी तलाश में गई।

इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिल्कुल बाहर निकल गए और निकलने के बाद एक कश्ती में सवार हो गए। कश्ती चल पड़ी। अब ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम देखो:

कश्ती भंवर मे फंस गई। डूबने के क़रीब हो गए। कश्ती का जो चलाने वाला था उसने कहा कि कश्ती के बचने की कोई उम्मीद नहीं

सिवाय इसके कि एक ख़ुदा को मानो। वही बचा सकता है। "ला इला-ह इल्लल्लाहु"।

इक्रिमा कहने लगे कि इसी कलिमे से तो भागकर हम आए और यह कलिमा हमारे पास यहाँ पर भी आ गया। इतने में सामने बीवी दिखाई दी। इक्रिमा ताज्जुब में पड़ गए। बीवी ने इशारा किया तो इक्रिमा ने अपने गले पर हाथ फैर कर कहा कि मुझे मार डालेंगे। क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर उनसे लड़ता रहा। मुझसे पूरा बदला उतारेंगे। मेरा गला काटेंगे। बीवी ने कहा कि उन्होंने अमान दे दी है। तब इक्रिमा साथ चले। रास्ते में बीवी से मुहब्बत करनी चाही, बीवी ने कहा कि मैं मुहब्बत नहीं करने दूँगी। इसलिए कि मैं कलिमे वाली हूँ और तुम बग़ैर कलिमे वाले हो। इसका बहुत ज़बरदस्त असर पड़ा।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अपने दुश्मन के साथ मामला

उसके बाद मक्का में आए। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास पहुँचे तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से कहा कि इक्रिमा आ रहा है, अबू जहल का बेटा। तुम उसके बाप को बुरा मत कहना। इसलिए कि बाप को अगर बुरा कहोगे तो उसके बाप तक तो गालियाँ पहुँचेंगी नहीं, लेकिन उसके बेटे को तकलीफ़ होगी।

अब जब इक्रिमा रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आए तो आप अपना बिस्तर छोड़कर इस हालत में कि चादर कन्धे के ऊपर है और वह घिसट रही है, स्वागत के लिए दरवाज़े पर पहुँचे। यह वह शख़्स है जो हर लड़ाई के अन्दर आपके ख़िलाफ़ लड़ने वाला और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़त्म कर देने की असफल कोशिश करने वाला है, और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके

स्वागत के लिए आगे बढ़ रहे हैं। इक्रिमा का हाथ पकड़कर चले और अपने बिस्तर पर बैठाया। मारे शर्म के उसकी निगाहें नीची हो गईं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दावत दी तो यह अबू जहल का बेटा हज़रत इक्रिमा वहीं रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु बन गए। और उन्होंने वहीं पर कलिमा पढ़ लिया। और कलिमा पढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के प्यारे नबी! मैंने जितना माल और जितनी जान दीन के मिटाने पर लगाया है, उससे दोगुनी जान दीन के फैलाने पर लगाऊँगा। यह हज़रत इक्रिमा ने कहा।

अख़्लाक़ की प्रभावकारी ताक़त

यह ख़ूब याद रखो, अख़्लाक़ का बरतना और मानूस करना यह हैरत-अंगेज़ (आश्चर्य जनक) चीज़ है। इसके ज़रिये आप अपने घर वालों में भी दीन ला सकेंगे और इसके ज़रिये काम करने वाले दोस्तों के अन्दर इत्तिहाद और संगठन भी पैदा होगा। यहाँ तक कि अगर आप कारोबारी आदमी हैं तो अगर आपकी दुकान पर कोई आदमी ग़ैर-मुस्लिम आए जो ख़ुदा का न मानने वाला है, आप उसके साथ भी अख़्लाक़ बरतेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, ग़बन नहीं करेंगे, धोखा नहीं देंगे, ख़ियानत नहीं करेंगे, नाप-तौल के अन्दर कमी नहीं करेंगे और आप उसके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे, अच्छी तरह बैठाएँगे, मीठे अन्दाज़ में उससे बात करेंगे, और आपके ज़ेहन में सिर्फ़ पैसे कमाना न हो बल्कि आपके ज़ेहन में रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए पाकीज़ा अख़्लाक़ का बरतना हो, तो मेरे भाईयो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की लाई हुई एक-एक चीज़ ऐसी है कि जो इनसानों के दिलों को इस तरह खींचती है जिस तरह मक़्नातीस की तरफ़ लोहा खिंचता है। यह आकर्षण और कशिश है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए तरीक़े के अन्दर। ऐसा नहीं कि जब पूरी ज़िन्दगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की

तरफ़ आ जाएगी तब लोगों के दिल खिंचेंगे। बल्कि जो भी चीज़ और जितनी भी आती चली जाएगी। आपकी बातें और ख़ूबियाँ तो दिल को खींचने वाली बनेंगी।

दूसरों के लिए रोना काम आया

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अन्दर की बेचैनी, अन्दर का दर्द, अन्दर का ग़म, ये इनसानियत के दिलों को खींचने वाली चीज़ें हैं। अब देखो ना! वह जमाअत जो कम-पढ़ों की थी और उस बस्ती में गई तो हिचकियाँ मार-मारकर रोई। लोगों ने पूछा कि खाना तुम्हारे पास, पैसा तुम्हारे पास, बिस्तर तुम्हारे पास, तो फिर इतनी बेचैनी और बेक़रारी के साथ आख़िर तुम रो क्यों रहे हो?

तो जमाअत वालों ने कहा "हम तुम्हारे लिए रो रहे हैं, तुमने कलिमा छोड़ दिया" यह सुनकर कि ये सीधे-सादे बे-ग़रज़ लोग जिनका हमारे बुरे-भले से कोई मतलब नहीं। मगर वे हमारे भले की ख़ातिर रो रहे हैं, हिचकियाँ मार-मारकर रो रहे हैं, अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी और सब ने तौबा करके अपनी दुनिया बदल डाली।

ख़र्चों के मसले का हल क्या है?

हमने बताया कि कलिमे की दावत, तालीम के हल्के, अल्लाह का ज़िक्र, दुआओं का माँगना और उसके साथ एक दूसरे का इक्राम। लकिन ये चारों काम ऐसे थे जिसके अन्दर ख़र्चा ही ख़र्चा है, आमदनी नहीं है। और जो काम पूरे आलम के अन्दर करना हो, बग़ैर आमदनी के कैसे हो?

दो घन्टे कलिमे की दावत दो एक पैसा जेब में अता नहीं। दो घन्टे तालीम करो चार घन्टे तिलावत, ज़िक्र और दुआ माँगो और बाद में जेब टटोलो, एक पाई जेब में नहीं आती। और जब इक्राम करोगे तो जेब से और निकालना पड़ेगा। तो जिस काम में ख़र्चा ही ख़र्चा हो

आमदनी नहीं तो वह काम दुनिया में चले कैसे? अपनी कौम में भी करना, ख़ानदान में भी करना। मुल्क में भी करना। मुल्क से बाहर भी करना। कियामत तक के लोगों में भी करना और इसमें ख़र्चा ही ख़र्चा। आमदनी का तो नाम व निशान भी नहीं, तो यह काम दुनिया में चले कैसे?

अल्लाह के ख़ज़ानों की कुंजी

अल्लाह पाक ने इसका यह इन्तिज़ाम किया कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को आसमानों पर बुलाकर जो ख़ज़ाने थे वे दिखाए। और उनकी चाबी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हवाले कर दी। वह चाबी क्या थी? वह थी नामज़! और यूँ फ़रमाया कि जब तुम्हारी कोई ज़रूरत अटक जाए तो "इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीनु" नमाज़ पढ़ो और अल्लाह से माँगो। ये अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और इन्हें लेने की कुंजी है नमाज़। नमाज़ पढ़ो और ख़ज़ाने लो। इस नमाज़ को लेकर आप तशरीफ़ लाए तो अब जहाँ कोई काम अटकेगा हम नमाज़ पढ़ेंगे और अल्लाह से कहेंगे।

नमाज़ को जानदार कैसे बनाया जाए?

लेकिन भाई नमाज़ जानदार होनी चाहिए। कहीं ज़ेहनों के अन्दर यह न आए कि हम नमाज़ पढ़कर अल्लाह से कहते हैं और हमारे काम बनते नहीं। यह ज़ेहन में न आ जाए। नमाज़ जानदार होनी चाहिए। और नमाज़ को जानदार बनाने के लिए नमाज़ में पाँच बातें लानी होंगी।

1. एक कलिमे वाला यक़ीन। 2. फ़ज़ाइल वाला इल्म।
3. मसाइल वाली शक्ल। 4. अल्लाह वाला ध्यान।
5. इख़्लास वाली नीयत।

ये पाँच बातें नमाज़ में लानी पड़ेंगी।

कलिमे वाला यक़ीन मिलेगा दावत की फ़िज़ा में।
फ़ज़ाइल का इल्म, यह मिलेगा तालीम के हल्क़ों में।
मसाइल वाली शक्ल, यह मिलेगी उलमा से पूछकर।
अल्लाह वाला ध्यान, यह मिलेगा तिलावत और ज़िक्र से।
और इख़्लास वाली नीयत यानी अल्लाह को राज़ी करने का जज़्बा, यह कैसे मिलेगा? इसको ज़रा तफ़सील से बताऊँगा।

इख़्लासे नीयत की ताक़त

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए मक्का के पहाड़ को सोना बनाने की पेशकश अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते ने की। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनकार कर दिया। आप जानते थे कि पहाड़ अगर सोना बन गया, चाँदी हीरे जवाहिरात बन गए। और सोना चाँदी देकर लोगों से दीन का काम लिया तो लोग फिर सोने और चाँदी के लिए दीन का काम करेंगे। अल्लाह के लिए नहीं करेंगे। और जब सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाता है तो फिर दीन में इतनी ताक़त नहीं होती जो फ़िरऔ़न को ज़ेर (पस्त) कर दे कैसर व किस्रा को ज़ेर कर दे। जालूत को ज़ेर कर दे अबू जहल के मजमे को ज़ेर कर दे। जब सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाएगा तब दीन में ताक़त नहीं आएगी। जब इख़्लास के साथ दीन का काम न किया जाए तो दीन में बरकत नहीं आती। अगर सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाए तो वे बरकतें जो बनी इस्राईल ने हासिल कीं वे बरकतें नहीं मिल सकतीं। जो बरकतें सहाबा ने हासिल कीं वे बरकतें नहीं मिल सकतीं। तो दीन का काम सोने-चाँदी के लिए न हो, दीन का काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए हो। इसलिए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सोने चाँदी का इनकार कर दिया ताकि लोग दीन का काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए करें।

इख़्लास पैदा करने का तरीक़ा

इख़्लास पैदा करने का तरीक़ा यह है कि दीन का काम आदमी करे अपनी दुनिया को कुरबान करके। तभी उम्मीद है इख़्लास के पैदा होने की। और अगर दीन को ज़रिया बनाया अपनी दुनियावी ग़र्ज़ों के पूरा करने का तो ख़तरा है कि दीन निकल जाएगा।

अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं

यह बनी इस्राईल जो अल्लाह की बारगाह से धुतकारे गये वे इसी लिए धुतकारे गये कि नबियों की औलाद थे और दीन के काम को दुनिया हासिल करने और खुद-ग़र्ज़ी के लिए करना शुरू किया। तो होते-होते दीन ज़िन्दगी से निकल गया और दुनिया ही दुनिया रह गई।

और सहाबा-ए-किराम बुत-परस्तों की औलाद थे। सहाबा के बाप, दादा, परदादा ये सारे के सारे बुत-परस्त थे लेकिन उन्होंने जब अल्लाह को राज़ी करना तय कर लिया और अल्लाह को राज़ी करने के लिए जो तकलीफ़ उठानी पड़ी इरादा कर लिया कि तकलीफ़ उठा लेंगे और अल्लाह को राज़ी करके जन्नत में जाएँगे। अल्लाह को नाराज़ करके जहन्नम में नहीं जाएँगे। जब उनके अन्दर यह इख़्लास आ गया और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कहने के मुताबिक़ उन्होंने क़दम उठाया तो यह "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (जिन लोगों पर अल्लाह का इनाम हुआ) में शामिल हो गए और पूरी दुनिया के लिए अल्लाह पाक ने उनको रहबर बना दिया।

अगर बुत-परस्तों (बुतों को पूजने वालों) की औलाद सही काम करती है और अल्लाह को राज़ी करने के लिए करती है तो वह दुनिया की इमाम बनती है। और अगर अम्बिया की औलाद दीन का काम खुद-ग़र्ज़ी और दुनिया हासिल करने के लिए करती हो तो वह "ग़ैरिल् मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन" (जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और जो गुमराह हुए) बनकर हमेशा के लिए जहन्नमी बन गई।

अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं। अल्लाह तो यह देखता है कि एक अल्लाह की ताक़त को किसने माना और एक अल्लाह की इबादत किसने की।

उम्मत का सबसे मुफ़्लिस शख़्स

नमाज़ के अन्दर ताक़त पैदा करने के लिए पाँच बातें ज़रूरी बताई गई हैं, उनकी रियायत और ध्यान से यह नमाज़ जानदार बन गई। लेकिन जानदार बनने के बाद नमाज़ अपने पास बाक़ी रहे इसके लिए फ़िक्र होनी चाहिए। नमाज़ बनी बनाई दूसरे के पास चली जाएगी अगर दूसरे का आपने हक़ दबाया। किसी की ग़ीबत कर दी। किसी पर तोहमत लगा दी। किसी को ख़्वाह-मख़्वाह बुरा कह दिया। तो यह जितने बन्दों के हक़ हैं, जब आदमी इन्हें अदा नहीं करता तो आपका बना-बनाया अ़मल उसके पास चला जाता है जिसका हक़ दबाया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

मेरी उम्मत का मुफ़्लिस कौन है?

लोगों ने कहा, ऐसा शख़्स जिसके पास रुपये-पैसे न हों।

फ़रमाया, नहीं! मेरी उम्मत का मुफ़्लिस शख़्स वह है कि नेकियों का ढेर लेकर क़ियामत में आएगा और लोग यूँ कहेंगे कि उसने मुझे गाली दी है, उसने मुझ पर तोहमत लगाई, मेरी ज़मीन दबा ली, मेरा पैसा चुराया। तो सारी नेकियाँ दूसरों के पास चली जाएँगी। फिर एक कहेगा कि अल्लाह पाक मैं तो रह गया। इसने मुझे गालियाँ दी थीं। अल्लाह पाक कहेंगे कि इसकी आमदनी ख़त्म हो गई। अब चल तेरी इतनी बुराईयाँ इसके ऊपर डाल दें। तो यह शख़्स तो नेकियों का ढेर लेकर आया और वह दूसरे के पास चला गया, इसलिए बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी बहुत ज़रूरी है।

सामूहिक माल में सख़्त एहतियात ज़रूरी

ख़ासकर जो सामूहिक माल होते हैं उनके अन्दर तो बहुत फ़िक्र से

काम करना होगा। सामूहिक मालों में ज़रा बे-एहतियाती हो जाती है तो ऐसे मालों में पकड़ भी बहुत ज़्यादा होती है। इसके अन्दर ज़र्रा बराबर बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़्त एहतियात के वाक़िआत

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इसका बड़ा ख़्याल फ़रमाते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे ने एक ऊँट ख़रीदा और उसे मुसलमानों की ज़मीन में चराया। ऊँट मोटा हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला, पूछा कितने में ख़रीदा? बताया इतने में, फ़रमाया चराया कहाँ? बताया कि मुसलमानों की चरागाह में।

इरशाद फ़रमाया कि जितने में ख़रीदा था उतने पैसे तू ले ले और बाक़ी जितना नफ़ा हो उसे बेचकर बैतुल-माल (सरकारी इस्लामी ख़ज़ाने) में दाख़िल कर। बाप के कन्धे पर रहकर तू मत खा। क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने पेशी होने वाली है।

एक लड़की लड़खड़ाती हुई आई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा यह किसकी लड़की है? आपके बेटे ने कहा हज़रत! यह आपकी पोती है। फ़रमाया कि यह मेरी पोती है? कितनी दुबली-पतली है। लड़खड़ा रही है। उन्होंने कहा कि जो आप वज़ीफ़ा देते हैं यानी ख़र्चा, वह पूरा नहीं होता। इसलिए ऐसी हो गई। बेटे का मतलब यह था कि हमारा वज़ीफ़ा बढ़ा दें।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इनकार कर दिया और फ़रमाया कि अपना कारोबार ख़ुद कर ले और अपना ख़र्चा ख़ुद उठा। बैतुल-माल (सरकारी ख़ज़ाने) से तुझे नहीं मिलेगा।

तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बड़ी बेचैनी थी। क़ियामत का हद से ज़्यादा ध्यान रहता था।

बहरहाल! अल्लाह पाक ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपने ख़ज़ाने दिखा दिए। उनकी कुंजी दे दी और फिर नमाज़ जानदार बनाने के लिए पाँच तरीक़े बता दिए और नमाज़ को अपने पास महफ़ूज़ रखने के लिए भी बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी ज़रूरी बतलाई। ये छह नम्बर आ गए। लेकिन ये सारे काम मक्का मुकर्रमा में अलग अलग (व्यक्तिगत) तौर पर हुए। इसके बाद मदीना मुनव्वरा जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जाना हुआ तो वहाँ पर ये सारे काम सामूहिक तौर पर होने लगे। इस तरह इन छह नम्बरों के ज़रिये हमारे अन्दर सलाहियत पैदा हो जायेगी पूरे दीन पर चलने की।

जंगे-बदर वाली मदद कब आएगी?

मदीना मुनव्वरा में मुसलमानों पर मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) हालात आए। एक हाल तो बदर का आया। तो अगर बदर जैसा मुसीबत वाला हाल आ जाए तो उसके अन्दर तीन काम करेंगे तो बदर वाली मदद आएगी।

बदर के अन्दर इस्लाम के सभी बिगड़े क़िस्म के दुश्मन आए थे, इस्लाम को बिल्कुल ख़त्म कर देने के लिए। वहाँ पर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने तीन काम किए:

1. सब्र। 2. तक़्वा (परहेज़गारी)। 3. गिड़गिड़ाना।

बस क़ियामत तक के लिए उसूल मालूम हो गया कि जब बहुत परेशानी चारों तरफ़ से घेर ले तो एक तरफ़ तक़्वा (परहेज़गारी) और एक तरफ़ अल्लाह से ख़ूब गिड़गिड़ाना हो।

بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلَافٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ٥ (پاره-۴ ال عمران)

अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा होगा तो अल्लाह मदद करेगा।

और तीसरी चीज़ को इस तरह बयान फ़रमाया:

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ (پاره-۹)

मदद का दिन याद करो, जब तुम गिड़गिड़ा रहे थे। तो अल्लाह पाक ने क़बूल किया तुम्हारा गिड़गिड़ाना और कहा कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

अल्लाह की मदद कब उठ जाती है?

और देखो! अल्लाह तआ़ला की आई हुई मदद उठ जाती है चार बातों से:

1. एक तो दुनिया का इरादा करना। दीन का काम करने वालों में जब दुनिया का इरादा हो जाता है तो निम्नलिखित बाक़ी चीज़ें पैदा हो जाती हैं:

2. राय में कमज़ोरी। 3. आपस में खींचातानी। 4. बात का न मानना।

जब दीन का काम करने वालों में ये चार चीज़ें आ जाती हैं तो आई हुई मदद आसमान की तरफ़ चली जाती है। इससे काम करने वाले अ़मल को छोड़ते हैं। और अ़मल को अगरचे थोड़े आदमी छोड़ते हैं लेकिन तकलीफ़ और आज़माईश सब पर आती है। यहाँ तक कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर भी तकलीफ़ आई।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ (پاره-٤)

अल्लाह का वायदा जंगे उहुद के अन्दर भी पूरा हुआ कि तुम आगे बढ़ते जा रहे थे लेकिन तुम्हारे अन्दर बातें पैदा हो गईं।

"हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम्" राय में कमज़ोर पड़ गए।

"व तनाज़अ़्तुम्" और आपस में कशाकश (खींचातानी और तकरार) में पड़ गए।

"व अ़सैतुम्" बात न मानी।

"मिम्बअ़्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बून" तुम्हारी महबूब चीज़ (काफ़िरों पर फ़तह हासिल करना) अल्लाह ने तुमको दिखा दिया।

(सूरः आलि इमरान पारा 4)

लेकिन तीन बातें तुम्हारे अन्दर पैदा हो गईं। और क्यों हुईं? यही पहली और चौथी वजह है।

"मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या" एक मजमा तुम में का दुनिया का इरादा करने लग गया। अगरचे वह दुनिया हलाल थी, माले ग़नीमत के माल के तौर पर थी।

मदद उठा दिए जाने की पहली मस्लेहत, आज़माईश

दुनिया की तरफ़ निगाह का जाना यह दिल के अन्दर गुबार पैदा कर देता है।

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ (پاره—٥)

उनमें वे लोग भी थे जो आख़िरत की कामयाबी और सरबुलन्दी का इरादा कर रहे थे। उनका मक़सद अपने रब को राज़ी करने का था। और बस! इसलिए आख़िर में क्या हुआ?

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللّٰهُ ذُوْفَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ o (ال عمران پاره— ٤)

फिर पाँसा पलट दिया, उनके ऊपर ग़ालिब आने से तुमको फेर दिया।

और ऐसा क्यों किया? ताकि तुमको आज़माईश की भट्टी में डाले। लेकिन अब पन्द्रहवीं सदी वाले सहाबा की शान में गुस्ताख़ियाँ करेंगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को माफ़ नहीं करेंगे। तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि पन्द्रहवीं सदी वाले सहाबा को माफ़ करें या न करें मैं तो माफ़ कर चुका। क्योंकि उन्होंने गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँग ली। तो देखो क़ियामत तक आने वाले लोगों को उसूल बता दिए और अल्लाह से

माफ़ी माँग कर ख़ुद भी साफ़ हो गए।

मोहतरम दोस्तो! जिन लोगों की निगाह दुनिया की तरफ़ चली गई उनके ऊपर दुनिया का गुबार आ गया था, उनको आज़माईश की भट्टी में डाला ताकि फ़िल्टर हो जाए। जिस ईमान के ऊपर अल्लाह की मदद आती है उसमें दुनिया का गुबार आ गया तो अल्लाह ने फ़िल्टर करने के लिए आज़माईश की भट्टी में डाला। तो एक मस्लेहत अल्लाह की यह थी कि:

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (پاره–٤)

और क़ियामत तक ऐसा होता रहेगा। जब काम करने वालों की निगाह दुनिया की तरफ़ जाती है तो बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक आज़माईश की भट्टी में डाल देते हैं ताकि फ़िल्टर हो जाए।

दूसरी मस्लेहत, रूहानी ताक़त में इज़ाफ़ा

सवाल यह पैदा होता है कि जिनका इरादा आख़िरत की भलाई का था। ख़ुदा की रज़ामन्दी को हासिल करने का था। उनको आख़िर आज़माईश की भट्टी में क्यों डाला?

इसलिए! ताकि रूहानी ताक़त बढ़ जाए। आख़िरत के दर्जे बुलन्द हो जाएँ:

يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ، وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَالَا يَرْجُوْنَ.

यानी बड़ी-बड़ी उम्मीदें हैं। अल्लाह के बड़े-बड़े इनाम और दर्जे उन्हें मिलेंगे।

तीसरी मस्लेहत, शहादत से सम्मानित करना

मेरे मोहतरम दोस्तो! एक मस्लेहत उसमें यह थी कि बाज़ लोगों की मौत का वक़्त और जगह और सबब तय था। उनको शहादत का सवाब देना था।

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ الشُّهَدَآءَ

चौथी मस्लेहत, खरे और खोटे की पहचान

और एक मस्लेहत उसमें यह भी थी कि जब दीन का काम चलता है और दीन वालों की आवभगत ज़्यादा होती है तो उस मौक़े पर जो स्वार्थी होते हैं वे भी दीन वालों के साथ घुस जाते हैं और अपनी ग़र्ज़ों को पूरी किया करते हैं। जब खरे और खोटे मिल जाते हैं तो अल्लाह पाक आज़माईश की भट्टी में डाल देते हैं जिससे ज़ाहिर हो जाए कि जो जमा रहेगा वह खरा होगा और जो खोटा होगा वह उखड़ जाएगा।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ (پاره- ٤)

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हम इसी तरह ईमाना वालों को नहीं छोड़ते बल्कि हम आज़माईश की भट्टी में डालेंगे ताकि खरे और खोटे अलग-अलग हो जाएँ। जो खरे होंगे वे आख़िर तक जमे रहेंगे और जो खोटे होंगे वे उखड़ कर हट जाएँगे। तो ये विभिन्न मस्लेहतें आज़माईश की भट्टी में डालने की थीं।

क़ियामत तक के लिए रहबरी

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक सीरत हम लोगों की रहबरी कर रही है कि मुख़्तलिफ़ (विभिन्न और अलग-अलग) हालात में अल्लाह पाक की मदद किस तरह मिलती है, और यह बात भी पता चलती है कि ऐसे हालात आते क्यों हैं? चुनाँचे ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ (ख़न्दक़ की लड़ाई) के अन्दर तो हैरत-अंगेज़ (हैरान कर देने वाले) हालात आ गए। ऊपर से, नीचे से, हर जगह से हमले की ख़बरें हैं।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا، هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ

وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالاً شَدِيْداً ٥ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اِلَّا غُرُوْرًا ٥ (احزاب پاره- ٢١)

ये मन्ज़र (दृश्य) जो आज पूरी दुनिया में है। यह हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर इसलिए आए ताकि क़ियामत तक रहबरी हो।

जब तुम्हारे ऊपर चारों तरफ़ से धावा बोल दिया। ऊपर से भी, नीचे से भी, आँखें पथरा गईं और दिल हलक़ से जा लगे। और ख़्यालात आने-जाने लगे। तब ईमान वालों को ईमान की भट्टी में डाला और ख़ूब हिला दिया। और वे लोग जिनके दिलो में फ़ितने थे उन्होंने कहा कि अल्लाह पाक का रसूल से जो वायदा था वह धोखा है।

यह बात मेरे दोस्तो! ऐसा शख़्स ही ज़बान पर ला सकता है जिसके अन्दर बुराईयाँ हों, जिसकी ज़बान पर ऐसी बात आई समझो कि उसके दिल में बुराई है।

परेशान करने वाले हालात भी ईमान की बढ़ोतरी का सबब

तो ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर जब चारों तरफ़ से परेशानी आई तो ईमान वाले कहने लगे:

هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ٥

इन परेशान करने वाले हालात के अन्दर उन पक्के ईमाना वालों का ईमान बढ़ गया। अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी और बढ़ गई।

ईमान वालों की दो क़िस्में

ईमान लाने वालों में दोनों क़िस्म के थे। एक क़िस्म वह थी कि

अल्लाह से जो वायदा किया था उसे सच कर दिखाया और अल्लाह के नाम पर जान दे दी, और बाक़ी वे हैं जो इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब अल्लाह की बात मानते-मानते हम जान दे दें। ज़र्रा बराबर उनके अन्दर तब्दीली नहीं आई। न तो हालात ख़राब होने पर बुज़दिली (कायर्ता) आई और न अच्छे हालात आने पर मटकने लगे। जिसको अल्लाह पाक ने इस तरह बयान फ़रमाया:

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا (پاره – ٢١)

मुख़ालिफ़ हालात आते क्यों हैं?

अल्लाह पाक ये हालात अपने बन्दों पर इसलिए लाए ताकि जो सच्चे हैं वे सच कर दिखाएँ। और जो बिगड़े हुए लोग हैं उनको या तो अल्लाह सुधार देगा या अल्लाह उन्हें जहन्नम के अन्दर भेज देगा:

لِيَجْزِىَ اللّٰهُ الصَّادِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِيْنَ (احزاب پاره– ٢١)

मेरे भाईयो! देखो नीयत यह करो कि अल्लाह पाक बिगड़े हुए लोगों को सुधार दें ताकि उनको लेकर हम जन्नत में जाएँ। यह नीयत पूरी ज़िन्दगी के लिए कर लें। देखो ना! नबी के करीमाना किरदार को, जो हज़रत इक्रिमा के साथ आपने बरता, नतीजा यह हुआ कि आगे अबू जहल के घराने के अस्सी लोगों ने दीन के लिए जान कुरबान कर दी। पूरा घराना कुरबान हो गया, सिर्फ़ एक लड़की और एक लड़का उस ख़ानदान का बचकर मदीना मुनव्वरा पहुँचे। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनकी आपस में शादी कर दी ताकि यह ख़ानदान ख़त्म न हो जाए।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह के दीन के लिए कुरबानियाँ देनी हैं। अगर अल्लाह के दीन के लिए कुरबानियाँ नहीं देंगे तो बहुत-सी ना-मुनासिब चीज़ों पर कुरबानियाँ देनी पड़ेंगी। इसलिए आप हज़रात यह नीयत करें कि पूरे आ़लम के अन्दर जमाअ़तें भेजनी हैं। इन्शा-अल्लाह।

तक़रीर (4)

लन्दन से आये हुए लोगों के सामने मर्कज़ हज़रत निज़ामुद्दीन देहली में नवम्बर 1994 ई० को खुसूसी ख़िताब

मेरे मोहतरम दोस्तो! जैसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यतीम थे और हज़रत हलीमा ने यतीमी की हालत में गोद लिया था। तो अल्लाह के नबी यहाँ पर जिस पाकीज़ा तरीक़े और जिस दीन को लेकर आए वह पाकीज़ा तरीक़ा और दीन भी आज दुनिया के अन्दर यतीम बन चुका है। पौने चार सौ करोड़ जो ईमान नहीं लाए कलिमा नहीं पढ़ते वे तो इस यतीम को धक्के मारते ही हैं, लेकिन जो कलिमा पढ़ने वाले सौ सवा सौ करोड़ पूरी दुनिया में हैं उनका यह हाल है कि इस यतीम दीन को अपनी दुकान में दाख़िल नहीं होने दोते। अपने घरों में दाख़िल नहीं होने देते, अपनी शादी में दाख़िल नहीं होने देते। इसलिए कि पूरी दुनिया का जैसा मुआ़शरा (समाजी ज़िन्दगी) है उस मुआ़शरे (समाज) के अन्दर मुसलमान भी आ गया। हालाँकि यह समाज तबाही और बरबादी लाने वाला है।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा

तक़रीर (4)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَ
وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَنَشْهَدُ اَنَّ
سَيِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِ
وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

अगर माद्दी चीज़ें सन्तुलित हों तो दुनिया का निज़ाम ठीक चलता है

मेरे मोहतरम बुजुर्गो और दोस्तो! अल्लाह जल्ल जलालुहू ने जिस तरह माद्दी (मूल तत्व की) लाईन से इस सन्तुलन के साथ दुनिया के निज़ाम को चलाया है कि आग, पानी, हवा और मिट्टी, इसका जब सन्तुलन बाक़ी रहता है तो दुनिया का निज़ाम ठीक चलता है। अगर हवा तेज़ चल गई तो तबाही, पानी ज़्यादा आ गया सैलाब की शक्ल बन गई तो तबाही, ज़मीन हिल गई तो तबाही, किसी पहाड़ से अगर आग निकल कर आ गई तो तबाही। लेकिन ये चीज़ें अगर सन्तुलन के साथ हों तो दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) ठीक चलता रहता है।

रूहानी निज़ाम की तरतीब

इसी तरह अल्लाह तआला ने रूहानी लाईन के दुरुस्त होने के

लिए इनसान की जान और माल को चार चीज़ों पर सन्तुलन के साथ लगा दे तो आलम (दुनिया) का रूहानी निज़ाम (व्यवस्था) भी सही होगा।

विश्व शान्ति के हासिल होने का ज़रिया

रूहानी निज़ाम की तरतीब रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की मुबारक ज़िन्दगियों के हालात से मालूम होगी।

जान की ताक़त और माल का सरमाया, ये दो चीज़ें अल्लाह ने इनसान को दी हैं। इनका इस्तेमाल अगर चार चीज़ों में हो और तरतीब के साथ हो तो पूरे आ़लम के अन्दर सदियों पुश्त आगे तक के लिए अमन व अमान का क़ायम रहना, पूरे आ़लम के अन्दर दीन का फैलना, रहमतुल्-लिल्आ़लमीनी का मुज़ाहरा होना, यह होता रहेगा, और जो-जो मरता रहेगा उसका ताल्लुक़ जन्नत से होता रहेगा।

इसलिए जान व माल को सन्तुलन के साथ लगाना होगा। एक अपनी ज़रूरतों पर, दूसरे इबादतों पर, तीसरे अख़्लाक़ियात पर, चौथे दावत पर। यानी दावत, अख़्लाक़, इबादतें, ज़रूरतें, इन चार चीज़ों पर इनसान को जान व माल एक तरतीब के साथ लगाना होगा।

इनसान में चार निस्बतें

इनसान में अल्लाह ने चार निस्बतें दी हैं। एक निस्बत तो अल्लाह ने दी है आ़म जानदारों वाली, दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली, तीसरी निस्बत दी ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने वाली, और चौथी निस्बत दी है नबियों की नियाबत (प्रतिनिधित्व) वाली।

फिर चौथी निस्बत नुबुव्वत की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में दो हिस्से हैं। एक है नियाबत अम्बिया की। और एक है नियाबत सैयिदुल्-अम्बिया की। (अ़लैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम)

जानदार होने की निस्बत

इनसान में पहली निस्बत जो आ़म जानदारों वाली दी है उसके असर से भूख का लगना और उस वक़्त खाना, प्यास के वक़्त पानी का पीना, नर-मादा जैसे मिलते हैं, नर-मादा का मिलना। रहने के लिए मकानात का बनाना। ज़रूरतों का पूरा करना। पेशाब पाख़ाना, गर्मी, सर्दी का बचाव, बच्चों को पालना। ये बातें सारे जानदारों में मौजूद हैं। यह आ़म जानदारों वाली निस्बत है। जिसको अ़रबी ज़बान में "हैवानियत" कहते हैं। मैं "हैवानियत" का लफ़्ज़ कहते हुए डरता हूँ कि जो ज़रा कम उर्दू जानने वाला है वह समझेगा कि हमें जानवर बना दिया। इसलिए एहतियात का लफ़्ज़ जानदार कहा। वरना असल अ़रबी का लफ़्ज़ हैवानियत है।

इनसान और दूसरे जानदारों में फ़र्क़

भूख पर खाना, प्यास पर पीना आ़म जानदारों में भी है और इनसान में भी। यानी अपने इनसानी तक़ाज़ों का पूरा करना इसकी अल्लाह तआ़ला ने इजाज़त दे दी है लेकिन दो पाबन्दियों के साथ।

एक पाबन्दी इस बात की है कि अल्लाह के हुक्म की रियायत हो। और दूसरी पाबन्दी यह है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की रियायत हो। इन दो पाबन्दियों के साथ खाना-पीना, मियाँ-बीवी का मिलना और मकान बनाना, कपड़ों का बनाना, कारोबार करना, शादियों का करना, इन दो पाबन्दियों के साथ अल्लाह पाक ने सब की इजाज़त दी है।

अल्लाह ही ने इनसान में ये तक़ाज़े रखे हैं। इसलिए इन तक़ाज़ों को पूरा करने की इजाज़त भी दी है। मगर ये दोनों पाबन्दियाँ जानवरों पर नहीं हैं। बिल्ली उसको तो जहाँ दूध मिल जाए वह पी लेगी। इससे ज़लज़ला नहीं आ जाएगा। बिल्ली को जहाँ कहीं चूहा मिल जाए खा

लेगी। यह कोई ज़ुल्म नहीं। इसी तरह जानवर को जहाँ कहीं पेशाब पाख़ाना की ज़रूरत हुई वह सबके सामने कर लेगा। उस पर कोई पाबन्दी नहीं। लेकिन पाबन्दियाँ इनसान पर हैं। यह फ़र्क़ है तमाम इनसानों और जानवरों में।

फ़रिश्तों वाली निस्बत

दूसरी निस्बत अल्लाह ने इनसानों को फ़रिश्तों वाली दी है। यानी ख़ुदा की इबादत करना, यह फ़रिश्तों वाली निस्बत है जो जानवरों में नहीं।

इसलिए इनसान के अन्दर फ़रिश्तों वाली निस्बत से इबादत आई। और जानवरों वाली निस्बत से तक़ाज़ों का पूरा करना आया। तो जब इनसान ख़ुदा की इबादत करेगा। अपने तक़ाज़ों को दबाकर करेगा। मगर फ़रिश्ता ख़ुदा की जब इबादत करेगा तो उसे तक़ाज़ा दबाना नहीं पड़ता।

इनसान एक बीच की मख़्लूक़ है

भूख और प्यास, पेशाब और पाख़ाना, बीवी और बच्चे तथा थकान, ये तक़ाज़े फ़रिश्तों में नहीं। फ़रिश्ता जो इबादत करेगा तक़ाज़ा दबाए बग़ैर करेगा। और जानवर सिर्फ़ तक़ाज़े पूरे करेगा। इबादत नहीं करेगा। तो फ़रिश्ता इबादत करेगा, उसको तक़ाज़े नहीं हैं और जानवर तक़ाज़े पूरे करेगा उसपर इबादत नहीं। जबकि इनसान इबादत करेगा तो तक़ाज़े भी दरमियान में रुकावट हैं। जिन्हें दबाकर इबादत करेगा इसलिए इनसान एक बीच की मख़्लूक़ है।

फ़रिश्तों और इनसान की इबादत का फ़र्क़

इनसान के अन्दर अल्लाह ने तक़ाज़े भी रखे हैं और इबादत का हुक्म भी दिया है। इसलिए इनसान रोज़ा रखेगा तो खाना-पीना और

बीवी का तक़ाज़ा दबाकर रखेगा। नमाज़ पढ़ेगा तो नींद का तक़ाज़ा दबाकर नमाज़ पढ़ेगा। अ़सर की नमाज़ ग्राहकों का तक़ाज़ा दबाकर पढ़ेगा। ज़कात देगा तो माल का तक़ाज़ा दबाकर देगा। हज करेगा तो वतन का तक़ाज़ा कुरबान करके हज करेगा, तो आराम व राहत का तक़ाज़ा दबाए बग़ैर हज नहीं कर सकता। इसी तरह अगर इबादत को फैलाने के लिए दावत का काम करेगा तो भी तक़ाज़े उसे दबाने पड़ते हैं। वतन का छोड़ना, खाने-पीने का आगे-पीछे हो जाना, मौसम की तब्दीली को बरदाश्त करना, ये सारे तक़ाज़ों को दबाए बग़ैर इबादत को फैलाने वाली दावत का काम भी इनसान नहीं कर सकता। फ़रिश्तों और इनसानों की इबादत में यही बड़ा फ़र्क़ है।

इनसान इबादत में तरक़्क़ी करके ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनता है

अगर इनसान इबादत को छोड़ दे और सिर्फ़ तक़ाज़ों को पूरा करने में लग जाए। सिर्फ़ खाने और कमाने में लग जाये तो यह इनसान जानवर बन जाएगा बल्कि जानवर से ज़्यादा बदतर हो जाएगा। और अगर यह इनसान अपने तक़ाज़ों को दबाकर ख़ुदा की इबादत में ताक़त पैदा करे तो फिर यह इनसान फ़रिश्तों से आगे बढ़ जाएगा और इतना बढ़ेगा कि ख़ुदा का ख़लीफ़ा बन जाएगा।

फ़रिश्ता अगर करोड़ों साल ख़ुदा की इबादत करेगा तो वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा नहीं बन सकता। उसमें इसकी योग्यता नहीं। और इनसान यह सिर्फ़ साठ-सत्तर साल की ज़िन्दगी में ख़ुदा का ख़लीफ़ा बन सकता है।

ख़ुदा का ख़लीफ़ा कब बनेगा? अगर इबादत के अन्दर ताक़त पैदा करे तब यह फ़रिश्तों से आगे बढ़कर ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनता है।

ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने का मतलब

ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने का मतलब है उसके अन्दर अख़्लाक़ का आना और अख़्लाक़ के आने का मतलब है दूसरों की ज़िन्दगी बनाने पर अपनी जान और माल का लगाना।

तो जब इस इनसान को ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनना है और इसमें ख़ुदा की ख़िलाफ़त के जौहर आने हैं तो जिस तरह अल्लाह रज़्ज़ाक़ है तो इनसान के अन्दर भी ख़ुदा की रज़्ज़ाक़ी की सिफ़त का एक मुज़ाहरा होगा। यानी भूखों को खिलाना। यह इनसान भूखों को खाना खिलाकर अल्लाह की सिफ़ते रज़्ज़ाक़ी का मुज़ाहरा करेगा। इसी तरह यह इनसान लोगों के ऐबों पर पर्दे डालेगा और सत्तार (यानी अल्लाह जो सब के ऐबों को छुपाता है) की ख़िलाफ़त वाला काम करेगा। लोगों की ग़लतियों को माफ़ करेगा और 'ग़फ़्फ़ार' (अल्लाह बख़्शने वाले) की ख़िलाफ़त वाला काम करेगा। यह लोगों पर रहम करेगा क्योंकि रहीम का ख़लीफ़ा है। यह लोगों पर करम करेगा क्योंकि करीम का ख़लीफ़ा है। ग़लतियों को माफ़ करेगा क्योंकि ग़फ़्फ़ार का ख़लीफ़ा है। और जब दुनिया में ना-मुनासिब हरकतें होंगी तो फिर जिहाद भी करेगा क्योंकि यह 'क़स्हार' का भी ख़लीफ़ा है। तो यह चूँकि अल्लाह का ख़लीफ़ा है इसलिए इसके अन्दर अख़्लाक़ आएँगे।

जिहाद व क़िताल अख़्लाक़ से बरी नहीं

जिहाद व क़िताल (अल्लाह के रास्ते में दीन की कोशिश और उसमें आड़े आने वाली ताक़त को पाश-पाश करने) का जो हुक्म है वह भी अख़्लाक़ से बरी नहीं। चुनाँचे पूरे बदन के अन्दर अगर ज़हरीला फोड़ा है तो उस ज़हरीले फोड़े को काटकर बदन की हिफ़ाज़त करना यह समझदारी वाली बात है और बदन के साथ एहसान भी है, इसी तरह दुनिया के अन्दर अगर अबू जहल और अबू लहब जैसे

लोग फ़ितना व फ़साद मचा रहे हों तो उन फोड़ों का ऑप्रेशन करके ख़त्म कर देना और दुनिया में अमन व अमान क़यम कर देना यह भी अल्लाह की ख़िलाफ़त वाला ही काम है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जितनी ख़ुदा की ख़िलाफ़त वाली बात इनसान के अन्दर आती जायेगी यह इनसान अख़्लाक़ वाला बनता जाएगा। अख़्लाक़ की बिना पर यह अपने जान व माल को लगाएगा। भूखों को खाना खिलाने पर, नंगों के पहनाने पर, अविवाहित लोगों की शादियाँ कराने पर और इसी तरह बग़ैर मकान वालों के मकान बनाने पर, परेशान हालों की परेशानी दूर करने पर, यह इनसान अपनी जान और माल को बतौर अख़्लाक़ के लगाएगा।

अख़्लाक़ को सब अच्छा समझते हैं

अख़्लाक़ एक ऐसी चीज़ है कि इसे दुनिया का हर एक आदमी अच्छा समझता है। अख़्लाक़ की तरफ़ सारी दुनिया का सर झुक जाता है। मुसलमान हो या ग़ैर-मुस्लिम या कि दहरिया (ख़ुदा के वजूद को न मानने वाला) हो, हर शख़्स इसे पसन्द करता है।

मोहतरम दोस्तो! तीन चीज़ें मैंने बताईं कि ज़रूरतों का पूरा करना इनसान के जानदार होने के एतिबार से है, और इबादत का करना फ़रिश्तों वाली निस्बत इसके अन्दर होने की वजह से है और अख़्लाक़ का बरतना ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने की वजह से है।

अख़्लाक़ और ख़िलाफ़त दावत के ज़रिये हासिल होगी

लेकिन दोस्तो! पूरी दुनिया के बसने वाले इनसानों को जानवरों के दायरे और ख़ाने से निकाल कर इबादत के ज़रिये फ़रिश्तों की जमाअ़त में लाकर इबादत में ताक़त पैदा कराकर अख़्लाक़ तक पहुँचाना और ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनाना यह नबियों वाली नेमत का हासिल होना दावत के काम के ज़रिये होगा, नबियों ने इनसानों को

जानवरपने से निकाल कर इबादतें कराकर अख़्लाक़ तक पहुँचाया और ख़ुदा की ख़िलाफ़त वाले जौहर उनमें उजागर किए।

नबियों वाला दावत का काम

अब मुसलमानों का फ़रीज़ा

हमारे नबी आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नबियों का आना बन्द हो गया। अब नबियों वाला दावत का काम उस मुसलमान को करना है जिसने कलिमा पढ़ा है।

बाज़ारों में जाकर लोग जब अपने तक़ाज़े पूरे करने में लगे हों तो हलाल व हराम का ख़्याल किए बग़ैर हुक्मे इलाही को तोड़कर जो अपने तक़ाज़ों के पूरा करने, खाने कमाने में लगे हों, उसके अन्दर से लोगों को निकालना, मस्जिदों में लाना, उनको इबादत कराना, हल्क़े में बैठाना, ज़ेहन बनाकर जमाअतों में निकालना, उनके अन्दर अख़्लाक़ और हमदर्दी का लाना और उन्हें अल्लाह के दीन की दावत के लिए खड़ा करना, अब यह काम इस उम्मत का होगा।

लोगों को दीन का दावत देने वाला बनाना

यह ख़त्मे नुबुव्वत वाला काम है

दावत के ज़रिये जानवरपने से लोगों को निकाल कर इबादत के रास्ते से फ़रिश्तों जैसा बनाना और फिर इबादत के अन्दर ताक़त पैदा कराकर उनके अन्दर अख़्लाक़ का लाना यह काम तो है पिछले नबियों का। लेकिन सय्यिदुल अम्बिया अलैहिस्सलातु वस्सलाम का काम इससे आगे है। वह यह कि अख़्लाक़ वाला बनाकर फिर उसे दीन का दाई (दावत देने वाला) बनाना।

क्योंकि ख़ुद दाई (दीन का दावत देने वाला) बनना तो पिछले नबियों का काम हुआ। एक है लोगों को दाई बनाना। यह ख़त्मे

नुबुव्वत वाला काम हुआ।

अपने इलाक़े में दावत का काम करना यह नबियों की नक़ल है

मक़ामी काम करना। मक़ाम पर दावत की फ़िज़ा का बनाना। तालीम के हल्क़ों का क़ायम करना। ज़िक्र व तिलावत की फ़िज़ा का बनाना, गश्तों का करना, घर-घर दर-दर जाकर कलिमे की दावत का देना, हर घर में तालीम के हल्क़ों का क़ायम करना, हर घर में से एक-एक आदमी को निकालना, मस्जिदों के अन्दर आकर उन बस्तियों के रहने वालों में मस्जिद के ज़रिए काम करना। यह सारा मक़ामी काम नबियों वाला काम है। नबियों ने अपने-अपने मक़ाम पर काम किया।

मूसा अ़लैहिस्सलाम ने मुल्के मिस्र में काम किया। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने शहरे मद्‌यन में काम किया।

पूरे आ़लम में दावत के काम की फ़िक्र सय्यदुल-अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम है

दावत का काम अपने इलाक़े में करना यह नबियों का काम है। लेकिन पूरे आ़लम की फ़िक्र करके दावत का यह काम पूरे आ़लम के अन्दर जारी करने की कोशिश करना और अपने मक़ाम से जमाअ़तें बना-बनाकर पूरे आ़लम के अन्दर भेजना यह सय्यिदुल-अम्बिया (तमाम नबियों के सरदार) सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम है। अल्लाह के रास्ते में निकलना। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दोनों काम किये हैं। पिछले नबियों वाला काम भी किया कि अपने मक़ाम पर रहते हुए दावत की फ़िज़ा बनाई और ख़त्मे नुबुव्वत वाला भी काम किया कि दाई (दीन के दावत देने वाले) तैयार करके उनको अल्लाह के रास्ते में भेजा, और लोगों में ऐसा माहौल बनाया। फिर उस माहौल को हरकत दे दी।

दावत के माहौल का नतीजा

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा का माहौल बनाया और फिर हरकत में जो आया तो मदीना मुनव्वरा में एक पाकीज़ा माहौल दावत का बना, जिसके ज़रिये बड़े बेहतरीन अख़्लाक़ बने, इबादात में बड़ी ताक़त आ गई और तक़ाज़ों का पूरा करना ज़रूरत के दर्जे में आ गया, फ़ुज़ूलियात (ज़ायद और बेकार की चीज़ों) के दर्जे में नहीं रहा जबकि पहले तक़ाज़े फ़ुज़ूलियात के दर्जे में थे। ज़रूरत से ज़्यादा खाना-पीना और मकान का बनाना यह फ़ुज़ूलियात में आता है।

इनसान अगर फ़ुज़ूलियात में आया तो शैतान की तरफ़ जा रहा है। जानवरपने से निकल कर शैतानपने के अन्दर आ गया।

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلاً ٥ (پاره-١٩)

वे बराबर हैं मवेशियों के, बल्कि वे ज़्यादा ही बहके हुए हैं सही रास्ते से।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पहला काम

नबी पाक के हालात को देखोगे तो सब से पहला काम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किया है वह दावत के ज़रिये कलिमे वाला यक़ीन और अल्लाह का यक़ीन दिलों के अन्दर पैदा करना है। दिल ईमान की ताक़त से भरा हुआ हो, घर-घर, दर-दर कलिमे की दावत को लेकर जा रहे हों। यही पहला काम है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किया और सहाबा से कराया है, और हर नबी ने भी किया है।

दावत से ख़िलाफ़त तक

दावत के ज़रिए ईमान की ताक़त बनेगी। अल्लाह से ताल्लुक़ क़ायम होगा। अल्लाह के ज़ाबते मालूम होंगे। इबादतों में ताक़त पैदा होगी। फिर ये इबादतें इनसान को अख़्लाक़ तक पहुँचा देंगी।

जब दावत का काम नहीं होगा तो ईमान कमज़ोर हो जाएगा। अल्लाह का डर निकल जाएगा। फिर इबादतों की तरफ़ भी आदमी नहीं चलेगा। अगर चलेगा भी तो बेताक़त इबादत होगी। जो उसे अख़्लाक़ तक नहीं पहुँचाएगी। एक तरफ़ तो वह नमाज़ पढ़ेगा और दूसरी तरफ़ फिर वह रिश्वत लेगा। एक तरफ़ वह हज करेगा और दूसरी तरफ़ वह लोगों की ज़मीनें दबाएगा। एक तरफ़ वह रोज़ा रखेगा और दूसरी तरफ़ वह लड़ाईयाँ लड़ेगा।

उसकी इबादत अख़्लाक़ तक नहीं पहुँचाती, क्योंकि उसके अन्दर ईमान की ताक़त न रही। ईमान की ताक़त इसलिए न रही कि उसको दावत की फ़िज़ा न मिली।

दावत की फ़िज़ा में ईमान की ताक़त है। और ईमान की ताक़त से इबादत में ताक़त होगी और इबादत में ताक़त होने से अल्लाह का ताल्लुक़ मिला। अल्लाह का ताल्लुक़ मिला तो अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा होने की बात उसमें आ गई।

कचेहरियों और जेलख़ानों से अख़्लाक़ नहीं आएगा

इबादत में ताक़त होगी तो इनसान अख़्लाक़ वाला बनेगा। सिर्फ़ उसका विभाग क़ायम करने से, कचेहरियाँ बनाने से जेलख़ाने बनाने से दुनियां में अख़्लाक़ नहीं आ जाएगा। बल्कि अख़्लाक़ और ज़्यादा गिर रहे हैं। इबादत में जब ताक़त पैदा होगी तब आदमी अख़्लाक़ वाला बनेगा क्योंकि अल्लाह का ताल्लुक़ जब उसे मिलेगा तो फिर अल्लाह का ख़लीफ़ा होने वाली बात उसमें मुन्तक़िल हो जाएगी।

दुनिया का निज़ाम अस्त-व्यस्त कैसे होता है?

जब यह दावत इनसान से छूटी तो ईमान कमज़ोर बना, आख़िरत की फ़िक्र छूटी, दुनिया की अहमियात आई, माल से ज़िन्दगियों के बनने का ख़्याल पैदा हो गया। इबादतों के अन्दर माल कमाने का ढंग

दिखाई दिया, इबादतें छूटीं। और इबादतें कीं भी तो बेजान। फिर माल और जान के ज़रिये अख़्लाक़ का बरतना न रहा तो इनसान के अन्दर जानवरपना आ गया, और जब जानवरपना आ गया तो पूरे आ़लम का निज़ाम दर्हम-बर्हम (अस्त-व्यस्त) हो गया।

इनसान की शक्ल में जानवर

जब इनसान अपनी सारी ताक़त खाने, कमाने और तक़ाज़ों के पूरा करने पर लगा देता है, और उसकी जान व माल इबादतों व अख़्लाक़ और दावत पर नहीं लगती तो फिर यह जानवर से ज़्यादा बुरा बन जाता है।

जानवर की तीन क़िस्में

जानवर तीन क़िस्म के होते हैं। एक जानवर तो वह होता है जो अपने तक़ाज़े पूरे करता है दूसरे को नुक़सान पहुँचाए बग़ैर, जैसे कबूतर और दूसरी चिड़ियाँ कि दाना चुग लिया और वापस आ गए। इनसान भी जब जानवरपने पर आता है तो उसका अपना खाना-कमाना, बच्चों को पालना, अपना मकान बनाना, अपनी शादियाँ अपनी ज़रूरतें होती हैं, दूसरे का चाहे जो कुछ हो।

दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा

इनसान पहले तो चिड़ियों और कबूतर जैसा जानवर बनता है। अगर उसने अपना इलाज नहीं किया तो फिर उससे दूसरे क़िस्म का जानवर बनता है। जो ज़्यादा ख़तरनाक होता है कि दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा करता है, जैसे शेर और चीता कि बकरी की जान गई तो गई अपना पेट भरा। दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा और फ़ायदा हासिल कर लेना। इनसान इस दर्जे पर आ जाता है। चोरी है, डकैती है, रिश्वत है, मिलावट है, झूठ है, ग़बन है, ख़ियानत है। ये ख़राबियाँ उसके अन्दर आ जाती हैं। जिसमें दूसरे को

नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा और फ़ायदा करता है।

इनसान तीसरे दर्जे का जानवर कब बनता है?

अगर इनसान ने अपने आपको नहीं संभाला और इलाज नहीं किया तो फिर वह तीसरे नम्बर का जानवर बनता है कि वह दूसरों को नुक़सान पहुँचाता है, अपने को नफ़ा मिले या न मिले। जैसे साँप-बिच्छू यह किसी को काट खाते हैं तो सामने वाले को तकलीफ़ तो हुई मगर अपना पेट नहीं भरा। अपना कोई नफ़ा नहीं हुआ। साँप का अपना कोई फ़ायदा नहीं हुआ और सामने वाले की जान चली गई। तो इनसान इस तीसरे नम्बर का जानवर बनता है। इस क़िस्म का नाम है हसद, कीना, बुग़ज़ और कपट। यह आदमी के अन्दर पैदा हो जाता है तो पूरी कोशिश इस बात की करता है कि दूसरे को नुक़सान पहुँचे। चाहे मुझे नफ़ा हो या न हो।

जानवरों से ज़्यादा बदतर

जब इनसान इन तीनों क़िस्मों जैसा जानवर इस दुनिया के अन्दर बन जाता है तो जानवरों की तरह आपस में लड़ता रहता है। जैसे कुत्ते आपस में लड़ते रहते हैं और सींग वाली बकरी बग़ैर सींग वाली बकरी को मारती रहती है। इसी तरह आदमी भी आपस में लड़ते हैं। बल्कि जानवरों से ज़्यादा बदतर हो जाते हैं। बदतर इसलिए होते हैं कि बाक़ायदा फ़ौज बनाकर लड़ते हैं। फ़ौजें बनाकर लड़ना जानवरों में कहीं नहीं देखा गया मगर इनसान ऐसा भी करता है।

हैवानियत और ख़िलाफ़त में फ़र्क़

सिर्फ़ खाना खा लेना यह तो है हैवानियत, दूसरे को खिलाना यह है ख़िलाफ़त। ख़ुद पी लेना यह तो है हैवानियत, दूसरे को पिलाना यह है ख़िलाफ़त। अपना मकान बनाना यह तो आम जानदारों वाला काम है, दूसरों को मकान बनाकर देना यह ख़िलाफ़त वाला काम है। आदमी

ने ख़िलाफ़त वाला काम छोड़ दिया और उसने सिर्फ़ जानवरों वाला काम शुरू कर दिया।

इनसानी कमालात की हैसियत

सिर्फ़ ज़्यादा खा लेना इनसान के लिए यह कमाल नहीं। ज़्यादा खाना कमाल होता तो सबसे ज़्यादा कमाल वाला हाथी होना चाहिए। ऊँचे मकान बना लेना यह कमाल नहीं। अगर यह कमाल होता तो चिड़ियाँ बहुत कमाल वाली होतीं क्योंकि वे बहुत ऊँचे पर अपना घौंसला बनाती हैं। तहख़ाने बना लेना यह कमाल नहीं। अगर यह कमाल होता तो चूहे सबसे ज़्यादा कमाल वाले हैं कि वे अन्दर के तहख़ाने बना लेते हैं।

बिजली की फ़िटिंग कर लेना यह कोई कमाल नहीं

अगर इबादात, अख़्लाक़ और दावत ये तीन सिफ़तें नहीं हैं तो सिर्फ़ बिजली की फ़िटिंग कर लेना यह कोई कमाल नहीं, इसलिए कि 'बया' एक जानवर होता है जो परिन्दा है। वह घौंसला बनाकर जुगनू जो एक चमकदार क़िस्म का कीड़ा है रात के वक़्त उड़ा करता है, उसको पकड़ कर अपने घौंसले में फ़िट करके बिजली का काम लेता है। तो जानवर भी इस तरह का काम कर लेता है। हाँ! बिजली की फ़िटिंग इनसान के अन्दर कमाल जब है कि उसके साथ इबादतें, अख़्लाक़ और दावत हो। अगर ये तीन सिफ़तें इनसान के अन्दर नहीं हैं तो कोई कमाल की चीज़ इनसान के अन्दर नहीं है।

डॉक्टर बनना कमाल नहीं

मोहतरम दोस्तो! अगर ये तीन ख़ूबियाँ नहीं तो डॉक्टर बनना भी कोई इनसानी कमाल नहीं। डॉक्टरी तो बन्दर भी कर लेता है।

एक जगह का वाक़िआ है कि बन्दर लोगों को बहुत परेशान कर रहे थे। घर वालों ने छत के ऊपर ज़हर मिलाकर रोटियाँ फैला दीं।

बन्दरों ने सूँघा और भाग गए। फिर बन्दरों का बड़ा सरदार आया। उसने सूँघा तो वह भी चला गया। फिर ये सारे बन्दर एक-एक लकड़ी लेकर आए। लकड़ी चूसते रहे रोटी खाते रहे। मरा एक भी नहीं। तो इतनी डॉक्टरी तो बन्दर भी कर लेता है। डॉक्टर बनना उस वक़्त कमाल है जब उसके अन्दर इबादत भी हो। उसमें अख़्लाक़ भी हों और उसके अन्दर दावत भी हो, फिर यह कमाल वाला डॉक्टर है।

हुकूमत चलाना इनसानी कमालात में से नहीं

इसी तरह हुकूमत का चलाना यानी हुक्मरानी यह भी इनसानी कमालात में से नहीं है। अगर उसके साथ ये तीन बातें हैं तब वह कमालात वाला है हाकिम। अगर वह ख़ाली हुकूमत चला रहा है ये तीन ख़ूबियाँ नहीं हैं तो यह हुकूमत चलाना कोई कमाल नहीं, क्योंकि जानवर भी हुकूमतें चलाते हैं। अगर आप हज़रात को इल्मुल-हैवानात (जानवरों के बारे में ज्ञान और मालूमात) से ताल्लुक़ होगा तो इस बात को समझेंगे। यह शहद की मक्खी है। इनमें एक होती है रानी। उसके साथ दूसरी मक्खियाँ आ जाती हैं। वह बाक़ायदा फूल चूसने के लिए भेजती है, वे फूल चूस-चूसकर आती हैं और छत्ता बनाती हैं और बहुत तरकीब के साथ वह छत्ता मुरत्तब होता है। और बा-क़ायदा हुकूमत और क़ानून होता है उसका। तरतीब से शहद लाकर चूस-चूसकर रखा जाता है। अगर कोई मक्खी ग़लत फूल चूसकर आती है तो जल्लाद मुक़र्रर होता है, वह जल्लाद ऐसी मक्खी को ख़त्म कर देते हैं।

चुनाव लड़ना इनसानी कमालात में से नहीं

अगर ये तीन ख़ूबियाँ नहीं हैं तो चुनाव लड़ना भी इनसानी कमालात में से नहीं होगा। चुनाव लड़ना यह भी जानवरों के अन्दर पाया जाता है। चुनाँचे एक मुर्ग़ा हो पच्चीस मुर्ग़ियाँ हों, उनमें किसी क़िस्म की कोई लड़ाई नहीं। अगर एक दूसरा मुर्ग़ा ले आओ अब उन

दोनों मुर्ग़ों के अन्दर कम्पटीशन होगा। आपस में उनके अन्दर ख़ूब लड़ाई होगी। यह लड़ाई बाक़ायदा लड़ी जाती है मैंने अपनी आँखों से देखा है। खाना-दाना इससे तिजोरियाँ भरी हुई हैं, खाने की लड़ाई नहीं। पानी जब तक घड़े में है, पानी पीने में लड़ाई नहीं। बीवी की भी लड़ाई नहीं। किसी की कोई भी बीवी हो, यहाँ हलाल व हराम का सवाल नहीं। मकान की भी लड़ाई नहीं। हर मुर्ग़े और मुर्ग़ी के दरबे अलग-अलग बने हुए होते हैं। फिर लड़ाई क्यों जारी है? लड़ाई न तो रहने की, न खाने की, न पीने की, न बीवी की, न मकानों की, फिर दो मुर्ग़ों की लड़ाई क्यों जारी है? उन दो मुर्ग़ों की लड़ाई सिर्फ़ इस बात की है कि उन मुर्ग़ियों में बड़ा बनकर कौन रहे।

घर का बड़ा कौन?

जीतने वाले मुर्ग़े के तीन काम होते हैं, एक तो सीने का ऊँचा करना। परों को फड़फड़ाना और तीसरा काम यह होता है कि अकड़ता हुआ चलता है और मुर्ग़ियाँ उसके पीछे चलती हैं। यह मन्ज़र मैंने अपनी आँखों से देखा है। उसका इसके अ़लावा कुछ काम नहीं कि वह मुर्ग़ा जो हारा है उसे अगर दाना खाना है तो चुपके से कहीं खा ले, मेरे घर में नहीं। पीना है तो चुपके से पी ले। किसी मुर्ग़ी को इस्तेमाल करना है तो चुपके से कर ले, मेरे सामने नहीं। अगर मेरे सामने उसने गर्दन उठाई तो फिर दो चार ठोंगें मारकर पुरानी याद दिलाता है कि भूल गया। यह भी मैंने अपनी आँखों से देखा है।

उस मुर्ग़े का ख़्याल है कि घर का बड़ा मैं ही हूँ। हालाँकि घर का बड़ा घर का मालिक है। हो सकता है कि मेहमान आए और जीतने वाले मुर्ग़े ही को काटकर खिला दिया जाए और सारी लड़ाई ख़त्म हो जाये।

अल्लाह सब से बड़ा है

आदमी कहता है कि मुझको ज़्यादा वोट मिल गया इसलिए मैं बड़ा

बन गया। लेकिन मीनारों से आवाज़ लगती है "अल्लाहु अक्बर" अल्लाह सबसे बड़ा है। जब अल्लाह बड़ा है तो तेरा वक़्त आया कि एक बटन दबा देंगे और तू वहीं ख़त्म। इनसान की क्या हैसियत है?

ऐटमी ताक़त वाला भी अपनी जान नहीं बचा सका

मोहतरम दोस्तो! चारों तरफ़ शोर मच रहा है कि हमारे हाथों में ऐटमी (प्रमाणू बम की) ताक़त है। मगर दोस्तो! तीस साल पहले का क़िस्सा है। तीस मुल्कों का आपसी मुआहदा था एक ऐसी हुकूमत के साथ जिसके सदर (राष्ट्रपति) के पास ऐटमी ताक़त थी। तीस मुल्क कह रहे थे कि ऐटमी ताक़त के ख़ुदा हमारे साथ हैं और दुनिया सहम रही थी। अख़बारों में रेडियो में ख़बरें आ रही थीं। मगर भाई काले और गोरों में हो गया इख़्तिलाफ़ (झगड़ा)। उनके बीच एकता पैदा करने के लिए अपने बंगले से सदर (अध्यक्ष/राष्ट्रपति) साहिब निकले। पाँच मोटरें आगे पाँच मोटरें पीछे। ताकि उनमें सदर साहिब की मोटर का पता न चले कि किस मोटर में सदर साहिब बैठे हैं। चलती हुई मोटर में एक गोली लगी और सदर साहिब पानी तक न ले सके और वहीं पर ख़त्म हो गए।

अल्लाह तआला ने बता दिया कि ऐटमी ताक़त के ज़रिये तू तीस मुल्कों की हिफ़ाज़त तो क्या कर सकता है जब अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आ गई तब पिस्तौल की सिर्फ़ एक गोली से तुझे तेरी ऐटमी ताक़त नहीं बचा सकती।

ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम करो तो बेड़ा पार हो, और अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो बेड़ा ग़र्क़ है। यह है अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम की दावत।

रिसर्च करने वालों का अपने आपको भुला देना

मोहतरम दोस्तो! ये ख़ूबियाँ और कमालात जो अभी ज़िक्र किए

गए। जब ये सारी ख़ूबियाँ जानवरों में भी मौजूद हैं, अगर इनसान भी इन चीज़ों में लगा तो तीन ख़ूबियाँ इबादात, अख़्लाक़ और दावत उसके अन्दर पैदा न होंगी।

इनसान जब जानवरों की तरह आपस में लड़ेंगे, एक-दूसरे का ख़ून करेंगे, फ़सादात होंगे, जंगें होंगी, तो यह इतना बेक़ीमत होगा कि आज दुनिया में सब से ज़्यादा बेक़ीमत अगर कोई चीज़ है तो वह इनसान है। हालाँकि अल्लाह ने इसे इतना अच्छा और क़ीमती बनाया कि फ़रिश्तों से सज्दे करा दिये।

लेकिन इनसान ने पाख़ाने से लेकर चाँद तक की रिसर्च (अनुसंधान) की मगर उसने अपने आपको नज़र-अन्दाज़ किया है। डॉक्टरों ने पाख़ाने की तो रिसर्च की, वैज्ञानिकों ने चाँद की रिसर्च (अनुसंधान) की लेकिन अपनी रिसर्च नहीं की। और अपने को नज़र-अन्दाज़ किया।

आज सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ इनसान है

इसका नतीजा यह निकला कि सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ आज दुनिया में इनसान है। रहने का मसला है तो इनसान को मारा जाए। दुकान का मसला है तो इनसान को मारा जाए। ज़मीन के टुकड़ों के लिए लाखों इनसानों को मारा जाए। हथियारों के बेचने के लिए इनसान को मारा जाए।

बर्थ-कन्ट्रोल और इनसान की बेक़ीमती

जितनी स्कीमें हैं मन्सूबा बन्दी की, आईन्दा इनसानों को दुनिया में आने से रोकने की हैं। "दो या तीन बच्चे घर में होते हैं अच्छे" "तीन बच्चे हो गए, अगला बच्चा कभी नहीं" यह हैं नारे मगर किसी जगह ऐसा भी क्या कोई क़ानून है कि ऐसा कोई पेड़ उगाओ जिसमें सिर्फ़ तीन अनार हों। ऐसा खेत उगाओ जिसमें पैदावार सिर्फ़ तीन मन

गेहूँ हो, इसका कोई क़ानून नहीं।

लेकिन यह हज़रते इनसान ऐसे बन्धे हैं कि तीन से ज़्यादा दुनिया में न आयें ताकि हमेशा ऐश व आराम में रहें।

इससे आप अन्दाज़ा लगायें कि आज सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ दुनिया में है तो वह इनसान है। क्योंकि इनसान ने अपनी क़ीमत खो दी। जिस इनसान को अल्लाह ने इतना क़ीमती बनाया था कि फ़रिश्तों तक पर फ़ज़ीलत दी थी।

ख़ुदा का मामला भी अब इनसानों के साथ जानवरों जैसा

जब इनसानों ने जानवरों जैसे काम किए। इनसानों से इनसान की ज़िन्दगियाँ उजड़ने लगीं तो अल्लाह तआ़ला ने भी नाराज़ होकर फ़ैसला कर लिया कि चलो हम भी जानवरों जैसा तुम्हारे साथ मामला करेंगे।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला एक ज़लज़ला लाते हैं और लाखों को ख़त्म कर देते हैं। हवाओं का तूफ़ान, पानी का सैलाब लाते हैं।

मेटैरिको के ज़लज़लों का मुक़ाबला आज की ऐटमी ताक़त न कर सकी। हंगरी के तूफ़ान और दक्षिणी भारत के सैलाब का मुक़ाबला दुनिया की ऐटमी ताक़तें नहीं कर सकीं। एक-एक हादसे के अन्दर इतने मरते हैं कि लाशें बटोरने वाले भी बाक़ी नहीं रहते हैं। और उनकी कोई अहमियत नहीं होती। जैसे तेज़ तूफ़ान चले तो अख़बारों में यह नहीं आता कि कितने घौंसले टूटे और कितनी चिड़ियाँ मरीं और कितने अंडे टूटे। इस तरह की ख़बरें भी अख़बारों में नहीं आतीं। तो अल्लाह मियाँ के यहाँ भी ऐसे लोगों का कोई शुमार नहीं कि सैलाबों में कितने मरे।

अरे मरे मर गए। जानवरों जैसे थे सारा कूड़ा-कबाड़ जहन्नम में गया। कोई अहमियत ऐसे इनसानों की अल्लाह के नज़दीक नहीं है।
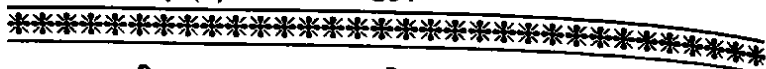
नमाज़ी का ताल्लुक़ सातों आसमानों से

अब रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनसानों के अन्दर से ख़राबियाँ निकाल कर ख़ूबियाँ लाने की तरकीब बताई कि अपनी जान और माल को चार बातों पर लगाओ। एक तो इबादत पर, अख़्लाक़ पर, दावत पर और फिर बचा-खुचा माल अपनी ज़रूरतों पर।

ये वे ख़ूबियाँ हैं जो इनसान को क़ीमती बना देंगी। जब हम इबादत करेंगे तो फ़रिश्ते हमारे साथ होंगे। नमाज़ के अन्दर भी फ़रिश्ते होते हैं, एक आसमान में फ़रिश्ते रुकूअ़ करते हैं। एक आसमान में फ़रिश्ते सज्दे में हैं और एक आसमान में क़ियाम (नमाज़ में खड़े होने की हालत) में, एक आसमान मे क़अ़दे (नमाज़ में बैठने की हालत) में हैं। जब यह इनसान नमाज़ पढ़ता है तो कभी उसका कनेक्शन (सम्पर्क) किसी आसमान से होता है कभी किसी से, कभी चौथे आसमान से कभी पाँचवें व छठे और सातवें आसमान के फ़रिश्तों के साथ उसे मुनासबत होती है।

इबादतों में फ़रिश्तों का साथ

जब तालीम का हल्क़ा होता है तो फ़रिश्ते घेरते हैं। इस वक़्त बयान हुआ तो ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते हैं। जब आदमी दीन सीखने निकलता है तो फ़रिश्ते उसके पैरों के नीचे पर फैलाते हैं। जब आदमी किसी को दीन सिखाता है तो सारे आसमान के फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। जब एक बीमार की तीमारदारी (देखभाल) सुबह की जाती है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ करते हैं।

अल्लाह पाक ने फ़रिश्तों को इनसानों की ख़िदमत में लगा दिया है। जब यह इबादत वाला काम करेगा तो फ़रिश्तों वाली ख़ूबी इसके अन्दर पैदा होती चली जाएगी।

हर चीज़ अपने जैसे के साथ रहती है

फ़रिश्तों के अन्दर एक ख़ूबी है:

لَايَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآاَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ○ (پاره– ۲۸)

जिस बात का हुक्म हो, ये नाफ़रमानी नहीं करते। वही करते हैं जो उनसे कहा जाए।

मेरे मोहतरम दोस्तो! इबादतों के रास्ते से आदमी फ़रिश्तों जैसा बनेगा। जिसकी सोहबत में आदमी रहेगा उसका असर आदमी पर पड़ेगा। आदमी अगर बकरियाँ चराने वाला हो तो नरमी आएगी। आदमी ऊँट चराने वाला हो तो सख़्ती आएगी। क्योंकि ऊँट में सख़्ती है और बकरी में नरमी है। इसलिए आदमी अगर फ़रिश्तों की सोहबत में रहेगा तो फ़रिश्तों जैसा बनेगा।

मस्जिद वाले आमाल से आदमी फ़रिश्तों जैसा बनेगा

तब्लीग़ में निकलने के बाद मस्जिद वाले जो आमाल बताए जाते हैं, उन सारे आमाल के अन्दर फ़रिश्ते होते हैं। एक उसूल के साथ आदमी अगर वक़्त गुज़ारे तो यह आदमी फ़रिश्तों जैसा बन जाता है। हालाँकि आदमी शराबी था। उसको शराब से नहीं रोका गया। लोगों को मालूम भी नहीं कि शराब पीता है। लेकिन फ़रिश्तों की सोहबत में रहकर उसकी शराब छूटी कि फ़रिश्तों जैसा बन गया। अब अपने माबूद की नाफ़रमानी हरगिज़ नहीं करेगा।

शैतान कब-कब चकमा देगा?

मोहतरम दोस्तो! बाज़े आमाल तो वे हैं कि जिनमें फ़रिश्ते आते हैं। जो मैंने आपको अभी गिना दिए। लेकिन बाज़ आमाल वे हैं कि जिनमें शैतान आते हैं। हमें ऐसे आमाल से बचना है। शैतान के माहौल में अगर हम रहेंगे तो हमारे अन्दर ख़राबियाँ शैतान वाली पैदा होंगी।

शैतान के अन्दर तीन ख़राबियाँ हैं

ابیٰ، وَاسْتَکْبَرَ وَکَانَ مِنَ الْکَافِرِیْنَ ٥ (پارہ-١)

(1) जो बात अल्लाह ने कही उसका इनकार कर दिया।

(2) तकब्बुर किया।

(3) नाशुक्री की।

तो जो शैतान की सोहबत में रहता है उसके अन्दर ये तीन ख़राबियाँ आती हैं। उसके साथ वे आमाल भी बता दिये गए जहाँ फ़रिश्ते आते हैं। तब्लीग़ के जितने आमाल हैं, हर अ़मल में फ़रिश्ते आते हैं। मैंने इसके बारे में हदीसें ढूँढ रखी हैं।

शैतान कब-कब क्या चकमा देता है? यह कुरआन बताता है और बार-बार बताता है। ताकि लोग इस दुश्मन से बचें। खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो शैतान साथ में खायेगा। रात को मकान बन्द करते वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो रात में शैतान अन्दर आ जाएगा। बैतुल्ख़ला (शौचालय) जाते वक़्त उसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो शैतान शर्मगाह से खेलेगा। बीवी के साथ सोहबत करने से पहले जब कपड़े उतारे उससे पहले अगर अल्लाह का नाम न लिया और सोहबत के वक़्त में इन्ज़ाल (वीर्य के निकलने) के वक़्त जो दुआ आती है वह दिल से न पढ़े तो शैतान भी सोहबत करेगा।

आगे अगर हमल (गर्भ) ठहरा तो बच्चे में शैतान के असरात होंगे। फिर वह बच्चा नाफ़रमान होगा।

इसी तरह अगर अल्लाह के हुक्मों को तोड़ते हैं तो शैतान साथ में हो जाता है।

وَمَنْ یَّعْشُ عَنْ ذِکْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَیِّضْ لَهٗ شَیْطَانًا فَهُوَ لَهٗ قَرِیْنٌ ٥ (پارہ- ٢٥)

जब आदमी अल्लाह तआ़ला की नसीहतों से ग़फ़लत करता है तो शैतान साथ हो जाता है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वाक़िआ

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को एक आदमी ने बहुत बुरा-भला कहा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु बरदाश्त करते रहे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बैठे सुनते रहे। जब थोड़ी देर हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को भी तरारा आ गया। और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी बोलना शुरू कर दिया, तब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वहाँ से तशरीफ़ ले गए। बाद में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु रसूले पाक की ख़िदमत में गए और जाकर अ़र्ज़ किया कि हज़रत! जब तक वह बोलता रहा आप चुप-चाप बैठे रहे और जब मैंने बोलना शुरू कर दिया तो आप उठकर चल दिए। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जब वह तुमको बोल रहा था और तुम बरदाश्त कर रहे थे तो तुम्हारे पास एक फ़रिश्ता खड़ा-खड़ा बचाव कर रहा था क्योंकि बरदाश्त करने से ख़ुदा की ग़ैबी ताक़त हासिल हो जाती है। जब आपने भी बोलना शुरू कर दिया तो लड़ाई की-सी कैफ़ियत हो गई। तब फ़रिश्ता जो था चला गया और शैतान आ गया। चूँकि मैं अल्लाह का नबी हूँ मैंने कहा कि शैतान आ गया तो मैं भी चल दूँ।"

मेरे मोहतरम दोस्तो! ये वाक़िआत बता रहे हैं कि बरदाश्त करोगे तो ग़ैबी ताक़त साथ होगी। और अगर लड़ाई करोगे तो फिर शैतान साथ में होगा और शैतानी हरकतें होंगी।

सारी दुनिया का रुजू दीन व ईमान की तरफ़ कब होगा?

दोस्तो फ़रिश्तों वाली निस्बत इनसान के अन्दर इबादतों के ज़रिये आती है।

इबादतें चार क़िस्म की हैं। नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज। ये चार इबादतें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ कर दी हैं। अगर ये चारों इबादतें सही ढंग पर आ गईं तो ये इबादतें अख़्लाक़ तक पहुँचा देंगी। और ख़ुदा की ख़िलाफ़त तक पहुँचा देंगी।

और जब सारी दुनिया का रुजू दीन व ईमान की तरफ़ हो जाएगा तब दुनिया में दीन, अख़्लाक़ और सही समाजी ज़िन्दगी और मामलात फैलेंगे।

ग़ैरों के सामने क्या चीज़ जाएगी?

इनसानों की इबादतें छुपी रहती हैं। इबादतें आम तौर पर दुनिया वालों के सामने नहीं जातीं। नमाज़ हमारी मस्जिदों के अन्दर, रोज़े हमारे पेट में, ज़कात हम देते हैं मुसलमानों को, ग़ैरों को नहीं दे सकते, और हज ऐसी जगह पर जहाँ ग़ैर-मुस्लिमों का दाख़िल होना वर्जित और मना है। तो इबादतें तो हमारी छुपी रहती हैं। लेकिन इबादतों के अन्दर ताक़त पैदा होकर हमारे अन्दर अख़्लाक़ आ जाएँ तो अख़्लाक़, समाजी ज़िन्दगी, मामलात जब हमारे सही हो जाएँगे तो ये दूसरे लोगों के सामने भी जाएँगे।

अख़्लाक़ के ज़ाहिर होने की जगह

हमारे घर के अख़्लाक़, हमारे कारोबारी लाईन के ममलात की सफ़ाई, हमारे रहन-सहन की सफ़ाई, ये सब चीज़ें दुनिया के लोग देखेंगे। स्कूल के अन्दर के अख़्लाक़ तालीम देने वाले के अख़्लाक़, इसी तरह दफ़्तर के अन्दर अगर अख़्लाक़ के साथ जाएगा तो सारे दफ़्तर के लोग देखेंगे। और यह चीज़ दुनिया के अन्दर दीन व ईमान को

फैलाएगी। लोग तो अख़्लक़ को देख्ते हैं और अख़्लाक़ के ज़ाहिर होने और सामने आने की जगह वह बाज़ार है और घर है यानी मस्जिद के बाहर का हिस्सा है। मस्जिद के अन्दर तो इबादतों और ईमानियात के ज़रिये अपने अन्दर रूहानियत को पैदा करना है।

इबादतों का मिज़ाज ही अख़्लाक़ का शिक्षक है

नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज, ये चारों इबादतें हमें अख़्लाक़ सिखएँगी, (इन्शा-अल्लाह) लेकिन जब ये जानदार हों।

नमाज़ से अख़्लाक़ आएँगे जबकि हमारे अन्दर नमाज़ वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। इसलिए कि एक नमाज़ का पढ़ना है और एक है नमाज़ का ऐसा पढ़ना कि नमाज़ का मिज़ाज आ जाए। रोज़े का मिज़ाज आ जाए। ज़कात का मिज़ाज आ जाए हज का मिज़ाज आ जाए।

नमाज़ का मिज़ाज

नमाज़ का मिज़ाज क्या है?

जैसे नमाज़ के अन्दर हमने अपने पूरे बदन को, हाथ-पैर, आँख-कान, ज़बान सबको अल्लाह के हुक्मों की जकड़बन्दी में दे दिया है। नमाज़ का मिज़ाज यह है कि नमाज़ के बाहर भी यह हमारा पूरा बदन अल्लाह के हुक्मों की जकड़बन्दी में आ जाए।

नमाज़ का मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज आ जाए। यानी नमाज़ ऐसी पढ़े कि अल्लाह के हुक्मों पर जान लगानो का मिज़ाज आ जाए।

जैसे नमाज़ के अन्दर आँख पर पाबन्दी है, अगर नमाज़ के बाहर भी गया जैसे कारोबार में तो अब यह आँख पाबन्द रहे। कोई ख़ूबसूरत लड़की अगर ग्राहक बनकर आई तो यह आँख उसको न

देखे। कान उसकी बात को बिना ज़रूरत न सुने और अपने ऊपर पाबन्दी रखे। इसलिए कि ज़िना की शुरुआत ही होती है आँख से और उसकी इन्तिहा शर्मगाह से होती है। अल्लाह ने ये दोनों किनारे बता दिए हैं।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ. (پاره-١٨)

मुसलमानों से कह दो कि निगाहों को नीचे रखें और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।

नज़र शैतान के तीरों में से एक तीर होता है, ज़हरीला तीर। तो आदमी मस्जिद से बाहर जाएगा तब भी नज़र पर पाबन्दी है, हाथों पर पाबन्दी है कि उस हाथ से हराम का पैसा नहीं लेगा। इस कान से ग़ीबत नहीं सुनेगा, क्योंकि नमाज़ में अल्लाह के हुक्म पर अपने को पाबन्द किया था, तो नमाज़ से बाहर अपने को पाबन्द क्यों नहीं करेगा।

ज़कात का मिज़ाज

मोहतरम दोस्तो! दूसरी इबादत ज़कात का क्या करिश्मा है? कि अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। ज़कात तो एक सीमित रक़म होगी। चालीस लाख रुपये में एक लाख रुपये देनी पड़ेगी। उन्तालीस लाख रुपये फिर भी बच गये। अगर एक लाख रुपये सही तक़सीम से हक़दारों को अ़ता किया तब हक़ीक़त में ज़कात वाला मिज़ाज पैदा हो जाएगा।

ज़कात वाला मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। अब ज़कात अदा करने के बाद जो माल बच गया यह माल लगेगा तो भी अल्लाह के हुक्मों पर लगेगा।

रोज़े का मिज़ाज

रोज़े के ज़रिये हमें किस मिज़ाज पर जाना है?

वह है अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाना आ जाए। खाना, पीना और बीवी के पास जाना ये तीनों तक़ाज़े दबाकर आदमी रोज़ा रख्ता है। रोज़ा तो सिर्फ़ रमज़ान में रखना है इसके अ़लावा रोज़ा फ़र्ज़ नहीं।

मगर दोस्तो! ग्यारह महीने भी छुट्टी नहीं। रोज़ा ऐसा रखे कि अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। जब ऐसा मिज़ाज पैदा हो जाएगा तो आदमी ज़रूरत के मुताबिक़ खाएगा पहनेगा मकान बनाएगा, और शादी करेगा तो सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़।

ख़ुदा की राह में माल लगाने का जज़्बा इबादत से पैदा होगा

जब आदमी में तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज पैदा होगा तो ज़ाहिर है पैसा उसके पास बहुत बचेगा। अब तक़ाज़े दबाने पर जो पैसा बचा और ज़िन्दगी को सादगी पर डालने से जो पैसा पचा वह कहाँ लगेगा? ज़कात के माल को अल्लाह के हुक्मों पर लगाने का मिज़ाज पैदा हो गया तो ज़रूरत मन्दों को देकर ज़कात का माल ख़त्म हो गया। लेकिन घूमते-घूमते उसको मालूम हुआ कि सैयद घराना भी बहुत मोहताज है। तकलीफ़ में है। ज़कात उसको तो नहीं दे सकते लेकिन रोज़ा रखने से अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े के दबाने का उसको जो मिज़ाज पैदा हुआ तो यह आदमी अपने तक़ाज़े दबाकर ज़कात के माल के अ़लावा जो माल उसके पास है अख़्लाक़ी तौर पर वह सैयद घराने पर लगाएगा।

ज़कात तो उसने रमज़ान में पूरी अदा कर दी लेकिन ईद के बाद उसने देखा कि पड़ोस में से औरत के चीख़ने की आवाज़ें आईं उसको

बच्चा पैदा हो रहा है। उसके पास पैसा नहीं। शौहर बाहर काम से गया है। अब यह नहीं सोचेगा कि अगले साल रमज़ान में रुपये लगाऊँगा। बल्कि ज़कात के अ़लावा जो माल है वह ज़रूरत-मन्द पर लगाकर ज़रूरत को पूरी करेगा। ज़कात के माल के अ़लावा माल का लगाना यह अख़्लाक़ी तौर पर होगा। यह है अख़्लाक़।

अहकाम की दो क़िस्में

इबादतें जो हैं ये तो क़ानूनी हुक्म हैं। इसके अ़लावा जो काम करेगा वह अल्लाह का अख़्लाक़ी हुक्म होगा। एक है क़ानूनी हुक्म और एक है अख़्लाक़ी हुक्म। क़ानूनी हुक्म अगर छोड़ा तो जहन्नम होगी। अख़्लाक़ी हुक्म अगर छोड़ा तो जहन्नम में नहीं जायेगा। लेकिन जन्नत में उसका दर्जा बुलन्द नहीं होगा। क़ानूनी हुक्म तो पूरा करेगा डर के मारे, लेकिन अख़्लाक़ी हुक्म पूरा करेगा तरक़्क़ी के लिए।

अ़द्ल व एहसान का मतलब

क़ुरआन में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ (پاره– ١٤)

अल्लाह तआ़ला अ़द्ल व एहसान का हुक्म करते हैं।

अ़द्ल क्या है? और एहसान क्या है?

जितने क़ानूनी अहकाम हैं वह हैं अ़द्ल, और अख़्लाक़ी अहकामात हैं एहसान। अब आप पूरे क़ुरआन पर ग़ौर कीजिए। एक तरफ़ तो अल्लाह तआ़ला कहते हैं "ज़कात अदा करो" यह क़ानूनी हुक्म है। अगर यह टूटा तो मरने के बाद जहन्नम, साँप का काटना और दूसरे अ़ज़ाब हैं। और दुनिया में माल पर वबाल का आना है।

ज़कात की अदायगी न करना वबाल का सबब है

ज़कात के अदा न होने पर दुनिया में माल पर वबाल आता है। जब ज़कात का माल दूसरे बग़ैर ज़कात के माल के साथ मिल जाता है

तो दूसरे माल को भी तबाह कर देता है।

एक शहर के अन्दर हुकूमत का बड़ा ज़बरदस्त छापा पड़ा, बहुत-से ताजिर बेचारे परेशान हो गए। यहाँ ख़त आए। ये दीनदार ताजिर थे। उनके माल व दौलत पर बड़ी परेशानी आई थीं। उनमें जो मेरे जानने वाले थे मैंने उनको ख़त लिखा कि तुम लोग ग़ौर तो करो, ज़कात के देने में भूल तो नहीं हुई? कहीं ज़कात का माल तो तिजारत में रोलिंग नहीं कर रहा है?

मेरे यह ख़त लिखने पर उन लोगों ने हिसाब किया। बल्कि एक ताजिर (व्यापारी) जो ज़्यादा जानने वाला था उसने कई सालों का हिसाब मेरे पास भेजा कि यह हमारा हिसाब है ज़कात का। मैंने अंग्रेज़ों के ज़माने में चूँकि हिसाब पढ़ा था इसलिए अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से बहुत कुछ हिसाब जानता हूँ...... आजकल तो लोग बस कैलकूलेटर जानते हैं।

मैंने हिसाब जोड़कर उनको बताया कि एक साल के अन्दर तुमने पाँच हज़ार ज़कात कम दी है और तीन साल तक यह कमी रही। उन्होंने अंग्रेज़ी महीने गिने थे। मैंने हिजरी महीने गिने। हिजरी महीने में साल का गुज़रना जल्दी होगा। हिजरी साल ३५४ या ३५५ दिन का होता है। और ईसवी साल ३६५ या ३६६ दिन का होता है। मैंने हिसाब गिनकर उन्हें बताया, उन्होंने कान पकड़ लिया, फिर उसने मेरे पास ख़त लिखा कि हमारे हिसाब के अन्दर भी बहुत सी भूल-चूक हुई थी और ज़कात कम अदा हुई और ज़कात जब कम अदा हुई तो ज़कात का माल रोलिंग करता रहा। इसलिए वबाल आया।

पस ज़कात का माल जब बग़ैर ज़कात के माल में मिल जाता है तो बग़ैर ज़कात के माल पर भी तबाही व बरबादी आ सकती है। इसलिए ज़कात का माल अलग निकाल कर उसके हक़दारों को ख़ुद तलाश करके देना होगा।

ग़रीब की इज़्ज़त

और सम्मान के साथ ज़कात दी जाए

मेरे मोहतरम दोस्तो! जिस ज़िला के आप रहने वाले हैं वहाँ के ज़रूरत-मन्दों पर आपका माल लगना चाहिए। ज़रूरत-मन्दों को खुद आप जानते हों, ज़रूरत-मन्दों का तलाश करना मालदार के ज़िम्मे होता है। उसे एहतिराम व सम्मान के साथ ज़कात देनी होती है। मालदार को ग़रीब के घर भेजा, ग़रीब को मालदार के घर नहीं भेजा।

نِعْمَ الْاَمِيْرُ عَلٰى بَابِ الْفَقِيْرِ وَبِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰى بَابِ الْاَمِيْرِ

यानी बेहतरीन मालदार वह है जो ग़रीब के दरवाज़े पर जाए। और बुरा ग़रीब वह है जो मालदार के घर पर जाए। इसलिए मालदार को ग़रीब के दरवाज़े पर जाना चाहिए।

ज़कात लेने वाले को ज़लील न समझा जाए

ज़कात इक्राम व एहतिराम के साथ दी जाए। किसी को ज़लील बनाकर न दी जाए। मस्जिद डले-पत्थर से जो बनी है उसका हम एहतिराम व इक्राम करते हैं। इसलिए कि यहाँ पर हमारा फ़र्ज़ अदा होता है। जब डले-पत्थर से हमारा फ़र्ज़ आदा होता है तो मस्जिद का यह डला-पत्थर क़ाबिले एहतिराम बनता है, तो एक मुसलमान ग़रीब को तलाश करके देना उसके घर तक पहुँचकर उसे देना है।

इस्लाम ग़रीब व अमीर दोनों का हिमायती है

दुनिया के अन्दर जो मालदार है वह तो दुनिया वाला है। वह यह चाहता है कि ग़रीबों की कमर तोड़ेंगे तो हमारी मिल्कियत बाक़ी रहेगी। और जो ग़रीब है वह जानता है कि अमीरों का पेट फोड़ेंगे तो हमको रोटी और कपड़ा मिलेगा। ग़रीबों का नज़रिया रोटी और कपड़ा और मालदारों का नज़रिया कि हमारी मिल्कियत बाक़ी रहे और अल्लाह

मियाँ जो ग़रीबों के भी हामी, अमीरों के भी हामी हैं वह रब्बुल्-आ़लमीन हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिए ऐसा पाकीज़ा तरीक़ा बतला दिया कि जिसमें मालदारों की मिल्कियत भी बाक़ी रहे और ग़रीबों को भी रोटी कपड़ा मिले और लड़ाई न हो। यहाँ लड़ाई जो होती है, ग़रीब कहता है कि तेरा पेट फोड़ दूँ, मालदार कहता है कि तेरी कमर तोड़ दूँ, तो मालदार सूद के रास्ते ग़रीब की कमर तोड़ देता है और ग़रीब चोरी डाके के ज़रिए मालदार का पेट फोड़ता है।

मेहंगाई की वजह सूद

जितना बाज़ार मेहंगा होता है वह सूद की वजह से होता है और यह सूदी लेन-देन जब बन्द होगा जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा हमें बताया है ज़िन्दगी का वह तरीक़ा हम में आ जाए। और वह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी क़र्ज़ देना है बग़ैर सूद के, क़र्ज़ लेने वाला जब तक अदा नहीं करेगा सदक़े का सवाब मिलेगा। वक़्त के अन्दर अदा नहीं किया आपने ढील दे दी तो डबल सदक़े का सवाब। जैसे हज़ार रुपये आपने क़र्ज़ दिया महीने के वायदे पर तो महीने भर सदक़े का सवाब मिलेगा। महीने भर में न दे सका तो फिर दो हज़ार के सदक़े का सवाब आपको मिलेगा। और अल्लाह तआ़ला इसकी तरग़ीब देते (यानी इसकी प्रेरणा देते और शौक़ दिलाते) हैं:

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ (پاره– ۳)

यानी अगर वह तंगदस्त है उसका हाथ खुल जाए उस वक़्त तक क लिए उसको छूट दे दो।

وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ (پاره– ۳)

और अगर फिर भी न दे सके तो उसे माफ़ कर दो। यह वह

सामाजिक ज़िन्दगी की तालीम है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताई है।

दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को

यह वह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी है जिससे दूसरे पर अपना माल लगाना आपको आ गया। आप जब मस्जिद के अन्दर बैठे तो ईमान व इबादत में ताक़त पैदा हुई। अल्लाह के ख़ज़ाने का यक़ीन पैदा हुआ यहाँ आपने सुन लिया, ज़मीन वाले पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। यहाँ आपने सुनाः

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَھُوَ یُخْلِفُهٗ (پارہ-۲۲)

यानी जितना तू अल्लाह के नाम पर ख़र्च करेगा, अल्लाह उसका बदल देगा।

और दूसरे पर रहम करो अल्लाह तुम पर रहम करेगा। अगरचे तुम अपनी हैसियत के मुताबिक़ दूसरों पर रहम करोगे, लेकिन अल्लाह तुम पर रहम करेगा तो अपनी शान के मुनासिब दुनिया में करेगा, क़ब्र में करेगा, हश्र में करेगा, जन्नत में करेगा, और अगर गुनाहों को मिटाने के लिए जहन्नम में दाख़िल हुए तो जहन्नम की आग उसे नहीं गलाएगी। ईमान की बातों, इबादतों और तालीम के हल्क़ों के रास्ते मस्जिद के अन्दर रहकर यह ज़ेहन बना। अब आदमी अगर बाज़ार में गया तो बाज़ार में दोनों क़िस्म के आदमी हैं। बग़ैर मस्जिद वाले और मसिजद वाले भी।

बाज़ार में एक लड़की आई नौ साल की, दो रुपये लेकर। कि भाई यह दो रुपये ले ले, दाल, चावल, आटा और शकर दे दे, तो ताजिर ने दो रुपये लेकर फेंक कर मारा कि भाग जा। दो रुपये में दुकान लूटने के लिए आई है। निकल जा यहाँ से तब बेचारी रोती हुई दूसरी दुकान पर गई। हर जगह उसे धक्के मारे गए। लेकिन एक दुकान पर खुदा का ख़लीफ़ा भी बैठा हुआ था। जिसने नमाज़ के

ज़रिये अपने अन्दर अख़्लाक़ पैदा किया था, तालीम के हल्क़ों में बैठा हुआ था और जो यह समझे हुए था किः

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअ़त के लिए कुछ कम न थे कर्रो-बयाँ

यह है इस्लाम का मिसाली अख़्लाक़

अल्लाह ने इनसान को दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया है। इबादत तो फ़रिश्ते भी करते हैं। मगर इनसान की इबादत इसलिए है कि इबादत करते-करते उसके अन्दर अख़्लाक़ आ जाए। अल्लाह से ताल्लुक़ इबादत के ज़रिये ठीक हो जाए और अख़्लाक़ के ज़रिये बन्दों से भी उसका ताल्लुक़ ठीक हो जाए।

तो वह लड़की हर दुकान से धक्के खाकर उस बन्दा-ए-खुदा की दुकान पर पहुँची। दहाड़ें मारकर रोने लगी। कह रही है कि कुछ महीने हुए दुर्घटना में मेरे बाप का इन्तिक़ाल हो गया सिर्फ़ मेरी माँ है, कोई जागीर हमारे पास नहीं, कोई कारोबार भी नहीं। मेरी माँ शरीफ़ घराने की औ़रत है, विधवा हो गई और घर में हमारे ख़र्चा नहीं। तो वह लोगों के बरतन माँझ धोकर हमारा गुज़ारा करती है। मेरी माँ की गुरबत से लोग फ़ायदा उठाकर ज़्यादा काम लेकर थोड़े पैसे देते हैं। वह वसूल कर लाती है और हम बच्चों का पेट पालती है। आज उसे कोई मज़दूरी नहीं मिली तो आज हमारे घर में फ़ाक़ा है। अगर दो रुपये का कुछ सामान कोई हमें दे दे तो हमारे घर में भी आग जल जाएगी। अल्लाह तेरा भला करेगा।

उस आदमी ने इस बात को सुना। उसकी आँखों में आँसू आ गये। कि ऐ अल्लाह! हमारी बस्ती का एक घराना इस वक़्त तंगी में है, हम तो बढ़िया क़िस्म की ग़िज़ाएँ खाएँ और उनको दाल-रोटी नसीब नहीं। चार सौ, पाँच सौ रुपये का सामान टोकरे के अन्दर भरकर अपने आदमी के साथ उस विधवा के घर तक पहुँचा दिया।

और दो रुपये भी वापस कर दिये।

अब उस घर के अन्दर जो खाना पका है, धुआँ निकला है, कई दिनों से सूखी रोटियाँ खा रहे थे, आज उन्हें अच्छी ग़िज़ा मिली। ये यतीम बच्चे विधवा औ़रत उसकी बच्चियाँ ये सारे के सारे खाएँगे। और उनकी आँखों के अन्दर खुशी और शुक्र के जो आँसू निकलेंगे और जब ये हाथ उठाएँगे उस ताजिर के लिए दुआ करने के वास्ते तो जो अल्लाह बादल की बारिश ज़मीन पर डालकर बादल के पानी से एक मन का दस मन गेहूँ बनाता है, उस बेवा औ़रत की आँखों से भी पानी निकला है, क्या अ़जब है कि उसके ज़रिये ताजिर की सात नस्लों तक के फ़ाक़े ख़ुदा दूर कर दे।

यह है ज़िन्दगी जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें बताकर गए। अब यह शख़्स घर में आया और अपनी बीवी बच्चों को जमा किया और सारा क़िस्सा उस यतीम बच्ची का सुनाया तो घर भर की औ़रतों के भी ज़ेहन बन गए। बीवी ने कहा कि अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ रक़म लेकर जाऊँ और वहाँ जाकर हालात को देखूँ। वहाँ पर बीवी गई और सब हालात देखकर वापस आई। सारे घर वालों को जमा किया और कहा कि छह महीने से उसका शौहर इन्तिक़ाल कर चुका है। उसकी जवान बेटियाँ हैं जो शादी के क़ाबिल हैं। लेकिन पैसे न होने की बिना पर यह बेवा औ़रत बेचारी जवान बेटियों की शादी नहीं कर पाती। इसके अ़लावा छोटे-छोटे बेटे बेटियाँ भी बहुत-से हैं। जो चारों तरफ़ से मेरे सामने आकर बिलख गए। दो जवान बेटियाँ बुख़ार में मुब्तला थीं और तड़प रही थीं। एक दूसरे से हमदर्दी करना यह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी मुसलमानों का न रहा। इसलिए यह घराना परेशान है। जवान बेटियाँ बीमारी में तड़प रही हैं। उनका कोई इलाज करने वाला नहीं। गुरबत व तंगदस्ती से बिना शादी के बैठी हैं। कोई ख़बर लेने वाला नहीं। यह हाल देखकर उस ख़ुदा के बन्दे का सारा घर बैठकर रोया और अल्लाह से माफ़ी माँगी कि ऐ अल्लाह! क़ियामत

के दिन तू हमारी पकड़ मत करना कि हम लोग तो खा रहे हैं मुर्ग़े और हमारे पड़ोसियों को दाल भी नसीब नहीं है। ऐ अल्लाह! क़ियामत के दिन तू हामरी पकड़ मत करना हमसे ग़लती हो गई। हमें ख़ुद ढूँढ-ढूँढकर ऐसे लोगों को देना चाहिए था। उसने अपनी बीवी को चार-पाँच हज़ार की रक़म दी और वह बेवा औरत के पास गई और जाकर कहा कि बेटियों की शादी का इन्तिज़ाम करो और इलाज का इन्तिज़ाम भी हम कर देते हैं। डॉक्टर को फ़ोन करके ख़ुद ही कह देंगे।

पौने चार सौ करोड़ इनसानों का ग़म भी ज़रूरी

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! एक घराने की तकलीफ़ पर हम लोगों को किस क़द्र रिक़्क़त तारी हो गई। मेरे ऊपर भी और आपके ऊपर भी। मैं कहता हूँ कि पौने चार सौ करोड़ इनसान जो बग़ैर ईमान के इस दुनिया से जा रहे हैं और जिन्हें मरते ही फ़रिश्ते मारना शुरू करेंगे और आग में जलाना शुरू करेंगे। उनके लिए कौन रोएगा?

मख़्लूक़ के दर्द में नबी ने दुख और तकलीफ़ें बरदाश्त कीं

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ये चीज़ें बेचैन करती थीं। आप हमेशा सोच-विचार और चिन्ता में डूबे रहते थे। आप देखते थे कि लोगों में ईमान नहीं रहा। बेचैन हो जाते थे बेक़रार हो जाते थे कि ऐ अल्लाह! तेरे हुक्म टूट रहे हैं। मरते ही उन पर तेरा अ़ज़ाब आएगा। ऐ अल्लाह! मैं किस तरीक़े से उन्हें समझाऊँ। रातों को उठकर ख़ुदा के सामने रोते थे। बेचैन होते थे, बेक़रार होते थे। ऐ अल्लाह! हिदायत के दरवाज़े को खोल दे। अगर रात में आपका यह हाल था तो दिन में एक-एक घर पर जाते थे। एक-एक दर पर जाते थे कि मैं अल्लाह का नबी हूँ। तुमने मुझे धक्के मार लिए। तुमने मुझे

पत्थर मार लिए। तुमने मेरे दाँत तोड़ दिए जो करना था तुमने कर लिया। मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया और पानी का छिड़काव करके मुझे होश आया, किसी और मक़सद से नहीं, मैं सिर्फ़ तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही (भला चाहने) के लिए आया हूँ। मैं अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ आम आदमी नहीं हूँ। मुझ पर अल्लाह की तरफ़ से वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) आती है।

सुन लो! मरने के बाद एक ज़िन्दगी आएगी। क़ियामत का दिन आएगा। अल्लाह के सामने जाना होगा। अल्लाह के वास्ते बात मान लो। लेकिन वे पत्थ मार रहे हैं। इतने कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेहोश होकर गिर पड़ रहे हैं। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बेहोशी की हालत में ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने कन्धे ृ उठाए हुए हैं, कोई पुरसाने-हाल नहीं है। मक्का मुकर्रमा से पैदल चलकर ताइफ़ तशरीफ़ लाए हैं। मक्का वाले हिदायत की बात सुनने को तैयार नहीं हैं। ख़्वाहिश है कि ताइफ़ का कोई ख़ानदान हिदायत की बात क़बूल कर ले। ताकि पाकीज़ा इस्लामी ज़िन्दगी उनके अन्दर चालू कर दें। इस्लामी तरीक़े पर ज़िन्दगी का रहन-सहन क्या है? इस्लामी मामलात क्या हैं? इस्लामी अख़्लाक़ क्या हैं? इबादतें क्या हैं? ईमान की बातें क्या हैं? जब तक मजमा न मिले किस तरह उन्हें लोगों में चालू किया जा सकता है। इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुआ़ फ़रमाते कि ऐ अल्लाह! जमाअ़तों की जमाअ़तों का रुख़ इस तरफ़ फेर दे।

मिना में दावत और लोगों का ज़ुल्म व इनकार

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज के ज़माने में मिना जाते थे। एक-एक ख़ानदान से कहते थे "कौन मेरी मदद करेगा? कौन मुझे ठिकाना देगा?" ताकि मैं इस पाकीज़ा तरीक़े को ज़िन्दा करूँ और वह पाकीज़ा तरीक़ा दुनिया के लिए नमूना बन जाए। दुनिया के बसने

वाले इनसान जहन्नम की तरफ़ जाने से बचें। दुनिया में अमन व अमान आ जाए। मैं यह तरीक़ा लेकर आया हूँ। कौन है तुम में जो मुझे अपने पास ठहरा ले। अपने ख़ानदान में मुझे कौन ले जाएगा। लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दावत दे रहे हैं। एक ज़ालिम आता है, ऊँटनी के ऊपर एक कूँचा मारता है। ऊँटनी बिदकती है और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़मीन पर गिर पड़तें हैं और कपड़े धूल में भर जाते हैं। अन्दाज़ा हुआ कि यह ख़ानदान मुझे नहीं ले जाएगा। मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं तो दूसरे ख़ानदान के पास तशरीफ़ ले गए। उसको समझाना शुरू किया। उस ख़ानदान वाले ने कहा जब तुम्हारे मक्के वाले नहीं मानते हम क्यों मानें। हम मानेंगे तो सारे अ़रब के लोग हमसे लड़ाई करेंगे। हम तुमको अपने ख़ानदान व क़बीले में ले जाने के लिए तैयार नहीं हैं।

ग़म का साल

इसी मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया जो बड़ी हिमायत और हमदर्दी करते थे। हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का भी इन्तिक़ाल हो गया जिनकी वजह से बड़ा सहारा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सोचते हैं अबू तालिब चले गए, बीवी भी चली गई और मक्का वाले चारों तरफ़ से मुझे मारने की फ़िक्र में हैं, इस तरह यह साल मेरा ग़मगीनी का साल है। अब क्या करूँ? सोचा कि ताइफ़ चलूँ शायद ताइफ़ वाले बात को मानें। ताइफ़ में जाकर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोशिश फ़रमाई तो ताइफ़ वालों ने इस क़द्र आप पर ज़ुल्म किया कि छोटे-छोटे आवारा बच्चे और बदमाश क़िस्म के आदमी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे लगा दिए। और इस क़द्र आपके ऊपर पत्थर मारे गए कि आप बेहोश होकर गिर पड़े।

गालियों और पत्थरों के जवाब में दुआएँ

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने कन्धे के बल उठाया। पानी का छिड़काव किया तो आँखें खुलीं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम देखते हैं कि सामने फ़रिश्ता खड़ा है, कह रहा है कि अल्लाह तआ़ला ग़ज़ब में आ चुके हैं। अगर आप फ़रमाएँ तो दोनों पहाड़ों को मैं मिला दूँ प्रहाड़ों की ख़िदमत मेरे ज़िम्मे है। पहाड़ मेरे क़ब्ज़े में अल्लाह ने दिये हैं, ये ताइफ़ वाले बिल्कुल ख़त्म हो जाएँगे। तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर दुआ़ माँगी:

اَللّٰهُمَّ اَشْكُوْ اِلَيْكَ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِیْ

ऐ अल्लाह! मैं अपनी कमज़ोरियों की शिकायत करता हूँ। ऐ अल्लाह! कहीं तू मुझसे नाराज़ तो नहीं हो गया। अगर तू मुझसे नाराज़ नहीं है तो मुझे कोई परवाह नहीं। अगर ये ईमान न लाए तो इनकी औलाद ईमान लाएगी। वह फ़रिश्ता कहता रहा कि ख़ुदा का अ़ज़ाब तैयार है आप इजाज़त दें मगर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अ़ज़ाब को रुकवाते हैं। यहाँ लोगों को समझाते हैं और पत्थर पड़ते हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिल पर क्या गुज़रती होगी। इसका अन्दाज़ा हम नहीं लगा सकते।

नबी ने मख़्लूक़ को जहन्नम से बचाने के लिए तकलीफ़ें सहीं

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इतनी तकलीफ़ें इसलिए उठाईं ताकि पूरी दुनिया के इनसानों के अन्दर अमन व अमान आ जाए। और ये इनसान जन्नत के अन्दर चले जाएँ। और ये इनसान जहन्नम के अंगारों से बच जाएँ। जहन्नम

कोई ख़्याली चीज़ नहीं, ये हक़ीक़तें हैं जो मरने के बाद सामने आने वाली हैं।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेचैन व बेक़रार होकर फिरते थे। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बेक़रार व बेचैन होकर फिरते थे कि दुनियावी ज़िन्दगी के अन्दर और पूरे आ़लम के अन्दर आख़िरत के फ़िक्र की एक फ़िज़ा बन जाए। ऐसी एक तरतीब लेकर रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया के अन्दर आए।

यतीम दीन को गोद लेने वाले के लिए हलीमा सादिया वाला सम्मान

आज रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह दीन चारों तरफ़ से रिस्ता जा रहा है। और चारों तरफ़ से बिगड़ता जा रहा है। अब यह दीन यतीम हो चुका है जैसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यतीमी की हालत में पैदा हुए और औ़रतें बच्चे लेने के लिए आईं दूध पिलाने के लिए तो उन्होंने मालादारों के बच्चों को उठाया। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं उठाया, यह समझकर कि यह यतीम बच्चा है, बाप का इन्तिक़ाल हो चुका है, दादा के ऐसे तो बहुत पोते हैं। हमको क्या इनाम मिलेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को किसी ने यतीम समझकर हाथ नहीं लगाया। मालादारों के बच्चे ले लिए।

हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बहुत परेशान-हाल औ़रत थीं। उनकी छाती में दूध नहीं था। उनके इलाक़े में क़हत (अकाल) था। ऊँटनी का दूध भी सूख चुका था। उन्होंने भी यहाँ आकर कोशिश की कि किसी मालदार का बच्चा मिल जाए ताकि कुछ पैसे मिल जाएँ और मैं कुछ खा-पी लूँ ताकि मेरी छाती में दूध आ जाए। ऊँटनियों को खिलाऊँ-पिलाऊँ ताकि उनके थनों में दूध आए। ख़ुद हज़रत हलीमा

सादिया का बच्चा था रात-रात भर वह दूध न मिलने की वजह से रोता था। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा मक्का पहुँचीं लेकिन हज़रत हलीमा को किसी ने बच्चा नहीं दिया। इसलिए कि जब अपने को दूध नहीं पिला पाती तो हमारे बच्चे को क्या पिलाएगी। हज़रत हलीमा को बच्चा नहीं मिला और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने वाली नहीं मिली। हज़रत हलीमा ने अपने शौहर से कहा कि कोई बच्चा नहीं मिल रहा है, हाँ एक यतीम बच्चा है। जिसका कोई उठाने वाला नहीं है। अगर तुम कहो तो उस यतीम बच्चे को ले लें। इनाम तो मिलने की कोई उम्मीद दुनिया में दिखाई नहीं देती लेकिन आख़िरत में अल्लाह तआला सवाब देगा। तो सवाब की नीयत से कहो तो मैं ले लूँ। दुनियाँ में तो कुछ मिलेगा नहीं।

तुम हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ेहन लेकर यहाँ आए हो

ऐ मेरे प्यारो! अल्लाह तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर दे, तुम्हारा यहाँ पर आना सवाब ही के लिए है। तुम यहाँ दुनिया के लिए नहीं आए। न हमारा दिल गवारा करता है, न हमारा दिल गवाही देता है। हम ज़ाहिर को ही देखकर कह सकते हैं। तुम्हारा ज़ेहन यह बता रहा है कि तुम यहाँ दुनियावी ग़रज़ से नहीं आये। इतनी तकलीफ़ें उठा-उठाकर तुम यहाँ आए हो, यक़ीनन अल्लाह के दीन की फ़िक्र लेकर आए हो। तुम्हारा ज़ेहन हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा वाला ज़ेहन है।

बरकती बच्चा और बरकतों का ज़ाहिर होना

तो हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा दुनिया में तो कुछ मिलेगा नहीं, लेकिन हमें आख़िरत में सवाब मिलेगा। उनके शौहर भले आदमी थे, उन्होंने कहा अच्छा उस यतीम बच्चे को ले लो। जब और

बच्चा नहीं मिलता। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब गोद में उठाया तो गोद में उठाते ही हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा की दोनों छातियाँ दूध से भर गईं। एक तरफ़ से हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाया और दूसरी तरफ़ से आपके रज़ाई (दूध शरीक) भाई हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बच्चे ने दूध पिया। बरकतों का मुज़ाहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद में लेते ही शुरू हो गया। चारा डालने के लिए ऊँटनी के पास गई तो देखा कि ऊँटनी का थन दूध से भरा हुआ है। दूहा तो प्याला भर गया। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का सवारी का यह जानवर बहुत दुबला था। और औरतों के जानवर मोटे थे। वे औरतें चली गईं कि हलीमा का कौन इन्तिज़ार करे। उसका जानवर बड़ा दुबला है चलेगा भी नहीं। हज़रत हलीमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोद में लेकर सवार हुई हैं और यह जानवर चला है तो जानवर के अन्दर भी ताक़त आ गई। बहुत तेज़ी के साथ चला यहाँ तक कि रास्ते में जो साथ की औरतें मिलीं उनके जानवरों से भी यह जानवर आगे निकल गया। तब सारी औरतें कहने लगीं हलीमा को "बरकती बच्चा" मिल गया। हलीमा को "बरकती बच्चा" मिल गया। घर पर जहाँ हज़रत हलीमा की बकरियाँ चरती थीं वहाँ बतौर बरकत के ख़ुद से सब्ज़ा (हरयाली, घास) हो जाता था तब सारे लोग अपने चरवाहों से कहते थे कि जहाँ हलीमा की बकरियाँ चरती हैं वहाँ पर ले जाओ। इसलिए कि उसे बरकती बच्चा मिल गया है।

कलिमा पढ़ने वालों में भी ग़ैर-इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी दाख़िल हो रहा है

मेरे मोहतरम दोस्तो! जैसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम यतीम थे और हज़रत हलीमा ने यतीमी की हालत में गोद लिया था। तो अल्लाह के नबी यहाँ पर जिस पाकीज़ा तरीके और जिस दीन को लेकर आए वह पाकीज़ा तरीक़ा और दीन भी आज दुनिया के अन्दर यतीम बन चुका है। पौने चार सौ करोड़ जो ईमान नहीं लाए कलिमा नहीं पढ़ते वे तो इस यतीम को धक्के मारते ही हैं, लेकिन जो कलिमा पढ़ने वाले सौ सवा सौ करोड़ पूरी दुनिया में हैं उनका यह हाल है कि इस यतीम दीन को अपनी दुकान में दाख़िल नहीं होने दोते। अपने घरों में दाख़िल नहीं होने देते, अपनी शादी में दाख़िल नहीं होने देते। इसलिए कि पूरी दुनिया का जैसा मुआ़शरा (समाजी ज़िन्दगी) है उस मुआ़शरे (समाज) के अन्दर मुसलमान भी आ गया। हालाँकि यह समाज तबाही और बरबादी लाने वाला है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस मुआ़शरे को लेकर तशरीफ़ लाए वह हमदर्दी वाला मुआ़शरा (समाज और ज़िन्दगी का तरीक़ा) है। वह रहमदिली वाला मुआ़शरा है। एक दूसरे की भलाई चाहने वाला मुआ़शरा (समाज और तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी) है। ऐसा पाकीज़ा समाज और तरीक़ा लेकर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए जिसके ज़रिये अमन व अमान क़ायम होगा।

दुनिया वाला समाज अमन वाला समाज नहीं

लेकिन दुनिया के अन्दर जो मुआ़शरा (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा) है वह मुआ़शरा अमन व अमान का मुआशरा नहीं है। यह मुआ़शरा तो पैसे बनाने वाला मुआ़शरा है। इसके अन्दर तो बेकार और बेफ़ायदा चीज़ों में कोशिश ज़्यादा लगवाई जाएगी। ताकि आदमी ज़्यादा फ़ुज़ूलख़र्ची के अन्दर आए। आदमी जितना फ़ुज़ूलख़र्ची के अन्दर आएगा यूरोप और अमेरिकी की मंडियाँ उतना ही ज़्यादा चल सकेंगी।

नई-नई ईजादात (आविषकार) करते हैं। नई-नई घड़ियों के

डिज़ाईन, नए-नए कपड़ों के डिज़ाईन आते रहते हैं और उसको टेली वीज़न पर दिखाते हैं। उसकी पब्लिसिटी और पर लाखों नहीं बल्कि करोंड़ों डॉलर ख़र्च करते हैं। और उसको सारा नौजवान तबक़ा देखता है। पब्लिसिटी के अन्दर एक कपड़ा एक साल पहना और उसे आर्ट और फ़ैशन क़रार दे दिया। तो अब वह सड़कों के ऊपर आ गया। अब ये नये कपड़े नौजवानों के बदनों पर आ गए। इस वजह से आ़म ज़िन्दगी यूरोप और अमेरिका वालों की बिल्कुल परेशान करने वाली ज़िन्दगी है और सारा माल चन्द घरानों के अन्दर सूद के रास्ते से जमा हो रहा है और पूरी दुनिया परेशान है।

पश्चिम को ख़तरा इबादतों से नहीं इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी से है

ये अल्लाह के दुश्मन हमें इबादतों के एतिबार से बिल्कुल नहीं देखेंगे। वे समझते हैं कि मुसलमान अगर नमाज़ पढ़ता है तो कोई हर्ज नहीं। वे तो अपना चर्च भी दे देंगे तुम्हें नमाज़ पढ़ने के लिए। उन्हें ख़तरा तुम्हारी इबादतों से नहीं, तुम्हारी नमाज़ों और रोज़ों से नहीं। उन्हें ख़तरा हज और ज़कात से नहीं है। वे देखते हैं कि नमाज़, रोज़ा और इबादतें चाहे ख़ूब कर रहे हों लेकिन 'मुआ़शरत' (सामाजिक ज़िन्दगी) तो वही है जो हमने चालू की है। यानी मुसलमानों ने यूरोप वाली समाजी ज़िन्दगी इख़्तियार की है। अगर इस मुआ़शरत (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े) में मुसलमान रहेंगे तो हमारी मंडियाँ चलती रहेंगी। और हमारे सूद के अड्डे बराबर चलते रहेंगे।

दवा तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया बीमार है

मेरे दोस्तो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस मुआ़शरत (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े) को लेकर तशरीफ़ लाए हैं वह मुआ़शरत जब हम चालू करेंगे तो अल्लाह की ज़ात से

उम्मीद है कि दूसरी समाजो ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े नीचे उतरेंगे। तब दुनिया के अन्दर अमन व अमान आएगा। हमने पूरी दुनिया का अन्दाज़ा लगा लिया है। सारी दुनिया परेशान है। रास्ता चाहती है। लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिल रहा है। रास्ता तो सिर्फ़ रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लेकर आए लेकिन वह सिर्फ़ किताबों के अन्दर मौजूद है। मुसलमानों के अन्दर वह मौजूद नहीं है। पानी तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया प्यासी मर रही है। दवा तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया बीमारी में मर रही है।

इसको किताबों में से निकालो और अपनी ज़िन्दगियों में दाख़िल करो। ताकि दुनिया के लोग इसे देखें और पूरे आ़लम के लोग इस पाकीज़ा तरीक़े को लेने के लिए बिल्कुल तैयार हैं।

तब किसी के रोकने से तुम रुक नहीं सकोगे

यह पाकीज़ा तरीक़ा आए कैसे? इसके लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चार चीज़ों के अन्दर जानी और माली कुरबानियों की तरतीब बता दी है। अपने तक़ाज़ों को ज़रूरतों के दर्जे में ले आओ। फ़ुज़ूल चीज़ों और बेकार चीज़ों से निकालो। फिर जान व माल का जो हिस्सा बचे वह इबादतों में, अख़्लाक़ी चीज़ों में और दावत के अन्दर लगे। जब आप यह करेंगे तो ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम चलेगा और ख़ुदा के ग़ैबी निज़ाम से कोने के कोने और मुल्क के मुल्क अल्लाह की तरफ़ जब पलटा खाएँगे तो किसी के थामने और रोकने से तुम रुक नहीं सकोगे।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसी पाकीज़ा ज़िन्दगी लेकर तशरीफ़ लाए वह आप हज़रात जानते हैं। आज चाहे ईसाई मर्द हों या ईसाई लड़कियाँ हों किस क़द्र उन्हें परेशानियाँ हैं। इसलिए हमारे कारोबार की, हमारे मामलात की, हमारे रहन-सहन की पाकीज़ा ज़िन्दगी जब यूरोप और अमेरिका देखेगा तो सच कहता हूँ तमाम

इनसान इस पाकीज़ा तरीक़े को हाथों हाथ लेने के लिए उमंड पड़ेंगे।

शरारती क़िस्म के लोग हर ज़माने में रहेंगे

शरीर क़िस्म के (शरारत करने वाले) लोगों के लिए मैं नहीं कहता। शरीर क़िस्म के लोग हर ज़माने में रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी थे और पहले के नबियों के ज़माने में भी थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के दौर में भी थे और हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर में भी शरीर क़िस्म के लोग थे। दौरे उस्मानी में ज़्यादा थे, दौरे अ़ली में कुछ और ज़्यादा थे तो हज़रत मुआ़विया के दौर में उससे भी ज़्यादा। उन्हें बिल्कुल खलेगा लेकिन आ़म पब्लिक के अन्दर एक सलाहियत है। यह आ़म पब्लिक बहुत परेशान है। इसके सामने कोई रास्ता नहीं है।

अगर यही इस्लाम है तो मैं मुसलमान होने के लिए तैयार हूँ (एक वाक़िआ़)

हवाई जहाज़ के अन्दर हम लोग सवार हुए बेरूत से इस्तम्बूल के लिए अमेरिकन हवाई जहाज़ था। तीन चार सौ मुसाफ़िर थे। एक लड़की ख़िदमत-गुज़ार (ऐयर होस्टस) आई। हमारे साथ एक बड़े अफ़सर बैठे हुए थे। उन्होंने उस लड़की से कहा कि एक गिलास पानी लाओ। वह पानी लेकर आई तो उससे कहा कि गिलास यहाँ रख दो। उसके हाथ से नहीं लिया। वह लड़की बाद में उनसे कहने लगी क्या नाराज़ हो गए तुम मुझसे मेरे हाथ से कोई चीज़ नहीं लेते? इनाम भी नहीं दिया तुमने? वह कहने लगे कि भाई मैं मुसलमान हूँ और मुसलमान दूसरे की लड़कियों को नहीं देखा करता। मुसलमान अपनी बीवी के लिए रिज़र्व होता है। वह लड़की हैरत में पड़ गई। जब उसे यह मालूम हुआ कि मुसलमान बीवी अपने शौहर की ख़िदमत करती है। खाना पकाती है। और मुसलमान शौहर कमाकर अपनी बीवी को

देता है। उसने कहा यह तो बिल्कुल बादशाहों वाली ज़िन्दगी है। फिर उसने पूछा तुम्हारे ख़्याल में ऐसे कितने मुसलमान हैं? बताया कि करोड़ों पाकिस्तान में हैं, बंगलादेश में हैं, और करोड़ों दूसरे मुल्कों में रहते हैं।

कहने लगी अरे करोड़ों मुसलमान भरे पड़े हुए हैं जिनकी ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी है। मैं तो रोज़ाना सफ़र करती हूँ मुझे तो एक मुसलमान ऐसा नहीं मिला। मैं तो जहाज़ में रोज़ाना सफ़र करती हूँ मुझे तो एक भी मुसलमान ऐसा नहीं मिला। अगर यही इस्लाम है तो मैं भी मुसलमान बनने के लिए तैयार हूँ।

पश्चिमी समाज में एक लड़की की हैसियत

आप हज़रात जानते हैं कि यूरोप में शादियों का जो निज़ाम (सिस्टम) है "लव मेरिज" यह किस क़द्र गन्दा मिज़ाज है। लड़का और लड़की जब जवान हो जाएँ तो फिर माँ-बाप के पास वे नहीं ठहरते। माँ-बाप की ख़िदमत भी वे नहीं करते। माँ-बाप उनको रोकते भी नहीं शादी का इन्तिज़ाम वे ख़ुद करें।

यह आप हज़रात जानते हैं कि एक-एक लड़की पन्द्रह-पन्द्रह और बीस-बीस दिन तक शौहर की तरह किसी दूसरे लड़के के साथ रहती है और बीवी की तरह रहती है। यह पसन्द नहीं आया तो उसके पास चली गई। वह पसन्द नहीं आया तो दूसरे के पास चली गई। ये ज़िन्दगियाँ हैं उनकी। अब अगर एक लड़की किसी लड़के के साथ गई और वक़्त गुज़ारा लेकिन अनबन हो गई उस लड़के ने छोड़ दिया यह अकेली रहेगी। माँ-बाप के पास तो जाएगी नहीं। बवॉय फ्रेंड उसे कोई मिला नहीं, अब ऐसी लड़कियाँ क्या करें?

पश्चिमी मुल्कों की लड़कियों की ख़राब हालत

इंग्लैण्ड के अख़बारों के अन्दर यह आता है कि इस महीने इतनी

हज़ार लड़कियों ने टेलीफ़ोन बॉक्स के अन्दर खड़े खड़े रात गुज़ारी।

मेरे मोहतम दोस्तो! यूरोप से आने वाले यूरोप पर गुस्सा करते हैं और हमको यूरोप में रहकर यूरोप वालों पर रहम आता है कि ऐ अल्लाह! किस क़द्र परेशान हैं ये यूरोप वाले। अल्लाह के महबूब का जो तरीक़ा था वह किताबों के अन्दर रह गया और यूरोप वाले इतने परेशान हैं। अगर मुसलमानों के अन्दर यह पाकीज़ा तरीक़ा आता तो यूरोप वालों को रास्ता मिलता।

मुसलमान लड़िकयों का ज़िन्दगी का रहन-सहन

हमारी लड़कियाँ अपने माँ-बाप के घर रहती हैं। माँ-बाप उनके ख़र्च उठाते हैं। उनकी शादियाँ माँ-बाप करते हैं और शौहर के पास जब जाती है तो शौहर ख़र्चा उठाते हैं। किस क़द्र पाकीज़ा है यह ज़िन्दगी।

मैं कई-कई रातों रोता रहा कि या अल्लाह! कितनी हज़ार लड़कियाँ हैं जो ईसाई हैं। वे टेलीफ़ोन बॉक्स के अन्दर खड़े-खड़े रात गुज़ारती हैं। इसलिए कि उन्हें कोई दूसरा बवॉय फ्रैंड नहीं मिला और न माँ-बाप रखते हैं।

लोग तुम्हारी क़ब्रों को चिमट-चिमटकर रोयेंगे

आप हज़रात यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मैं सिर्फ़ पाकीज़ा इस्लामी समाज का तज़किरा कर रहा हूँ। सिर्फ़ मुज़ाकरा कर रहा हूँ। इसके मुज़ाकरे में जब आप हज़रात पर इतना असर पड़ रहा है तो जब यह पाकीज़ा ज़िन्दगी दुनिया के अन्दर आएगी तो लोग उमंड-उमंडकर तुम्हारे पास आएँगे। और जब तुम मरोगे तो तुम्हारी क़ब्रों को चिमट-चिमटकर हिचकियाँ मार-मारकर रोएँगे कि यह आदमी था जिसने वैस्ट इंडीज़ का सफ़र किया। इसने बराज़ील का सफ़र किया और वहाँ के लोगों में पाकीज़ा ज़िन्दगी चालू कर दी।

सारी बातें क्योंकर क़ाबू में लाई जा सकती हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो! ये सारी बातें क़ाबू में लाने के लिए हमें यह करना होगा कि दावत वाले काम को हम अपना काम बनाएँ और दावत के ज़रिये अपने ईमान को ताक़तवर बनायें।

अख़्लाक़ वाली ज़िन्दगी दुनिया में चालू जब होगी कि हमारी मुआशरत (ज़िन्दगी का रहन-सहन) ठीक हो जाए। हमारे मामलात दुरुस्त हो जाएँ।

अगर आज मौलाना साहिब ने यह बात बयान की तो बहुत-से यूरोप के चौधरियों के ज़ेहन में आया होगा कि भाई हम भी इसी तरह की एक कॉलोनी बनाएँगे। हम भी यूँ करेंगे और यूँ करेंगे। मेरे प्यारो! इस तरह कॉलोनियाँ नहीं बना करतीं, जड़ के बग़ैर पेड़ नहीं लगा करते।

पाकीज़ा समाज वाली कॉलोनी कैसे बनेगी?

दावत की ज़मीन हो, ईमानियात की जड़ हो, तालीम के हल्क़ों का पानी हो, अल्लाह के ज़िक्र की ग़िज़ा हो, जान व माल की क़ुरबानी की खाद हो। नफ़्सानियत, शैतानियत और गुनाहों से बचने की बाढ़ हो और इस्लाम के कलिमे और इस्लाम के अरकान का तना हो, पूरे दीन का पेड़ हो, अख़्लाक़ की छाल का फल हो और इख़्लास का रस हो। फिर देखिए पूरे आलम के अन्दर दीन फैलता है कि नहीं। यह तरतीब है। इसकी कॉलोनियाँ बनाने से नहीं बनतीं कि बैठकर पैसे जमा किये और कॉलोनियाँ बना दीं इसकी पूरी तरतीब है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताई है। वह यह कि दावत पर जान व माल लगाकर दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों के ज़ेहन में यह बात डालनी है कि करने वाली ज़ात तो सिर्फ़ अल्लाह की है।

ख़ुदा की ताक़त तस्लीम करो तो बेड़ा पार होगा

दावत के ज़रिये दुनिया वालों को यह समझाना है कि ख़ुदा की ताक़त तस्लीम करोगे तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर ख़ुदा की ताक़त तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे। यह सारे नबियों ने दावत दी और पूरी दुनिया को यह दावत मिली।

सारी दुनिया की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं

तुम्हें भी ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम कराना है। यह मीनारे वाला "अल्लाहु अक्बर" पूरे आ़लम के अन्दर लेकर जाना है। ख़ुदा ताक़त और बरकत दे। ख़ुदा की ताक़त के मुक़ाबले में सारी दुनिया की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं। उनकी कोई हैसियत नहीं। मकड़ी हमेशा वीरान घरों में जाले ताना करती है। आबाद घरों में मकड़ी जाला नहीं ताना करती। आज दीन की दावत से, अल्लाह के दीन के मुज़ाकरों से और फ़िक्रे आख़िरत से दुनिया वीरान हो चुकी है।

पूरा आ़लम मकड़ी और मकड़ी के जालों से भरा हुआ है

आप हज़रात ने बताया कि इतना काम हो रहा है। फ़लाँ जगह से इतनी जमाअ़तें निकलीं, अल्हम्दु लिल्लाह जितना हुआ उस पर तो ख़ुदा का शुक्र अदा करना है, लेकिन देखना है बाक़ी कितना है। उस बाक़ी को देखकर और सामने रखकर फिर क़दम उठाना है। और दुनिया में फिरकर दीन की दावत देनी है और लोगों के ज़ेहनों में बैठा देना है कि ख़ुदा के मुक़ाबले में जितनी ताक़तें हैं दुनिया की, ये मकड़ी के जाले से ज़्यादा हैसियत नहीं रखतीं। ये सारे मकड़ी के जाले हैं। इनकी कोई हैसियत नहीं। इसी तरह ख़ुदा के ख़ज़ानों के मुक़ाबले में सारी दुनिया का कुल माल और ख़ज़ाना मच्छर के पर के बराबर भी

नहीं।

दुनिया की ताक़तों की मिसाल

एक वीरान घर है। उसमें मकड़ी ने जाला तान दिया। उसके ऊपर एक कबूतरी ने घौंसला बना दिया। उस घौंसले के तिनके उस जाले पर गिरे और कबूतरी के अंडों के छिलके भी टूटकर उसपर गिरते रहे। जाला टूटा नहीं क्योंकि मकड़ी ने उसपर सहारा दे रखा है, तिनके के ऊपर तिनके गिर रहे हैं मगर जाला नहीं टूट रहा है। अब इस जाले के अन्दर छोटे-छोटे कीड़े फंसे जिन्हें मकड़ी खाती रही और ताक़त वाली बनती रही। इधर से उधर भागी, उधर से इधर आ रही है...... उस मकड़ी ने जाला ताना तो दूसरी मकड़ी ने भी वहाँ जाला ताना। इस तरह पूरा घर मकड़ी और मकड़ी के जालों से भर गया।

इसी तरह पूरा आ़लम मकड़ी और मकड़ी के जालों से भर गया है। आज फ़लाँ मकड़ी (किसी मुल्क का राष्ट्रपति) फ़लाँ मकड़ी के पास गई। फ़लाँ मकड़ी, फ़लाँ मकड़ी से मिली और फ़लाँ गोरा मकड़ा चला और लाल मकड़ी से मिला। और चार घँटे तक उससे बातचीत की। और फ़लाँ जगह इतने मकड़े (मुल्कों के अध्यक्ष) जमा हुए। ख़ुदा-ए-पाक की क़सम ये मकड़ी के जाले से ज़्यादा अहमियत नहीं रखते। ख़ुदा की ताक़त के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है।

अल्लाह के अ़ज़ाब की झाड़ू

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने क़ौम वालों को दावत दी। सारे नबियों ने अपनी क़ौम वालों को दावत दी और यह हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दावत थी, और हमारे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की दावत थी। तुम भी इस दावत को लेकर सारी दुनिया के अन्दर फैल जाओ और सारी दुनिया को यह बता दो कि ख़ुदा को तस्लीम करोगे तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर ख़ुदा की

ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे। इन जालों की कोई हैसियत नहीं।

फ़िरऔन के पास मुल्क का जाला, हामान के पास विज़ारत का जाला, क़ारून के पास माल का जाला था। ये बनी इस्राईल को ख़ूब धुतकार रहे थे। उस वक़्त जब उनके अन्दर ईमान की ताक़त नहीं थी।

लेकिन जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। दावत की फ़िज़ा बनाई। बनी इस्राईल के दिलों के अन्दर अल्लाह की ताक़त का यक़ीन पैदा हुआ, तब अल्लाह पाक ने मिस्र के जालों को साफ़ करने का इरादा किया। तब अ़ज़ाब की एक झाडू आयी और फ़िरऔन के मुल्क का जाला साफ़ कर दिया। और अल्लाह के अ़ज़ाब की दूसरी झाडू आयी तो क़ारून के माल का जाला साफ़ कर दिया, और अल्लाह के अ़ज़ाब की तीसरी झाडू आयी तो हामान की विज़ारत का जाला साफ़ कर दिया। ये सारे के सारे जाले हैं। ख़ुदा-ए-पाक की क़सम इनकी कोई हैसियत नहीं है।

हमारी ताक़त बन्दूक़ की एक गोली से भी कम है

यह हम अपनी ताक़त नहीं बता रहे हैं। हम उस अल्लाह की ताक़त बता रहे हैं हम जिस अल्लाह के मानने वाले हैं। हमारी तो सिर्फ़ इतनी ताक़त है कि कोई हमें गोली मार दे और हमारी मौत का वक़्त आ गया है तो हम मर जाएँगे बल्कि उसके लिए गोली की भी ज़रूरत नहीं, अगर कोई घूँसा मार दे और हमारा वक़्त आ चुका है तो हम मर जाएँगे। हम अपनी ताक़त को नहीं बता रहे हैं। जिस अल्लाह के हम क़ायल हैं और जिस अल्लाह को हम मानते हैं उस अल्लाह की हम ताक़त बता रहे हैं।

रूहानी ताक़त भी ख़ुदाई गिरफ़्त से नहीं बचा सकती

जाओ तुम पूरी दुनिया के अन्दर फैल जाओ। अमेरिका में फैल जाओ। कनाडा में फैल जाओ। साल-साल की, चालीस-चालीस दिन की जमाअ़तें लेकर फैल जाओ। कनाडा में फैल जाओ और अमेरिका में फैल जाओ और हर जगह जाकर बताओ कि अगर ख़ुदा की ताक़त तुम्हारे ख़िलाफ़ हो गई तो तुम कुछ नहीं कर सकोगे। जब ख़ुदा की पकड़ आ जाएगी तो दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तें कुछ नहीं कर सकेंगी।

मैं तो इससे भी आगे बढ़कर कहूँगा कि अगर ख़ुदा की पकड़ आ जाए तो रूहानी ताक़त भी नहीं बचा सकती। जब ख़ुदा की पकड़ आ गई तो नूह अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी, और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बाप को नहीं बचा सकी।

ईमान की ताक़त के मायने

ईमान की ताक़त के मायने हैं अल्लाह की ताक़त का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाए। और मख़्लूक़ात की ताक़त का डर दिल से निकल जाये। मख़्लूक़ात की ताक़त का डर दिल से निकलेगा कुरबानियों से। और अल्लाह की ताक़त का दिल के अन्दर यक़ीन आएगा बार-बार अल्लाह का बोल बोलने और सुनने से, और दावत की फ़िज़ा बनाने से।

करने के दो काम

प्यारे दोस्तो! इस ईमान की ताक़त को ज़्यादा करने के लिए दो काम करने होंगे। एक तो दावत की फ़िज़ा बनाना। बार-बार अल्लाह की बड़ाई का बोल बोलना और सुनना। घरों के अन्दर अल्लाह की बड़ाई का बोल बोलना और सुनना, औ़रतों और बच्चों में बोलना और

सुनना, मस्जिदों के अन्दर बोलना और सुनना, बाज़ारों में बोलना और सुनना, सड़कों पर बोलना और सुनना, मुल्कों-मुल्कों के अन्दर जाकर बोलना और सुनना। इस तरह हर जगह जाकर दावत की फ़िज़ा बनाना और उसके लिए कुरबानी देना। जब कुरबानी देंगे तो मख़्लूक़ात का यक़ीन निकलेगा। और जब दावत देंगे तो ख़ुदा का यक़ीन आएगा। इसलिए एक तो दावत का देना ज़रूरी है। और दूसरे अल्लाह का बोल बोलना ज़रूरी है।

दुनिया में दीन ज़िन्दा हो जाए या हमारी और तुम्हारी क़ब्रें यूरोप में बनें

यह काम सिर्फ़ चार महीने का नहीं, सिर्फ़ साल भर का नहीं। कुरआन में कहीं छह महीने और एक साल नहीं है। यह साल और चार महीने तो सिर्फ़ आदत डालने के लिए हैं। कुरआन ने तो हमें बता दिया कि पूरी जान और पूरा माल ख़ुदा तआला ख़रीद चुके हैं:

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ

यह सारी ज़िन्दगी का काम है, करते-करते मरो और मरते-मरते करो।

प्यारो! बिस्तर लपेट-लपेटकर अल्लाह के रास्ते में निकल जाओ, या तो अल्लाह का दीन दुनिया में ज़िन्दा हो जाए या हमारी और तुम्हारी क़ब्रें जाकर यूरोप में बनें। अब बताओ तुम में से कौन है जो पूरी ज़िन्दगी मश्विरे के मुताबिक़ गुज़ारने के लिए तैयार है। अल्लाह तआला हम सब को क़बूल फ़रमाये और अपने दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़े। आमीन।

तक़रीर (5)

यह तक़रीर मर्कज़ हज़रत निज़ामुद्दीन देहली में नवम्बर 1994 ई० को हुई।

इज्तिमाईयत (एकता और संगठन) पैदा करने का तरीक़ा यह है कि हर आदमी दूसरे को नफ़ा पहुँचाए। दूसरे से नफ़ा लेने की फ़िक्र न करे। अल्लाह से लेना और बन्दों को देना, इससे एकता और इत्तिहाद पैदा होता है। अल्लाह से लेने का नाम इबादत है, और बन्दों को देने का नाम ख़िलाफ़त है। यानी एक हाथ फैला रहे अल्लाह से लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला रहे बन्दों की तरफ़, देने के लिए।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा

तक़रीर (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَا
وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَ
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُ
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمً
كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o
وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ
رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهَارُ
خَالِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا، ذَالِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ o (سورة توبة پاره-١١)

وقال النبى صلى الله عليه وسلم: اَصْحَابِىْ كَالنُّجُوْمِ، بِاَيِّهِمِ اقْتَدَيْتُمْ
اِهْتَدَيْتُمْ (اوكما قال عليه السلام)

सहाबा की ज़िन्दगी हमारे लिए नमूना है

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! मैंने खुतबे में एक हदीस शरीफ़ पढ़ी है। इस हदीस शरीफ़ में बताया गया है कि हिदायत की तौफ़ीक़ के

अगर तुम तलबगार हो, हिदायत वाली ज़िन्दगी अगर तुम अपनाना चाहते हो, हिदायत की रोशनी तुम अगर लेना चाहते हो, तो तुम मेरे सहाबा में से जिस किसी की इत्तिबा (पैरवी) कर लोगे, तुम्हें हिदायत मिलेगी। रोशनी मिलेगी। ईमानी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और सलीक़ा मिलेगा।

अगर तुम दावत व तब्लीग़ की मेहनत से जुड़े हुए हो। इल्म के सीखने का मश्ग़ला अपना रहे हो। तिजारत व दस्तकारी को रोज़ी-रोटी कमाने के तौर पर चुन रहे हो। सियासत व राजनीति के मैदान में उतर पड़े हो, अल्लाह के रास्ते में जिहाद का जज़्बा सीने में मौजें मार रहा हो या मख़्लूक़ की ख़िदमत की तौफ़ीक़ और सआदत से सम्मानित हो रहे हो तो ज़िन्दगी के इन तमाम मैदानों में सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की ज़िन्दगियाँ, सहाबा-ए-किराम के मुजाहदात, सहाबा-ए-किराम के इरशादात, सहाबा-ए-किराम के मामूलात, हमारे और तुम्हारे लिए रहनुमा हैं, मिसाल हैं, मेयार हैं।

दीन के लिए कुरबानियाँ, दीनी अख़्लाक़ में ताक़त और दीन की हिफ़ाज़त के लिए जद्दोजहद, ये ख़ूबियाँ हमारे अन्दर आएँगी 'दौरे सिद्दीक़ी' (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर) से।

और अगर मुख़्लिसीन और दीन के पैरोकारों की कुरबानियों के नतीजे में और दावत व तब्लीग़ की पूरी दुनिया में चल रही मेहनत के नतीजे में उम्मते-मुस्लिमा दुनियावी शान व शौकत, माल व दौलत और इज़्ज़त व बड़ाई से हमकिनार होती है तो फिर उस वक़्त दौरे फ़ारूक़ी (हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का दौर) हमारे लिए रहनुमा होता है। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का दौर हमारे लिए हिदायत का मीनार बनता है।

बेमिसाल इस्लामी फ़ुतूहात, 'अम्र बिल्-मारूफ़' (नेकी का हुक्म करने) और 'नही अनिल्-मुन्कर' (बुराई से रोकने) का उम्मत में

चलन। उलूम व फ़ुनून की ख़िदमत और उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों की देखभाल। तहज़ीब और ज़िन्दगी गुज़ारने के आला उसूल पर हुकूमत के निज़ाम की तश्कील। ज़िन्दगी के इन तमाम गोशों में सीरते फ़ारूक़ी और उनके कारनामे हमारे लिए हिदायत हैं, गाईड हैं, रहनुमा (मार्गदर्शक) हैं।

ज़िन्दगी के हर दौर में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हमारे लिए राह दिखाने वाले हैं

मगर चूँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक शरीअ़त वह शरीअ़त है जो क़ियामत तक के तमाम इनसानों के लिए हिदायत का नुस्ख़ा है और क़ियामत तक दावत व तब्लीग़ के ज़रिये अल्लाह तआ़ला इस पाक शरीअ़त के उसूल पर इनसानों को जमा फ़रमाते रहेंगे। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी से इनसानों को क़ियामत तक उसूल मिलेंगे और हम ज़िन्दगी के किसी भी मामले में सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी से बेपरवाह नहीं हो सकते।

फ़ितनों का सैलाब हो, माल व दौलत की बोहतात हो, फ़ुतूहात का दौर-दौरा हो, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी से हमें उसूल मिलेंगे।

और अगर इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार हो, बद-अमनी व बेकसी का माहौल हो, तब भी सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगियों में हमें नजात और कामयाबी के सुनहरे उसूल मिलेंगे।

इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के माहौल में भी सहाबा-ए-किराम का अ़मल हमारे लिए नमूना है

इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार (मतभेद और अशान्ति) का माहौल जो

मुल्क में बेइत्मीनानी और बद-अमनी की फ़िज़ा पैदा कर रहा हो, लेकिन हों दोनों तरफ़ मुख़्लिस। इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करने वाले स्वार्थी न हों और उनके दरमियान कुछ ग़रज़-पसन्दों ने साज़िश के ज़रिये इख़्तिलाफ़ (मतभेद और तकरार) करा दिया हो तो ऐसे वक़्त में उस इख़्तिलाफ़ के दौर में काम करने वाले क्या करें? ये उसूल मिलेंगे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर से सबक़

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मुख़्लिस काम करने वालों के दरमियान स्वार्थियों ने इख़्तिलाफ़ करा दिया था। ये बाग़ी लोग थे जिन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद और झगड़ा) कराया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उन्होंने यूँ कहा कि तुम ख़िलाफ़त छोड़ दो, हम दूसरा ख़लीफ़ा बनाएँगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें समझा रहे थे मगर वे दुनिया के तालिब थे, न माने।

तब मुख़्लिस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से यूँ कहा कि आप हमें इजाज़त दीजिए कि हम बाग़ियों को क़त्ल कर दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे होते हुए किसी मुसलमान का ख़ून बहे, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। अब आपके साथी चुप हो गए।

फिर साथियों ने कहा कि हज़रत! अगर आप उनके क़त्ल का हुक्म नहीं देंगे तो फिर ये आपको क़त्ल कर देंगे। इसलिए आपकी जान बचाने के लिए सिर्फ़ एक रास्ता रह जाता है कि आप ख़िलाफ़त छोड़ दें ताकि आपकी जान बचे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं ख़िलाफ़त नहीं छोड़ सकता। इसलिए कि अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है। और यूँ कहा है कि:

"उस्मान तुमको एक लिबास पहनाया जाएगा और लोग उसे

उतारने का मश्विरा देंगे। और तुम उतरने मत देना। और वह यह ख़िलाफ़त का लिबास है।"

जान को ख़तरे में डालकर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की पैरवी की

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़िलाफ़त को नहीं छोड़ा। यह अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म को पूरा करने के लिए था वरना क़तई तौर पर उनमें ख़िलाफ़त की हवस नहीं थी।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर बाज़ ना-समझ लोगों ने इल्ज़ाम लगाया है कि उनको ओ़हदे की बड़ी हवस थी। मुख़्लिस दोस्तों से मश्विरे पर भी ओ़हदा नहीं छोड़ा। यह ना-समझी की बात है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिल्कुल साफ़ थे। सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात को पूरा किया था।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मुख़्लिस दोस्तों ने कहा कि हज़रत! आप बाग़ियों को क़त्ल करने का हुक्म भी नहीं देते और न ख़िलाफ़त छोड़ते हैं, फिर तो बाग़ी आपको मार देंगे। तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि यह मेरे बस की चीज़ नहीं।

फिर यही हुआ कि बाग़ी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान में आ गए और लोहे का तार लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सर पर मारा। कुरआन सामने रखा हुआ था। ख़ून के छींटे कुरआन पर गिरे जहाँ पर लिखा हुआ थाः

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ

तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह किफ़ायत करेगा।

और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद हो गए। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न''।

तो अपने उद्देश्य हासिल करने के लिए अगर खुद-ग़र्ज़ लोग, मुख़्लिस काम करने वालों में इख़्तिलाफ़ करा दें तब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल चलेंगे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल क्या हैं? संयम से काम लेना। बरदाश्त करना। सब्र करना। लेकिन अल्लाह व रसूल के हुक्मों को न छोड़ना।

गृहयुद्ध के वक़्त में भी

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़रिये मुसलमानों की रहनुमाई

लेकिन ये खुदग़र्ज़ लोग, अगर इख़्लास से काम करने वालों में इतना इख़्तिलाफ़ करा दें कि आपस में लड़ाई ठन जाए तो ऐसे वक़्त में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल चलेंगे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर में खुदग़र्ज़ लोगों ने मुख़्लिस काम करने वालों में लड़ाई करा दी। चुनाँचे दो लड़ाईयाँ हुईं।

एक जंगे जमल, और दूसरी जंगे सिफ़्फ़ीन।

दोनों तरफ़ मुख़्लिस काम करने वाले लेकिन खुदग़र्ज़ों ने उनमें आपस में लड़ाई करा दी। ऐसे वक़्त में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क्या बर्ताव किया? यह बर्ताव बरता कि चाहे सामने लड़ने वाले हैं मगर उनकी मुहब्बत में कोई फ़र्क़ नहीं आया। उनके इक्राम में कोई फ़र्क़ नहीं आया। उनके मिलने-मिलाने में कोई फ़र्क़ नहीं आया।

एक तरफ़ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके साथी हैं और दूसरी तरफ़ खुदग़र्ज़ों ने हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर को कर दिया। एक मजमा उनके साथ, एक मजमा इनके साथ।

और दूसरी में एक तरफ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं और

दूसरी तरफ़ हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। दोनों तरफ़ मुख़्लिसीन का मजमा है। मगर ख़ुदग़र्ज़ों ने घुसकर जंग करा दी।

हज़रत अ़ली रिज़यल्लाहु अ़न्हु का अपने मुख़ालिफ़ों के साथ बर्ताव

जंग के उस ज़माने में भी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का रवैया अपने मुख़ालिफ़ों के साथ क्या था? मैं बताता हूँ।

दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हज़रत अ़ली रिज़यल्लाहु अ़न्हु के साथी ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को शहीद कर दिया तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वह साथी इनाम लेने के लिए हज़रत अ़ली के पास आया।

दोस्तो सुन रहे हो? वह बदबख़्त कह रहा है कि मैंने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जहन्नम में भेज दिया। लेकिन हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने चेहरा फेर लिया। नाराज़ हो गए। डाँटा और यूँ कहा: हज़रत ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) तो जन्नत में हैं और तू जहन्नम में जाएगा। इसलिए कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:

"ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) जन्नती हैं और ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) का क़ातिल जहन्नमी है।"

इसलिए तू ज़रूर जहन्नमी है।

तो देखिए अपने ग्रुप का आदमी है। उसने ग़लत काम किया तो उसके साथी नहीं हैं। यह हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल से मालूम हुआ कि अपने ग्रुप का आदमी है, ग़लत काम किया तो उससे नाराज़ हो गए और बहुत सदमा हुआ।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत पर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सदमा

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद हो चुके हैं। उनका जनाज़ा रखा हुआ है। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु लाश के पास गए और दहाड़ें मार-मारकर रोए। ख़ुश नहीं हुए कि देखो मेरे मुक़ाबले पर लड़ने आए थे मारे गए। नहीं! बल्कि दहाड़ें मार-मारकर रो रहे हैं और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की उंगलियाँ लेकर बोसा दे रहे हैं और कहते हैं कि:

"हाय इस शख़्स ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त के लिए अपनी कितनी उंगलियाँ शहीद करवाईं।"

बहुत रोए और रो-रोकर यूँ कहा कि:

"काश! आज से कई साल पहले मैं मर गया होता तो मुझे यह दिन न देखने पड़ते।"

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का रवैया देखा आपने कि आमने-सामने लड़ने वाले की मौत पर उन्हें किस क़द्र सदमा हुआ। इक्राम में फ़र्क़ नहीं आया। हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की औलाद व रिश्तेदारों के साथ ज़िन्दगी भर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुहब्बत का मामला करते रहे।

नमाज़ अ़ली की अच्छी और खाना तुम्हारा अच्छा है

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में एक दूसरी भी जंग है। हज़रत अ़ली व मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बीच ख़ुदग़र्ज़ लोगों ने लड़ाई करा दी।

इस जंग के वाक़िआ़त में आता है कि एक साहिब हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथी थे लेकिन खाने का वक़्त जब आता तो वह हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दस्तरख़्वान पर नज़र आते।

जंग की सफ़ें लगतीं तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ। नमाज़ की सफ़ लगती तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इसके बारे में इल्म हुआ तो बुलाकर पूछा कि भाई यह क्या? खाना तो हमारे दस्तरख़्वान पर और नमाज़ व लड़ाई में उनके साथ, रहना-सहना उनके साथ।

उसने कहा कि नमाज़ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अच्छी है, हाँ! खाना तुम्हारा अच्छा है। (अल्लाहु अक्बर। अल्लाह उन्हें अपनी रहमतों में ग़र्क़ करे)।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनको इजाज़त दे दी और साथियों से कह दिया कि उसे रोकना मत, दस्तरख़्वान पर खाने के लिए आए तो खाने देना।

रूम के बादशाह को
हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का जवाब

इस जंग के दौरान हज़रत मुआ़विया के पास 'क़ैसरे रूम' (रूम के बादशाह) का दूत आया और कहा कि तुम्हारी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लड़ाई हो रही है। कहो तो मदद के लिए फ़ौज भेज दूँ? हज़रत मुआ़विया ने जवाब दिया कि जाकर कह दो यह हमारी आपस की लड़ाई है, लेकिन अगर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिहाद के लिए लश्कर तैयार करें और यह ऐलान हो कि 'क़ैसरे रूम' पर हमला करेंगे तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लश्कर का सबसे पहला फ़ौजी मुआ़विया (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) होगा।

यह उन लोगों के अन्दर इख़्लास था कि नौबत क़त्ल व क़िताल की है लेकिन इक्राम में और दीन के तक़ाज़े के लिए अपनी अना और सरदारी का ख़्याल तक न हुआ।

यह जिहाद नहीं गृहयुद्ध है, हज़रत अ़ली का ऐलान

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की फ़तह होने पर लोग उनके पास आए और कहा कि जो लोग मुक़ाबिल के शहीद हो गए तो क्या उनकी औ़रतों को हम बाँदी बना लें? उनके लड़कों को हम अपना ग़ुलाम बना लें? मरने वालों के माल को हम आपस में माले ग़नीमत के तौर पर तक़सीम कर लें?

अल्लाह तआ़ला हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपनी रहमतों में ग़र्क़ करे, हज़रत अ़ली खड़े हो गए और ऐलान कर दयाः

"ख़बरदार! यह जिहाद नहीं है, आपस का गृहयुद्ध है। इसलिए जो शहीद हो गए उनकी औ़रतें बिल्कुल आज़ाद हैं। उनके बच्चे बिला शुब्हा आज़ाद हैं। माल उनका कुरआन के मुताबिक़ उनके रिश्तेदारों में तक़सीम होगा।

हज़रत अ़ली के दौर के गृहयुद्ध में मुसलमानों के लिए रहनुमाई

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में आपस की जो ख़ाना-जंगी (गृहयुद्ध) हुई, अगर यह न हुई होती हो क़ियामत तक मुसलमानों के अन्दर आपस की लड़ाईयों में क्या करना होगा? कितना मुश्किल होता। कुरआन पाक के अन्दर एक आयत हैः

وَاِنْ طَآ ئِفَتَيْنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا فَاِنْ بَغَتْ اِحْدٰهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىْ تَبْغِىْ حَتّٰى تَفِىْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ○ (پاره - ٢٦)

अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मिलाप करा दो। फिर अगर चढ़ा चला जाए उनमें से एक दूसरे पर, तो तुम

सब लड़ो उस चढ़ाई वाले से यहाँ तक कि लौट आये वह अल्लाह के हुक्म पर। फिर अगर लौट आया तो मिलाप करा दो उनमें बराबर और इन्साफ़ करो। बेशक अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करते हैं इन्साफ़ करने वालों से।

कुरआन पाक की इन आयतों का मतलब समझना बड़ा मुश्किल होता अगर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर के ये वाकिआ़त न होते।

ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का मकाम

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा गए हैं:

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ٥ (الحديث)

यानी ऐ मुसलमानो! मेरे तरीके़ को मज़बूती से पकड़ लो। क्योंकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो वह दौर आया है जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दौर तक कभी नहीं आया था।

नबी तो और भी पर्दा फ़रमा गए लेकिन नबी के दुनिया से जाने के बाद फिर दूसरे नबी के आने का दुनिया में इन्तिज़ार रहता था। हमारे नबी ऐसे गए कि अब दूसरा नबी नहीं आएगा।

ख़िलाफ़त क्या है?

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस दुनिया से चले जाने के बाद फिर यह उम्मत नबियों वाला काम कैसे करे? इस बात का पता चलेगा ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के दौर से।

ख़िलाफ़त क्या है? नबी की ज़ात के बाद नुबुव्वत वाला काम नबी वाले तरीके़ पर करना।

यह है ख़िलाफ़त, और यह ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के दौर से मालूम होगा।

ख़िलाफ़त के दौर से मिलने वाले राहनुमा सबक़

इजाज़त दीजिए कि मैं अपनी पिछली बात एक बार फिर दोहरा दूँ:

दौरे सिद्दीक़ी हमें बताता है कि चारों तरफ़ से जब फ़ितने खड़े हो जाएँ और दीन मिटना शुरू हो जाए तो काम करने वाले क़ुरबानियों के लिए आगे बढ़ें। चुनाँचे क़ुरबानी में उम्मत को आगे बढ़ाया और अल्लाह ने फ़ितने दूर कर दिये।

दौरे फ़ारूक़ी ने बताया कि जब मुख़्लिस काम करने वालों पर दुनिया हलाल बनकर आ जाए बग़ैर माँगे हुए तो उस वक़्त में सादगी के अन्दर फ़र्क़ न आये और जितना माल हो सके दीन के काम पर लगा दिया जाए। क़ुरआन व हदीस के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ख़र्च किया जाए।

दौरे उस्मानी ने क्या बताया कि दीन के काम करने वालों पर जब मुसीबत आ जाए और ग़रज़-परस्त लोग घुसकर उनमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद और मनमुटाव) करा दें, तो संयम, बरदाशत, और सब्र से काम लिया जाए। लेकिन अल्लाह व रसूल के हुक़ूक़ न छोड़े जाएँ।

और अगर ख़ुदग़र्ज़ लोग इख़्लास वालों में जंग करा दें तो ऐसे मौक़े पर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले उसूल चलेंगे, कि इक्राम व एहतिराम और आपस की मुहब्बत में किसी क़िस्म का कोई फ़र्क़ नहीं आना चाहिए।

यह है ख़िलाफ़ते राशिदा का ख़ुलासा।

क़ियामत तक के लिए उसूल

क़ियामत तक इस उम्मत पर जितने हालात आने वाले हैं, मुल्कों में, ख़ानदानों में, क़ौमों में, घरों में, उन हालात के बारे में अल्लाह का क्या हुक्म है? और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का क्या तरीक़ा है? इसको समझने के लिए

तेईस साल रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाले, ढाई साल सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले, बारह साल हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले, बारह साल हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले और पाँच साल हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ज़माना।

ये तमाम ज़माने क़ियामत तक उम्मत के लिए उसूल रहेंगे। हमारे जितने उलमा और दीन के बड़े दरमियान में गुज़रे, उम्मत पर बहुत-से हालात आए तो उन्होंने क़ुरआन को हाथ में लेकर देखा कि क्या करना है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसों को लेकर देखा कि क्या करना है। और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी को सामने रखकर देखा कि अब हमें क्या करना है। उलमा और बुज़ुर्गों ने ग़ौर करके उम्मत की रहनुमाई (मार्गदर्शन) की है।

सहाबा हमारे लिए नमूना हैं

हमारे लिए तीन चीज़ हैः

एक तरफ़ क़ुरआन, एक तरफ़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसें और एक तरफ़ सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की ज़िन्दगियाँ। क्योंकि क़ुरआन कहता हैः

وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ تَحْتَهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا، ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ٥ (پاره– ١١)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि मुहाजिरीन और अन्सार से अल्लाह राज़ी है। दूसरे उन लोगों से भी राज़ी है जो मुहाजिरीन और अन्सार के पीछे-पीछे इख़्लास से चले।

क़ुरआन पाक की यह आयत बताती है कि क़ियामत तक सहाबा

की ज़िन्दगी हमारे लिए नमूना है।

जन्नत में जाने वाले लोग

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल के अन्दर बहत्तर फ़िर्क़े हुए और मेरी उम्मत के अन्दर तिहत्तर फ़िर्क़े होंगे। बहत्तर तो जहन्नम में जाएँगे और एक फ़िर्क़ा जन्नत के अन्दर जाएगा।

जन्नत के अन्दर जाने वाला फ़िर्क़ा कौन होगा?

مَآاَنَاعَلَيْهِ وَاَصْحَابِىْ

जिस रास्ते पर मैं और मेरे सहाबा हैं, जो इस रास्ते पर चलेगा वह जन्नत में जाएगा। और बाक़ी बहत्तर फ़िर्क़े जहन्नम में जाएँगे।

तो इस हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुआ कि हर सहाबी की ज़िन्दगी क़ियामत तक उम्मत के लिए नमूना है। मालूम हुआ कि क़ियामत तक मुसलमानों के लिए तीन बातें रहनुमा हैं:

एक तरफ़ कुरआन, एक तरफ़ हदीस, एक तरफ़ सहाबा की ज़िन्दगी।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के आपसी झगड़ों का राज़

अब रहा यह कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दरमियान बहुत-सी बातें ऐसी हुईं कि जिनके बारे में उनमें आपसी इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) हुआ। मगर उसके अन्दर अल्लाह की बड़ी मस्लेहत यह भी है कि बाज़ ना-मुनासिब लोगों से दावत का काम दुनिया में लेना है तो किस उसूल से ऐसे ना-मुनासिब लोगों को मुनासिब रास्ते पर लाया जाए। इन इख़्तिलाफ़ात (झगड़ों और विवादों) में ये उसूल पोशीदा हैं और क़ियामत तक यही उसूल चलेंगे।

सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी हमारे सामने हो। कि ना-मुनासिब काम हो जाने के बाद उन्होंने रो-धोकर तौबा की तो अल्लाह ने उन्हें

माफ़ कर दिया। लिहाज़ा हर सहाबी "रज़ियल्लाहु अ़न्हु" हुआ। यानी अल्लाह उनसे राज़ी है।

हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु बादशाहों के लिए नमूना हैं

ख़िलाफ़ते-राशिदा पूरी हुई। उसके बाद हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का दौर आया। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबी हैं। कुफ़्र व शिर्क की हालत में कुछ भी उन्होंने किया लेकिन जब वह मुसलमान हुए तो पिछले सारे गुनाह मिट गए जिनके बारे में अल्लाह तबारक व तआ़ला क़ियामत में नहीं पूछेंगे। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु भी इस उम्मत के वास्ते रहबर हैं। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ज़माना बाद वाले ज़माने में होने वाले बादशाहों के वास्ते नमूना है। बादशाह लोग अपनी बादशाहत का निज़ाम कैसे चलाएँ? हज़रत अमीरे मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनके लिए नमूना हैं।

या अल्लाह! कोई मुझे टोकने वाला नहीं अमीर मुआ़विया का वाक़िआ़

आप हज़रात को एक क़िस्सा सुनाऊँ!

हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक दिन मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुतबा दिया और ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया कि:

"मुसलमानो! बैतुल्माल (इस्लामी सरकारी ख़ज़ाने) में मुसलमानों का जो सबका माल है, हमारा जहाँ जी चाहेगा हम ख़र्च करेंगे। जिसको जी चाहे दें और जिसको चाहें न दें।"

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़ुतबे में यह कहा और सारा मजमा ठंडा था। क्योंकि उनकी ही हुकूमत थी। तीन चार हफ़्ते

हर जुमा को खुतबे में यह बात कही। लेकिन मजमा चुप! फिर एक बार यह खुतबा दिया तो एक बड़े मियाँ खड़े हुए और भरे मजमे में कहा:

"हज़रत! मुसलमानों का जमा हुआ सबका माल बैतुल्माल का है। यह आपका नहीं है। यह मुसलमानों का है। बग़ैर मुसलमानों से मश्विरा किए आपको ख़र्च करने का इख़्तियार नहीं है।"

हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु उन बड़े मियाँ को लेकर घर गए और उसके बाद वाले जुमा को तशरीफ़ लाए और खुतबा दिया और खुतबा देकर फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की एक बात सुनी थी, वह इसके बारे में थी कि कौनसा बादशाह जन्नती है और कौनसा बादशाह जहन्नमी है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह बादशाह जहन्नमी होगा जो सबके इकट्ठे किये हुए माल को चाहे तब्लीग़ के अन्दर हो, चाहे किसी और इदारे में, उसका खाना जायज़ नहीं। जिस तरह यतीम के माल को हर एक के लिए खाना जायज़ नहीं। यतीम का जो कारोबार करेगा अगर वह ज़रूरत-मन्द नहीं है तो वह उसमें से एक पैसा न ले। लेकिन अगर एक आदमी तंगदस्त है और यतीम के कारोबार को संभाल रहा है तो कुरआन ज़रूर इतनी इजाज़त देता है कि अपनी ज़रूरत को पूरा कर ले। जो माल मुश्तरका (सब का) हो उसकी बहुत ही फ़िक्र ज़रूरी है। क़ियामत के दिन उसका हिसाब होगा।

हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने खुतबे में यह कहा कि यह हदीस मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनी, अब मैंने यह बात कहकर देखना चाहा कि मैं जन्नती हूँ या जहन्नमी।

अल्लाह के करम से उम्मीद है कि जन्नत मिलेगी, क्योंकि एक टोकने वाला मिल गया

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब मैंने कई बार खुतबे दिए और सारा मजमा सन्नाटे में रहा। तो मैं सारे दिन दहाड़ें मार-मारकर रोता रहा कि:

"ऐ अल्लाह! तेरे नबी की बात झूठी हो नहीं सकती। मैं एक ग़लत बात पूरे मजमे में कह रहा हूँ, कोई मुझे टोकने वाला नहीं है। इस फ़रमान के मुताबिक़ तो मैं जहन्नमी हूँगा।"

इसलिए मैं रोता रहा लेकिन जिस दिन बड़े मियाँ ने खड़े होकर भरे मजमे में टोका तो मुझे इत्मीनान हुआ और मैं बहुत खुश हुआ कि ऐ अल्लाह! तेरे रहम व करम से उम्मीद है कि जन्नत मिलेगी। क्योंकि एक टोकने वाला मुझे मिल गया।

मौजूदा दौर कौनसा दौर है?

मोहतरम दोस्तो! एक क़िस्सा सुना दूँ!

एक जगह पुराने काम करने वाले अ़रब हज़रात हज़ारों की तायदाद में जमा हुए। हमारा बयान हुआ। मौज़ू (विषय) "खुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर" था। मैंने बहुत मुख़्तसर बयान किया और फिर अ़रबों (अ़रब के रहने वालों) से मैंने पूछा कि बताओ यह कौनसा दौर है? दौरे सिद्दीक़ी है, दौरे फ़ारूक़ी है, या दौरे उस्मानी है, या दौरे अ़लवी?

एक पुराने अ़रब खड़े हुए। उन्होंने कहा कि यह दौरे फ़ारूक़ी दिखाई देता है। मैंने कहा क्यों? उन्होंने कहा कि इस वजह से कि दीन का जो भी काम करने वाले हैं, उनके पास आज माल अच्छा-ख़ासा आ गया है।

दौरे फ़ारूक़ी माल आने से नहीं बनता

मैंने अ़र्ज़ किया कि दौरे फ़ारूक़ी सिर्फ़ माल आने से नहीं बनता। दौरे फ़ारूक़ी बनता है दौरे सिद्दीक़ी की कुरबानियों के नतीजे में। तो दौरे सिद्दीक़ी यह जड़ का दौर है। उसके अन्दर ख़ूब कुरबानियाँ हैं।

दौरे सिद्दीक़ी में ईमान में ताक़त पैदा की गई। दौरे सिद्दीक़ी में अख़्लाक़ में ख़ूब मज़बूती पैदा की गई। जिससे दीन का पेड़ ख़ूब निखरा। इसलिए दौरे नबवी और दौरे सिद्दीक़ी जड़ का दौर है और दौरे फ़ारूक़ी फल का दौर है। दौरे फ़ारूक़ी आता है दौरे सिद्दीक़ी के नतीजे में। ख़ाली माल आने से दौरे फ़ारूक़ी नहीं बनता।

दौरे फ़ारूक़ी कब बनता है?

दौरे फ़ारूक़ी उस वक़्त बनता है जबकि कुरबानियाँ देकर चारों तरफ़ दीन फैले। और फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला मुख़्लिसीन के क़दमों पर दुनिया हलाल बनाकर डाल दें। दुनिया बग़ैर माँगे आये, हलाल तरीक़े पर आये। तब यह दौरे फ़ारूक़ी है।

ग़ौर करो आजकल माल जितना आ रहा है, कारोबार के रास्ते से या किसी और रास्ते से उसमें अक्सर व बेशतर (ज़्यादातर) हराम मिलेगा। दूसरे से माल माँग, माँगकर जमा किया तो यह दौरे फ़ारूक़ी नहीं।

वहाँ माल माँगा नहीं गया था बग़ैर माँगे हलाल माल आया था। 'क़ैसर' व 'किस्रा' (रूम और ईरान के बादशाहों) के ख़ज़ाने हलाल माल बनकर बग़ैर माँगे हुए मुसलमानों के पास आए।

दीनी मदरसों के चन्दे को हराम कहने का हमारा मुँह नहीं

लेकिन मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! तुम लोग मदरसे वालों पर एतिराज़ मत करना कि ये लोग तो चन्दा माँग-माँगकर मदरसे चला रहे हैं।

चन्दा माँगना अगर हराम होता तो फिर जिन मदरसों में हम लोगों ने पढ़ा और बड़े-बड़े उलमा जो कुरआन व हदीस से वाक़िफ़ हैं, जब उन्होंने चन्दे को हलाल कहा है तो चन्दे को हराम कहना यह हमारा-तुम्हारा मुँह नहीं होना चाहिए।

لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ (پاره-٢٨)

जिस चीज़ को अल्लाह ने हलाल कर दिया है उसे तुम क्यों हराम करते हो।

यह उनके उसूल हैं। इन उसूलों पर वे अ़मल करते हैं। कैसा माँगना हलाल है और कैसा माँगना हराम है। उलमा यह चीज़ अच्छी तरह जानते हैं। इसपर हमें बिल्कुल एतिराज़ नहीं करना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि आदमी की जान बचाने के लिए मुर्दार खाना जायज़ हो जाता है। इसलिए इन मसाइल के अन्दर हमें बिल्कुल बोलना नहीं है।

मना किये हुए तरीक़े पर माल आया तो 'दौरे क़ारूनी' है

लेकिन दौरे फ़ारूक़ी उस वक़्त बनता है जबकि हलाल माल आए और बग़ैर माँगे आए। यानी ऐसे माँगे बग़ैर जिससे शरीअ़त ने मना किया है। फिर तो यह दौरे फ़ारूक़ी है। और अगर शरीअ़त के मना किए हुए तरीक़े पर माँगकर आया या हराम का आया तो फिर दौरे फ़ारूक़ी नहीं बनेगा बल्कि यह 'दौरे क़ारूनी' बनेगा।

वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे फ़ारूक़ी बन सकता है

इस 'दौरे क़ारूनी' के लिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम वाली बेचैनी और बेक़रारी काम आएगी।

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! अगर दीन के काम करने वालों के

पास माल आया तो हमें हक़ नहीं है कि हम सब के बारे में यह कह दें कि यह दौरे क़ारूनी है। क्योंकि कुछ चीज़ें हर जगह अलग और क़ायदे से बाहर भी होती हैं। बहुत-से ऐसे भी हैं कि जिनके पास माल आया और बग़ैर माँगे आया और हलाल का आया तो उनके लिए हम दौरे क़ारूनी नहीं कह सकते। उनके लिए दौरे फ़ारूक़ी बन सकता है।

आ़म तौर से जो दिखाई देता है तो यही है कि माल ह़राम तरीक़े से आता है या माँगने से आता है, लेकिन अगर कहीं ऐसा नहीं तो फिर वहाँ दौरे फ़ारूक़ी है।

मौजूदा दौर दौरे उस्मानी नहीं बन सकता

जब मैंने यह बात कही तो वह अ़रब साहिब जिन्होंने दौरे फ़ारूक़ी बताया था बैठ गए। तब एक दूसरे अ़रब साहिब खड़े हुए और कहने लगे कि यह दौरे उस्मानी है!

मैंने कहा क्यों? उन्होंने कहा इसलिए कि आजकल दीन का काम करने वालों में बहुत इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) है। मैंने कहा दौरे उस्मानी उस वक़्त बनता है जब दोनों तरफ़ मुख़्लिसीन हों और उनमें इख़्तिलाफ़ कराने वाले ग़रज़-परस्त और दुनिया हासिल करने वाले हों, तब तो दौरे उस्मानी बनेगा। लेकिन अगर दोनों तरफ़ ख़ुदग़र्ज़ हों, दोनों तरफ़ दुनिया के तालिब हों, दोनों तरफ़ माल की तलब रखने वाले हों तो फिर यह दौरे उस्मानी नहीं बनेगा। क्योंकि दोनों तरफ़ ग़र्ज़ वाले थे, उनमें इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) हुआ। तो यह तो दौरे शैतानी बना और इसमें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम वाले आँसू काम आएँगे।

वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे शैतानी नहीं बन सकता

ज़्यादातर जगह दीन का काम करने वालों में जब इख़्तिलाफ़ होता

है तो आ़म तौर से दोनों तरफ़ ग़र्ज़ी लोग होते हैं।

लेकिन अगर कहीं पर दोनों तरफ़ इख़्लास वाले हों और दुनिया के तालिब लोगों ने इख़्तिलाफ़ करा दिया हो तो वहाँ दौरे उस्मानी बनेगा। कुछ चीज़ें हर जगह मजमूई हुक्म से अलग और बाहर होती हैं। हमें इल्ज़ाम नहीं लगाना चाहिए कि जहाँ इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) है उसको दौरे शैतानी कहना शुरू कर दें। हमें यह हक़ नहीं।

दौरे अ़लवी कब बनता है?

जब मैंने यह बात कही तो सारे अ़रब चुप, कि हमारी ज़बान पर यह भी नहीं आ रहा कि यह दौरे अ़लवी है। दौरे उस्मानी नहीं फिर दौरे अ़लवी क्यों नहीं? हर जगह मुसलमान आपस में लश्कर-बन्द होकर लड़ रहे हैं मगर फिर भी हमें हिम्मत नहीं कि कहें कि यह दौरे अ़लवी है।

क्योंकि यह दौर दौरे अ़लवी उस वक़्त बनेगा जब दोनों तरफ़ लड़ने वाले मुख़्लिसीन हों, यहाँ तो पूरी दुनिया में जितनी लड़ाईयाँ चल रही हैं वे तो मुल्क व माल के लिए चल रही हैं।

दूसरों के बारे में अच्छा गुमान, अपने बारे में चिन्तित

लेकिन एक बात खुलकर अ़र्ज़ कर दूँ कि पूरे आ़लम के अन्दर मुसलमानों की आपस की जितनी लड़ाईयाँ हैं, उन सबके बारे में हमें हक़ नहीं पहुँचता कि कह सकें कि ये अपनी ग़र्ज़ों के लिए लड़े। अगर कहीं कोई लड़ाई अल्लाह के दीन के लिए हो रही हो तो वहाँ दौरे अ़लवी बन सकता है। हक़ और दीन ज़िन्दा हो जाए अगर मुसलमान कहीं इसके लिए लड़ रहे हों तो यह दौरे अ़लवी बन जाएगा, उस जगह के लिए।

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! बात बहुत इशारों के साथ हो रही है। समझदार लोग समझ जाएँ और जिनकी समझ में न आए वे

समझने की कोशिश भी न करें।

देखिए हरगिज़-हरगिज़ किसी इदारे में दीन का काम करने वालों पर किसी तरह का इल्ज़ाम लगाने का हमें हक़ नहीं, हम अपना काम कर रहे हैं। हर आदमी अपनी फ़िक्र करे। दूसरे के बारे में अच्छा गुमान और अपने बारे में फ़िक्रमन्द (चिन्तित) हो तो यह आदमी बहुत तरक़्क़ी करेगा।

यह फ़ितनों का दौर है

फिर अ़रबों (अ़रब के रहने वालों) ने पूछा कि मौलवी साहिब! आप बता दीजिए। मैंने कहा कि आ़म तौर से पूरे आ़लम के जो हालात हैं उसमें इस वक़्त हर जगह फ़ितना है। झूठी नुबुव्वत के दावे हैं। और बाज़े ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हमारे लिए बस क़ुरआन है ये हदीस को नहीं मानते। बाज़े ऐसे हैं कि जो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मुहब्बत में इतने आगे बढ़ गए कि हद से ज़्यादा। बाज़ ऐसे हैं कि हमारे हाथों में हुकूमत आएगी तो दीन चलेगा। और हम कहते हैं कि हिक्मत होगी तो दीन चलेगा।

ईमान में ताक़त पैदा करो

हम ख़्वाह-मख़्वाह हुकूमत वालों से कहें कि तुम नीचे को आओ हम तुम्हारी जगह पर आएँगे और इस्लाम को पूरी दुनिया में चलाएँगे। तो यह पूरी दुनिया से लड़ाई का मोल लेना है। और अगर हम यह कह दें ऐ हुकूमत वालो! और ऐ बड़े-बड़े ताजिरो! माल तुम्हारे हाथ में रहे! ऐ जागीरदारो! ज़मीन तुम्हारे हाथ में रहे! ऐ ओ़हदेदारो! ओ़हदा तुम्हारे हाथ में रहे! हम एक कौड़ी तुमसे नहीं ले रहे हैं। हम सिर्फ़ तुम से यह कहते हैं कि तुम अपने अन्दर ईमान में ताक़त पैदा करो और अल्लाह की बड़ाई दिलों में पैदा करो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए पाक तरीक़े के अन्दर लोगों का यक़ीन

पैदा करो। पाक कलिमे वाला यक़ीन लोगों के दिलों में पैदा करो और नमाज़ 'ख़ुशू व ख़ुज़ू' (पूरे ध्यान और आजिज़ी) वाली सीखो। और पूरी ज़िन्दगी के अन्दर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े का इल्म लेकर उसके तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो।

जो भी करो क़ियामत के ध्यान के साथ करो

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह पाक का ज़िक्र इतना करो कि हर वक़्त अल्लाह का ध्यान जमा रहे। आख़िरत की फ़िक्र रहे। इसलिए कि क़ियामत के दिन तुम्हें अल्लाह के सामने जाना है। और दुनिया के अन्दर हम जो कुछ कर रहे हैं वह सब का सब बाक़ायदा लिखा जा रहा है। चाहे भला हो या बुरा। और सारे का सारा क़ियामत के दिन हर एक के सामने खुलकर आ जायेगा। और अल्लाह पाक फ़रमायेगा कि अपना रजिस्टर तुम देख लो। अपना हिसाब तुम कर लो। इसलिए क़ियामत के ध्यान और ख़्याल के साथ ताजिर अपनी तिजारत चलाए। खेती करने वाला खेती करे। हुकूमत चलाने वाला हुकूमत चलाए। विज्ञान वाले वैज्ञानिक तरक़्क़ियाँ करें।

लेकिन अल्लाह की बड़ाई हमारे दिलों में हो, हम हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन हाथ से छूटने न दें। और हर वक़्त आख़िरत का ध्यान हो।

अल्लाह पाक फ़रमाते हैं।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طَآئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتَابًا یَّلْقٰهُ
مَنْشُوْرًاo اِقْرَاْ كِتَابَكَ، كَفٰی بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًاo (پارہ– ۱۵)

हर इनसान भला या बुरा जो कुछ कर रहा है वह उसके गले का हार है और लिखने वाले लिख रहे हैं। और वह रजिस्टर हर आदमी के सामने रख दिया जाएगा। और कह दिया जाएगा कि अपना रजिस्टर ख़ुद पढ़ ले। अपना हिसाब तू ख़ुद कर।

यह बड़ी दर्द भरी आयत है। जब आदमी अपना रजिस्टर देखेगा तो तन्हाईयों के अन्दर जो काम किए होंगे और तन्हाईयों के अन्दर जो बातें की होंगी वे सारी की सारी उसके अन्दर लिखी हुई मिलेंगी। इसलिए कि अल्लाह के इल्म से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं। वह सब के सब फ़रिश्ते लिखते हैं।

क़ियामत के दिन जब वह नामा-ए-आमाल यानी रजिस्टर सामने आएगा तो इनसान हैरान रह जाएगा और यूँ कहेगाः

مَالِ هٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصَاهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا o (پاره-١٥)

"क्या हो गया इस रजिस्टर को, छोटी और बड़ी कोई चीज़ नहीं छोड़ी और हर कोई अ़मल जो दुनिया में किया था वह सब इसके अन्दर आ गया।"

आख़िरत आमाल के बदले की जगह है

दुनिया में जितने भी अ़मल हम करते हैं, भले अ़मल करते हैं तो जन्नत में हूरों, बाग़ों, नहरों और महलों की शक्ल में बदल जाएँगे, और बुरे आमाल ज़न्जीरों हथकड़ियों, बेड़ियों और साँप-बिच्छू की शक्ल इख़्तियार कर लेंगे। अल्लाह पाक और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें इसकी ख़बर दे रहे हैं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ

"सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर" हमने इन कलिमात को ज़बान से अदा किया और जन्नत के अन्दर पेड़ लग गए। ज़कात अदा नहीं की तो बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया। ज़कात अदा नहीं की तो सोने-चाँदी के पतरे बनाकर क़ियामत के दिन दाग़ा जाएगा। और अगर हम कोई अच्छा अ़मल करेंगे तो वह किसी नेमत की शक्ल क़ियामत के दिन इख़्तियार करेगा।

अल्लाह के ख़ज़ाने तो देख....

इसकी मिसाल दुनिया में लीजिए! जैसे:

एक गुठली है आम की। मामूली सी। उसको आपने ज़मीन के अन्दर डाला, पानी से सींचा, तो उसके अन्दर से पूरा पेड़ निकल आया और सैकड़ों फल आ गए। उन सैकड़ों आमों में से हर एक के अन्दर एक गुठली और हर एक में सैकड़ों आम। तो इस तरह सदियों तक करोड़ों आम बनेंगे जो सिर्फ़ एक गुठली के अन्दर छुपे हुए हैं और उन्हें अल्लाह पाक ने निकाला है।

इसी तरह मर्द और औ़रत जब मिलते हैं तो 'मनी' (वीर्य) के दो क़तरे जमा होने से बच्चा पैदा हुआ। अब बच्चा बड़ा हुआ तो उसके दस बच्चे हुए। फिर उन दस बच्चों में से हर एक के पाँच-पाँच लड़के हुए। इस तरह सैकड़ों साल तक लाखों इनसान तैयार होंगे। और वे छुपे हुए थे 'मनी' के दो क़तरों में। अल्लाह पाक कह रहे हैं कि इस पर ग़ौर करो। मेरी कुदरत तो देख कितनी बड़ी है। मेरे ख़ज़ाने तो देख कितने बड़े हैं।

ख़ुदा की नेमतों का भंडार ख़त्म नहीं होता

दुनिया में इस वक़्त रोज़ाना तीन लाख बच्चे पैदा हो रहे हैं। हर बच्चे के दो-दो आँखें हैं। इस तरह अल्लाह के ख़ज़ाने से हर रोज़ छह-छह लाख आँखें सप्लाई हो रही हैं। और इतने ही कान, इतने ही हाथ, लेकिन अल्लाह ने कभी ऐलान नहीं किया कि आँखों का स्टॉक ख़त्म हो गया। इसलिए कि अल्लाह के ख़ज़ाने बेशुमार हैं।

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَ نَاخَزَآئِنُهٗ وَمَانُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٥ (پاره– ١٤)

हर चीज़ के बेशुमार ख़ज़ाने हमारे पास मौजूद हैं। लेकिन उसम से जो चीज़ हम उतारते हैं वह तरतीब के साथ उतारते हैं।

दीन में आगे बढ़ने वालों की फ़ज़ीलत

वे लोग जो दीन के काम में आगे बढ़ने वाले हैं, जिनके हाथों दूसरे भी दीन से लगते हैं, उनकी अल्लाह तआला ने बड़ी फ़ज़ीलत (बड़ाई और ख़ुसूसियत) बताई है।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

وَالسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ اُولٰٓئِکَ الْمُقَرَّبُوْنَ (پارہ– ٢٧)

यानी दीन के काम में आगे आने वाले क़ियामत के दिन अल्लाह के क़रीब होंगे।

فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ٥ (پارہ– ٢٧)

नेमतों वाले बाग़ीचों में होंगे।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَقَلِیْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ٥ (پارہ– ٢٧)

पहले ज़माने में ज़्यादा होते थे और बाद में थोड़े-थोड़े हो जाएँगे।

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّکِئِیْنَ عَلَیْهَا مُتَقَابِلِیْنَ ٥ (پارہ– ٢٧)

सोने के तारों में जुड़े हुए तख़्तों पर तकिए लगाकर ये जन्नती आमने-सामने बैठे होंगे।

یَطُوْفُوْنَ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ٥ (پارہ– ٢٧)

छोटी उम्र के ख़िदमत गुज़ार (सेवक) चक्कर लगा रहे होंगे। खाने-पीने की चीज़ें लेकर।

بِاَکْوَابٍ وَّاَبَارِیْقَ وَکَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ٥ (پارہ– ٢٧)

कप, गिलास, प्याले शराब से भरे होंगे। शराब गन्दी नहीं होगी। जिसे लेकर फिर रहे होंगे। ये बरतन प्याले ऐसे होंगे जिनसे शराब झलक भी रही होगी और छलक भी रही होगी। यानी देखने में पुर-तकल्लुफ़ होंगे।

لَا یُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا یُنْزِفُوْنَ ٥ (پارہ– ٢٧)

शराब ऐसी होगी कि उस शराब के पीने के बाद सड़क पर चक्कर नहीं लगाएँगे और न मुँह से बकवास करेंगे।

और खाने में क्या मिलेगा?

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ٥ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٥ (پاره- ٢٧)

जौनसे मेवे तू चाहे पसन्द करे, और जौनसे परिन्दे का गोश्त तू चाहे पसन्द करे।

एक ज़रूरत इनसान की बीवी की भी है, वह भी अल्लाह पाक मुहैया फ़रमाएँगेः

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ٥ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ٥ (پاره- ٢٧)

और बहुत ही ख़ूबसूरत बीवियाँ जैसे छुपे हुए मोती हों, अल्लाह पाक इनायत फ़रमाएँगे।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ये कहाँ से मिलेंगी?

جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (پاره- ٢٧)

दुनिया में जो अ़मल करोगे वही अ़मल वहाँ यह शक्ल इख़्तियार करेगा।

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا .(پاره- ١٥)

जो कुछ भी अ़मल किया वह हाज़िर हो गया और नेमतें बन गईं।

आगे इरशाद हैः

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ٥ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ٥ (پاره -٢٧)

किसी क़िस्म की बेहूदा बात जन्नत के अन्दर सुनने में नहीं आएगी। बस हर तरफ़ एक ही आवाज़ होगी "सलामन् सलामन्" यानी आपस में सलाम करेंगे। फ़रिश्ते आकर सलाम करेंगे। और जब अल्लाह की मुलाक़ात होगी तो अल्लाह तबारक व तआला कहेंगेः

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْجَنَّةِ (الحديث)

قَوْلاً مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ٥

ऐ जन्नत वालो तुम पर सलामती हो। यह जब अल्लाह से मुलाक़ात होगी, अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाएँगे।

मुज्रिमों के साथ ख़ुदा का मामला

मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह तआ़ला इनामात का मामला जिनके साथ करेंगे उनका यह ज़िक्र था। जिन्होंने भले अ़मल किए। सही रास्ते पर चले, दावत वाली फ़िज़ा जिन्होंने बनाई। बहुत-से लोगों को लेकर चले और ख़ुद भी चले, यह उनका ज़िक्र था।

लेकिन अगर ख़ुदा को नाराज़ करने वाले रास्ते पर चले। उस रास्ते पर चले जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दारों का है। उस रास्ते पर चले जो गुमराह लोगों का है, तो क़ियामत के दिन कह दिया जाएगाः

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥ (پارہ– ۲۳)

अलग हो जाओ ऐ जुर्म करने वालो!

ऐ मुज्रिमो! अब तुम भलों के साथ मत रहो। दुनिया में भले-बुरे साथ रहे, तो रहे। अब ऐ मुज्रिमो! तुम अलग हो जाओ। फिर जो मुज्रिम हैं उनके लिए हैरत में डालने वाली सज़ाएँ मुसल्लत होंगी। बहुत परेशान होंगे। अल्लाह पाक हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारी भी। आमीन।

इसकी ज़रूरत है कि सलाहियत वाले लोगों में दीन आ जाए

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं जो अ़र्ज़ कर रहा था वह यह कि हम किसी से कहें कि भाई तू हुकूमत छोड़ दे, हम हुकूमत चलाएँगे। इस्लाम का क़ानून चलाएँगे। इसकी ज़रूरत नहीं।

इसके बजाए हम हुकूमत वाले से, जागीरदारों से भी और मज़दूरों

से भी जाकर कहें किः

तुम्हारी हुकूमत तुम्हें मुबारक! तुम्हारा माल तुम्हें मुबारक! तुम एक अल्लाह की बड़ाई अपने दिल के अन्दर पैदा कर लो और नमाज़ें जानदार पढ़नी शुरू कर दो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े का इल्म हासिल करो। अल्लाह का ज़िक्र करके अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करो। क़ियामत का ध्यान और फ़िक्र करो और दूसरों के साथ मामलात अच्छे रखो और हर काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए करो। दावत के काम को अपना काम बनाओ और तुम अपनी हुकूमतों में रहो।

कितना ही बड़ा दीनदार हो, उसको अगर हुकूमत दे दी जाए तो हुकूमत का चलाना कोई आसान काम नहीं है। हुकूमत का चलाना बड़े-बड़े ओ़हदों का डील करना यह सलाहियत वालों का काम होता है, बस उन सलाहियत वाले लोगों के अन्दर दीन आ जाये। अगर यह काम आप हज़रात ने पूरे आ़लम के अन्दर किया इस तरीक़े पर जो तरीक़ा आपको बताया गया है तो एक तरफ़ अल्लाह तआ़ला से जोड़ पैदा होगा और एक तरफ़ इनसानों का आपस में जोड़ होगा।

एकता और संगठन पैदा करने का तरीक़ा

इज्तिमाईयत (एकता और संगठन) पैदा करने का तरीक़ा यह है कि हर आदमी दूसरे को नफ़ा पहुँचाए। दूसरे से नफ़ा लेने की फ़िक्र न करे। अल्लाह से लेना और बन्दों को देना, इससे एकता और इत्तिहाद पैदा होता है। अल्लाह से लेने का नाम इबादत है, और बन्दों को देने का नाम ख़िलाफ़त है। यानी एक हाथ फैला रहे अल्लाह से लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला रहे बन्दों की तरफ़, देने के लिए।

हम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से बेपरवाह नहीं हो सकते

अहले-बातिल (गुमराह और ग़ैर-हक़ वालों) में जो लोग समझ-बूझ वाले हैं वे उम्मत को सहाबा से दूर करने की चाल चलते हैं, हालाँकि ज़बान पर इस्लाम और कुरआन का नाम होता है।

वे सारे वाक़िआ़त जो मैंने ज़िक्र किए तथा इनके अ़लावा बहुत से वाक़िआ़त हैं जिन्हें ये लोगों को जमा करके सुनाते हैं।

कहते हैं कि ये जिस तरह आपस में लड़ते रहे और जिसने ज़िना भी किया हो, शराब भी पी हो, वग़ैरह वग़ैरह, क्या ये लोग हमको कुरआन सिखाएँगे। हम तो कुरआन को बिना किसी वास्ते के ख़ुद समझेंगे।

कुरआन को जितना सहाबा ने समझा है बाद वाले उसे उतना नहीं समझेंगे। क्योंकि उनके सामने कुरआन उतरा, कुरआन नाज़िल होने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो बात इरशाद फ़रमाई वह उन्होंने अपने कानों से सुनी है। इसलिए उनकी बात जितनी सही है बाद वाले अगर महज़ कुरआन को सामने रखकर समझेंगे तो यह बात बिल्कुल सही नहीं होगी। बात सही उनकी ही होगी जिन्होंने बिना वास्ते के (अप्रत्यक्ष रूप से) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात सुनी होगी।

जिसने सुना उसने समझा

इसकी मिसाल मैं दे दूँ कि जैसे एक शख़्स ने अपने पहरेदार को कहलवाया कि ऐ फ़लाँ! मोटर आ रही है, **उसे रोको, मत जाने दो**।

उस मुलाज़िम (नौकर) ने जिससे हाकिम ने कहा, दूसरे से कहा। दूसरे ने तीसरे से और फिर उसने असल ज़िम्मेदार के पास पर्चा लिख दिया कि **मोटर को रोको, मत जाने दो**।

पर्चा जिसको मिला वह "रोको" के बजाए "मत" पर रुका। और मामले को बिल्कुल उल्टा कर दिया।

तो जिसने सुना, उसने समझा **रोको, मत जाने दो**। उसने समझा "**रोको मत, जाने दो**"। तो देखो! पन्द्रह लोगों के वास्ते से बात पहुँची तो लफ़्ज़ वही रहा मायने बदल गये।

जुमला एक, मायने अलग-अलग

एक आदमी दस्तरख़्वान पर बैठा हुआ है और कह रहा है "पानी लाओ" तो उसका मतलब क्या है कि "गिलास में लाओ।"

एक आदमी ग़ुसलख़ाने (बाथरूम) में जाते वक़्त कह रहा है "पानी लाओ!" तो उसका मतलब है "बालटी में लाओ।" एक आदमी बैतुल्ख़ला (शौचालय) में जाते वक़्त कहे कि पानी लाओ"। तो उसका मतलब है "लोटे में लाओ"। एक आदमी दम करने के लिए कह रहा है "पानी लाओ!" तो उसका मतलब होगा कि शीशी में लाओ। तो जुमला एक ही है। मगर मायने अलग-अलग हो गए। यह कौन समझेगा? वही जिसने सुना। तो सहाबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात को जितना समझेंगे उनके अ़लावा कोई नहीं समझ सकता।

यह उनकी चाल है कि सहाबा से इनको काटो। इस क़िस्म के वाक़िआत बयान करो और डायरेक्ट कुरआन को समझो। मैंने ये सारे वाक़िआत तफ़सीली क्यों बताए? इसलिए कि सहाबा की ज़िन्दगी से क़ियामत तक उसूल इस उम्मत को मिलेंगे। इसलिए बताए गए ताकि उनकी इत्तिबा (पैरवी) के ज़रिये कामयाबी क़द चूमे। सहाबा से हम बेपरवाह नहीं हो सकते।

शैतान की बड़ी चाल

देखो! कुरआन पाक की खुली हुई आयतें हमारे सामने हैं। मगर एक आदमी डायरेक्ट कुरआन को समझने वाला तारीख़ की किताब

"इब्नुल असीर" को सामने रखकर कुरआन की आयतों का मुक़ाबला कर रहा है।

यह शख़्स डिब्बे के अन्दर से सुअर का गोश्त निकाल-निकाल कर खा रहा है। हमारे साथी ने कहा "भाई यह तो हराम है। यह तो सुअर का गोश्त है।" यह नाराज़ हो गया और कहा कि तुम 'हिदाया' (एक किताब का नाम है) के सिवा कुछ जानते ही नहीं। कुरआन को तुम लोग जानते ही नहीं। यह तो कुरआन में है।

मेरे साथी ने कहा "अरे कुरआन में सुअर का गोश्त हलाल है? उसने कहा हाँ! और कुरआन की यह आयत पढ़ी:

وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ (پاره-٦)

"यानी अहले किताब (यहूदियों व ईसाइयों) का खाना तुम्हारे लिए हलाल और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है।

तो देखो डायरेक्ट कुरआन समझने वाला सुअर खा रहा है या नहीं खा रहा है?

हमारा भाई समझदार था। उसने कहा कुरआन की दूसरी आयत खुल्लम-खुल्ला हराम क़रार दे रही है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ (پاره- ٦)

"यानी मुर्दार, ख़ून और सुअर का गोश्त हराम है।"

इसपर डायरेक्ट कुरआन समझने वाला क्या कहता है, कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने का ख़िन्ज़ीर (सुअर) हराम है जो गन्दगी खाता था, आजके ज़माने का ख़िन्ज़ीर अच्छी ग़िज़ा खाता है इसलिए हलाल है।

देखो! यह कितनी बड़ी शैतान और अहले-बातिल की चाल है कि हलाल व हराम का महकमा अपने हाथ में है।

तमाम सहाबा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयत का जो मतलब बताया वह यह है कि अहले-किताब यहूदी

व ईसाई का ज़िबह किया हुआ चन्द शर्तों के साथ हलाल है। हमने तो यह समझा। और यह कुरआन को सामने रखकर एक घन्टे के लिए जमा होने वाले कुरआन की आयतें पढ़कर कहेंगे कि वकील साहिब अपनी राय बताईए। डॉक्टर साहिब अपनी राय बताईए। यह रोने की चीज़ें हैं रोने की चीज़ें।

हमें कोई ग़म नहीं

मोहतरम दोस्तो! दावत का काम हम लोगों ने छोड़ दिया तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक दीन दुनिया से ख़त्म होकर दुनिया के करोड़ों इनसान जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं और हमारे दिलों को सदमा नहीं, हमारे दिलों के अन्दर दर्द व ग़म नहीं।

अगर बीवी को कैंसर की बीमारी लग गई और वह चारपाई पर तड़प रही हो, डॉक्टर ने कह दिया है कि अब बचेगी नहीं, तो कितना सदमा होता है कि दो जवान बेटियों की शादी का क्या होगा, और छोटे-छोटे बच्चे जो दूध माँग रहे हैं, ये बच्चे कह रहे होंगे कि माँ! माँ! दूध तो ला। मेरी माँ कहाँ गई। इस हालत में बच्चों को देखकर कितना रोना आता है।

मेरो दोस्तो! कहने की बात यह है कि बीवी की जुदाई पर जितना आज ग़म है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ दावत का काम उम्मत ने छोड़ा, इसकी वजह से आज करोड़ों-करोड़ों इनसान बग़ैर कलिमे के जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं और इसका हमारे दिलों के अन्दर कोई ग़म नहीं है। न कोई इसका दर्द है, न बेचैनी है, न बेक़रारी है। हमारी रातों की नींदें उड़ जानी चाहिएँ कि या अल्लाह! यह क्या हो रहा है?

चार-चार महीने जमाअ़तों के अन्दर फिरकर और अपने मक़ाम पर रहकर, मस्जिदवार जमाअ़त बनाकर गश्तों में, तालीमों में, घर वालों के साथ ज़ेहन बनाने में, लोगों के दर-दर घर-घर जाकर ठोकर

खाने में और उनकी कड़वी-कसेली सुनना और बरदाश्त करना, जो तकलीफ़ आए उसे बरदाश्त करना और अल्लाह तआ़ला से रातों को उठ-उठकर दुआ़एँ माँगना कि ऐ अल्लाह! तेरे हाथ में है कि तू इनसानी दुनिया में हिदायत की हवाएँ चला दे।

इस तरीक़े से चारों तरफ़ रातों को रोने वाले और चारों तरफ़ दिन को ख़ुशामद करने वाले और हर तरह की तकलीफ़ें बरदाश्त करने वाले, अगर वजूद में आ गए तो मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह पाक ख़ुश हो जाएँगे। और जब अल्लाह फ़ैसला कर देंगे तो अल्लाह पाक बड़े क़ादिरे-मुतलक़ हैं, क्या अ़जब है कि कोने के कोने और मुल्क के मुल्क ईमान की तरफ़ आने शुरू हो जाएँ। और मस्जिदें आबाद होनी शुरू हो जाएँ। और बड़े-बड़े दीन के दाई (दावत देने वाले) तैयार हो जाएँ। और चारों तरफ़ दीन की दावत की फ़िज़ा तैयार हो जाए। जैसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दौर के अन्दर कितनी मुख़ालफ़त करने वाले थे लेकिन कैसे रातों को रोने वाले बन गए। और उनके अन्दर कैसा उम्मत का दर्द बस गया। आज के हालात में हमें कामयाबी उनके रास्ते पर चलने से ही मिलेगी।

उनके तौर-तरीक़ों को ज़िन्दगियों में राईज करने पर ही मिलेगी।

अल्लाह पाक हमें और तुम्हें इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(आमीन)

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

दावत व तब्लीग़

जिल्द 2

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह. की

तब्लीग़ी तक़रीरें

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई देहली-110002

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	दावत व तब्लीग़ (2)
तक़रीरें	मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह.
मुरत्तिब	मौलाना शफ़ीक़ अहमद क़ासमी
	व मौलाना अज़्फ़र जमाल क़ासमी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	दिसम्बर 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स
	मुज़फ़्फ़र नगर 0131-2442408

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली -110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

विषय सूची

****

तक़रीर (1)

यह तक़रीर 22 अक्तूबर 1995 को तब्लीग़ी इज्तिमा ईदगाह देहली में की गई।

मुल्क शाम में मस्जिद के उद्घाटन के मौक़े पर हमने इस तरह की बातें कहीं और फिर उनसे कहा कि देखो! हमारी जमाअ़तें तुम्हारे मुल्कों में आयेंगी तो जमाअ़तों के बारे में तुम पब्लिक से कह दो कि ये भले लोग हैं, इनका साथ दो।

और हमारी जमाअ़त की पहचान और निशानी ये होंगी कि यह जमाअ़त अपना ख़र्च करके आयेगी। पैसा नहीं माँगेगी। कन्धे पर बिस्तर उठाएगी। मस्जिदों के अन्दर ठहरेगी। ये लोग अपना खाना पका कर खाएँगे। और लोगों के घरों पर जाकर कोशिश करके उन्हें मस्जिदों में लाएँगे। उनको नमाज़ सिखाएँगे। दीन सिखाएँगे। उनकी जमाअ़त बनाकर बाहर निकालेंगे। और चार महीने की तश्कील करेंगे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۔
(پ۹ اعراف ع۳)

وقال اللّٰه تعالٰی:

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ (پ۷ انعام ع۱۱)

अल्लाह तबारक व तआला ने इनसान को तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर बनाया। लेकिन दोस्तो! यह उस वक़्त होगा जबकि वह अपनी ज़िन्दगी अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर गुज़ारे।

जानवर से भी ज़्यादा बद्तरीन

और अगर यह मेहनत अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर न अन्जाम दे बल्कि दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों पर ही मुकम्मल भरोसा कर ले, तब यह इनसान 'अशरफुल मख़्लूक़ात' (तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर) नहीं रहता। बल्कि जानवर से भी बदतर (बुरा) बन जाता है।

'अशरफुल मख़्लूक़ात' (तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर) होने के मायने यह

हैं कि इसके अन्दर अल्लाह पाक ने सलाहियत और योग्यता रख दी है सारी मख़्लूक़ से बेहतर होने की, लेकिन शर्त यह है कि वह उसके ऊपर मेहनत करे।

जन्नत किसकी?

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसान के बनने का भी रास्ता बताया और यह भी बता दिया कि इनसान कैसे बिगड़ता है। इनसान के बिगड़ने पर दुनिया में क्या मामला होगा और आख़िरत में क्या सज़ा है। बनने पर दुनिया में कैसी रहमतें नाज़िल होती हैं और आख़िरत में क्या जज़ा (बदला और इनाम) है।

लेकिन जो बात अल्लाह ने बताई है वह ग़ैब के अन्दर है। आख़िरत में ज़ाहिर होगी। जो बात इनसान को दिखाई देती है, वही इसकी आँखों के सामने होती है। लेकिन आख़िरत में जब मामला इसके ख़िलाफ़ होता है तब आदमी समझता है कि मैंने जो किया वह ग़लत था।

जितने भी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की बात मानने वाले थे, जब ईमान की तरफ़ आ गए, इबादत में लग गए, दीन का इल्म हासिल करने में जुट गए। एक दूसरे का इकराम करना, लोगों का हक़ अदा करना, रहम करना, मेहरबानी करना, नीयतों को टटोलते रहना कि मैं अल्लाह को राज़ी करने की बात कर रहा हूँ या नहीं। जब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मानने वालों के अन्दर यह बात थी तो बावजूद यह कि वे संख्या में कम थे, ताक़त में कमज़ोर थे, सरमाये के एतिबार से ग़रीब थे, लेकिन चूँकि अल्लाह की ताक़त दीनदारी की बिना पर उनके साथ हो गई थी। और अल्लाह के ख़ज़ानों से दीनदारी की बिना पर ताल्लुक़ हो गया था। इसलिए उसका बदला मरने के बाद यह होगा कि जहन्नम के फ़रिश्ते उनको जहन्नम में नहीं लेजा सकेंगे। क्योंकि अल्लाह की ख़ुशनूदी उन्हें हासिल है। और चूँकि आमाल पर अल्लाह की तरफ़ से दिये जाने वाले ख़ज़ाने से उनका ताल्लुक़ है, पस इसका असर यह है कि उनको जन्नत

मिलेगी। हर किस्म की नेमतें अल्लाह पाक इनायत फ़रमायेंगे और करोड़ों साल के बाद भी जन्नत वालों पर कोई वबाल नहीं आएगा। न ही जन्नत के अन्दर उकताहट होगी कि भाई! करोड़ों साल हो गए जन्नत के अन्दर रहते हुए अब बाहर चलें।

दुनिया में ख़राबी और बिगाड़ की असल जड़

जन्नती जन्नत कि खिड़की से बाहर जहन्नमियों की तरफ़ देखेंगे और जहन्नमी जन्नतियों को देखेंगे। एक दूसरे को पहचानेंगे। ये जहन्नमी वे लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की बात को दुनिया के अन्दर नहीं माना था। उनकी ज़िन्दगी ग़लत गुज़री थी। उनके अन्दर सही यक़ीन नहीं था। वे अल्लाह के सामने सर नहीं झुकाते थे। इबादत नहीं करते थे। दीन पर चलने का उन्हें कोई शौक़ नहीं था। न उन्हें दीन सीखने की कोई फ़िक्र थी। क्योंकि वे लोग तो:

माल कैसे आए?

ओ़हदा कैसे बढ़े?

डिग्री कैसे मिले?

इन चीज़ों की धुन में रहते थे। अल्लाह की तरफ़ ध्यान ही नहीं था। उसकी तरफ़ ज़ेहन ही नहीं था। एक दूसरे के साथ बद-अख़्लाक़ी बरतते थे। लूट-खसूट के ज़रिए माल हासिल करते थे। उनको जितना अपने पास है उसमें कामयाबी नहीं दिखाई देती थी, बल्कि जितना दूसरे के पास है उसमें कामयाबी दिखाई देती थी। अपने पास दस लाख हैं उसमें कामयाबी नहीं दिखाई देती थी बल्कि दूसरे के नव्वे लाख में कामयाबी दिखाई देती थी। इसलिए वे दूसरों से लेने की फ़िक्र में लगे रहते और दूसरे उनसे लेने की फ़िक्र में लगे रहते। फिर छीना-झपटी होती और छीना-झपटी होकर आपस में लड़ाईयाँ और झगड़े होते और क़ौमें की क़ौमें इसके अन्दर तबाह व बरबाद होतीं। क्योंकि दुनिया छोटी है और चाहने वाले ज़्यादा। हर शख़्स चाहता है कि पूरी दुनिया मेरे हाथ में आ जाए। मगर इस तरह

दुनिया तो किसी के हाथ आ नहीं सकती। लेकिन आपस में लड़ाई और झगड़े ज़रूर होते रहते हैं।

आसमान वाला तुम पर रहम करेगा

और जब आदमी के दिल में आख़िरत की बड़ाई आ जाती है और अल्लाह के ख़ज़ानों में से आख़िरत के अन्दर क्या मिलेगा, इस पर यक़ीन आ जाता है, तो आदमी सोचता है कि मैं कितना दूसरों को दूँ। सदक़ा करूँ, ज़कात दूँ, अपने रिश्तेदारों के साथ सिला-रहमी करूँ, माँ-बाप को दूँ, औलाद को दूँ, पड़ोसियों की ख़िदमत करूँ यहाँ तक कि अगर ग़ैर-मुस्लिम परेशानहाल हो तो उसकी भी परेशानी दूर कर दूँ। तो अल्लाह पाक इस पर भी सवाब देंगे और बहुत बड़ी जन्नत इनायत फ़रमायेंगे।

अगर कोई ग़ैर-मुस्लिम भी ऐसा दिखाई दे कि जिसके ऊपर रहम और मेहरबानी करनी चाहिए तो यह उसके ऊपर भी रहम करेगा। क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:-

اِرْحَمُوْا مَنْ فِى الْاَرْضِ يَرْحَمُكُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ

तर्जुमाः- ज़मीन वालों पर तुम रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

तुम ज़मीन वालों पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ रहम करोगे तो आसमान वाला भी अपनी शान के एतिबार से तुम पर रहम करेगा।

दुनिया में रहम करेगा।

क़ब्र में रहम करेगा।

हश्र में रहम करेगा।

यहाँ तक कि बे-अ़मल ईमान वाले को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करके उस पर रहम करेगा।

इख़्लास ज़रूरी है

मेरे मोहतरम दोस्तो! मुस्लिम हो या ग़ैर-मुस्लिम, जिस पर भी रहम

किया जाए उसकी वजह से आसमान वाला हम पर रहम करेगा। लेकिन ये सारी बातें निर्भर हैं इख़्लास पर। यानी सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए यह सब करे।

अल्लाह की पकड़ कब आती है?

मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अल्लाह की तरफ़ से आकर लोगों को सीधा रास्ता बताया और लोग सीधे रास्ते पर आए। सीधे रास्ते पर आने वालों को शुरू में मुजाहदे और तकलीफ़ें बरदाश्त करनी पड़ीं। मगर बाद में फिर अल्लाह की मदद भी आई। और जिन्होंने नबियों की बात को नहीं माना, अपने माल व ताक़त और संख्या की अधिकता के घमण्ड में रहे, उनपर अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आई।

तकब्बुर और उसका अन्जाम

तीन चीज़ों का घमण्ड और तकब्बुर आदमी को होता है:-

एक यह कि मेरे पास सरमाया ज़्यादा है।

दूसरे यह कि मेरे पास ताक़त ज़्यादा है।

तीसरे यह कि मेरे हिमायती और साथी ज़्यादा हैं।

.... इन तीन चीज़ों के अन्दर लोग इतराते हैं। और बड़े ख़राब-ख़राब काम करते हैं।

ख़ियानत करना, धोखा देना, लोगों को तकलीफ़ें पहुँचाना, ज़ुल्म करना। इन बुराईयों में मुब्तला हो जाते हैं। जिसमें ख़ूब माल जाता है। पूरी ताक़त लगाते हैं। फिर जाकर हाँ में हाँ मिलाने वाले कुछ मिल जाते हैं। लेकिन इससे उनकी आख़िरत की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। उनकी क़ब्र की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। बिगड़ते-बिगड़ते आख़िर में एक ऐसा झटका लगता है कि उनकी दुनिया की ज़िन्दगी भी बिगड़ जाती है।

बन्दरों की तरह उछल-कूद

जब आदमी का ज़ेहन अल्लाह की तरफ़ से हटता है और दूसरी

तरफ़ चला जाता है। जब ऐसे लोगों पर अल्लाह की तरफ़ से मुसीबत आती है तो लंगूर की तरह उछल-कूद करते हैं। एक जगह जब मुसीबत आई तो उछलकर दूसरी तरफ़ चले गए। फिर वहाँ पर मुसीबत आई तो बन्दर की तरह उछलते हुए किसी और तरफ़ चले गए।

इसी तरह जो अल्लाह से जुड़े हुए नहीं होते, वे कभी इधर और कभी उधर होते रहते हैं। उन बेचारों को कभी चैन नहीं रहता। मैं उनको ग़रीब कहता हूँ, यतीम कहता हूँ, मिस्कीन कहता हूँ, चाहे वे अपने आपको कितना ही बड़ा कहते हों, लेकिन उनको चैन नहीं रहता।

अल्लाह के फ़ैसले से कोई बच नहीं सकता

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम एक झटके में तबाह हो गई। उनकी बुराईयों के जो सरदार थे यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा और उनकी बीवी, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटे से कहा कि ऐ बेटे! तू कश्ती के अन्दर सवार हो जा, तू अल्लाह की ताक़त को मान ले।

बेटे ने यूँ कहा कि मैं पहाड़ के ऊपर चला जाऊँगा। वह मुझे पानी से बचा लेगाः

سَاٰوِیْٓ اِلٰی جَبَلٍ یَّعْصِمُنِیْ مِنَ الْمَآءِ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- मैं जा चढ़ूँगा पहाड़ पर, जो बचा लेगा मुझको पानी से।

नूह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः-

لَا عَاصِمَ الْیَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰہِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- आज अल्लाह के फ़ैसले से कोई बच नहीं सकता, सिवाए उसके जिस पर अल्लाह रहम करे।

आख़िरकार अन्जाम वही हुआ जो क़ौम वालों का हुआः-

وَحَالَ بَیْنَهُمَا الْمَوْجُ فَکَانَ مِنَ الْمُغْرَقِیْنَ ۝ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- बहुत बड़ी मौज आई और वह डूब गया।

क़ौमे आ़द की सरकशी और ख़ुदा का अ़ज़ाब

अब क़ौमे आ़द आई। उसको हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने समझाया। उन्होंने कहा कि देखो! बहुत बुरा होगा अगर अल्लाह की बात को नहीं माना। अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं किया। अल्लाह की इबादत नहीं की।

देखो! अल्लाह बहुत बड़े लश्कर वाला है। पूजा सिर्फ़ अल्लाह की करनी है।

उन्होंने क्या समझा! कि नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को तो अल्लाह ने पानी से हलाक किया और हमारा गुरू हमको यह बताकर गया है कि पहाड़ वाटर प्रूफ़ हैं। हमारी टाँगे लम्बी-लम्बी हैं। एक छलाँग लगाएँगे और ऊपर चले जाएँगे। पानी हमारा कुछ नहीं कर सकेगा। यह गुमान करके ये लोग पहाड़ के ऊपर चले गए। हालाँकि अल्लाह के यहाँ सज़ा देने के तरीक़े अनेक हैं। अब की बार अल्लाह ने ज़ोर की हवा चलाई। हवा तो पहाड़ों के ऊपर भी चली जाती है। जिससे सब के सब तबाह व बरबाद हो गए।

क़ौमे समूद की सरकशी और ख़ुदा का अ़ज़ाब

उसके बाद क़ौमे समूद आई। अल्लाह के रसूल ने उसको भी समझाया कि देखो! अल्लाह की ताक़त को मान लो। तुमसे पहले क़ौमे नूह और क़ौमे आ़द ने नहीं माना तो वे तबाह व बरबाद हो गए। अगर तुम नहीं मानोगे तो तुम भी तबाह व बरबाद हो जाओगे। मगर क़ौमे समूद के ज़ेहन में क्या था? कि अल्लाह के यहाँ तबाह व बरबाद करने के लिए क्या है? सिर्फ़ हवा और पानी! जबकि हमारे पास वाटर प्रूफ़ भी है और एयर प्रूफ़ भी है। पहाड़ों के अन्दर ही मकान बना लेंगे। पहाड़ों के अन्दर ही रहेंगे, न तो पानी वहाँ तक पहुँच सकेगा और न हवा पहुँचेगी।

लेकिन अल्लाह पाक ने उनको सज़ा दी। बावजूद यह कि ये लोग

पहाड़ के बेहतरीन मकानों के अन्दर थे। एक फ़रिश्ते ने ज़ोर की चीख़ मारी। जिससे उनके कानों के परदे फट गए और वही जगह उनके लिए क़ब्र बन गई।

नेमत व मुसीबत का ख़ुदाई क़ानून

सारे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के क़िस्से में अल्लाह ने यह बात बताई कि जिन्होंने भी अल्लाह की ताक़त को तस्लीम किया। अल्लाह के ख़ज़ानों को माना। अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पर यक़ीन किया। अल्लाह पाक ने उनकी मदद फ़रमाई। और जिन्होंने नहीं माना, बावजूद ताक़त, सरमाये और संख्या के अल्लाह ने उनकी पकड़ फ़रमायी।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी अपने ज़माने के बेईमान और भटके हुए लोगों को समझाया कि देखो! समझ जाओ! कहीं तुम्हारे ऊपर मुसीबत न आ जाए। मेरी बात मान लोगे तो आसमान से भी बरकत होगी। ज़मीन से भी बरकत होगी। आपस में अमन-चैन, सुकून और मुहब्बत पैदा होगी। मज़ेदार ज़िन्दगी दुनिया की भी बनेगी और मरने के बाद जन्नत मिलेगी। जिसमें हमेशा-हमेशा रहोगे। लेकिन उन लोगों ने इस बात की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया और कहाः-

رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ٥ (پ٢٣)

यानीः- क़ियामत के दिन का कौन इन्तिज़ार करे, हमारे लिये क़ियामत में जो सज़ा और हिसाब है, उसको दुनिया में ले आओ।

लेकिन अल्लाह पाक बड़े मेहरबान हैं। कितना ही गुनाहगार आदमी हो, उसकी फ़ौरन पकड़ नहीं करते। बल्कि उसके लिए हिदायत का और ईमान का सामान और इन्तिज़ाम करते हैं। उनके पास नबियों को भेजते हैं। उनके ऊपर मुसीबतें लाते हैंः-

لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ

ताकि रोने-धोने लगें...... कि ऐ अल्लाह! हमारी मुसीबत को दूर कर

दे, हम तेरी बात को मानेंगे।

और कभी अल्लाह पाक उनके ऊपर नेमतें डालते हैं:-

لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ

ताकि वे शुक्रगुज़ारी करें...... कि ऐ अल्लाह! हम तो बहुत गुनाहगार हैं। हमने बहुत गुनाह का काम किया। फिर भी आपने इतनी नेमतों से नवाज़ा। ऐ अल्लाह! हम तेरा शुक्र अदा करते हैं। अब तेरी नाफ़रमानी नहीं करेंगे। तो अल्लाह तआला ये सारे इन्तिज़ाम करते हैं इनसान को सीधे रास्ते पर लाने के लिए।

अज़ाब से पहले अल्लाह का क़ानून

बिल्कुल हठधर्मी पर जब आदमी आ जाता है तो फिर आख़िर में अल्लाह पाक वही करते हैं कि उनकी आख़िरत की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। दुनिया की ज़िन्दगी और क़ब्र की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है और दुनिया बनते-बनते आख़िर तक पहुँच गई लेकिन अल्लाह का एक झटका आया तो बनी बनाई दुनिया बिगड़ गई। फ़िरऔन की भी बिगड़ी, क़ारून की भी बिगड़ी, हामान की भी बिगड़ी। ये सारी बातें कुरआन के अन्दर नाज़िल हुईं। और उस ज़माने के बेईमानों और ईमान वालों को पढ़-पढ़कर सुनाई गईं। ईमान वालों ने बात मान ली और कहा कि बेशक यही बात है, जो आपने कहा।

लेकिन जो बेईमान थे, उन्होंने नहीं मानी बल्कि कहा कि:

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٥ (پ٧)

तर्जुमा:- ये तो पुरानी कहानियाँ हैं।

मगर अब भी अल्लाह तआला ने उन लोगों की पकड़ नहीं की। लेकिन बहुत ही हठधर्मी पर लोग आ गए। जब बिगड़े हुए लोग ज़्यादा हठधर्मी पर आ जाते हैं तो अल्लाह तआला अक्सर ऐसा करते हैं कि सुधरे हुए लोगों को एक तरफ़ कर देते हैं, और बिगड़े हुए लोगों को एक

तरफ़ कर देते हैं। सुधरे हुए लोगों पर ग़ैबी मदद लाते हैं और बिगड़े हुए लोगों पर ग़ैबी पकड़। हर नबी के ज़माने में अल्लाह पाक ने ऐसा किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी ऐसा किया। अन्सार ने माँग की कि आप मदीना आ जाएँ। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए और सहाबा भी मदीना मुनव्वरा पहुँच गए।

अबू जहल का ग़ुरूर चकनाचूर

बदर की लड़ाई में अबू जहल और उसके साथियों के ज़ेहन में यह था कि हमारे पास ताक़त है, पूँजी है। हमारी संख्या ज़्यादा है। उनको जाकर सिर्फ़ ख़त्म करना है। ख़त्म करके ख़ुशी की पार्टी करेंगे। उसमें अ़रब वालों कि दावत करेंगे। तो देखो! चौदह साल से ये लोग उछल रहे थे। मगर जब बदर की लड़ाई हुई तो बेईमान मक्का वालों को मालूम हो गया कि असल ताक़त किसके पास है।

अब अल्लाह ने उन लोगों को इजाज़त दे दी कि उन भटके हुए लोगों को पकड़ें।

क़ुरबानी का मिज़ाज किस तरह बनाया गया

मक्का के अन्दर अल्लाह पाक ने इजाज़त नहीं दी थी। मक्का मुकर्रमा के अन्दर भटके हुए लोग ईमान वालों को मारते थे। ज़ुल्म व सितम ढाते थे। जबकि ईमान वाले डरपोक नहीं थे। मारने वाले अगर बहादुर थे तो मार खाने वाले भी बहादुर थे। यह बात और है कि बहादुर को बहादुर नहीं मार सकता। वह फ़ौरन मुक़ाबले पर आ जाएगा।

लेकिन ये मार खाने वाले सहाबा जो बहादुर थे। उनके ज़ेहन में एक बात बैठी हुई थी कि अल्लाह बड़ा ताक़त वाला है। उसके हुक्म को हम पूरा करेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारी हिमायत में आयेगी। और अल्लाह का हुक्म तोड़ेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारे ख़िलाफ़ हो जाएगी। क्योंकि

अल्लाह पाक का हुक्म मक्का के अन्दर यह था:-

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ۔

(پ۵، سورۃ النساء)

तर्जुमाः- क्या आपने नहीं देखा उन लोगों को जिनसे कह दिया गया कि रोक लो अपने हाथों को और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो।

कि वे लोग तुम पर जुल्म करेंगे मगर तुम सब्र इख़्तियार करो। सामूहिक तौर पर हमला न करो। नमाज़ अदा करो। ज़कात निकालो। ताकि नमाज़ और ज़कात के ज़रिये अल्लाह के हुक्मों पर अपनी जान और माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। इन बातों के ज़रिये बड़ी रूहानी तरक़्क़ी हासिल करोगे। और बहुत आगे बढ़ जाओगे। लेकिन अपने हाथों को रोको। चुनाँचे उन्होंने अपने हाथों को रोक लिया। ख़ूब मार खायी, बरदाश्त किया। इससे उनके अन्दर सब्र आया। तक़्वा आया। उनके अन्दर दुआ की ताक़त आई और रूहानी ताक़त बढ़ती चली गई।

मूसवी तालीम

'बदर' के मौक़े पर मक्का के काफ़िरों को बड़ा गुस्सा आया कि कमज़ोर और बेहैसियत लोग हमारे तिजारती क़ाफ़िले को गिरफ़्तार करने के लिए निकल पड़े हैं। उनकी इतनी हिम्मत हो गई?

अल्लाह पाक भटके हुए लोगों को कभी ज़रा गुस्सा भी दिलाते हैं ताकि वे गुस्से में आकर टकरा जाएँ। जैसे फ़िरऔन को गुस्सा आया बनी इस्राईल पर, कि ये हमारी मार खाने वाले, इनकी पिटाईयाँ करके, इनकी औरतों से हम अपने घर का काम लेते थे। और अब इनकी यह हिम्मत हो गई कि सब के सब जमा होकर मिस्र से निकल रहे हैं। इस पर फ़िरऔन को बड़ा गुस्सा आया। मगर बनी इस्राईल को इस बात पर इत्मीनान था कि अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिए जब हम निकले हैं तो अल्लाह की ताक़त हमारे साथ होगी। और अल्लाह की ताक़त का

मुक़ाबला सारी दुनिया की ताक़तें मिलकर नहीं कर सकतीं।

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُونَ ٥ (پ٢٥)

तर्जुमाः- मेरे बन्दों को लेकर ऐ मूसा रातों रात निकल जाओ। और फ़िरऔन तुम्हारा पीछा करेगा। यह याद रखना।

तो ज़ाहिरन उन बनी इस्राईल पर बड़ा मुजाहदा आया। तकलीफ़ उठाई। इतनी तकलीफ़ कि एक तरफ़ तो फ़िरऔन पीछा कर रहा है और दूसरी तरफ़ वतन छूट रहा है। जिसकी वजह से वतन के अन्दर कमाना-खाना सब गया। लेकिन उन लोगों ने कहा कि अल्लाह का हुक्म पूरा करेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारे साथ होगी। अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने से हमारा ताल्लुक़ होगा। यही तालीम उन को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दी थी।

हालात से प्रभावित होना ऐब नहीं

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हालात बिगड़ते हैं तो अच्छे से अच्छे आदमी प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रहते। अच्छे से अच्छे दीनदार मुतास्सिर (प्रभावित) हो जाते हैं। हालात से असर लेना ऐब नहीं। लेकिन इतना मुतास्सिर होना कि अल्लाह का हुक्म टूट जाए, यह ऐब है। अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म छूट गया तो अल्लाह की ताक़त ख़िलाफ़ होगी। अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म नहीं छूटा और हालात से मुतास्सिर (प्रभावित) हो गए तो इस मुतास्सिर होने में कोई हर्ज नहीं है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम भी मुतास्सिर हो गए। अल्लाह पाक ने कहा कि जाओ फ़िरऔन के पास और उसे दावत दो। तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी घबरा गए।

إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَنْ يَّطْغٰى ٥ (پ١٦)

तर्जुमाः- हम डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करे।

तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमायाः-

لَا تَخَافَآ اِنَّنِیْ مَعَکُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰی ٥ (پ١٦)

तर्जुमाः- मत डरो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। सुनता हूँ और देखता हूँ। मेरे इल्म और कुदरत से कोई निकल नहीं सकता। घबराते क्यों हो? चुनाँचे अल्लाह पाक इस मौके पर उनको तसल्ली दे रहे थे।

बनी इस्राईल पर ख़ुदा की अचानक मदद

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! बनी इस्राईल वतन छोड़कर निकल गए। कारोबार छोड़कर निकल गए। फ़िरऔ़न को पता चला तो उसे गुस्सा बहुत आया। उसने कहा कि ऐलान कर दोः

اِنَّ ھٰٓـؤُلَآءِ لَشِـرْذِمَةٌ قَلِیْلُوْنَ ٥ وَاِنَّهُـمْ لَـنَـا لَغَآئِظُوْنَ ٥ وَاِنَّـا لَـجَمِیْعٌ حٰذِرُوْنَ ٥ (پ١٩)

यानी ये बनी इस्राईल बहुत थोड़े हैं। और उन्होंने हमको बहुत गुस्सा दिलाया है। और हम सब हथियार बन्द हैं।

चुनाँचे सब के सब बनी इस्राईल का पीछा करते हुए चले। यहीं बनी इस्राईल पर मुजाहदा आया कि आगे समन्दर और पीछे फ़िरऔ़न का लश्कर, और ये दरमियान में चारों तरफ़ से घिर गए। उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि चारों तरफ़ से हमारे लिए परेशानी ही परेशानी है। आगे जाएँ तो समन्दर डुबोए। पीछे जाएँ तो फ़िरऔ़न मारे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सोचा अगर अल्लाह के अ़लावा किसी और का असर इन पर पड़ा तो कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह की मदद रुक जाए। इसलिए भरपूर ज़ोर देकर कहाः

کَلَّآ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَھْدِ یْنِ ٥ (پ١٩،ع٨)

तर्जुमाः हरगिज़ नहीं! मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझको राह बताएगा।

अल्लाह पाक जब मदद फ़रमाते हैं तो मदद करने के दो सैकेंड पहले पता भी नहीं चलता कि ख़ुदाई मदद आने वाली है और जब मदद आती

है तो आदमी हैरान रह जाता है कि अल्लाह ने कैसे मदद की।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मालूम नहीं था कि अल्लाह कैसे मदद करेंगे। लेकिन इतना मालूम था कि मदद ज़रूर फ़रमाएँगे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डंडा लिया और समन्दर पर मार दिया। फिर तो सब ने देखा कि समन्दर में रास्ते ही रास्ते निकल आए। जिनमें से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम गुज़र रही थी।

फ़िरऔ़न ने कहा कि देखो! समन्दर के अन्दर भी रास्ते बन गए। न मालूम क्या-क्या हो रहा है। अब जो भी बनी इस्राईल का आदमी मिले उसकी पिटाई शुरू कर दो।

سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَ هُمْ وَنَسْتَحْيِ نِسَآءَ هُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُوْنَ ○

(پ۹سورۃالاعراف ع۵)

तर्जुमाः- फ़िरऔ़न ने कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उन पर हर तरह का ज़ोर है।

इन हालात में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने क़ौम वालों की ढारस बंधाई, फ़रमायाः-

اِسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا (پ۹)

तर्जुमाः- अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो।

अल्लाह की ताक़त सब्र करने वालों के साथ

इस वाक़िए में क़ियामत तक के लिए हमारी रहबरी हो रही है कि जब चारों तरफ़ से मुसीबत आ जाए तो उस वक़्त में अल्लाह से मदद माँगें और सब्र करें। सब्र करने वालों के साथ अल्लाह की ताक़त होती है। और अल्लाह से मदद माँगने वालों के साथ अल्लाह की मदद होती है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से कहाः-

اِسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا (پ۹)

तर्जुमाः- अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो।

اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ (پ۹ سورۃ الاعراف ع۵)

तर्जुमाः- बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह जिसे चाहता है इसका वारिस बनाता है।

कभी यह ज़मीन भलों को देता है जैसे- दाऊद अ़लैहिस्सलाम, सुलैमान अ़लैहिस्सलाम। और कभी यह ज़मीन बुरों को देता है- जैसे फ़िरऔ़न, हामान, क़ारून। लेकिन अन्जाम परहेज़गारों का बेहतर होगा।

छोटे मुजरिम को सज़ा बड़े मुजरिम से

और ऐसा भी होता है कि बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक छोटे मुजरिम को सज़ा देने के लिए बड़े मुजरिम को मुतैयन कर देते हैं। ये बनी इस्राईल छोटे मुजरिम थे। क्योंकि ये अल्लाह को मानते थे, नबियों को मानते थे, आख़िरत को मानते थे, लेकिन काम बेईमानों जैसे करते थे। दुनियादारों जैसे करते थे। ऊपर से लेबल दीन का था अन्दर दुनिया भरी हुई थी। तो उन पर अल्लाह पाक नाराज़ हुए और एक बड़ा मुजरिम उनके ऊपर मुसल्लत कर दिया। और वह फ़िरऔ़न था। जिसने ख़ुदाई का दावा किया था। उसने उनको ख़ूब सताया। ख़ूब मारा पीटा।

छोटे मुजरिम की छोटी सज़ा

छोटे मुजरिम की छोटी जेल में सज़ा होती है और बड़े मुजरिम की सज़ा बड़ी जेल में होती है। कलिमा पढ़ने वाला अगर ख़राब आमाल करता है तो यह छोटा मुजरिम है। अल्लाह तआ़ला इसे छोटे जेलख़ाने यानी दुनिया के अन्दर सज़ा देते हैं। और आज भी अल्लाह पाक यही कर रहे हैं। ईमान वाले जब उनके आमाल ख़राब हो जाते हैं, और काम बेईमानों जैसे करते हैं। सूद, झूठ, चोरी, ग़बन, ख़ियानत, नाप-तौल में कमी, डन्डी का मारना, मिलावट करना। इन सारी ख़राबियों में लिप्त होते हैं। और घरों के अन्दर भी न मालूम कितनी क़िस्म की ख़राबियाँ उनकी

औ़रतों और बच्चों में होती हैं।

हालाँकि अल्लाह को मानते हैं, नबी को मानते हैं, आख़िरत को मानते हैं। तो ये छोटे मुजरिम हुए। इनके ऊपर बड़े मुजरिमों को सज़ा देने के लिए मुतैयन कर देते हैं। बड़े मुजरिम वे हैं जो न अल्लाह को मानते हैं, न नबी को मानते हैं, न आख़िरत को मानते हैं।

बड़े मुजरिमों को एक ही वक़्त में

उन्नीस क़िस्म की सज़ाएँ

फिर बड़े मुजरिम को सज़ा कहाँ होगी?

बड़े मुजरिम की सज़ा बड़े जेलख़ाने में होगी। और वह बहुत ही डरने की जगह (यानी जहन्नम) है। जिसके अन्दर जहन्नमियों को उन्नीस क़िस्म कि सज़ाएँ अल्लाह पाक देंगे, और एक ही वक़्त में देंगे। हर सज़ा देने के लिए बेशुमार फ़रिश्ते होंगे।

وَمَايَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّکَ اِلَّا هُوَ (الآية)

अल्लाह के लश्कर को कोई नहीं जानता, मगर वही जानता है।

हर सज़ा देने के लिए फ़रिश्तों का सरदार और उसके मातहत न मालूम कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे। इस तरह उन्नीस सरदार और उनके मातहत सज़ा देने वाले फ़रिश्ते होंगे।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ (الآية)

और उनको उन्नीस क़िस्म कि सज़ाएँ होंगी। इसलिए कि ये बड़े मुजरिम हैं।

जहन्नमियों का खाना और पानी

जिस अल्लाह ने आसमान व ज़मीन और चाँद व सूरज को अपने एक हुक्म से बनाया। एक हुक्म देकर इनको तोड़ भी देगा। उन्होंने उस अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं किया, जिसकी वजह से अल्लाह

उनको जहन्नम में डाल देगा। उसके अन्दर एक हज़ार साल तक खाना माँगते रहेंगे जिस पर उन्हें काँटेदार दरख़्त मिलेंगे। भूख की वजह से वे खाना शुरू करेंगे तो वे काँटे हलक़ के अन्दर चुभ जाएँगे। जिसकी वजह से वे चीख़ें मारेंगे और पानी-पानी चिल्लाएँगे। एक हज़ार साल तक पानी माँगेंगे तब खोलता हुआ बदबूदार पानी उन्हें दिया जाएगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात करोड़ों साल के बाद भी सच्ची

यह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दी हुई ख़बर है, यह झूठी नहीं हो सकती। उनकी ज़बान से निकली हुई बात करोड़ों साल के बाद भी ग़लत नहीं हो सकती। इसलिए कि वह जो बात कहते हैं वह अल्लाह की तरफ़ से 'वह्य' (अल्लाह का भेजा हुआ पैग़ाम) होती है। अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कहते। तो जो बात होती है, अल्लाह की तरफ़ से होती है।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰىٓ o اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْىٌ يُّوْحٰى o (پ۲۷ سورة النجم ع۵)

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिजरत और सुराक़ा इब्ने मालिक

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ारे-सूर से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ निकले और छुपकर मदीना की तरफ़ जा रहे थे तो चारों तरफ़ मक्का के काफ़िरों ने आदमी दौड़ा दिये कि जो कोई उनको ज़िन्दा पकड़कर ला दे या मार डाले तो उसको इनाम मिलेगा। चारों तरफ़ आदमी फैल गए लेकिन अल्लाह की शान देखिए।

सुराक़ा इब्ने मालिक ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जाते हुए देख लिया। (और यह वही शख़्स है कि बदर के दिन जिसकी शक्ल में शैतान आया था) लेकिन "जिसे ख़ुदा रक्खे उसे कौन चक्खे" उसका

घोड़ा ज़मीन के अन्दर धंस गया और वह घबरा गया। उसने इरादा किया कि अब मैं नहीं पकड़ूँगा। तब घोड़ा निकल सका और चलने लगा। फिर सोचा कि यह तो इत्तिफ़ाक़न ऐसा हो गया होगा, मैं ज़रूर पकड़ूँगा। मगर फिर घोड़ा धंसा। दो तीन बार ऐसा हुआ तो उसने तय कर लिया कि अब मैं हरगिज़ उनसे कोई छेड़छाड़ नहीं करूँगा।

फ़रमाँबरदारों और नाफ़रमानों के लिए नेमत व मुसीबत का फ़ल्सफ़ा

देखो! इस बात को ज़ेहन में अच्छी तरह बिठा लो कि अगर आदमी फ़रमाँबरदार है तो उस पर भी नेमतें और तकलीफ़ें आती हैं। और अगर नाफ़रमान है तो उस पर भी नेमतें और तकलीफ़ें आती हैं। फ़रमाँबरदारों पर अल्लाह की मदद आती है, लेकिन उमूमन बिल्कुल आख़िरी मर्हले में। और नाफ़रमानों को भी अल्लाह तआ़ला नेमतें देता है और उमूमन शुरू में देता है। लेकिन यह बात ज़ेहन में बिठा लो कि नाफ़रमान पर जो नेमत आती है वह ऐसी है जैसे चूहे के पिन्जरे में घी की रोटी। यह ख़ुश करने के लिए नहीं रखी जाती बल्कि चूहे को गिरफ़्तार करने के लिए रखी जाती है। और फ़रमाँबरदारों को जो नेमत मिलती है वह ऐसी है जैसे तोते के पिन्जरे की नेमत। तोते के पिन्जरे में नेमत रखी जाती है दिल बहलाने के लिए। तो नाफ़रमानों की जो नेमत है वह चूहे के पिन्जरे वाली नेमत है, जो आख़िर में गिरफ़्तार होगा। और फ़रमाँबरदार पर जो नेमत आई है वह तोते के पिन्जरे वाली नेमत है जो ख़ुश होकर रखी जाती है।

नाफ़रमानों की तकलीफ़ की मिसाल ऐसी है जैसे किसी को गुस्से में छुरा मार दिया जाए और गुस्से के छुरे का अन्जाम मौत है। लेकिन फ़रमाँबरदारों पर जो मुसीबत आती है, वह ऐसी है जैसे आपरेशन का छुरा। आपरेशन में भी छुरा मारा जाता है लेकिन आपरेशन के छुरे का

अन्जाम तन्दुरुस्ती है। तो दोनों छुरों के अन्दर फ़र्क़ है। इस फ़र्क़ को समझ लो।

इस फ़र्क़ को क़ुरआन पाक में अल्लाह पाक ने अलग-अलग बयान फ़रमा दिया है। फ़रमाँबरदारों की नेमत का नाम अल्लाह पाक ने "फ़तहे बरकात" (बरकतों का खुलना) रखा है और नाफ़रमानों पर जो नेमतें डालते हैं उसका नाम "फ़तहे अबवाब" (दरवाज़ों का खुलना) रखा है। और इनके बारे में अलग-अलग आयतें इरशाद फ़रमाई हैं।

"फ़तहे बरकात" फ़रमाँबरदारों के लिए

फ़रमाँबरदारों के लिए नेमतों के बारे में फ़रमाया:-

وَلَوْاَنَّ اَهْلَ الْقُرىٰٓ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ. (پ۹ سورۃ الاعراف ع۲)

यानी अगर बस्तियों वाले ईमान वाले बन गए। तक़्वा वाले बन गए। तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतें खोल देंगे।

आमदनी में बढ़ोतरी से धोखा

लेकिन अगर कोई आदमी यूँ कहे कि मौलवी साहिब आप चाहे जितनी तक़रीरें करें, हमारा हाल तो यह है कि हमारा सारा कारोबार हराम है। इसमें शरीअ़त की किसी पाबन्दी का लिहाज़ नहीं है। इसके अन्दर झूठ है। धोखा, ग़बन, ख़ियानत, रिश्वत, नाप-तौल में कमी, मिलावट सब कुछ है। लेकिन इसके बाद भी अल्लाह पाक ने हमें बड़ी बरकत दे रखी है। तो मैं कहूँगा कि उस बेचारे को धोखा लग रहा है। क्योंकि नाफ़रमानी के साथ जो आमदनी हो जाए वह ऐसी है जैसे क़ारून की आमदनी है। और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी के साथ जो आमदनी हो, वह हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की आमदनी जैसी है। ख़ालिस आमदनी के ज़्यादा होने से यह न समझें कि अल्लाह की तरफ़ से बरकत आ गई। अरे पहलवान का बदन गठीला

और मोटा है। और एक आदमी है कि उसका बदन बीमारी की वजह से मोटा हो गया है। अगर ऐसा शख़्स यूँ कहे कि देखो पहलवान भी मोटा और मैं भी मोटा ...... अरे मेरे भाई! पहलवान के बदन का मोटा होना तन्दुरुस्ती है और इसका बदन वरम और बीमारी की वजह से है।

तो इसी तरह अगर नाफ़रमानी के साथ आमदनी ज़्यादा है तो समझ लीजिए कि वर्मीला बदन है, और अगर फ़रमाँबरदारी के साथ आमदनी ज़्यादा होती है तो समझ लो कि गठीला बदन है।

"फ़तहे-अबवाब" नाफ़रमानों के लिए

अगर बावजूद ख़ुदा की नाफ़रमानी करते रहने के आमदनी हो गई तो अल्लाह पाक इसको दूसरी आयत में फ़रमाते हैं:-

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ.

(پ ۷ سورۃ الانعام ع ۱۱)

यानी जो नसीहत की गई, उसे भूल गए। (ज़िन्दगी नाफ़रमानी वाली बना ली) तो हम हर चीज़ के दरवाज़े उनके लिए खोल देते हैं।

मुल्क का दरवाज़ा, माल का दरवाज़ा, हर लाईन का दरवाज़ा। हालाँकि वह नाफ़रमान है। ख़राब काम करने वाला है। आगे फ़रमाते हैं:-

حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ٥

(پ ۷ سورۃ الانعام ع ۱۱)

यहाँ तक कि जब नेमतों के दरवाज़े खुले और वे ख़ुश हुए तो हम उनकी अचानक पकड़ कर लेते हैं। और वह आदमी हैरान रह जाता है कि आख़िर यह क्या हो गया।

ख़ुदा की पकड़ अचानक होती है

कभी तो अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आती है अचानक, और कभी आहिस्तगी से आती है। जैसे चूहे घर के अन्दर ज़्यादा हो गए। चालीस-

पचास पिन्जरे घर के अन्दर फैला दिए गए। और हर पिन्जरे का दरवाज़ा खोल दिया गया। हर पिन्जरे में अलग-अलग क़िस्म की चीज़ें रख दी गईं। अब फ़र्ज़ करो कि कोई समझाने वाला समझाए कि नेमत तो है मगर इस नेमत के पीछे मुसीबत भी है। तो वह कहेगा बस चुप रह! ऊँटों के ज़माने की बातें करता है, रॉकिट के ज़माने में। नेमत तो दिखाई दे रही है मगर मुसीबत कहाँ है?

समझाने वाले ने कहा कि मुसीबत तो बहुत भारी है। मेरी बात तो मान लो। तब उसने कहा कि जब तू अन्दर घुसेगा और रोटी के टुकड़े खींचेगा तो कड़-कड़ की आवाज़ आएगी। अगर उस पर भी तुमने नहीं माना और ज़ोर से खींचा तो खट की आवाज़ आएगी। तब समझो कि वारन्ट कट गया। अब चारों तरफ़ से तेरे भागने का कोई रास्ता नहीं रहेगा और तू अन्दर ही अन्दर रहेगा। जब सुबह होगी तो लड़के आएँगे और खुशी मनाएँगे। कहेंगे कम्बख़्त! तू हमारी किताबें खाता था। वे बड़े-बड़े सुएँ लाएँगे और तुझे चुभोएँगे। तब तू अन्दर तकलीफ़ के मारे कूदेगा और बच्चे बाहर खुशी के मारे कूदेंगे। उसके बाद औरतें आएँगी कढ़ाई में पानी गर्म करेंगी और तेरे ऊपर डालेंगी। उस गर्म पानी के अन्दर तू मर जायेगा फिर तुझे सड़क पर फैंक दिया जायेगा। बिल्ली आयेगी और तुझे खा जायेगी। तो ये सब मुसीबतें उस नेमत के पीछे छुपी हुई हैं।

ईमान वालों का मुक़ाबला दज्जाल भी नहीं कर सकेगा

अल्लाह पाक फ़रमाते हैं कि हम अचानक पकड़ते हैं, और आदमी हैरान रह जाता है कि अरे यह क्या हो गया? जैसे-

फ़िरऔन, हामान और अबू जहल को पकड़ा।

क़ैसर व किस्रा को अचानक पकड़ा।

आख़िर में याजूज माजूज और दज्जाल की भी अचानक पकड़ करेगा। हालाँकि दज्जाल के पास इतना माल होगा कि किसी ख़राब आदमी के पास हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर अब तक नहीं हुआ होगा।

और याजूज व माजूज के पास इतनी ताक़त होगी कि भटके हुए लोगों में इतनी ताक़त वाला आज तक नहीं गुज़रा। लेकिन जब अल्लाह की ताक़त उनके ख़िलाफ़ होगी, और अल्लाह के तकलीफ़ों वाले ख़ज़ाने से उनका ताल्लुक़ होगा, तो उनकी ताक़त और उनका ख़ज़ाना काम नहीं आएगा। और उन्हीं के ज़माने में ईमान वाले जो बड़े ग़रीब होंगे, संख्या भी नहीं के बराबर, लेकिन अल्लाह की ताक़त उनके साथ होगी। अल्लाह की बरकतें उनके साथ होंगी। तब उन ईमान वालों का मुक़ाबला याजूज व माजूज भी नहीं कर सकेंगे। दज्जाल बरबाद होगा। चालीस दिन के अन्दर याजूज व माजूज भी बरबाद होंगे। सिर्फ़ चन्द दिनों के अन्दर ईमान वालों के लिए अल्लाह तआ़ला चारों तरफ़ से बरकतों के ख़ज़ाने खोल देगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! चूहा नहीं मानता है, क्योंकि उसको मुसीबत दिखाई नहीं देती। उसने चारों तरफ़ घूम-फिरकर कहा कि न तो बच्चे दिखाई देते हैं और न औ़रतें। यह तू बेकार की बातें करता है।

लेकिन आप जानते हैं कि सारी चीज़ें मौजूद हैं मगर चूहा नहीं देख सका। इसी तरह अल्लाह के नबी ने जो जन्नत और दोज़ख़ की बातें बताईं, वे सब सच और हक़ हैं। इससे सच्ची बात नहीं हो सकती। भले ही वह आज हमारी नज़रों से ओझल है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेराज मे तशरीफ़ ले गए। वहाँ अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कुछ आईन्दा की बातें बताईं और मौजूदा ज़माने की भी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत को देखा, जहन्नम को देखा। ज़मीन से आसमान पर आमाल का जाना देखा और आसमान से ज़मीन पर फ़ैसलों का उतरना देखा।

करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है

ख़ुदा तआ़ला आसमान पर जो फ़ैसला करता है, उसका मुक़ाबला सारी दुनिया के लोग नहीं कर सकेंगे। अल्लाह का फ़ैसला तबाही व

बरबादी का आएगा तो सारी दुनिया के लोग मिलकर अपनी ताक़त और अपने सरमाये के ज़रिये बच नहीं सकते। और अल्लाह का फ़ैसला अमन व अमान का आएगा तो सारी दुनिया के लोग मिलकर उस अमन व अमान को ख़त्म नहीं कर सकते। करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। अल्लाह को तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे।

قُمْ فَاَنْذِرْ ٥ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ٥ (پ۲۹ سورۃ المدثر ع۱۵)

तर्जुमा:- मेरे प्यारे नबी खड़े हो जाओ और लोगों को डराओ और अल्लाह की बड़ाई बयान करो।

हर जगह आप हज़रात को जमाअतें बना-बनाकर जाना है। अल्लाह की बड़ाई बयान करनी है। सब को समझाना है कि अल्लाह की ताक़त को तस्लीम करो तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो जब तक अल्लाह ढील देगा पता नहीं चलेगा, और जिस दिन अल्लाह की पकड़ आएगी तो उस पकड़ से सारी ताक़तें और सारे सरमायेदार मिलकर नहीं बचा सकते।

इब्तिला और अ़ज़ाब किनके लिए?

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! फ़रमाँबरदारों के लिए जो नेमत आती है उसका नाम "फ़तहे बरकात" है। और नाफ़रमानों के लिए जो नेमत आती है उसका नाम "फ़तहे अबवाब" रखा गया। इसी तरह तकलीफ़ भी दो तरह की होती है- फ़रमाँबरदारों वाली तकलीफ़, इसका नाम "इब्तिला" है। और एक नाफ़रमानों वाली तकलीफ़ है उसका नाम "अ़ज़ाब" है।

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ٥

(پ۲۱ سورۃ السجدۃ ع۱۵)

तर्जुमा:- और अलबत्ता चखाएँगे हम उनको थोड़ा अ़ज़ाब बड़े अ़ज़ाब से पहले। ताकि वे लौटकर आ जाएँ।

अ़ज़ाब वापस लाने के लिए

दुनिया के अन्दर जितनी तकलीफ़ें अल्लाह की तरफ़ से आती हैं, वे इसलिए हैं कि आदमी वापस लौट आये। जैसे जब गाड़ी वर्जित क्षेत्र (NO INTERY ARIA) में चली जाती है तो पुलिस वाले सीटी बजाते हैं, लाल झण्डी दिखाते हैं और चिल्लाते हैं "लाईन डैंजर लाईन डैंजर" और डंडा मारते हैं। अगर ड्राईवर कहता जाए कि बिल्कुल नहीं लाईन किलयर और कहता हुआ आगे चला गया तो वह पुलिस बड़े पुलिस के पास फ़ोन कर देता है। वे गाड़ी की प्रतीक्षा में होते हैं। जब गाड़ी आती है तो एक दम से टायर फ़ैल कर देते हैं, लाईंसेस तलब करते हैं और हवालात के अन्दर बन्द कर देते हैं। फिर हवालात के अन्दर उसकी पिटाई करते हैं।

क़ियामत फ़ैसले का दिन

यह क़ब्र भी हवालात है और क़ियामत DAY OF FINAL JUDGEMENT यानी फ़ैसले का दिन। अब वह ड्राईवर हवालात के अन्दर जिस क़दर पिटता है वह तुम जानते हो। तब कहता है मैं वापस जाने को तैयार हूँ। मुझे छोड़ दो। तो पुलिस वाले कहेंगे कि तू वापस जाने को तैयार है। लेकिन अब हम तुझको वापस नहीं जाने देंगे। जब सीटी बजी थी, जब डंडा मोटर पर मारा था, जब लाल झण्डी तुझे दिखाइ गई थी, तब अगर वापस हो जाता और बाज़ आ जाता तो ठीक था। अब हम तुझे वापस नहीं होने देंगे।

इसी को अल्लाह पाक भी कहते हैं कि जब मैंने ज़लज़लों (भूकंप) के डंडे मारे, मैंने तूफ़ान की सीटियाँ बजाई, मैंने ताऊन की बीमारी की झण्डियाँ दिखाईं ताकि तुम अपने रवैये से बाज़ आ सको और सही रास्ते पर आ जाओ। नबियों वाले तरीक़े पर आ जाओ। लेकिन उस वक़्त तो तुमने सुना नहीं और अब तुम अपने अन्दर तब्दीली करना चाहोगे, अपनी रविश से वापसी करना चाहोगे तो हम तुमको वापस होने और लौटने नहीं

देंगे। दुनिया के अन्दर नबियों ने आकर समझाया। नबियों का आना बन्द हुआ तो जमाअ़तों ने फिरकर समझाया लेकिन तुमने बात को नहीं समझा और उसी ग़लत रास्ते पर रहे। बावजूद यह कि तुम्हारे ऊपर डंडे ज़लज़लों के, तूफ़ानों के और हवाओं के पड़ते रहे, लेकिन तुम अपनी ग़लत रविश से नहीं रुके। अब मरने के बाद जब तुम पर सज़ायें आएँगी तो कहता है कि मैं अब अपने तरीक़े में सुधार करना चाहता हूँ। मैं अपने रास्ते से वापस आने को तैयार हूँ। लेकिन अब अल्लाह तुझे वापसी नहीं करने देगा।

حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنَ o (پ۲ سورۃ البقرۃ ع ۳۶)

तर्जुमाः- यहाँ तक कि पहुँचे उनमें से किसी को मौत, कहेगा ऐ रब! मुझको फिर भेज दीजिए।

मरने वाला कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझे लौटा दे। अब मैं वापस जाकर अच्छे-अच्छे काम करूँगा। अगर मुझे हराम का माल लाखों में भी मिलेगा तब भी मैं नहीं लूँगा। थोड़े माल पर गुज़ारा करूँगा। मुझे तू लौटा दे।

अल्लाह कहेगा हम तुझे नहीं लौटातेः-

كَلَّا

हरगिज़ नहीं।

तुम्हारे सामने एक जगह बर्ज़ख़ है, उसके अन्दर तुम्हें उस दिन तक रहना होगा जब तक कि एक-एक को उठाकर अल्लाह के सामने पेश न कर दिया जाए। तुम्हें अब "आ़लमे बर्ज़ख़" (मरने के बाद जहाँ रूहें रहती हैं) में जाना होगा। अब तुमको लौटाऊँगा नहीं।

फ़रमाँबरदारों पर तकलीफ़ की मिसाल

और तकलीफ़ फ़रमाँबरदारों पर भी आती हैः-

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ. (پ۲سورۃالبقرۃ ع۳)

अल्लाह फ़रमाते हैं कि हम तुमको आज़मा कर रहेंगे कुछ ख़ौफ़ से, भूख से और जान व माल और मेवों के नुक़सान से।

तुमको डर होगा कि अगर हमने अल्लाह की बात मानी तो हमारी आमदनी कम हो जाएगी। फिर बाद में डर ही नहीं बल्कि सच-मुच की तकलीफ़ भी होगी, भूख भी होगी और माल भी बजाए मिलने के और जाता रहेगा। जानें भी जाती दिखाई देंगी और नतीजा भी तुम्हारे ख़िलाफ़ दिखाई देगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ ٥ اَلَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّـآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ٥ (پ۲سورۃالبقرۃ ع۳)

तर्जुमाः- और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो कि जब उनके ऊपर तकलीफ़ आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी के पास लौटकर जाना है।

मौत एक पुल है

मिसाल के तौर पर हज को जाना है। बीवी बच्चे पहले जहाज़ से, भाई बहन दूसरे जहाज़ से, माँ-बाप तीसरे जहाज़ से और ख़ुद चौथे जहाज़ से गए। कोई सदमा नहीं होता। क्योंकि दिल के अन्दर होता है कि सब जहाज़ मक्का मुकर्रमा पहुँच गए हैं। मैं भी पहुँच जाऊँगा।

اَلْمَوْتُ جِسْرٌ يُوْصِلُ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ

तर्जुमाः मौत एक पुल है जो एक दोस्त को दूसरे दोस्त से मिलाता है।

तो हम भी अल्लाह के हैं और अल्लाह की तरफ़ जाना है। जितने भी इस दुनिया से हम से पहले चले गए हैं, अल्लाह के पास जाकर उनसे मुलाक़ातें कर लेंगे।

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ○

(پ۲ سورۃ البقرۃ ع ۳)

तर्जुमाः- ऐसे ही लोगों पर इनायतें हैं अपने रब की और मेहरबानी। और वही लोग सीधी राह पर हैं।

विदेश में हमारी जमाअ़त का क़िस्सा

अब मैं अपने बयान को एक क़िस्सा सुनाकर ख़त्म करता हूँ। सारा बयान तो आप लोगों ने सुन लिया। आख़िरत की बात को आप लोगों ने बार-बार सुना। दुनिया के अन्दर का उतार-चढ़ाव सुना। नेमतों और तकलीफ़ों का इम्तिहान सुना। अब अगर एक क़िस्सा सुना दूँ तो सारी बातों के लिए ज़ेहन हमवार हो जाएगा। अल्लाह से दुआ़ करता हूँ कि अल्लाह तुम्हारा भी वैसा ही क़िस्सा बना दे।

हम लोग गए मुल्क शाम (सीरिया), और हमारे साथ अच्छी-ख़ासी जमाअ़त थी। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहिब की ज़िन्दगी में हमारे विदेश के चार सफ़र हुए हैं। पहला हिजाज़े मुक़द्दस का **1971** ई० में। और दूसरा सफ़र उमरे के लिए और फिर वहाँ से मिस्र का। तीसरा सफ़र उमरे के लिए और फिर वहाँ से शाम का। और चौथा सफ़र मराकश का। ये चार सफ़र बड़े तफ़सीली हैं।

उन दिनों हमारा सफ़र शाम का था और हमारे साथ अच्छी जमाअ़त थी। दमिश्क़, हलब, हिमस वग़ैरह उन जगहों पर हमारी जमाअ़तें फिरीं। पैदल भी फिरीं और सवारियों से भी फिरीं। दमिश्क़ के अन्दर एक जगह हम लोग काम कर रहे थे। हमारे साथ सफ़र में जो लोग चलते थे वे ग़रीब भी थे और अमीर भी थे। डाक्टर भी थे और इन्जीनियर भी, कुली भी थे और मज़दूरी पेशा भी।

मस्जिद के उद्घाटन में शिरकत

हम लोग गश्त कर रहे थे। ऊपर से बर्फ़ पड़ रही थी। लोग मानूस

हो रहे थे। मस्जिदें भर रही थीं। इतने में एक मस्जिद का उद्घाटन वहाँ की हुकूमत की तरफ़ से तय हुआ। उस उद्घाटन के अन्दर कई मुल्कों के मंत्री और राजदूत और मुल्क शाम की सुप्रिम कोर्ट के जज (नयायधीश) और बहुत से मंत्री जमा हुए।

आप लोग जानते हैं कि जब कोई उद्घाटन होता है तो बड़े-बड़े लोग जमा हो जाते हैं और दो-दो मिनट की तक़रीरें करते हैं। और आख़िर में एक रस्सी (फ़ीता) होती है, उसको काट देते हैं। उद्घाटन हो गया।

अब वहाँ एक बड़े रसूख़ वाले शख़्स जो हमारी जमाअत के साथ रह चुके थे, उनके दिल में यह बात आई कि तब्लीग़ की बात सारे मंत्री और राजदूत भी सुनें। क्योंकि उन्हें यह सब सुनने का मौक़ा नहीं मिलता। उनसे मुलाक़ात करना भी मुश्किल होता है। क्योंकि उनके इर्द-गिर्द सुरक्षा बन्दोबस्त होता है। वह हमारे पास भी आए और कहने लगे कि तुम लोग भी हमारी इस मस्जिद के उद्घाटन में आ जाओ। मैंने कहा कि भाई हम लोग तो यहाँ पर काम करेंगे। मस्जिद का उद्घाटन सब मिलकर कर लें तो हम भी कभी उस मस्जिद में आएँगे और गश्त करेंगे। लोगों को जमा करेंगे और काम करेंगे। अभी मत ले जाइये। उन्होंने कहा कि नहीं! तुम्हें अभी चलना है।

आ़म लोगों में काम करना ज़्यादा फ़ायदेमन्द

हमने कहा कि देखो! ऐसे बड़ों के पास जाकर बात को समझाना मुश्किल है। आ़म पब्लिक तो बात को समझ रही है। उनके अन्दर जब दीनदारी आएगी, जब अख़्लाक़ आएँगे, जब वे क़त्ल व ग़ारत्गरी को छोड़ देंगे, चोरी-डकैती को छोड़ देंगे तो इन्शा-अल्लाह ये लीडर भी मुतास्सिर (प्रभावित) होंगे कि ये लोग अच्छे लोग हैं। लोगों को अच्छा बनाते हैं। इसलिए हमें आ़म लोगों के अन्दर काम करना है। लेकिन भाई उनकी ज़िद बढ़ी और हमारा इनकार बढ़ा। आख़िर हम हार गए तो हमने कहाः चलो।

वफ़्दों (प्रतिनिधि मंडलों) से मिलने का नबवी तरीक़ा

फिर हमने कहा कि हमारे ये कम्बल और कपड़े देखो, और उन लोगों को देखो, तो हमारा और उनका कोई जोड़ नहीं बैठेगा। ज़्यादा से ज़्यादा कपड़े ज़रा साफ़ कर लेंगे, टोपी ज़रा साफ़ पहन लेंगे।

दोस्तो! इसमें कोई हर्ज नहीं। वफ़्दों (प्रतिनिधि मंडलों) से मिलने के कपड़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अलग होते थे। ख़ैर! हम वहाँ चले गए। अपना-अपना कम्बल ओढ़कर एक तरफ़ जमाअ़त बैठ गई। उन लोगों की दो-दो मिनट की तक़रीरें सुनीं। उसके बाद उन्होंने कहा कि मौलवी साहिब आप बातें करें। मैंने कहा कि बात तो हो गई। उन्होंने कहा कि नहीं! तुम्हें भी करनी है। और उन्होंने मेरा तआ़रुफ़ (परिचय) लोगों से कराया कि यह हमारे हिन्दुस्तान से आए हुए मेहमान हैं। यह जो क़ाम करते हैं उसका बहुत फ़ायदा हुआ है। कितनी जगहों पर चोरियाँ डकैतियाँ हो रही थीं, वहाँ के लोगों ने छोड़ दिया। क़त्ल व ग़ारत्गरी हो रही थी, लेकिन इनकी बरकत से कितनों की जानें बच गईं। ये जितने लोग हिन्दुस्तान से आए हैं ये हमारे मेहमान हैं। हमें इनकी भी बातें सुननी हैं। तो सबने कहा कि ज़रूर सुनेंगे। हम खड़े हो गए। अब ज़ाहिर है कि ऐसे मौक़ों पर ढाई घन्टे की तक़रीर नहीं हो सकती। यहाँ पर मुख़्तसर बयान किया।

दाना डालने वाले को राज़ी करो

हमने उन लोगों से कहा कि आज पूरी दुनिया के अन्दर जो मेहनत हो रही है वह ख़ानों के बदलने कि मेहनत हो रही है। हर आदमी चाहता है कि मैं नीचे के ख़ाने से ऊपर के ख़ाने में चला जाऊँ। लेकिन ख़ानों के बदलने से ज़िन्दगी नहीं बदलती। जिस ख़ाने में अल्लाह ने रखा है, उस ख़ाने में रहकर दाना डालने वाले को हम राज़ी कर लें तो कामयाबी है। जैसे कबूतर के लिए ख़ाने बने हुए हैं। नीचे से ऊपर तक। अब कबूतर

नीचे से ऊपर के ख़ाने में जाए, यह उसकी कामयाबी नहीं है। उसकी कामयाबी यह है कि दाना डालने वाले को राज़ी करे। अगर नीचे के ख़ाने में होगा तो भी कामयाब होगा। और ऊपर के ख़ाने में होगा तो भी कामयाब होगा। और नीचे के ख़ाने से ऊपर के ख़ाने में तो चला गया मगर दाना डालने वाले को नाराज़ कर दिया तो नीचे के ख़ाने वाले नीचे रहकर कामयाब होंगे और ऊपर के ख़ाने वाले ऊपर जाकर बरबाद होंगे।

दाना डालने वाला अल्लाह है। नीचे के ख़ाने में रहकर अल्लाह को राज़ी करे, और ऊपर के ख़ानों में जाकर भी अल्लाह को राज़ी करे। और ख़ानों के बदलने के लिए मेहनत न करे। आज हर आदमी ख़ानों के बदलने की मेहनत कर रहा है। अगर हवलदार है तो थानेदार बनने की कोशिश कर रहा है। पुलिस वाला कमिश्नर बनने की कोशिश कर रहा है। गवर्नर प्रधान मंत्री बनने की कोशिश कर रहा है। अगर पूरे मुल्क का प्रधान मंत्री बन गया तो अब भी उसके ज़ेहन में यह होता है कि आस-पास के दो-चार मुल्कों को हड़प कर ले। तो इस तरह हर आदमी ख़ाने के बदलने की मेहनत कर रहा है।

और हम जमाअ़त के लोग वह करने की कोशिश करते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल ने बतलाया है कि ख़ानों के बदलने के बजाए जिस ख़ाने में हो, उसमें रहकर दाना डालने वाले को राज़ी करो। और इसके लिए ये छह नम्बर बड़े काम के हैं।

ईमान की ताक़त, नमाज़ की पाबन्दी, तालीम के हल्क़े, अल्लाह का ज़िक्र, कु़रआन की तिलावत, दुआ़ओं का एहतिमाम, एक-दूसरे की ख़ैरख़्वाही करना, इकराम करके आपस में संगठन पैदा करना। और इस दावत के काम को पूरी उम्मत में चालू करना।

एक अच्छी मिसाल

देखो! बनी इस्राईल नीचे के ख़ाने में थे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को लोग नीचे के ख़ाने में समझते थे। और फ़िरऔ़न, हामान, क़ारून ये

सारे के सारे ऊपर के ख़ाने में थे। लेकिन उन्होंने ख़ाने के अन्दर दाना डालने वाले को नाराज़ कर दिया तो ऊपर के ख़ाने के अन्दर रहने के बावजूद बरबाद हो गए। और बनी इस्राईल ने अल्लाह को राज़ी कर लिया तो नीचे के ख़ाने के अन्दर रहकर भी कामयाब हुए।

हमारी दावत यह है कि तुम जौनसे भी ख़ाने में हो, दाना डालने वाले को राज़ी करके कामयाब हो जाओ। इसके लिए हम आप लोगों से चार-चार महीने माँगते हैं।

शुक्रिये का इज़हार

आप लोग भी किसी मौक़े पर हमारे मुल्क में तशरीफ़ लाएँ। आप लोगों के बाप-दादाओं ने आकर हमारे अन्दर कितना दीन फैलाया। और हमारे बाप-दादा बिल्कुल भटके हुए थे। तुम्हारे बाप-दादा ने हमारे बाप-दादा को दीन सिखाया। वरना हम सारे पहले एक से ज़्यादा ख़ुदाओं मानने वाले थे। लेकिन तुम्हारे बाप-दादा ने हमें ईमान पर डाल दिया, हम आपका शुक्रिया अदा करते हैं।

मुल्क शाम में मस्जिद के उद्घाटन के मौक़े पर हमने इस तरह की बातें कहीं और फिर उनसे कहा कि देखो! हमारी जमाअ़तें तुम्हारे मुल्कों में आयेंगी तो जमाअ़तों के बारे में तुम पब्लिक से कह दो कि ये भले लोग हैं, इनका साथ दो।

हमारी जमाअ़त की पहचान

और हमारी जमाअ़त की पहचान और निशानी ये होंगी कि यह जमाअ़त अपना ख़र्च करके आयेगी। पैसा नहीं माँगेगी। कन्धे पर बिस्तर उठाएगी। मस्जिदों के अन्दर ठहरेगी। ये लोग अपना खाना पका कर खाएँगे। और लोगों के घरों पर जाकर कोशिश करके उन्हें मस्जिदों में लाएँगे। उनको नमाज़ सिखाएँगे। दीन सिखाएँगे। उनकी जमाअ़त बनाकर बाहर, निकालेंगे। और चार महीने की तश्कील करेंगे। यह हमारी उस

जमाअ़त की अ़लामत (पहचान) है। अगर तुमको कहीं ख़बर मिल जाए कि हमारे मुल्क में ऐसी जमाअ़त आई है तो ज़रा वहाँ के लोगों से कह देना कि उन लोगों को मस्जिदों में ठहराओ। उन लोगों से काम लो। दीन की बातों को सुनो। और आप लोग भी उन लोगों की बात सुनें।

हमारे ज़ेहन में यह था कि इन लोगों के ज़ेहन साफ़ हो जाएँ ताकि इनके मुल्कों में जमाअ़त जाए तो आसानियाँ हों।

आप लोग भी हिन्दुस्तान आएँ

ख़ैर! उसके बाद उन लोगों ने रस्सी काटी और मस्जिद का उद्घाटन हो गया। उसके बाद नाश्ता आया। हम सब और वे भी बैठ गए। हमारे ज़ेहन में यह बात थी कि आपस में तआ़रुफ़ (परिचय और जान-पहचान) होना चाहिए। उन्होंने तआ़रुफ़ कराया। ख़ूब हंसी-खुशी के साथ बातें हुईं। उनकी तश्कील करने की हमने कोशिश की कि अभी न जा सको तो कभी भी हिन्दुस्तान आना। और अगर हिन्दुस्तान आना हो तो हमारी बंगले वाली मस्जिद में ज़रूर आना। बिल्कुल सीधी-सादी मस्जिद है। पूरी दुनिया से लोग वहाँ आते हैं।

उर्दुन के लिए हमारी रवानगी

दूसरे दिन हमारा सफ़र उर्दुन के लिए था। हम रेल के अन्दर थे और वह बड़ी तेज़ी से अ़म्मान शहर की तरफ़ जा रही थी। उस रेल के अन्दर अ़रब नौजवान भी बैठे हुए थे। क़िमारबाज़ी हो रही थी। कैरम बोर्ड खेल रहे थे। शोर-गुल हो रहा था। जब हम लोग रेल के अन्दर दाख़िल हुए तो चारों तरफ़ से वे हमको घूम-घूमकर देखने लगे। हम भी चाहते थे कि कुछ बात हो। लेकिन यह चाहते थे कि ज़रा मानूस करके बात की जाए। इस बीच उन्होंने हमसे पूछा कि तुम कौन लोग हो? मैंने कहा कि हम लोग हिन्दुस्तानी हैं। उस ज़माने में जबलपुर के अन्दर बहुत ज़बरदस्त फ़साद (दंगा) हुआ था और वे लोग फ़साद के दृश्य टेलीवीज़न पर देखते

थे। उसके मन्ज़रों (दृश्यों) को वे लोग बयान करने लगे कि जबलपुर में यह हुआ वह हुआ। यह सियासी बात शुरू कर दी।

नेहरू जी कैसे आदमी हैं?

फिर उन नौजवानों में से एक ने कहा कि मैं आप से एक सवाल करना चाहता हूँ। मैंने कहा करो! उन्होंने कहा कि नेहरू कैसे आदमी हैं? (उस वक़्त हमारे मुल्क के प्रधान मंत्री नेहरू जी थे) इस क़िस्म की बात का जवाब देना हमारे लिए मुनासिब नहीं था। और फिर अपने मुल्क के प्रधान मंत्री के बारे में हम कोई ऐसी बात कहें जो उनके ख़िलाफ़ पड़े, यह भी ठीक नहीं। फिर हमने सोचा कि हमें तो सियासी क़िस्म की कोई बात करना नहीं, मुरीद अपने पीर की करे, मुजाविर अपने मदीने की करे, हमें तो बस तब्लीग़ की करनी है। तो हमने कहा कि एक इनसान हैं। उनके दो कान हैं। दो आँखें हैं। दो होंठ और एक ज़बान है। दो हाथ हैं। दो पैर हैं और एक दिल है। और अल्लाह ने हर इनसान को ये चीज़ें दी हैं। और इसका इस्तेमाल यूँ है। उसके बाद डेढ़ घन्टा तब्लीग़ की लाईन से बयान किया। वे लोग सुनते रहे। फिर हमने उनसे पूछा कि क्या आप लोग इस काम को करेंगे। उन लोगों ने कहा कि हम तैयार हैं। मैंने कहा कि सिर्फ़ चार महीने आप लोगों से माँग रहा हूँ। हम उर्दुन जा रहे हैं लेकिन अभी फ़िलहाल अ़म्मान की फ़लाँ मस्जिद में उतरेंगे। क्या तुम लोग वहाँ पहुँचकर अ़म्मान की फ़लाँ मस्जिद के अन्दर आओगे? उन लोगों ने कहा कि ज़रूर आएँगे।

ट्रेन गोया चलती-फिरती मस्जिद बन गई

अब वे लोग सियासत की बात भूल गए। उनकी समझ में यह बात आ गई कि ये लोग जो काम कर रहे हैं यही ठीक है। नमाज़ का वक़्त हुआ, नमाज़ पढ़ी, और उन लोगों ने भी पढ़ी। तालीम के हल्के में भी शिरकत की। ज़िक्र के हल्के में भी शरीक हुए। ट्रेन गोया चलती-फिरती

मस्जिद बन गई। फिर हम लोग अपने दूसरे कामों के लिए मश्विरे में शरीक हो गए कि आगे क्या करना है और कैसे करना है, और वे नौजवान अख़बार पढ़ने लगे।

मुल्के शाम में इन्क़िलाब आ गया

मैंने उनसे पूछा कि अख़बार में कोई ख़ास ख़बर है? उन्होंने कहा कि "है" मैंने पूछा "क्या ख़बर है?" उन्होंने कहा "मुल्के शाम के अन्दर इन्क़िलाब आ गया" मैंने कहा इन्क़िलाब? उन्होंने कहा कि "हाँ!" मैंने कहा कि "किसकी हुकूमत बनी?" उन्होंने कहा "फ़लाँ फ़लाँ की" मैंने पूछा और क्या-क्या हुआ? उन्होंने कहा कि फ़लाँ-फ़लाँ लोग जेल के अन्दर दाख़िल कर दिए गए हैं। और ये वे लोग थे जो मस्जिद के उद्घाटन में थे और हमारे साथ खाने में बैठे थे। और जिनसे हमने कहा था कि असल मेहनत ख़ाने के बदलने की नहीं है बल्कि जिस ख़ाने में हैं उसमें दाना डालने वाले को राज़ी कर लिया जाए। तो मैंने अपने साथियों से कहा कि देखो! उन लोगों को याद आ गया होगा कि हम ऊपर के ख़ाने में थे और आज हमको अल्लाह ने नीचे के ख़ाने में कर दिया। अल्लाह करे कि उनकी समझ में हमारी बात आ गई हो और वे अल्लाह को राज़ी करने वाले बन जाएँ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारा काम ऐसा है जो हर जगह हो सकता है लेकिन इसको सीखना पड़ेगा। करना तो पूरी ज़िन्दगी है और सारी उम्मत को यह काम करना है।

एक दम से उछलेगा तो गिर पड़ेगा

लेकिन हज़रत मौलाना इलियास साहिब हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहिब और हज़रत जी मौलाना इनामुल्-हसन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि इस काम को पूरी ज़िन्दगी करना है और इसे पूरी उम्मत करे काम तो यही है। लेकिन धीमे-धीमे करना चाहिए एक दम से उछलेगा तो

गिर पड़ेगा। और सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ेगा तो मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा। पहली सीढ़ी चार महीना है, इसमें आदमी हिक्मत सीखेगा और तब वह हिक्मत के साथ काम करेगा।

घर में दीन की फ़िज़ा कैसे बने?

हमारे बहुत से नौजवान भाई जमाअ़त में फिरे और दीनदारी आ गई। घर पर चले गए और घर पर जाकर दुकान पर बैठे। ख़ूब कमाकर दिया। बाप ख़ुश, माँ भी ख़ुश, बीवी भी ख़ुश। सारे घर के लोग ख़ुश। फिर उसने कहा अब्बा जान! मैं दुकान चलाऊँगा। भाई जान को एक चिल्ले के लिए जमाअ़त में भेज दें। भाई जान तैयार हो गए और जमाअ़त में चले गए। अब यह दुकान भी चला रहा है और घर का निज़ाम भी चला रहा है। और महीने के तीन दिन भी दे रहा है। गश्त, तालीम वग़ैरह भी कर रहा है और घर वाले ख़ुश हैं।

फिर कहा कि अब्बा जान! मेरा जी चाहता है कि मेरी अम्मी भाई जान के साथ तीन दिन के लिए औ़रतों की जमाअ़त के साथ चली जाएँ। अम्मी का ज़ेहन बना। फिर कहा कि अब्बा जान! मेरा जी चाह रहा है कि आप भी चार महीने दे दें। हम दुकान वग़ैरह चलाते रहेंगे। अब्बू भी चार महीने के लिए चले गए। अब सारा घर दीन की दावत में लग गया। दीन का माहौल हो गया। अब आधे लोग जमाअ़त में जाते हैं और आधे लोग घर पर रहते हैं। घर के काम करते हैं, कारोबार के निज़ाम को चलाते हैं।

अगर हमने भी ऐसा बनने की कोशिश की तो हमारे बड़े बूढ़े इन्शा-अल्लाह नौजवानों को नहीं रोकेंगे। और अगर वे रोकेंगे तो हम उन बूढ़ों की ख़ुशामद करेंगे।

अपना वाक़िआ़

जो शख़्स खड़ा हो गया और पुख़्ता इरादा कर लिया तो वह इन्शा-अल्लाह चार महीने पूरे कर लेगा। ऐसे कई क़िस्से हुए हैं। मैं बम्बई

के अन्दर इमामत किया करता था। एक जमाअ़त दिल्ली से पैदल चलकर बम्बई हमारी मस्जिद में आई। एक-एक दिन के लिए मुझे कई मर्तबा निकाला, और अमीरे जमाअ़त ने देखा कि मेरे ऊपर बड़ा असर पड़ा।

अमीर साहिब बिल्कुल बे-पढ़े थे। लेकिन एक हज़ार किलो मीटर पैदल चलने का मेरी तबीयत के ऊपर बड़ा असर पड़ा था। सारे लोगों ने देखा कि मौलवी पर बड़ा असर हुआ है। लेकिन उन लोगों ने बड़ी बेहतरीन तदबीर से काम लिया और मुझसे चार महीने नहीं माँगे और कहा कि हफ़्ते वाले इज्तिमा में आया करो। हम वहाँ पर जाते थे।

एक दिन एक ग्रेजुऐट का बयान था। जो दो साल हिजाज़ मुक़द्दस (सऊदी अ़रब) में फिरकर आए थे। उनके बयान का मुझ पर इतना असर पड़ा कि उन्होंने चार महीने माँगे तो मैंने चार महीने उसी मस्जिद में खड़े होकर लिखवा दिये। घर गया तो घर वाले नाराज़, मस्जिद के मुतवल्ली नाराज़ और मक्तब (मदरसे) वाले नाराज़। बच्चों के माँ-बाप भी नाराज़। चालीस रुपये हमको इमामत के मिलते थे। और चालीस रुपया मक्तब के मिलते थे। ऊपर से दस हज़ार का क़र्ज़ा मुझ पर था। वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो चुका था। सारे घर वाले रोने लगे। लेकिन हमारे तब्लीग़ के जो दोस्त होते हैं उनको बहुत ग़म होता है, ख़ूब रो-रोकर दुआ़एँ माँगीं और मेरे पास आकर कहते रहे कि चलना है। हमने भी टिकट ख़रीद लिया। तीन सौ रुपये क़र्ज़ लिये और चले गए। बम्बई सैन्ट्रल स्टेशन पर हमारे रिश्तेदार रोकने आए और वे रो रहे थे। कहने लगे कि घर का पूरा ख़र्चा और ऊपर से इतना क़र्ज़ा है, क्या होगा? मैं भी परेशान हो गया।

चार महीने आज तक पूरे नहीं हुए

एक तब्लीग़ का काम करने वाला मुझको किनारे ले गया और कहा कि तुम यह समझ रहे हो कि तुम दीन का काम करोगे तो उजड़ जाओगे। अरे तुम चमकोगे। तुम्हरा घर चमकेगा। तुम्हारा मुल्क चमकेगा। यह तुम्हारा काम है जब ज़ोर से दर्द भरे लहजे में कहा तो मैं पानी-पानी हो

गया। मैंने कहा कि अच्छा मैं चलता हूँ। जेब में टिकट था। पैसे भी थे। मेरे रोकने वाले रिश्तेदार रोने लगे और कहते रहे उतर जाओ, उतर जाओ। लेकिन मैं नहीं उतरा और चला गया। और वे चार महीने आज तक पूरे नहीं हुए।

काश! मेरे चार महीने मौत तक पूरे न हों

और मैं तुम से दुआ की दरख़्वास्त करता हूँ कि वे चार महीने मौत तक पूरे न हों। और कोई काम रुका भी नहीं। सारे कामों को अल्लाह ने कर दिया। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप भी चार महीने और आठ महीने के लिए खड़े होकर अपने-अपने नाम लिखवा दें। अल्लाह तआला हम सब को दीन का काम करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमायें और हमारा दीन के रास्ते में निकलना आसान फ़रमायें। आमीन।

तक़रीर (2)

आज हम लोगों में इस फ़िज़ा के न होने की बिना पर अगर किसी के घर पर जाकर पूछा कि "कहाँ हैं?" उन्होंने कहा कि बाज़ार में। "कब आयेंगे?" जवाब मिलेगा कि पता नहीं कब आयेंगे। इसलिये कि बाज़ार के तक़ाज़े में न मालूम कहाँ से कहाँ निकल जायें। तो बाज़ार जाने वालों के बारे में पता नहीं कि कब अयेंगे।

और अगर घर वाले कहें कि वह तो मस्जिद में गये हैं। कब आयेंगे? तो कहेंगे कि अभी आयेंगे। मस्जिद से तो फ़ौरन ही आ जाते हैं।

यहाँ कितना उलटा मामला है। वहाँ तो यह मामला था कि बाज़ार जाने के बाद जल्द ही आ जायेंगे और मस्जिद जाने के बाद पता नहीं। और हम लोगों का मामला यह है कि बाज़ार जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे और मस्जिद में गये तो फ़ौरन ही आ जायेंगे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ o

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ نَحۡمَدُہٗ وَنَسۡتَعِیۡنُہٗ وَنَسۡتَغۡفِرُہٗ وَنُؤۡمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیۡہِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنۡ شُرُوۡرِ اَنۡفُسِنَا وَمِنۡ سَیِّئَاتِ اَعۡمَالِنَا، مَنۡ یَّھۡدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنۡ یُّضۡلِلۡہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشۡھَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَنَشۡھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَ نَبِیَّنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَرَسُوۡلُہٗ، صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَعَلٰۤی اٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسۡلِیۡمًا کَثِیۡرًا کَثِیۡرًا. اَمَّابَعۡدُ!

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो!

अल्लाह ने इस दुनिया के अन्दर इनसान को पैदा किया और उसकी ताक़त व हिम्मत के मुताबिक़ सलाहियत उसके अन्दर रखी। और ज़रूरत के अनुसार मेहनत का माद्दा भी रखा। अब इस मेहनत के ज़रिये इनसान अपनी ज़ात को क़ीमती कैसे बनाए? अगर इनसान इस मेहनत को अपनी ज़ात पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बताए हुए तरीक़े पर ख़र्च करेगा तो इससे इसकी ज़ात क़ीमती बनेगी। और अगर यह अपनी मेहनत मख़्लूक़ के ऊपर लगा देगा तो बे-क़ीमत हो जाएगा।

अपनी ज़ात को क़ीमती बनाने का तरीक़ा

अपनी मेहनत को अपनी ज़ात पर सही तरीक़े पर लगाना, यह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रिये और आसमानी किताबों के ज़रिये मालूम होगा। और हर ज़माने में नबियों ने यह काम किया है। अब चूँकि नबियों का आना बन्द हो गया तो यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत के हवाले किया गया। यानी उम्मत नबियों वाला काम करे, और ऐसी फ़िज़ा बनाए कि जिस फ़िज़ा के अन्दर आदमी क़ीमती बन सके।

अपनी ज़ात पर मेहनत के फल

इनसान के क़ीमती बनने के लिए एक तरफ़ तो ईमान हो और दूसरी तरफ़ नेक आमाल हों, तब यह इनसान क़ीमती बनेगा। फिर अल्लाह तआला इसके दुनिया के हालात भी बनाएँगे और आख़िरत के भी हालात बनाएँगे। हर हाल में अल्लाह इसे कामयाब करेंगे।

नेमतों के अन्दर भी कामयाब होगा और तकलीफ़ों के अन्दर भी।

तन्दुरुस्ती के अन्दर भी और बीमारी के अन्दर भी।

मालदारी के अन्दर भी कामयाब, तंगदस्ती के अन्दर भी कामयाब।

कच्चे मकान के होगा तो कामयाब, पक्के मकान में होगा तो कामयाब।

जहाँ होगा कामयाब होगा। जब क़ब्र में जाएगा तो अल्लाह पाक अपने फ़ज़्ल व करम से वहाँ भी कामयाब करेंगे, और क़ियामत के दिन भी। बशर्ते कि नबियों के बताए हुए तरीक़े पर अच्छा बन जाए।

हर हाल में नाकाम

और अगर यह बुराईयाँ करता रहा। नबियों वाले तरीक़े पर न चला तो फिर यह इनसान बे-क़ीमत बनेगा। और बे-क़ीमत बनने के बाद यह इनसान नाकाम होगा। और हर हाल में नाकाम होगा। नेमतों में हो या तकलीफ़ों में हो, मालदार हो या तंगदस्त, बीमार हो या तन्दुरुस्त, हर हाल में यह नाकाम होगा। दुनिया के अन्दर भी और आख़िरत के अन्दर भी।

दीन की फ़िज़ा कैसे बनेगी?

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बताया हुआ तरीक़ा ऐसा है कि अगर कोई इसे अपनाये तो एक शख़्स तन्हा अच्छा बने ऐसा नहीं होगा, बल्कि दुनिया भर के लोग नेक बनेंगे। और सिर्फ़ नेक ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोग नेक बनाने वाले आदमी तैयार करेंगे। जब ये मेहनत करेंगे तो हर तरफ़ इसकी फ़िज़ा बनेगी। जैसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में फ़िज़ा बनी। जहाँ-जहाँ सहाबा-ए-किराम

रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की जमाअ़तें गईं तो वहाँ-वहाँ ये सारी भलाईयाँ फैलती रहीं। और भलाईयों के फैलने पर अल्लाह पाक की मदद आती रही और बुराईयाँ मिटती रहीं। और बुराईयों वाले दबते रहे। बुराईयों वाले छुपते रहे।

बुराईयों वाले नेकियों पर आते रहे या मलियामेट हो गए।

अब वह काम कि जिसके ज़रिये इनसान भला बने और भलाई दुनिया में फैलकर अमन व अमान आए और आसमान से बरकतें उतरें, ज़मीन से बरकतें ज़ाहिर हों, इनसान के अन्दर जोड़ हो, मुहब्बतें पैदा हों। इसके लिए चन्द काम करने पड़ेंगे।

ईमान व यक़ीन कैसे ठीक होगा?

अव्वल ईमान की लाईन को ठीक करना होगा। ईमान को सात लाईन से ठीक करना है। और आमाल को चार लाईन से टीक करना है। फिर दुनिया और आख़िरत के अन्दर कामयाबी है।

अब ईमान की सात लाईन को सही बनाना वह यह है:-

1. **आमन्तु बिल्लाहि** .... अल्लाह का यक़ीन हो।
2. **व मलाइ-कतिही** .... उसके फ़रिश्तों का यक़ीन हो।
3. **व कुतुबिही** .... आसमानी किताबों का यक़ीन हो।
4. **व रुसुलिही** .... अल्लाह के रसूलों का यक़ीन हो।
5. **वल्-यौमिल् आख़िरि** .... क़ियामत का यक़ीन हो।
6. **वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही** .... तक़दीर पर यक़ीन हो।
7. **वल्-बअ़्सि बअ़्दल् मौति** .... मरने के बाद ज़िन्दा होने पर यक़ीन हो।

आगे में थोड़ी-थोड़ी तफ़सील इसकी अ़र्ज़ करूँगा। अल्लाह पाक हमें इस यक़ीन के पैदा करने की कोशिश की तौफ़ीक़ दे।

पूरी दुनिया के लिए अ़मली दावत

अब चार लाईन से आमाल ठीक करने होंगे। अव्वल इबादतों की लाईन ठीक करनी होगी। इस लाईन के अन्दर नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज, ये चार इबादतें हैं।

दूसरी लाईन, मुआ़शरत (सामाजिक ज़िन्दगी और रहन-सहन) ठीक करनी होगी।

तीसरे मामलात ठीक करने होंगे।

चौथे अख़्लाक़ ठीक करना होगा।

तो इबादात की जो लाईन बताई गई उस पर मेहनत करनी होगी। फिर समाजी ज़िन्दगी, रहन-सहन और घरेलू ज़िन्दगी, नबियों के तरीक़े पर आ जाएगी। और फिर मामलाती ज़िन्दगी और कारोबारी ज़िन्दगी भी नबवी तरीक़े पर आ जाए। इस सब के साथ अख़्लाक़ी मेयार आला हो जाए और हमारे अख़्लाक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर हो जाएँ।

चार लाईन ख़ूब ज़ेहन में बैठा लोः-

इबादात की लाईन

समाजी ज़िन्दगी की लाईन

मामलात की लाईन

और अख़्लाक़ की लाईन।

अगर ये ठीक हो गईं तो ख़ूब जान लो कि यह पूरे आ़लम के लिए अ़मली तौर पर दावत होगी ...... लेकिन अ़मल के लिए क़ौल की भी दावत ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर इस वक़्त मैं बोल रहा हूँ और आप सुन रहे हैं। तो इसके अन्दर ज़बान से बोलना भी होगा और अ़मली तौर पर वह चीज़ करनी भी होगी।

अ़मल के साथ इख़्लास की ज़रूरत

अब अ़मल के साथ-साथ एक चीज़ और होनी चाहिए और वह यह कि अन्दर की कैफ़ियत बनी हुई हो। ज़ाहिर में तो अ़मल हो और अन्दर से ख़ाली हो तो वह अ़मल भी काम नहीं आता। मिसाल के तौर पर शहीद है, सख़ी है, क़ारी है। उन्होंने अ़मल किया लेकिन अन्दर शोहरत का जज़्बा था। तो इस करने के बावजूद जहन्नम के अन्दर जलेंगे। तो एक तरफ़ क़ौल हो, एक तरफ़ अ़मल हो और एक तरफ़ अन्दर की कैफ़ियत भी बनी हुई हो।

नबी की मेहनत के तीन विषय

इन्हीं तीन चीज़ों दावत, तालीम और तज़किये (यानी अन्दर की सफ़ाई) के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए दुआ़ की कि वह उम्मत की तरबियत इन्हीं तीन चीज़ों के साथ करें:-

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِکَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ، اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٥ (پ۱،سورۃ البقرۃ،ع۱۵)

तर्जुमा:- ऐ परवर्दिगार! भेज उनमें एक रसूल उन्हीं में का कि पढ़े उन पर तेरी आयतें और सिखा दे उनको किताब और तह की बातें और पाक करे उनको, बेशक तू ही है बहुत ज़बरदस्त, बड़ी हिक्मत वाला।

"यत्लू अ़लैहिम् आयाति-क" ...... यानी एक तरफ़ दावत होगी।

"व युअ़ल्लिमुहुमुल् किता-ब" .... यानी तालीम होगी।

"व युज़क्कीहिम्" .... यानी अन्दर की कैफ़ियत ठीक करेगा।

दावत के ज़रिये यक़ीन बनेगा। यक़ीन बनने के बाद फिर आदमी अ़मल करना चाहेगा। और अ़मल इल्म के बग़ैर सही नहीं होगा। फिर इल्म व अ़मल के सही होने का दारोमदार अन्दर की कैफ़ियत पर है, वह भी ठीक होनी चाहिए।

अन्दर इख़्लास होना चाहिए। अन्दर 'एहसान की सिफ़त' (यानी हर वक़्त यह तसव्वुर कि मेरे हर काम को अल्लाह तआ़ला देख रहे हैं) होनी चाहिए। अन्दर अल्लाह पर भरोसा और तवक्कुल होना चाहिए।

बदकारी से बचता हो, तकब्बुर से बचता हो, दुनिया के लालच और खुदग़र्ज़ी से बचता हो। दुनिया और माल की मुहब्बत उसमें न हो। तो ये तीन काम आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम करें, इसके लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ़ माँगी थी।

जिहाद की हक़ीक़त अल्लाह की तरफ़ बुलाना है

चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब मेहनत का मैदान तरतीब दिया तो उसमें ये तीनों बातें थीं। यानी दावत, तालीम और तज़किया (बातिन की सफ़ाई)। एक तरफ़ तो दावत का ख़ूब ज़ोर था। जितनी जमाअ़तें सहाबा की बाहर जाती थीं और फिर जितने जिहाद में जाते थे, तो उस जिहाद की हक़ीक़त भी तो दावत ही थी। लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना। फिर अगर न मानें तो उनसे कहा जाता कि जिज़या (सुरक्षा के बदले लिया जाने वाला शुल्क) देकर समझौता कर लो। जिज़या देकर समझौता करेंगे तो वे रईयत बनेंगे। और कलिमा व ईमान वाले उनके पास जाकर बसेंगे। मस्जिदें बनायेंगे। मस्जिद वाले आमाल जारी करेंगे। वहाँ जाकर कारोबार करेंगे। और कारोबार को इस्लामी तरीक़े पर करके बताएँगे। वहाँ जाकर अपना घर भी बनाएँगे। और इस तरह घर के इस्लामी माहौल का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करेंगे।

एक जरफ़ मस्जिद और मस्जिद वाले आमाल हैं।

एक तरफ़ कारोबार और पाक इस्लामी कारोबारी तरीक़ा है।

एक तरफ़ घर और इस्लामी समाजी ज़िन्दगी गुज़ारने का नमूना है।

यह सब कुछ इस्लामी तरीक़े पर उनके सामने आएगा। अब जो यहूदी और ईसाई हैं, उनके गिरजाओं को नहीं तोड़ेंगे। उनके पादरियों और उलेमा को नहीं मारेंगे। उनके बीवी-बच्चों पर हाथ नहीं डालेंगे। सब

के सब इस मन्ज़र (दृश्य) को भी देखेंगे। इस तरह जब उनके सामने अ़मली तौर पर दीन आ जाएगा तो इन्शा-अल्लाह ईमान के अन्दर क़ौमों की क़ौमें आती चली जाएँगी।

तो इस जिहाद का असल मक़सद था अल्लाह की तरफ़ बुलाना और उसकी तरफ़ दावत देना। पहला काम तो क़ौली (मौखिक) दावत, दूसरा काम अ़मली दावत, तीसरे जिज़्ये के साथ समझौता या फिर मुक़ाबला और लड़ाई। यह तफ़सीली और अ़मली दावत है। जिस क़बीले और ख़ानदान में सहाबा दावत देने के लिए जाते तो उनसे कहतेः-

اَسْلِمْ تَسْلَمْ

यानी खुदा की ताक़त को तस्लीम करो, तो तुम मज़े में रहोगे।

यह दावत मुख़्तसर और क़ौली है, अगर उसने यह क़बूल कर लिया। "**ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि**" अगर उसने पढ़ लिया और इसको मान लिया तो अब उससे कोई लड़ाई और झगड़ा नहीं। फिर एक जमाअ़त सहाबा किराम की मदीना मुनव्वरा में दीन सीखने और सिखाने का काम करती, और उसमें यही तीन बातें सीखते-सिखाते थे।

दावत, तालीम तज़किया (बातिन की सफ़ाई यानी अपने अख़्लाक़ और दीनी व समाजी ज़िन्दगी का सुधार करना और खुद को बुराईयों से पाक करना)।

ईमान की बहार

एक तरफ़ मस्जिदे नबवी आबाद है। एक तरफ़ मदीने का बाज़ार भी आबाद है तो घर भी आबाद। मस्जिद के अन्दर सहाबा ईमान की बातें सीखते हैं। और जब बाज़ार में जाते हैं तो ईमानियात की लाईन, आमाल की लाईन की रियायत करते हुए चलते हैं कि अगर हम बाज़ारों के अन्दर ग़लत करेंगे तो हमारी नमाज़ क़बूल नहीं होगी। हमारे हज के अन्दर ख़लल पड़ेगा। इसी तरह जब घरों पर जाते थे तो मस्जिदों की रूहानियत कारोबार, बाज़ार और घरों के अन्दर भी थी।

मस्जिद को आबाद कैसे किया जाये?

आज भी यह माहौल बन सकेगा जबकि मस्जिद को आमाल से आबाद किया जाये। ईमानियात की लाईन से भी और आमाल की लाईन से भी। मस्जिद के अन्दर तालीम के हल्क़े, अल्लाह पाक का ज़िक्र, कुरआन पाक की तिलावत, नमाज़ों का पढ़ना, दुआओं का माँगना, मश्विरों का करना, बाहर से आने वाली जमाअ़तों की ख़ैर-ख़बर लेना, जमाअ़तों को बाहर भेजना, इसके बारे में सोचना कि कौनसी जमाअ़त को किस तरफ़ भेजा जाये और वहाँ जाकर वह कैसे काम करे। बाहर की कोई जमाअ़त कमज़ोर पड़ गई तो उसकी मदद के लिये कोई जमाअ़त भेजना। ये सारे काम मस्जिद में बराबर होते रहें, इससे मस्जिदें ज़िन्दा होंगी। मस्जिद के बाहर तक मस्जिद की फ़िज़ा बनेगी।

मस्जिद की आबादी के लिये सहाबा किराम का तरीक़ा

सहाबा किराम का मजमा आधा दिन मस्जिद में वक़्त गुज़ारता था और आधा दिन कारोबार में गुज़ारता था। आधी रात मस्जिद के अन्दर गुज़ारता था और आधी रात घर के अन्दर। सहाबा का एक मजमा सुबह को मस्जिद में आता तो एक मजमा कारोबार के अन्दर बाज़ार में रहता। अब बाज़ार वाला जो मजमा था वह दोपहर को मस्जिद के अन्दर चला गया। इसी तरह रात के भी दो हिस्से होते गये थे। अब घर देखो तो वह आबादं, मस्जिद देखो तो वह आबाद, कारोबार देखो तो वह आबाद। लेकिन एक बात यह थी कि अगर दीन का तक़ाज़ा आ गया तो नमाज़ के वक़्त सब मस्जिद में जमा हो जाते थे। नमाज़ के वक़्त कोई घर पर नहीं होता था। अब मस्जिद में आ जाने के बाद जो दीन का तक़ाज़ा है उसे पूरा करेंगे। उसके बाद ही मस्जिद वाले बाज़ार में कारोबार के लिये जायेंगे।

सहाबा जैसा मस्जिद से ताल्लुक़ होना चाहिये

लेकिन बाज़ मर्तबा ऐसा हुआ कि तक़ाज़ा बाहर जाने के लिये आ गया। अब जिसने सुबह से शाम तक का वक़्त मस्जिद में गुज़ारा उन्हीं के बारे में मश्विरा हो गया कि उन्हें बाहर जाना है। सहाबा को ऐसी आ़दत पड़ी हुई थी कि वहीं से बाहर चले जाते थे। बाज़ मर्तबा घर जाने का मौक़ा मिलता ही नहीं था। तो जो आदमी मस्जिद में आ जाता तो यह नहीं मालूम होता था कि वह बाज़ार में या घर में वापस आयेगा या दीन के किसी तक़ाज़े पर चला जायेगा।

अगर किसी के घर कोई जाये और पूछे मिसाल के तौर पर फ़्लाँ सहाबी घर पर हैं?

घर वालों ने कहा "वह नहीं हैं" फिर पूछाः "कहाँ हैं?" घर वालों ने कहाः "मस्जिद के अन्दर हैं" फिर पूछाः "कब आयेंगे?" तो जवाब मिलता था कि "मस्जिद जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे" आयेंगे भी या वहीं से किसी दीन के तक़ाज़े पर जमाअ़त में चले जायेंगे। अल्लाहु अकबर।

अब दूसरे घर पर गये। पूछा फ़्लाँ सहाबी घर पर हैं? जवाब मिला "नहीं" "कहाँ गये?" जवाब मिला "बाज़ार गये" "बाज़ार से वापस कब आयेंगे?" जवाब मिला "अभी आयेंगे"।

तो बाज़ार वालों के बारे में यह ज़ेहन था कि अभी आयेंगे, क्योंकि वे बाज़ार में बिना ज़रूरत नहीं ठहरते थे। मस्जिद में जो गया उसके बारे में यह था कि पता नहीं कब आयेंगे। क्योंकि फ़िज़ा ही यह बनी हुई थी।

मस्जिद में ताले क्यों लगते हैं?

और आज हम लोगों में इस फ़िज़ा के न होने की बिना पर अगर किसी के घर पर जाकर पूछा कि "कहाँ हैं?" उन्होंने कहा कि बाज़ार में। "कब आयेंगे?" जवाब मिलेगा कि पता नहीं कब आयेंगे। इसलिये कि

बाज़ार के तक़ाज़े में न मालूम कहाँ से कहाँ निकल जायें। तो बाज़ार जाने वालों के बारे में पता नहीं कि कब आयेंगे।

और अगर घर वाले कहें कि वह तो मस्जिद में गये हैं। कब आयेंगे? तो कहेंगे कि अभी आयेंगे। मस्जिद से तो फ़ौरन ही आ जाते हैं।

यहाँ कितना उलटा मामला है। वहाँ तो यह मामला था कि बाज़ार जाने के बाद जल्द ही आ जायेंगे और मस्जिद जाने के बाद पता नहीं। और हम लोगों का मामला यह है कि बाज़ार जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे और मस्जिद में गये तो फ़ौरन ही आ जायेंगे। इसी लिये मस्जिदों में दिन में ताले लगते हैं, क्योंकि मस्जिदें आबाद ही नहीं।

हमारी मेहनत के ध्रुव

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! मैं अ़र्ज़ कर रहा था कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यहाँ तीन बातें थीं। दावत, तालीम, तज़किया। इन्हीं तीन बातों की तरबियत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की हुई। इस वक़्त में जो हमारा काम है, उसके अन्दर भी यही बातें हैं। इन्हीं बातों को लेकर हमें चलना है। एक तरफ़ दावत, एक तरफ़ तालीम, एक तरफ़ तज़किया।

तज़किया के मायने

तज़किया के मायने अन्दर की सफ़ाई। अन्दर की सफ़ाई होनी चाहिए। अन्दर की सफ़ाई दिखाई नहीं देती। अन्दर का इख़्लास दिखाई नहीं देगा। अन्दर का तवक्कुल दिखाई नहीं देगा। लेकिन इसके ऊपर तो हाथ-पैर मारने ही होंगे। अलबत्ता इसकी एक निशानी दिखाई देने वाली है। जिसके दिल के अन्दर हिदायत का नूर उतर चुका होगा, उसको ईमान और दीनी आमाल के अन्दर कामयाबी दिखाई देगी। अब अगर आमाल का मुक़ाबला चीज़ों और ख़्वाहिशों से पड़ जाये तो फिर आमाल के मुक़ाबले में वह चीज़ों को क़ुरबान कर देगा।

और अगर दिल के अन्दर अंधेरा उतरा हुआ है तो उसको चीज़ों में कामयाबी दिखाई देगी। अगर मुक़ाबला चीज़ों का आमाल से पड़ जाये तो वह आमाल को क़ुरबान कर देगा और चीज़ों को ले लेगा। मिसाल के तौर पर अगर सच बोलता है तो पचास हज़ार रुपये की वह चीज़ बिकती है। और अगर सच को छोड़ता है तो पचपन हज़ार की बिकती है। तो जिसके दिल के अन्दर हिदायत का नूर और ईमान का नूर होगा वह सच वाला अ़मल करेगा और पाँच हज़ार को क़ुरबान कर देगा। और जिसके दिल के अन्दर ज़लालत और गुमराही का अंधेरा होगा तो वह सच को छोड़ देगा और पाँच हज़ार को ले लेगा।

अपना ऐब ज़ाहिर करने की ज़रूरत नहीं

अब इससे अपनी पूरी ज़िन्दगी का हिसाब और अन्दाज़ा लगाया जाये कि हम लोगों का ईमान कमज़ोर है या कितना ज़्यादा मज़बूत है। आमाल का जब चीज़ों से मुक़ाबला पड़ता है तो हम लोग चीज़ों की तरफ़ दौड़ते हैं या आमाल की तरफ़?

यह बात ढकी-छुपी हुई है, इसको ढकी-छुपी ही रखना है। अल्लाह ने जब पर्दा डाला है तो हमें पर्दा हटाना नहीं है। अल्लाह ने जब सत्तारी का मामला किया है तो किसी के ऐब को ज़ाहिर नहीं करना। अपने अन्दर कोई ख़राबी है तो उसका चर्चा लोगों के अन्दर करने की ज़रूरत नहीं है। ख़ुद अपनी ख़राबी के दूर करने की फ़िक्र करे। जब अल्लाह ने हमारे ऐब पर पर्दा डाला है तो अपना ऐब भी दूसरे के सामने ज़ाहिर न करो। लेकिन ऐब ठीक हो जाये अन्दर ही अन्दर इसकी कोशिश करे। इसके लिये कोशिश करना हमारा और आपका आपस का बार-बार मुज़ाकरा, बाहर जमाअ़तों में निकलना, मकान पर जाकर दावत का काम करना है। इससे माहौल बनेगा। और जब माहौल के अन्दर रहेगा तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि धीरे-धीरे अन्दर की ख़राबी साफ़ होती चली जायेगी।

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब

ईमान की वे सात लाईन जिसके अन्दर सबसे पहली चीज़ "आमन्तु बिल्लाहि" है यानी ईमान लाया मैं अल्लाह पर। इसका मतलब यह है कि सारी ज़ातों का यक़ीन निकाल दे और अल्लाह की ज़ात का यक़ीन लाये। हमेशा इसमें मुस्बत (सकारात्मक) और मनफ़ी (नकारात्मक) पहलू होगा। सारी ज़ातों का यक़ीन निकालना है, और अल्लाह की ज़ात का यक़ीन लाना है। इसका मतलब ज़मीन से आसमान तक, पूरब से पश्चिम तक, दक्षिण से उत्तर तक आसमान के ऊपर ज़मीन के नीचे जितनी भी मख़्लूक़ हैं, उनसे अल्लाह के बग़ैर कुछ नहीं होता। और अल्लाह पाक उन सारी मख़्लूक़ के बग़ैर सब कुछ करते हैं। अल्लाह पाक किसी काम के करने में किसी मख़्लूक़ के मोहताज नहीं हैं।

जितने हालात आते हैं वे अल्लाह पाक लाते हैं। इज़्ज़त और ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है। कामयाबी और नाकामी, इत्मीनान और परेशानी अल्लाह पाक के हाथ में है।

असबाब को इख़्तियार करना, तौहीद के ख़िलाफ़ नहीं

जितने भी सामूहिक हालात मुल्कों, शहरों और ख़ानदानों और कारोबार पर आते हैं, ये सारे हालात अल्लाह पाक के हाथ में हैं। दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों से कुछ नहीं होता। करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। तन्दुरुस्ती अल्लाह देते हैं। दवा के अन्दर तन्दुरुस्ती नहीं है। दवा के अन्दर तन्दुरुस्ती के असरात अल्लाह डालते हैं तब मिलती है। और अगर तन्दुरुस्ती के असरात नहीं डालते तो नहीं होती, लेकिन अल्लाह पाक ने इलाज और दवा करने से मना नहीं किया। अल्लाह पाक ने असबाब में लगने से मना नहीं किया।

दरमियानी रास्ता

अल्लाह पाक ने जो असबाब बनाये हैं, वे बेकार नहीं हैं। असबाब

में आदमी लगेगा, कारोबार आदमी करेगा, खाना भी अदमी खायेगा, कपड़ा भी आदमी पहनेगा और आदमी दवा-दारू भी करेगा।

लेकिन एक शर्त के साथ कि यक़ीन अल्लाह पर हो। यक़ीन असबाब पर न हो। यहीं आकर चूक हो जाती है। यहीं से दो ग्रुप बनते हैं। एक ग्रुप तो वह बनता है जो सिर्फ़ असबाब ही में लगता और इसी को तय करता है कि में असबाब में लगूँगा।

ठीक है अल्लाह सब कुछ करते हैं लेकिन हमें भी तो कुछ करना चाहिये। ठीक है कि तन्दुरुस्ती तो अल्लाह देते हैं लेकिन दवा तो करनी चाहिये। तो यहाँ अल्लाह के साथ असबाब को जोड़ देते हैं। सारा यक़ीन असबाब पर होता है, तो यह क़िस्म बिल्कुल ग़लत है। क्योंकि उन्होंने असबाब को इख़्तियार किया, अल्लाह का यक़ीन छोड़ दिया।

एक क़िस्म वह है जो कहती है कि करने वाले अल्लाह हैं, छोड़ो असबाब को, निकल जाओ अल्लाह के रास्ते में। वही है पालने वाला, क्या रखा है कारोबार के अन्दर, छोड़ो और निकल जाओ अल्लाह के रास्ते में। यह भी ग़लत है।

अब सही क्या है? सही यह है कि यक़ीन तो करे अल्लाह पर, अल्लाह के कहने के मुताबिक़। अगर अल्लाह कहे असबाब में लगने को तो लगे। अगर अल्लाह कहे असबाब को छोड़ने को तो छोड़ दे। असबाब में लगना यह भी असल नहीं, असबाब को छोड़ना यह भी असल नहीं। असल अल्लाह की बात पूरी करना है:-

وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ (پ۲۸ سورۃ الجمعہ)

यानी जब जुमा की नमाज़ पढ़ चुको तो ज़मीन में फैल जाओ, अल्लाह की दी हुई रोज़ी तलाश करो।

तो अब अगर जुमा की नमाज़ के बाद कोई दुकान पर चला गया तो उसको मुजरिम नहीं कहेंगे।

अल्लाह पर ईमान लाने के लिये ज़रूरी काम

एक बात ज़ेहन में रख लो कि असबाब को बिल्कुल छोड़ देना यह भी ग़लत है। और हर हाल में असबाब में लगा रहना यह भी ग़लत है। अल्लाह के कहने पर असबाब में लगना और अल्लाह के कहने पर असबाब को छोड़ना। यक़ीन अल्लाह पर हो, असबाब पर यक़ीन न हो। इसके हासिल करने के लिये दो काम करने होंगे- एक काम दावत का, दूसरा काम क़ुरबानी का। जितनी दावत की फ़िज़ा बनी होगी और जितनी बार अल्लाह की बोल बोली जायेगी और सुनी जायेगी, उतना ही अल्लाह का यक़ीन आयेगा।

अल्लाह के ग़ैर का यक़ीन कैसे निकलेगा?

ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के ग़ैर) का यक़ीन निकालने का तरीक़ा यह है कि जहाँ पर अल्लाह का हुक्म मिले वहाँ पर मख़्लूक़ को क़ुरबान कर दे। अब जितनी यह क़ुरबानी देगा, अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिये, उतना ही मख़्लूक़ का यक़ीन निकलेगा।

तीन बातें अच्छी तरह समझ लो। एक तो असबाब में लगकर अल्लाह के हुक्मों को छोड़ देना, यह ग़लत है। दूसरे असबाब को बिल्कुल छोड़ देना, यह भी ग़लत है। और तीसरी चीज़ जो सही है वह यह कि अल्लाह पाक असबाब में लगने को कहे तो लगे और अगर छोड़ने को कहे तो छोड़ दे।

मिसाल के तौर पर आप कारोबार में लगे हुए हैं। आपने अल्लाह का हुक्मः

اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَیْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا (پ۳ سورۃ البقرۃ)

यानी अल्लाह ने बै (तिजारत) को हलाल किया है और सूद को हराम क़रार दिया है।

आपने इसको पूरा किया लेकिन कारोबार की मश्ग़ूलियतों के दरमियान

अज़ान की आवाज़ आई "हय्-य अ़लस्सलाह्" तो अब कारोबार में लगना ठीक नहीं। कारोबार को छोड़कर नमाज़ पढ़े। इसी तरह कारोबार में लगा रहा और हज फ़र्ज़ हो गया। हज का वक़्त भी आ पहुँचा तो अब कारोबार में लगना ठीक नहीं। अब कारोबार को छोड़कर हज को चला जाये। इसी तरह आदमी खेत के अन्दर हल चलाता है। गर्मी का सख़्त ज़माना है, अब आदमी कहे कि इतनी सख़्त गर्मी का ज़माना है, मैं रोज़ा कैसे रखूँ। तो यह सुना नहीं जायेगा। तुमको रोज़ा रखना है चाहे हल रात को चलाओ। अब अगर ज़कात फ़र्ज़ हो गई और साल गुज़र गया, पाँच लाख रुपये तुम्हारे ऊपर ज़कात फ़र्ज़ हुई, अब आदमी कहे कि पाँच लाख मैं कैसे निकालूँ मेरे तो कारोबार की रोलिंग ही रुक जायेगी। हम नहीं देंगे। हरगिज़ नहीं देंगे। पाँच लाख निकालना होगा। निकाल कर अलग रखे और ज़रूरतमन्दों को देता रहे। अब उसे कारोबार की रोलिंग में नहीं लेना है।

तो अल्लाह का हुक्म मिले तो असबाब में लगना और हुक्म मिले तो असबाब को छोड़ना, यह सब से सही रास्ता है। इसके अन्दर आदमी तरक़्क़ी करेगा। हाँ! इसके अन्दर मुजाहदा ज़रूर है। तकलीफ़ का उठाना और नफ़े को छोड़ना, इसकी आ़दत डालनी पड़ेगी। और यह ईमान की ताक़त के बग़ैर आदमी नहीं कर सकता।

हर नबी के हर अ़मल में

क़ियामत तक के लिये रहबरी है

इसकी मैं मुख़्तसर तौर पर मिसाल दूँ। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िए से जिसे मैं तफ़सील से बयान नहीं करूँगा। मजमे में कोई आदमी ऐसा नहीं है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ़त न जानता हो। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तूर पहाड़ पर गये। आपके हाथ में डंडा था। एक बात जान लो, हर नबी का हर अ़मल क़ियामत तक लोगों के लिये

रहबरी है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ में जो डंडा था, उससे बकरियों के लिये पत्ते झाड़ते थे। अगर साँप आ जाता उसे मारते, थक जाते तो उस पर टेक भी लगा लेते। तो इससे मालूम हुआ कि नफ़े वाला सबब आदमी को इख़्तियार करना चाहिये। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने हाथों में डंडा रखा था।

अल्लाह के हुक्म की ताक़त

जब अल्लाह रब्बुल्-इ़ज़्ज़त के हुक्म पर उस डंडे को ज़मीन पर डाला तो अज़्दहा बन गया। अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसकी तरफ़ कमर कर ली और बड़ी ज़ोर से पीछे की तरफ़ भागे कि कहीं यह अज़्दहा मुझे निगल न जाये और तकलीफ़ पहुँचाये। तो इन दोनों बातों से हमें क़ियामत तक के लिये मालूम हो गया कि नफ़े वाला सबब इख़्तियार करना चाहिये और तकलीफ़देह बात से बचना चाहिये। अब अल्लाह पाक ने इस मौक़े पर जो कलाम फ़रमाया था वह यह है:-

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى ٥ قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتَوَكَّؤُ عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ٥ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوسٰى ٥ فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ٥ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْاُولٰى ٥ (پ١٦ سورة طٰهٰ)

तर्जुमाः- यह क्या है तेरे दाहिने हाथ में ऐ मूसा! बोले यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ और पत्ते झाड़ता हूँ इससे अपनी बकरियों पर। और मरे लिये इसमें चन्द काम और भी हैं। फ़रमाया डाल दे इसको ऐ मूसा! तो डाल दिया तो फिर वह उसी वक़्त साँप हो गया दौड़ता हुआ। फ़रमाया पकड़ ले इसको और मत डर, हम अभी लौटा देंगे इसको इसकी पहली हालत पर।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ये दो बातें पेश आईं जिससे हमारी समझ में आ गया कि यह अल्लाह के हुक्म की ताक़त है। अल्लाह के हुक्म के अन्दर वह ताक़त है कि कमज़ोर डंडे को ताक़तवर अज़्दहा

बना दे और यह भी ताक़त है कि ताक़तवर अज़्दहे को कमज़ोर डंडा बना दे। यह सब कुछ अल्लाह के हुक्म की ताक़त है, डंडे की ताक़त नहीं। अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह तय कर लिया कि डंडे को अल्लाह के हुक्म से पकड़ूँगा और अल्लाह के हुक्म से छोड़ दूँगा।

अल्लाह की कुदरत के कुछ और भी कमालात

एक दूसरा मोजिज़ा (अल्लाह की तरफ़ से नबियों को दी जाने वाली निशानी) भी अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दिया कि हाथ को बग़ल में डाला और फिर जब उन्होंने निकाला तो देखा कि वह बिल्कुल चमकदार है। तो डंडे वाले मोजिज़े (चमत्कार) से अल्लाह पाक ने बताया कि शक्लों को शक्लों से बदल देने की कुदरत मुझमें है। डंडे की शक्ल को अज़्दहे की शक्ल से बदलकर, और शक्ल को न बदल कर ख़ासियत को बदल देने की ताक़त व कुदरत मुझमें है। जैसे हाथ गिरेबान में डाला तो हाथ नहीं बदला लेकिन हाथ चमकदार बन गया। दोनों काम अल्लाह पाक़ करते हैं।

शक्लों का शक्लों से बदलना आज भी अल्लाह पाक कर रहे हैं। यह इनसान क्या है? 'मनी' (वीर्य) की शक्ल, फिर ख़ून के लोथड़े की शक्ल, फिर गोश्त के लोथड़े की शक्ल उसके बाद माँ के पेट के अन्दर चन्द उंगल का इनसान बना और उसके अन्दर आँख, कान, नाक, हाथ, पैर, दिल, दिमाग़, ओझड़ी, कलेजी, गुर्दा, मसाना वग़ैरह सारी चीज़ें मनी (वीर्य) के क़तरे से लेकर चार महीने के अन्दर अन्दर बना दीं। फिर उसके अन्दर रूह भी डाली। अल्लाह पाक शक्लों को शक्लों से बदल देते हैं जैसे बचपन की शक्ल को बुढ़ापे की शक्ल से बदल देते हैं।

गुठली को ज़मीन में डाला, वह तनावर दरख़्त बन गई। जिसमें सैकड़ों आम सालाना तैयार होते रहते हैं। सिर्फ़ डंडे से अज़्दहा, अज़्दहे से डंडा यही नहीं बल्कि अल्लाह की कुदरत के कमालात आज भी आ़म तौर पर दिखाई दे रहे हैं लेकिन कोई ग़ौर नहीं करता।

अल्लाह के हुक्म की ताक़त, वाकिआत की रोशनी में

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ बारह ख़ानदान थे। पीछे फ़िरऔ़न का लश्कर और आगे भरपूर समन्दर और बीच में मौज ही मौज। लेकिन अल्लाह के हुक्म पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डंडे को समन्दर पर डाल दिया तो बारह रास्ते बन गये और बारह ख़ानदानों की जान बची।

दूसरा वाक़िआ़

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथी और क़बीला बनू इस्राईल के लोग मैदाने तीह के अन्दर प्यासे थे। उन लोगों ने पानी माँगा तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे पानी दे दे।

وَاِذِاسۡتَسۡقٰی مُوۡسٰی لِقَوۡمِهٖ فَقُلۡنَا اضۡرِبۡ بِّعَصَاکَ الۡحَجَرَ، فَانۡفَجَرَتۡ مِنۡهُ اثۡنَتَا عَشۡرَةَ عَيۡنًا. (پ۱،سورة البقرة)

तर्जुमाः- जब पानी तलब किया मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लिये। पस कहा हमने कि अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। पस फूट पड़े उससे बारह चश्मे।

इस मोजिज़े से बारह चश्मे जारी हुए। और बारह ख़ानदानों की ज़रूरत पूरी होने का इन्तिज़ाम हुआ। यह कब हुआ? जब अल्लाह के हुक्म से डंडे को समन्दर पर डाला और पत्थर पर मारा।

तीसरा वाक़िआ़

एक तीसरा वाक़िआ़ भी हुआ। वह यह कि जब जादूगरों ने पूरे जंगल को जादू से भर दिया। हर जगह देखो तो साँप ही साँप और हज़ारों लोग उसके देखने के लिये खड़े हुए।

उन जादूगरों को फ़िरऔ़न ने इखट्ठा किया था। उसने समझा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम हार जायेंगे और मेरी बात चलती रहेगी। लेकिन मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ताईदे इलाही थी। ख़ुदा का हुक्म हुआ कि डंडे को

ज़मीन पर डाल दो। अब ज़मीन पर डंडे का डालना था कि वह अज़्दहा बन गया और जादूगरों के कर्तब से बने हुए साँपों को निगलने लग गया। जादूगर फ़ौरन समझ गये कि यह किसी जादूगर का अ़मल नहीं हो सकता। यक़ीनन यह अल्लाह के नबी हैं। सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे:-

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○ رَبِّ مُوْسٰى وَهَارُوْنَ ○ (پ۹ سورۃ الاعراف رکوع ۴)

यानी हम रब्बुल्-आ़लमीन पर ईमान लाये। हज़रत मूसा और हारून अ़लैहिमस्सलाम के रब पर ईमान लाये।

सब जादूगर मुसलमान हो गये। जब ये मुसलमान हुए तो तमाशाई मजमा जो खड़ा था उन्होंने भी कलिमा पढ़ लिया:-

"ला इला-ह इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाहि"

तो तीसरा काम यह हुआ कि अल्लाह के हुक्म से डंडे की अज़्दहे की शक्ल बन गयी।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ़त से सबक़

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब तक डंडे को अपने इख़्तियार से पकड़ते और छोड़ते रहे तो उसका फ़ायदा सिर्फ़ उनकी ज़ात जक सीमित रहा और जब अल्लाह के हुक्म से पकड़ा और छोड़ा तो एक तरफ़ बारह ख़ानदानों और क़बीलों की ज़रूरत पूरी हुई तो दूसरी तरफ़ हज़ारों इनसानों को हिदायत मिली।

इसी तरह अगर आज भी अल्लाह के हुक्म पर हम अपनी जान और माल को लगायेंगे, कुरबान करेंगे तो इन्शा-अल्लाह हमारी भी ज़रूरतें पूरी होंगी। सिर्फ़ हमारी ही परेशानियाँ दूर नहीं होंगी बल्कि लाखों और करोड़ों इनसानों की भी परेशानियाँ दूर होंगी। हिदायत सिर्फ़ हमको नहीं मिलेगी बल्कि लाखों और करोड़ों लोगों को भी मिलेगी। क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सारे नबियों में सब से अफ़ज़ल हैं। और वह पूरे आ़लम के लिये नबी बनकर तशरीफ़ लाये।

हमारी जान और माल अल्लाह की मिल्कियत है

हमारे पास एक तो जान है, और एक है माल। अल्लाह तआ़ला का हुक्म इन दोनों नेमतों के बारे में यह है कि:-

وَجَاهِدُوا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ (پ۱۰، سورۃ التوبۃ رکوع ۱۲)

तर्जुमाः- अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यह अ़मल ही तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जान रहे हो।

यह जान और माल दोनों को अल्लाह पाक ने ख़रीद लिया है। जान ख़रीदी और सारा माल ख़रीदा है। इसलिये हमें अपनी जान व माल को वहाँ लगाना है जहाँ अल्लाह पाक हमें हुक्म करें। इन्शा-अल्लाह जब इस जान को अल्लाह के हुक्म पर कुरबान करेंगे और माल के नफ़े को अल्लाह के हुक्म पर कुरबान करेंगे तो सिर्फ़ बारह ख़ानदानों की ही ज़रूरत पूरी नहीं होगी, सिर्फ़ बारह ख़ानदानों ही की जान नहीं बचेगी, सिर्फ़ हज़ारों के अन्दर ही हिदायत नहीं फैलेगी बल्कि करोड़ों की हाजतें पूरी होंगी और करोड़ों की मशक़्क़तें दूर होंगी। करोड़ों को हिदायत मिलेगी।

हमारी यह जान और माल जो अल्लाह ने ख़रीदा है, यह सिर्फ़ चार महीने के लिये नहीं ख़रीदा है:-

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ.

(پ۱۱، سورۃ التوبۃ)

यानी अल्लाह पाक ने मुसलमानों की पूरी जान और माल ख़रीद लिया है। और उसके बदले में जन्नत देंगे। जिसमें नेमतों की मूसलाधार बारिश होगी।

जान दी, दी हुई उसी की थी

पूरा माल और जान अल्लाह ने ख़रीद लिया है। कब तक के लिये? मौत तक के लिये।

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ. (پ۱۱،سورۃالتوبۃ رکوع۳)

तर्जुमाः- अल्लाह की राह में क़िताल (जंग और लड़ाई) करते हैं। पस क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं।

अगर सहाबा पर अल्लाह के दीन का तक़ाज़ा आया कि सत्तर की जान ले लो तो बदर के दिन सत्तर की जान ले ली। और जब हुक्म आया कि अपनी जान दे दो तो उहुद में सत्तर ने अपनी जान दे दी।

अगर हुक्म आये जान लेने का तो ले लो, और अगर हुक्म आये जान के देने का तो दे दो। किसी चीज़ की परवाह न करोः-

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ، وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ. (پ۱۱،سورۃالتوبۃ رکوع۳)

यह अल्लाह पाक का वायदा है तौरात, इन्जील और क़ुरआन के अन्दर। (यानी मुसलमानों को अल्लाह की राह में जिहाद करने का अज्र व सवाब जन्नत की शक्ल में मिलेगा)।

وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ، وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٥ (پ۱۱،سورۃالتوبۃ رکوع۳)

यानी अल्लाह से ज़्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन होगा। अल्लाह के साथ जो तुमने सौदा किया उस पर खुश हो जाओ।

सहाबा ने बदर के अन्दर सत्तर को क़त्ल किया और उहुद के अन्दर सत्तर ने अपनी जान क़ुरबान की। तक़ाज़ा आया तो हिजरत कर दी। मदद का हुक्म आया मदद कर दी। कारोबारी सीज़न छोड़कर तबूक जाने का हुक्म आया तो तबूक चले गये। और अल्लाह के हुक्म पर जान व

माल की कुरबानियाँ देते रहे।

दावत के दर्जे

लेकिन बदर और उहुद की नक़ल उतार कर आज भी कोई तलवार लेकर काफ़िरों को मारना शुरू कर दे तो यह ग़लत बात होगी। क्योंकि पहले दावत होगी फिर मस्लेहतों को सामने रखते हुए पेशकश होगी। तब क़िताल (जंग और लड़ाई) होगा।

यहाँ जितने बे-ईमान बसते हैं, उन तक अभी दावत पहुँची ही नहीं। क्योंकि दावत तो सारी उम्मत के ज़िम्मे थी जो वह छोड़ चुकी है। इसका नुक़सान यह हुआ कि दूसरे लोग ईमान में आने बन्द हो गये। तीसरा नुक़सान यह हुआ कि जितने आमाल बाक़ी भी रहे वे बेजान रहे।

पूरी उम्मत अगर दावत के काम पर खड़ी हो जाये तो इसमें तीन फ़ायदे होंगे:-

1. आमाल ज़िन्दा होंगे।
2. आमाल ताक़तवर और जानदार होंगे।
3. दूसरों की तरग़ीब का सबब बनेंगे।

तो इस तरह चारों तरफ़ से लोग ईमान के अन्दर दाख़िल होते चले जायेंगे। और जब चारों तरफ़ से लोग ईमान में आने लगेंगे तो फिर उनको मारने की ज़रूरत नहीं होगी। लेकिन अभी तो दावत पहुँची नहीं, न तो किताबों के ज़रिये, न रिसालों के ज़रिये। करोड़ों, अरबों इनसान ऐसे हैं जिन तक अभी भी बात नहीं पहुँची है। खुद मुसलमानों के अन्दर दावत छूट जाने की वजह से लाखों मुसलमान ऐसे हैं जो कलिमें का लफ़्ज़ ही नहीं जानते। उन्हें मालूम ही नहीं कि इस्लाम क्या है?

जमाअ़त वालों के काम और कारगुज़ारी

रमज़ान के महीने में एक जगह जमाअ़त गई। वहाँ दिन के वक़्त में बारात का खाना हो रहा था। जमाअ़त वाले यह हाल देखकर कि रमज़ान

के महीने में दिन में खाना खा रहे हैं, रोने लग गये। गाँवों वालों ने कहा रो क्यों रहे हो? तुम भी खाओ। उन लोगों ने कहा कि हम खाने के लिये नहीं रो रहे हैं। बल्कि इस वजह से कि रमज़ान के महीने में अल्लाह का हुक्म रोज़ा रखने का है और यह रमज़ान का महीना है और सारा मजमा खाना खा रहा है। अल्लाह का हुक्म टूट रहा है। गाँव के बड़े-बड़े लोगों ने कहा कि रमज़ान क्या होता है? रमज़ान का तो महीना होता नहीं। वहाँ के लोग हिन्दी महीनों के नाम जानते थे। कार्तिक, बैसाख, जैठ, असाढ़ वग़ैरह। उन्होंने हिन्दी के बारह महीनों के नाम गिनवाये और कहा कि इसके अन्दर रमज़ान का महीना है ही नहीं। जमाअ़त वालों ने कहा कि रमज़ान इस्लामी महीनों का एक महीना है। मुहर्रम, सफ़र वग़ैरह में आता है। गाँव वालों ने पूछा कि रमज़ान के महीने में क्या होता है? बताया गया कि रोज़ा फ़र्ज़ है। रोज़े की हक़ीक़त बताई गयी। सब को जमा किया कलिमा पढ़ाया, जो उन्हें याद नहीं था। हालाँकि मुसलमान थे। नमाज़ सिखाई वुज़ू कराया। जमाअ़त वालों ने वहाँ जमकर काम किया। हिन्दुस्तान के अन्दर ऐसी-ऐसी जगहें बहुत सी हैं। उ. प्र. में भी, गुजरात में भी, कोई राज्य ख़ाली नहीं जिसमें ऐसा इलाक़ा न हो। इसी लिये जमाअ़त के काम करने वाले ऐसे इलाक़े को तलाश करते रहते हैं। उनमें से एक दो को जमाअ़त में निकालते हैं और फिर उन्हीं के ज़रिये इलाक़े में काम फैलाते हैं।

अल्लाह ने हमें किस काम के लिये ख़रीदा है?

अच्छा अब सवाल पैदा होता है कि जब अल्लाह पाक ने हमारी जान हमारा माल ख़रीद लिया है तो किस काम के लिये ख़रीदा है? और इसे कहाँ लगाएँ। अल्लाह पाक बता रहे हैं। इरशाद फ़रमाया:-

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعَابِدُوْنَ الْحَامِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرَّاكِعُوْنَ السَّاجِدُوْنَ

الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَبَشِّرِ

الْمُؤْمِنِيْنَ ○ (پ۱۱، سورۃ التوبۃ رکوع ۳)

उम्मत को अल्लाह ने ख़रीदा है इस काम के लिये जो इस आयत में बता दिया गया। और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा को इस काम में लगा भी दिया। और यह भी बता दिया गया कि यह काम करोगे तो अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ आयेगी। चुनाँचे मदद आई। हर दौर में आई। हैरत में डालने वाली मदद आई। और यह मदद क़ियामत तक आती रहेगी।

हमारा करने का काम

अब काम क्या है?

"**अत्ताईबू-न**" एक मजमा ऐसा बन जाये जो ग़लत ज़िन्दगी छोड़ने वाला हो।

"**अल्-आ़बिदू-न**" जो सही दीनी ज़िन्दगी पर आने वाला हो।

"**अल्-हामिदू-न**" ग़लत रास्ते को छोड़ने और सही रास्ते पर आने पर अल्लाह की तारीफ़ करने वाला हो।

"**अस्साईहू-न**" एक जगह रहने वाला न हो। उम्मत के ग़म में तड़प रहा हो, चलने फिरने वाला हो। जैसे सहाबा-ए-किराम दीन की मेहनत के लिये चलते-फिरते थे। तो उम्मत भी एक जगह बैठने वाली न हो, बल्कि चलने-फिरने वाली हो:-

سِيَاحَةُ أُمَّتِيْ اَلْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

यह इरशाद है रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का। यानी मेरे उम्मत का चलना-फिरना और मेरी उम्मत का टूर अल्लाह के दीन की मेहनत है।

"**अर्राकिऊ़नस्साजिदू-न**" नमाज़ के अन्दर रुकूअ़ और सज्दा करने वाली हो।

जान व माल अल्लाह की राह में लगाने का औसत

बाज़ मर्तबा जान व माल अल्लाह की राह में लगाने के ऐसे मौक़े आयेंगे कि पूरी जान और पूरा माल लगाना पड़ेगा। जैसे सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने लगाया। कभी आधी जान आधा माल लगाना पड़ेगा। जैसे फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने किया। उनके अ़लावा अक्सर सहाबा किराम चार महीने बाहर आने-जाने के लिये ख़ास रखते और आठ महीने मकान पर नक़्ल व हरकत (सक्रियता) के लिये रखते और इसमें आधा दिन कारोबार करते, आधा दिन मस्जिद के लिये होता। आधी रात मस्जिद के लिये आधी रात घर के लिये। एक तिहाई जान व माल का औसत है अक्सर सहाबा का अल्लाह के रास्ते में।

पहले ख़ुद लोगों के लिये फ़ायदा पहुँचाने वाले बनो

अल्लाह पाक ने हमें दीन के काम के लिये ख़रीदा। सहाबा और ताबिईन (सहाबा की ज़ियारत करने वाले मोमिन हज़रात) ने इस काम पर अपनी जान और अपना माल लगाया। और अल्लाह पाक का बताया हुआ काम पूरा किया, तो अल्लाह तआ़ला की ग़ैबी मदद और नुसरत उन लोगों पर आई और पूरे आ़लम पर उसके असरात पड़े। आज जान व माल को अल्लाह के बताये हुए हुक्मों पर लगाना बन्द हो गया इसलिये अल्लाह पाक ने मदद और नुसरत का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

भैंस को चारा कब तक?

भैंस को चारा कब तक देते हैं? जब तक भैंस दूध देती है। और अगर भैंस दूध देना बन्द कर दे तो फिर भैंस को क़साई के हवाले कर देंगे। भैंस दूध दे तो भैंस वाला उसको चारा दे। तो जब तक यह उम्मत दूध दे रही थी लोग इससे फ़ायदा उठा रहे थे, तब तक अल्लाह पाक इसे चारा दे रहे थे, इसकी मदद कर रहे थे। और जब इस भैंस ने दूध देना

बन्द कर दिया तो अल्लाह पाक ने चारा देना बन्द कर दिया। मदद जो पहले आ रही थी अब नहीं आ रही है। काले, गोरे, गुलाबी, लाल, चार क़िस्म के गोश्त काटने वालों के हाथ कर दिया इस उम्मत को। अब पूरी दुनिया में इसे चारों तरफ़ काटा जा रहा है।

इसी पर एक क़िस्सा याद आ गया। दो पहलवान थे। दोनों कुश्ती कर रहे थे। दोनों थे ज़बरदस्त, कोई किसी को पछाड़ नहीं पाता था। सामने एक बैल खड़ा था। एक पहलवान ने मन्नत मानी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं जीत गया तो तेरे नाम पर इस बैल को ज़िबह करूँगा और गोश्त ग़रीबों को दे दूँगा। अब दूसरा पहलवान घबरा गया। उसने भी मन्नत मान ली कि अगर मैं जीता तो उसको ख़रीद कर ज़िबह करके ग़रीबों को खिला दूँगा। दोनों ने एक ही मन्नत मानी। अब बैल खड़ा हुआ यह कह रहा था कि ऐ अल्लाह यह पहलवान जीते या यह पहलवान जीते, दोनों हालत में ज़िबह तो मुझे ही होना है। तो आज पूरी उम्मत का यही हाल है, कोई भी जीते कोई भी ओहदा पाये और सत्ता किसी के भी हाथ लगे, ज़िबह इसे ही होना है।

मरना जीना सिर्फ़ दीन के काम पर

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हमारी यह ज़िल्लत सिर्फ़ इस वजह से है कि हमने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन छोड़ दिया है। हमारी कोशिश अब यह हो कि जमाअ़तों की नक़्ल व हरकत (सरगरमी और चलत-फिरत) के ज़रिये पूरी उम्मत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन पकड़ ले और फिर इसी काम पर लग जाये।

मरना जीना हो ही रहा है। मौत वक़्त पर आती है। ज़िन्दगी वक़्त तक रहेगी। दीन का काम करते-करते जिये और दीन का काम करते-करते मरे। इस उम्मत को इस बात पर खड़ा करना है कि मरना जीना सिर्फ़ दीन के काम पर हो। अल्लाह तआ़ला हम सब को इन बातों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

तक़रीर (3)

ग़रीब और मालदार दोनों का कमाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि ख़र्च का मामला सिर्फ़ मालदार ही पर नहीं बल्कि ग़रीब पर भी है। क्योंकि ग़रीब, ग़रीब को पहचानता है। ग़रीब का कमाल यह है कि किसी दरवाज़े पर माँगे नहीं। और मालदार का कमाल यह है कि जहाँ ग़रीब और परेशानहाल हों, वह उनकी ज़रूरतों को पूरी करे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुज़ुर्गो! इनसान की कामयाबी और नाकामी अल्लाह के हाथ में है। दुनिया के अन्दर भी और आख़िरत के अन्दर भी। सामूहिक तौर पर कामयाबी का मिलना या नाकामी का मिलना, व्यक्तिगत तौर पर कामयाबी का मिलना या नाकामी का मिलना, सब अल्लाह की तरफ़ से है। जो कुछ करते हैं अल्लाह करते हैं। और सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू में है।

सारी मख़्लूक़ ख़ुदा के हुक्म की पाबन्द

इनसान के अ़लावा जो मख़्लूक़ है, उससे अल्लाह पाक जो कुछ कहते हैं वह कर देती है। आसमान से कहा "थमा रह" तो वह थमा रहेगा। और कहेंगे "टूट जा" तो टूट जायेगा क़ियामत के दिन। तो दूसरी मख़्लूक़ के बारे में जिसका जो काम बता दिया, वह करेगी।

और अगर उसकी ड्यूटी बदल दी तो वह अपनी ड्यूटी बदल देगी। अल्लाह का जो हुक्म होगा उसके मुताबिक़ अ़मल करेगी। फ़रिश्ते, जो कुछ भी अल्लाह कहते हैं, करते हैं, उसके ख़िलाफ़ नहीं करते।

इनसान में ख़ैर का माद्दा भी है और शर का भी

लेकिन इनसान को अल्लाह पाक ने ऐसा बनाया है कि इसके अन्दर

दोनों ताक़तें रखीं। मानने की भी ताक़त है और न मानने की भी ताक़त है। अगर चाहे तो अपनी ताक़त और इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर लगाये। और अगर चाहे तो अपनी ताक़त और इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर न लगाये।

अब अगर इसने अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान करके अल्लाह की मर्ज़ी पूरी कर दी तो गोया इसने बो दिया। जैसे खेत के अन्दर दस मन अनाज बो दिया तो जब उगेगा तो सौ मन बनकर निकलेगा। इसी तरह इनसान अगर अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में बो देगा और क़ुरबान कर देगा तो इनसान की मर्ज़ी आख़िरत में उगेगी।

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُوْنَ ○ (پ۲۴)

यानी जन्नत के अन्दर तुमको वह मिलेगा जिसकी तुम्हारा नफ़्स ख़्वाहिश करेगा और जिसको तुम चाहोगे।

क्योंकि दुनिया के अन्दर इसने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर क़ुरबान कर दिया था।

लेकिन अगर इसने अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़ दिया और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहा तो फिर जहन्नम के अन्दर इसकी कोई मर्ज़ी पूरी नहीं होगी। जो कुछ कहेगा वह नहीं होगा।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَاهُمْ بِخَارِجِيْنَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ○ (پ۶)

तर्जुमाः- जहन्नम से निकलने का इरादा करेंगे, हालाँकि वे उससे नहीं निकल सकते। और उनके लिये हमेशा वाला अज़ाब होगा।

क्योंकि उसने अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़कर अपनी मर्ज़ी को इख़्तियार किया था। लिहाज़ा आख़िरत में उसकी कोई मर्ज़ी पूरी नहीं की जायेगी ।

इस तरह दोस्तो! दुनिया की ज़िन्दगी ही असल ज़िन्दगी है। इसलिये कि इसी पर आख़िरत की ज़िन्दगी का बनना और बिगड़ना निर्भर है और इसी पर दुनिया की ज़िन्दगी का भी बनना और बिगड़ना निर्भर है।

इनसान के पास दो क़ीमती चीज़ें हैं, जान और माल

मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह जल्ल जलालुहू ने दुनिया व आख़िरत के अन्दर कामयाब करने के लिये इनसान को दो दौलतें दी हैं। अगर इन दोनों दौलतों को जैसे अल्लाह ने बताया है उस तरह लगायेगा तो कामयाब होगा। और अगर जैसे अल्लाह ने बताया है जान व माल की दौलत को वैसे नहीं लगायेगा तो फिर दुनिया व आख़िरत दोनों में नाकाम होगा। क्योंकि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने बार-बार "युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्" को याद दिलाया। यानी "वे लोग अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के ज़रिये जिहाद करते हैं।"

और हमको अपने जान व माल को चार बातों पर लगाना है।

चार निस्बतें

अल्लाह पाक ने इनसान के अन्दर चार निस्बतें रखी हैं:-

1. आ़म जानदारों वाली निस्बत।
2. फ़रिश्तों वाली निस्बत।
3. ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी वाली निस्बत।
4. नियाबते नुबुव्वत वाली निस्बत।

ये चार निस्बतें अल्लाह तआ़ला ने इनसान के अन्दर रख दी हैं।

पहली निस्बत आ़म जानदारों वाली है। जैसे बैल, भैंस, मुर्ग़ी वग़ैरह को यह निस्बत मिली इसी तरह इनसान को भी मिली। कि अगर भूख लगे तो खाना है, प्यास लगे तो पीना है, गर्मी सर्दी का इन्तिज़ाम करना और अपनी ज़रूरतों और तक़ाज़ों को पूरा करना है।

दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली है जो इबादत के ज़रिये पूरी होगी। फ़रिश्ते इबादत करते हैं। इबादत इस इनसान को भी दी।

तीसरी निस्बत ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी वाली है। इनसान अल्लाह का

ख़लीफ़ा है। जैसा कि कुरआन पाक में फ़रमाया गयाः "इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्-अर्ज़ि ख़लीफ़-तन्" इसके मायने यह होंगे कि यह भूखों को खिलायेगा क्योंकि "रज़्ज़ाक़" का ख़लीफ़ा है। और दूसरों पर रहम करेगा क्योंकि "रहीम" का ख़लीफ़ा है। दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करेगा क्योंकि "ग़फ़्फ़ार" का ख़लीफ़ा है। दूसरों पर करम करेगा क्योंकि "करीम" का ख़लीफ़ा है। दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालेगा क्योंकि "सत्तार" का ख़लीफ़ा है।

और चौथी निस्बत नियाबते नुबुव्वत वाली है, क्योंकि अब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद कोई नया नबी आने वाला नहीं है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं। लिहाज़ा नबियों की नियाबत में नबियों वाला दावत का काम करेगा।

जान व माल चार बातों पर

अब इसकी जान व माल चार बातों पर लगेगी। एक तो आ़म जानदारों वाली निस्बत पर यानी अपनी ज़रूरतों को पूरा करने पर। दूसरे फ़रिश्तों वाली निस्बत इबादत यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज पर। तीसरे ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी वाली निस्बत पर यानी अख़्लाक़ और हमदर्दी पर। और चौथे नियाबते नबवी वाली निस्बत यानी दावत पर।

ज़कात का माल देना इबादत है, इसमें फ़रिश्तों वाली निस्बत आयेगी। लेकिन ज़कात के अ़लावा अगर किसी को दिया तो यह मेहरबानी और हमदर्दी होगी। यह देना फ़र्ज़ नहीं।

मिसाल के तौर पर कोई सैयद है। उसको ज़कात का माल लेना हराम है। उसको ज़कात के अ़लावा का जो माल देगा, बतौर अख़्लाक़ के देगा।

इसी तरह ग़ैर-मुस्लिम को भी ज़कात का माल नहीं दे सकता। लेकिन ग़ैर-मुस्लिम बहुत परेशानहाल है। अब अगर उसके ऊपर ज़कात के अ़लावा का माल लगायेगा तो यह बतौर अख़्लाक़ और हमदर्दी के होगा।

अ़द्ल व इन्साफ़ और अख़्लाक़ व एहसान

अल्लाह पाक ने इनसान को दो हुक्म दिये हैं- एक अ़द्ल व इन्साफ़ का, और दूसरा अख़्लाक़ व एहसान का।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ (پ١٤)

तर्जुमाः- बेशक अल्लाह तआ़ला तुमको अ़द्ल व एहसान करने का हुक्म देता है।

अ़द्ल व इन्साफ़ के मायने यह हैं कि तेरे ज़िम्मे जो काम हैं उनको कर। लिहाज़ा ज़कात अदा करेगा तो यह अ़द्ल व इन्साफ़ में आयेगा। लेकिन ज़कात का माल ख़त्म हो गया। ज़रूरतमन्द बाक़ी रह गये हैं। परेशानहाल हैं, उनके घरों में फ़ाक़े हैं। चीख़ें मारने की आवाज़ें आ रही हैं। बच्चे बेचारे भूखे-प्यासे हैं। तो अब उन लोगों को जो माल देगा, ज़कात के अ़लावा होगा। और यह बतौर अख़्लाक़ व एहसान के लगायेगा।

क्योंकि अल्लाह पाक ने बता दिया कि जितना तुम लगाओगे उतना मैं दूँगा।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ (پ١٦)

यानी जितना तुम ख़र्च करोगे, पस अल्लाह उसका बदला देगा।

असल बदला देने की जगह आख़िरत है। असल बदला देने की जगह दुनिया नहीं है। दुनिया छोटी जगह है।

एक रुपया ख़र्च करने पर अल्लाह जो देंगे वह दुनिया के अन्दर समा नहीं सकता। नेकियाँ और बुराईयाँ जब तौली गईं तो बराबर निकलीं। एक रुपये के ख़र्च करने से वज़न बढ़ गया तो जन्नत में जायेगा।

तो जन्नत उसको एक रुपये के ख़र्च करने पर मिली। बाक़ी जितनी नेकियाँ थीं वे बुराईयों के मुक़ाबले में ख़त्म हो गईं। और जितनी बुराईयाँ थीं वे नेकियों के मुक़ाबले में साफ़ हो गईं। अब एक रुपया ख़र्च करने की वजह से वज़न बढ़ गया तो जन्नत मिलेगी।

जन्नत की नेमतें बेशुमार हैं

और छोटी से छोटी जन्नत जो मिलेगी वह इस दुनिया की दस गुना बड़ी होगी। जिसमें सत्तर बहत्तर बीवियाँ, अस्सी हज़ार नौकर-चाकर, दूध, पानी और पाक शराब की नहरें, सोने-चाँदी की ईंट के बने हुए मकानात, जोड़ने के गारे मुश्कों के, तकिये, गद्दे वग़ैरह बिछे हुए। ऐसी जवानी मिलेगी जो करोड़ों साल के बाद ख़त्म नहीं होगी और ऐसे कपड़े मिलेंगे जो गन्दे नहीं होंगे और हमेशा-हमेशा उसमें ऐश व अराम के साथ रहेंगे। और एक बड़ी नेमत यह मिलेगी कि हर हफ़्ते जुमा के दिन अल्लाह पाक मुलाक़ात करेंगे और सलाम भी करेंगे।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ يَآاَهْلَ الْجَنَّةِ

तर्जुमाः- ऐ जन्नत वालो! तुम पर सलामती हो।

तो यह जितना मिला, एक रुपये के ख़र्च करने पर मिला। बाक़ी नेकियाँ तो बुराईयों के मुक़ाबले में ख़र्च हो गईं।

तो मैं कहता हूँ कि एक रुपया ख़र्च करने का बदला दुनिया में समा ही नहीं सकता। यह अल्लाह जो कहते हैं:-

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ (پ١٦)

यानी जितना तुम ख़र्च करोगे, पस अल्लाह उसका बदला देगा।

जब अल्लाह बदला देगा तो अपनी शान के मुनासिब देगा। असल बदला जो देगा आख़िरत में देगा। वह दुनिया में समा ही नहीं सकता। तो मैं अ़र्ज़ कर रहा था कि आदमी ज़कात के अ़लावा माल क्यों लगायेगा? इसलिये लगायेगा ताकि अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठाये।

इसके लिये मौक़ा तलाश करेगा कि कहीं ख़र्च करने का मौक़ा मिले, औ़र इसको ऐसा समझेगा जैसे कोई दुकान मिल गई हो। एक आ़दमी को कारोबार मिलता है तो कैसा ख़ुश होता है कि मुझको कारोबार मिल गया, आमदनी होगी। इसी तरह अगर उसके पास कोई ज़रूरतमन्द आ गया तो

समझेगा कि यह आमदनी का ज़रिया होगा। इसके ज़रिये मेरी आमदनी होगी। मैं अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठाऊँगा।

दर्दे दिल पैदा करो

दुकान पर आदमी बैठा है। आठ-नौ साल की बच्ची आ गई और कहती है कि मेरे पास दो रुपये हैं, मुझको ग़ल्ला भी दे दो और मुझको घी, नमक और मिर्च भी दे दो। जो दूसरे और दुकानदार हैं, उन्होंने दो रुपये लिये और फेंक दिये और कहा कि यह सारी दुकान दो रुपये के अन्दर लूटने आई हो।

लेकिन एक ऐसा दुकानदार था जिसने अपनी जान और माल को ज़रूरियात, इबादात, अख़्लाक़ियात और दावत पर लगाना तय कर लिया था। उसने जब देखा कि आठ-नौ साल की लड़की दो रुपये लेकर आई तो पूछा कि तुम्हारे क्या हालात हैं? वह रोने लगी। उसने कहा कि मेरे अब्बा का हादसे के अन्दर इन्तिक़ाल हो गया। मेरी माँ बेवा हो गई। और मेरी माँ पर्दे में रहती है। लोगों के बरतन साफ़ करके अपनी ज़रूरतें पूरी करती है। आज उसे कोई मज़दूरी नहीं मिली, तो आज हमारे घर में फ़ाक़ा है। हमारी चार बहनें भी हैं। भाई भी छोटे-छोटे हैं।

अब यह सारा मन्ज़र सुनकर दुकानदार को रोना आ गया और उसने अच्छा-ख़ासा सामान एक बड़े टोकरे में रखकर अपने नौकर के हाथ उस लड़की के साथ भेज दिया। और वे दो रुपये भी वापस कर दिये।

अब जब दोनों घर गये तो खाना पका। धुआँ निकला। आँखों में से आँसू निकले कि अल्लाह उसका भाला करे जिसने हमारे फ़ाक़े के अन्दर हमारा साथ दिया। अब उनकी आँखों के अन्दर जो आँसू हैं वे न मालूम कितनी नेमतें दिलवायेंगे।

जैसे बारिश बरस्ती है तो ज़मीन के अन्दर से कितने फल-फ़रूट, तरकारियाँ वग़ैरह तैयार होती हैं। इसी तरह यतीम और बेवा के आँखों से

जब आँसू निकलेगा और उनके दिलों से दुआयें निकलेंगी तो बाज़ मर्तबा सात-सात नस्लों तक के फ़ाक़े दूर हो जाते हैं।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक तरफ़ आदमी को वह करना है जो उसके ऊपर ज़रूरी है। क्योंकि उसके न करने पर जहन्नम में जाना पड़ेगा। और दूसरी तरफ़ जो ज़रूरी नहीं है बल्कि बतौर मेहरबानी और बतौर अख़्लाक़ के करना है वह भी करे ताकि अल्लाह की तरफ़ से उसके ख़ज़ाने से फ़ायदा पहुँचे।

"करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर"

अल्लाह से अपने साथ जो काम कराना हो, तुम वह काम बन्दों के साथ करना शुरू कर दो। अगर आदमी चाहता है कि अल्लाह तआ़ला मुझ पर रहम करे तो उसका तरीक़ा यह है कि वह दूसरों पर रहम करे। हदीस में है:-

اِرْحَمُوْا مَنْ فِی الْاَرْضِ یَرْحَمْکُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ

तर्जुमा:- ज़मीन वालों पर तुम रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

इसी तरह एक दूसरी हदीस में है:-

كَانَ اللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ

तर्जुमा:- अल्लाह बन्दे की मदद में रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहता है।

तो अच्छा गुर यह है कि जो कुछ हमें अल्लाह से लेना है, वह हम दूसरों के साथ करना शुरू कर दें।

हम रहम करेंगे तो अल्लाह तआ़ला हम पर रहम करेगा।

हम करम करेंगे तो अल्लाह तआ़ला हम पर करम करेगा।

हम पर्दापोशी करेंगे तो अल्लाह हमारी पर्दापोशी करेगा।

तूने लोगों के खोटे सिक्के लिये मैंने तेरा खोटा अ़मल क़बूल किया

बनी इस्राईल का एक आदमी था। जो जानकर दूसरों के खोटे सिक्के ले लिया करता था और सामान पूरा दिया करता था। मशहूर हो गया कि खोटा सिक्का फ़लाँ जगह पर चलता है। तो लोग खोटा सिक्का लाते और पूरा सामान ले जाते।

उसका इन्तिक़ाल हो गया। ख़ुदा के सामने पेशी हुई। अल्लाह ने पूछा कि दुनिया से क्या लाये हो? उसने कहा कि मैं तो ख़ाली हाथ आया हूँ। इसलिये कि तेरी शान के मुनासिब हम कोई अ़मल नहीं कर सके।

इनसान कितना ही अच्छे से अच्छा अ़मल करे, सदक़ा करे, ख़ैरात करे, अल्लाह की शान के मुनासिब नहीं कर सकता। क्योंकि अल्लाह की शान बहुत बड़ी है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की नमाज़ आला से आला थी। लेकिन उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह सिखायाः-

अल्लाहुम्-म इन्नी ज़लमतु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव्-व ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़ि-रतम् मिन् अ़िन्दि-क वर्-हम्नी इन्न-क अन्तल् ग़फ़ूरुर्रहीम।

तर्जुमाः- ऐ अल्लाह! हमने अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया। और तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। बस तू मुझको बख़्श दे अपनी जानिब से। और मुझ पर रहम कर। बेशक आप बहुत बख़्शने और रहम करने वाले हैं।

देखो! कितनी ऊँची नमाज़ पढ़ी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने, लेकिन आख़िर में क्या कहलवाया? कि ऐ अल्लाह! मैंने बहुत ज़ुल्म किया मुझको माफ़ फ़रमा। तो हमारी और तुम्हारी क्या हैसियत है।

मोहतरम दोस्तो! लेकिन अल्लाह का यह बहुत बड़ा करम है कि वह

मेहरबानी और फ़ज़्ल फ़रमा कर उसको क़बूल करते हैं। क़बूल करके फिर उसको बढ़ाते हैं और फिर जन्नत के अन्दर अल्लाह नेमतें देते हैं।

इसलिये उन्होंने यूँ कहा कि "ऐ अल्लाह पाक! मैं तो ख़ाली हाथ आया हूँ। तेरी शान के मुनासिब मेरा कोई अ़मल नहीं। मगर एक काम करता था कि लोगों के खोटे सिक्के ले लिया करता था" तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि तूने लोगों के खोटे सिक्के लिये तो मैंने तेरे खोटे आमाल क़बूल किये। उसके बाद उसको जन्नत के अन्दर दाख़िल कर दिया।

यह हमारा दावत का काम भी ऐसा ही है। जितना दूसरों को जन्नत की तरफ़ लाने की फ़िक्र करोगे, अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से इस फ़िक्र करने वाले को जन्नत की तरफ़ लेकर चला जायेगा। उन सब को जितनी बड़ी जन्नत मिलेगी, जिसने उन सब के ऊपर मेहनत की है, उसको उतनी बड़ी जन्नत अकेले मिलेगी।

इबादतों का मिज़ाज पैदा हो जाये

मेरे मोहतरम दोस्तो! इसलिये बहुत अच्छा गुर है दूसरों के साथ भलाई करना। मैंने यह भी बताया कि चार निस्बतों पर अपनी जान व माल को लगाना है- एक निस्बत आ़म जानदारों वाली है। इसमें तो अपनी ज़रूरतों पर अपने जान व माल को लगाना है। दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली है। इसके अन्दर इबादात के ऊपर जान व माल को लगाना है।

इबादतें चार तरह की हैः-

1. नमाज़ 2. रोज़ा
3. हज 4. ज़कात

और इबादतों को ऐसे तरीक़े पर करना है कि इबादतों का मिज़ाज पैदा हो जाये।

एक है नमाज़ पढ़ना और एक है नमाज़ को ऐसे तरीक़े पर पढ़ना कि नमाज़ वाला मिज़ाज पैदा हो जाये। रोज़े वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। ज़कात वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। हज वाला मिज़ाज पैदा हो जाए।

नमाज़ का मिज़ाज है कि नमाज़ के बाहर भी अल्लाह के हुक्मों पर पाबन्दी आ जाए

मिज़ाज के क्या मायने हैं?

नमाज़ ऐसी पढ़ कि अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। क्योंकि पूरी जान को अल्लाह के हुक्मों पर लगाना है। पूरे बदन को अल्लाह के हुक्म में जकड़ना है। आँख, कान, ज़बान सब अल्लाह के हुक्मों में जकड़ा हुआ है। इधर-उधर नहीं देख सकता। कान हर एक की बात को नहीं सुन सकता। सिर्फ़ इमाम के इशारे पर रुकूअ़ सज्दा कर सकता है। इसका हाथ बंधा हुआ है। खड़ा हो तो कैसे हाथ बाँधे, रुकूअ़ में कहाँ रखे, कैसे रखे? सज्दे में किस तरह हाथ की उंगलियों को मिलाकर रखे और क़अ़दे के अन्दर उंगलियों को अपनी हालत पर छोड़कर रखे।

तो हाथ पर पाबन्दी, पैर पर पाबन्दी, यहाँ तक कि दिल व दिमाग़ पर पाबन्दी होती है। नमाज़ दस मिनट की होती है लेकिन इनसान को उसने अपना पूरा पाबन्द बना दिया। अगर नमाज़ वाला मिज़ाज इनसान के अन्दर पैदा हो जाए तो यह नमाज़ के बाहर भी अल्लाह के हुक्मों का पाबन्द होगा।

अल्लाह के हुक्मों पर अपने तक़ाज़ों को दबाने का मिज़ाज पैदा हो जाए

और ज़कात का मिज़ाज क्या है?

ज़कात ऐसे तरीक़े पर अदा की जाए कि माल को अल्लाह के रास्ते में, ख़ैरात के कामों में ख़र्च करने का मिज़ाज पैदा हो जाए।

और रोज़े का मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्म पर अपने तक़ाज़ों को दबाने का मिज़ाज पैदा हो

जाए। तो जब आदमी के अन्दर तीनों मिज़ाज पैदा हो जाएँगे-

अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज, अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज, अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज, तो अब आदमी सिर्फ़ रोज़े के अन्दर ही अपने तक़ाज़े को नहीं दबाएगा बल्कि जहाँ ज़रूरत पड़ेगी वहाँ दबाएगा। सिर्फ़ ज़कात के अन्दर ही माल नहीं लगाएगा बल्कि जहाँ ज़रूरत पड़ेगी, वहाँ लगाएगा। फिर जब ये चीज़ें पैदा हो गईं तो अन्दर अख़्लाक़ आयेंगे। जिसके नतीजे में यह दूसरों पर जान व माल लगाएगा और दूसरों के ऊपर जान व माल लगाने में अपने तक़ाज़ों को दबाएगा।

ईसार व हमदर्दी की अजीब मिसाल

और ये तीनों मिज़ाज सिर्फ़ मालदारों के अन्दर ही नहीं बल्कि ग़रीबों के अन्दर भी पैदा हों।

देखिए! बकरी की सिरी सात घरों के अन्दर फिरी। वे सारे के सारे ग़रीब थे। जिसके घर बकरी की सिरी आई वह भी ग़रीब था। लेकिन उसने सोचा कि मेरे तो दो बच्चों पर फ़ाक़ा है लेकिन मेरे पड़ोसी के तीन बच्चों पर फ़ाक़ा है। लिहाज़ा वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है। तो उस सिरी को पड़ोसी को दे दी। उसका पड़ोसी भी ग़रीब, उसने देखा कि मेरे ऊपर तो दो दिन से फ़ाक़ा है, लेकिन मेरे पड़ोसी पर तीन-चार दिन का फ़ाक़ा है, लिहाज़ा वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है। तो उसने बकरी की सिरी उसको दे दी। इसी तरह हर एक दूसरे पर ख़र्च करने के कारण निकालता रहा। वह सिरी फिरती-फिराती उसी पहले घर पर पहुँच गई। और उस पहले घर वाले ने पका कर खाई।

तो बकरी की सिरी सात घरों में फिरी और जहाँ से चली वहीं पहुँच गई। लेकिन सातों घरों के अन्दर आख़िरत की पूँजी तैयार हो गई। क्योंकि हर एक ने ईसार (अपने ऊपर दूसरे को तरजीह देना) और हमदर्दी वाला मामला किया।

बेइन्तिहा प्यारा अ़मल

इसी तरह एक घर के अन्दर मेहमान आया। खाना सिर्फ़ इतना है कि मेहमान खा सके। मेहमान के सामने खाना रखा गया और औ़रत ने चिराग़ की बत्ती ठीक करने के बहाने चिराग़ को गुल कर दिया। क्योंकि अगर चिराग़ जलेगा तो मेहमान को अन्दाज़ा हो जाएगा कि इतना ही खाना है और घर वालों को भी खाना है, तो थोड़ा खाएगा और छोड़ देगा। इसी वजह से उसने चिराग़ को गुल कर दिया ताकि मेहमान पेट भरकर खा ले।

देखिए! यहाँ खिलाने वाला जो मेहमान नवाज़ है, ग़रीब है। मालदार नहीं है, लेकिन उसके अन्दर कैसा ईसार और कैसी हमदर्दी और कैसा ख़र्च करने का जज़्बा है। आ़म तौर से जहाँ ख़र्च करने का मामला आता है वहाँ ज़ेहनों में यह बात आती है कि मालदार ख़र्च करें। हालाँकि ख़र्च करना सिर्फ़ मालदार के वास्ते नहीं है बल्कि ग़रीब भी करें। आ़म तौर से मालदारों को ग़रीबों की ज़रूरतों का पता नहीं चलता लेकिन ग़रीब ग़रीब को जानता है। एक दूसरे की तंगी को जानता है। ग़रीब के लड़के बच्चे रो रहे हैं। दूसरा ग़रीब जानता है कि क्यों रो रहे हैं। लेकिन मालदार को पता नहीं। तो अब यह ग़रीब दूसरे ग़रीब की ज़रूरत को पूरा करेगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उस औ़रत ने चिराग़ गुल कर दिया कि मेहमान खा ले, हम खाएँ या न खाएँ।

अब सुबह के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में जब यह सहाबी पहुँचे हैं तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आज रात तुमने कौनसा कारनामा अन्जाम दिया कि तुम्हारा और तुम्हारे जैसों का तज़किरा क़ुरआ़न में आया है:-

يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ (پ٢٨)

तर्जुमाः- तंगी की हालत में रहकर भी दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देते हैं।

दोस्तो! यह कितनी बड़ी चीज़ है?

अगर किसी को मालूम हो जाए कि एक मंत्री ने अपनी मज्लिस में मेरा तज़्किरा किया है तो कितनी ख़ुशी होगी कि मेरा तज़्किरा उस मंत्री की मज्लिस में हुआ।

और यहाँ भूखों को खाना खिलाने वालों का ज़िक्र अल्लाह क़ुरआन के अन्दर कर रहे हैं। और सिर्फ़ उसी आदमी के लिए नहीं जिसने खाना खिलाया बल्कि क़ियामत तक इस तरीक़े से जो भी दूसरों की ख़ैर-ख़बर लेगा, इस आयत में उसका भी ज़िक्र है।

बेदीनों को दीनदार बनाने की फ़िक्र

ख़ुदा के नज़दीक बेहद पसन्दीदा

तो आप अन्दाज़ा लगाएँ कि जो आदमी गश्त करके बेदीन को दीनदार बनाने की फ़िक्र करे, अगर वह बेदीन रह जाता तो जहन्नम के अन्दर बड़ी लम्बी भूख बरदाश्त करनी पड़ती, और दीनदार बनकर इतनी लम्बी भूख जो जहन्नम के अन्दर थी, जन्नत के अन्दर दाख़िल होकर दूर हो गई। तो उससे अल्लाह पाक कितना ख़ुश होंगे।

ग़रीब और मालदार दोनों का कमाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि ख़र्च का मामला सिर्फ़ मालदार ही पर नहीं बल्कि ग़रीब पर भी है। क्योंकि ग़रीब, ग़रीब को पहचानता है। ग़रीब का कमाल यह है कि किसी दरवाज़े पर माँगे नहीं। और मालदार का कमाल यह है कि जहाँ ग़रीब और परेशानहाल हों, वह उनकी ज़रूरतों को पूरी करे।

मस्जिद के अन्दर जो ज़ेहन बनाया जाता था वह यूँ बनाया जाता था कि पालने वाला अल्लाह है। ज़रूरतें पूरी करने वाला अल्लाह है। ग़ैर से कुछ नहीं होता। लिहाज़ा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होना चाहिए। और उसी का हुक्म पूरा करना चाहिए। अल्लाह कामयाब करेंगे।

अल्लाह का हुक्म बनी इस्राईल ने पूरा किया था इसके बावजूद कि ग़रीब थे। झोंपड़ी में रहते थे। परेशानहाल थे। लेकिन जब अल्लाह का हुक्म पूरा किया तो अल्लह ने मेहरबानी फ़रमायी कि फ़िरऔन का कमाया हुआ माल इनके लिए हलाल बना दिया और उसे बनी इस्राईल के क़दमों में डाल दिया।

और फ़िरऔन के हाथ में सब कुछ था लेकिन उसने अल्लाह को नाराज़ कर दिया। फ़ौज लेकर निकला। समन्दर का पानी मिला और हमेशा-हमेशा के लिए ग़र्क़ हो गया। और जहन्नम के अन्दर जाने वाला बना और अज़ाब के अन्दर मुब्तला हो गया।

तो अगर अल्लाह को राज़ी करने वाला ग़रीब भी है, अल्लाह उसकी मदद करता है। और अगर अल्लाह को नाराज़ करने वाला मालदार है तो अल्लाह उसकी भी पकड़ करते हैं।

बस ज़ेहन बनने की बात है

तो मस्जिद के अन्दर यह ज़ेहन बनाया जाता है और यह ज़ेहन लेकर ग़रीब भी बाहर निकला और मालदार भी बाहर निकला। मालदार को फ़िक्र हुई कि अल्लाह को राज़ी करने के लिए ज़कात भी देनी चाहिए। अगर ज़कात नहीं देगा तो उसका माल क़ियामत के दिन साँप बनेगा और उसके गले में अज़्दहा बनाकर डाला जाएगा और वह डसेगा। इसी तरह अगर ज़कात नहीं दी तो सोने-चाँदी का पतरा गर्म करके दाग़ा जाएगा। अब मालदार घबरा गया कि बहुत बड़ी मुसीबत मेरे सर पर आएगी।

और ग़रीब ने भी मस्जिद की बातें सुनीं तो ग़रीब का ज़ेहन यह था कि ज़िन्दगी माल से नहीं बनती। ज़िन्दगी चीज़ों से नहीं बनती। ज़िन्दगी तो अल्लाह बनाएँगे।

अब ग़रीब ने यह तय किया कि मेहनत मज़दूरी करके सूखी रोटी खा लेंगे लेकिन किसी से माँगेगे नहीं। अगर मैं माँगूँगा तो अल्लाह नाराज़ होंगे।

ग़ैरों से माँगना मोहताजी का दरवाज़ा खोलना है

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने माँगने का दरवाज़ा खोला तो अल्लाह उसके ऊपर मोहताजी का दरवाज़ा खोल देते हैं।

और दूसरी बात यह भी फ़रमाईः-

"जो सवाल करने वाला है, क़ियामत के दिन उसके चेहरे पर हड्डी होगी, गोश्त नहीं होगा।"

जब ग़रीब ने भी तय कर लिया कि मैं माँगूगा नहीं। बल्कि हम नमाज़ पढ़ेंगे। फिर मेहनत मज़दूरी करके जो रोटी चटनी मिलेगी उसपर गुज़ारा कर लेंगे, अल्लाह को नाराज़ नहीं करेंगे।

अमीर को इसकी फ़िक्र हुई कि मेरे ऊपर अल्लाह का अ़ज़ाब होगा अगर मैं ज़कात नहीं निकालूँगा। अब यह माल लेकर ग़रीब के पास गया और कहा कि पाँच सौ रुपये ज़कात क़बूल कर लो। तो ग़रीब ने कहा सेठ साहिब! मस्जिद के अन्दर हमने सुना है कि ज़िन्दगी पैसे से नहीं बनती बल्कि अल्लाह की बात मानने से बनती है। मैं तो अल्लाह की बात मानता हूँ। नमाज़ पढ़ता हूँ। ज़िक्र करता हूँ। तिलावत करता हूँ। अल्लाह मेरी ज़िन्दगी बनायेगा। फिर मालदार ने यूँ कहा कि अगर तू मेरा माल ले लेगा तो तुम्हारा मुझ पर एहसान होगा। गोया तूने मुझको अ़ज़ाब से बचा लिया। अल्लाह के वास्ते मुझ पर मेहरबानी करो। यह पाँच सौ रुपये क़बूल कर लो।

बेहतरीन मालदार कौन?

कहने वाले ने ख़ूब कहा है।

نِعْمَ الْاَمِيْرُ عَلٰى بَابِ الْفَقِيْرِ وَبِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰى بَابِ الْاَمِيْرِ

तर्जुमाः- बेहतरीन मालदार वह है जो फ़क़ीर के दरवाज़े पर जाये, और बद्तरीन ग़रीब वह है जो मालदार के दरवाज़े पर जाये।

जब इस ग़रीब ने देखा कि यह तो बिल्कुल पीछे पड़ गया है तो कहा देखो! मुझको माफ़ करो। मैं तुम्हें एक दूसरे ग़रीब का घर बताता हूँ। वह बहुत ज़्यादा परेशानहाल है, उसको पाँच सौ रुपये दे दो। मालदार ने कहा कि आपने बहुत बड़ी मेहरबानी की कि एक ग़रीब का घर बता दिया। इस पाँच सौ को तुम ले लो, उसको मैं पाँच सौ और दे दूँगा। और मुझे ओरों के घर बता दो, ताकि वहाँ भी मैं ज़कात का माल दे सकूँ।

अपनी जान व माल दूसरों पर लगाना और दूसरों से बेपरवाह रहना

रसूले करीम सल्ल० की तालीम और जोड़ का तरीक़ा

मेरे मोहतरम दोस्तो! मस्जिद के अन्दर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िन्दगी और ईमानियात की बातें एक-दूसरे को आदमी से बेपरवाह करती हैं, और हर एक का ज़ेहन अल्लाह की तरफ़ जाता है। इस तरह मालदारों और ग़रीबों के बीच जोड़ पैदा होता है। ग़रीब मालदार के दरवाज़े पर नहीं जाता कि अल्लाह मेरी ज़रूरत को पूरा करेगा।

एक आदमी झोंपड़े में बैठा है। उसके बीवी-बच्चे भी हैं। इतने में एक ग़ैर-मुस्लिम मालदार अपने बीवी-बच्चे के साथ गाड़ी के ज़रिये टी-पार्टी (चाय की पार्टी) में शिरकत के लिये जा रहा था। उसकी गाड़ी रास्ते में ख़राब हो गई। गर्मी का ज़माना है ग़रीब ने देखा कि उसकी गाड़ी ठीक नहीं हो रही है, परेशान है, तो उस ग़रीब ने यूँ कहा कि भाई देखो! सारे मोटर के अन्दर तप रहे हैं, उनको मेरे झोंपड़े में कर दो। अब उस ग़ैर-मुस्लिम औ़रत की मुस्लिम औ़रत ख़िदमत कर रही हैं। खाना खिला रही हैं। हाथ का पंखा बच्चे कर रहे हैं। मर्द को भी दूसरी जगह बैठाया और उसको भी खिलाया जा रहा है। अच्छा खाना था नहीं, लेकिन भूख लगी थी। भूख की हालत में वही खाना अच्छा मालूम हुआ।

फिर ग़रीब आदमी ने कहा कि मेरे पास मोटर तो नहीं है, बैलगाड़ी

है। अपने बीवी-बच्चों को बैलगाड़ी के अन्दर बिठाओ और तुम भी बैठो। और मैं तुम लोगों को लेकर तुम्हारे शहर छोड़ दूँ। और वहाँ से मेहताब मिस्त्री को लेकर आयेंगे। गाड़ी ठीक हो जायगी तो फिर ले जाना। उस आदमी ने वहाँ लेजा कर सब को छोड़ दिया और वहाँ से मेहताब को लेकर आया और गाड़ी बिल्कुल ठीक हो गई। अब उस ग़ैर-मुस्लिम मालदार के अन्दर उस ग़रीब की मुहब्बत आ गई कि इसने इतनी परेशानी की हालात में किस अन्दाज़ से हमारी ख़िदमत की। ग़ैर-मुस्लिम ने इरादा किया कि मैं इसको एक हज़ार रुपये दे दूँ। और हज़ार रुपये निकाल कर यूँ कहा कि मेरी तरफ़ से यह हज़ार रुपये क़बूल कर लो। उस ग़रीब ने कहा कि जितनी ख़िदमत मैंने तुम्हारी की है, यह तुम से लेने के लिये नहीं की बल्कि मैंने अल्लाह से लेने के लिये की है। हम अल्लाह से जन्नत लेंगे।

बताओ! अब उस ग़ैर-मुस्लिम के दिल के अन्दर उस ग़रीब मुसलमान की कितनी मुहब्बत आयेगी।

तो दूसरों के जान व माल से बेपरवाह (बेलालच) होना, और अपने जान व माल को दूसरों पर लगाना हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह ज़िन्दगी बतायी है और इस पाक ज़िन्दगी के अन्दर आपस में संगठन और मेलजोल पैदा होता है और जोड़ होता है।

परेशानहाल की परेशानी को दूर करना बेहतरीन इबादत है

मैं फिर आपको वे बातें याद दिला दूँ कि अल्लाह ने हमको चार निस्बतें दी हैं। एक आ़म जानदारों वाली निस्बत पर अपनी जान लगाये। दूसरे फ़रिश्तों की निस्बत पर यानी इबादत में लगे। और इबादतें चार तरह की हैं:- नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज। नमाज़ इस तरह पढ़े कि नमाज़ का मिज़ाज पैदा हो जाये।

आदमी मालदार है। नमाज़ पढ़ी, बाहर गया, देखा कि एक परेशानहाल टोकरी लेकर जा रहा है। टोकरी बार-बार गिर रही है। उसने

सोचा कि यह परेशानहाल टोकरी लेकर जा रहा है। अगर मैं इसकी परेशानी दूर कर दूँ तो अल्लाह मेरी परेशानी को दूर कर देगा। इसलिये उसने उसकी टोकरी सर पर रखी और उसकी मन्ज़िल तक पहुँचाया।

ख़िदमत से तवाज़ो पैदा होती है और तवाज़ो से अल्लाह दर्जों को बुलन्द करते हैं

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी में ऐसे बहुत से वाक़िआ़त हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के दौर में एक बार एक बूढ़ी औ़रत थी। आँख, कान, हाथ, पाँव से माज़ूर थी। बहुत परेशानहाल थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सोचा कि मैं इस बूढ़ी औ़रत की ख़िदमत और इसका काम करूँ, तो अल्लाह मुझसे राज़ी होगा।

इतनी ऊँची हैसियत होने के बावजूद इस तरह से ग़रीबों से मिलना और उनकी ख़िदमत करना, इससे तवाज़ो पैदा होती है। और जब अल्लाह को राज़ी करने के लिये तवाज़ो पैदा होती है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। हदीस में है।

مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰهُ (حديث)

तर्जुमाः- जो अल्लाह पाक के लिये छोटा बनता है, अल्लाह पाक उसे ऊँचा कर (यानी बड़ा बना) देते हैं।

और जो अपने को ऊँचा बनता है, अल्लाह पाक उसे नीचा कर देते हैं। जैसा कि यह भी हदीस में है।

وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللّٰهُ (حديث)

यानी जो तकब्बुर और घमण्ड करता है अल्लाह तआ़ला उसको पस्त और ज़लील कर देता है।

एक फ़रिश्ता बाक़ायदा मुक़र्रर है। उस फ़रिश्ते का हाथ आदमी के सर पर है। उसको इतना हुक्म है कि अगर यह खुद बड़ा बनना चाहे तो इसको नीचा कर दे। और अगर अपने को अल्लाह के लिये नीचा करे तो

इसको ऊँचा कर दो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का गवर्नर को कोड़े मारना

तंबीह व एहतिराम की आला मिसाल

इसलिये हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु तवाज़ो व इन्किसारी सिखाते थे कि आदमी के अन्दर तवाज़ो पैदा हो जाये। हक़ीक़त में आदमी अपने को छोटा समझने लगे। हज़रत जालूत रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहरीन के गवर्नर हैं। उन्होंने बड़ा कारनामा अन्जाम दिया। एक बार बैठे हुए थे, लोग बड़ी तारीफ़ कर रहे थे कि इन्होंने कितना बड़ा कारनामा अन्जाम दिया। बड़ी आमदनी हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु थोड़ी देर में पीछे से आये और उनकी कमर पर दो कोड़े ज़ोर से मारे। जब एक तरफ़ आदमी की तारीफ़ हो रही हो और उस हालत में उसकी पिटाई हो जाये तो कितनी रुस्वाई और शर्मिन्दगी होगी।

अब हज़रत जालूत परेशान हो गये कि किसने मुझे मारा। पीछे मुड़कर देखा तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे। उनको देखकर ख़ामोश हो गये। इसलिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का बड़ा एहतिराम (अदब और सम्मान) था।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़्ती लोगों के दरमियान बहुत मशहूर थी। लेकिन सख़्ती के साथ-साथ तक़वा (परहेज़गारी) बढ़ा हुआ था।

हज़रत जालूत रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब दो कोड़े पड़े तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा कि हज़रत! अगर मेरे से कोई ग़लती हो गई हो तो मुझको बता दीजिए ताकि मैं ठीक कर लूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी कोई ग़लती मेरे सामने नहीं आयी। लेकिन आगे की एहतियात के तौर पर दो कोड़े मारे। यह इसलिये मारे कि मजमे के अन्दर तुम्हारी तारीफ़ हो रही है। कहीं तुम्हारे ज़ेहन में यह बात न आ जाये कि मैं तो बहुत कुछ हूँ।

पिटाई नहीं करनी है

मौक़ा आ जाये तो पिटाई बरदाश्त करनी है

लेकिन मैं तुमको एक बात बता दूँ कि कहीं तुम लोग भी लोगों की पिटाईयाँ न करने लग जाना। नक़ल कौनसी बात की उतारनी है? इससे कौनसा उसूल मिला? क्या इससे यह उसूल मिला कि हम दूसरों की पिटाईयाँ करें? नहीं! इससे यह उसूल मिला कि अगर कोई ख़ुदा न करे जज़्बात में आकर हमारी पिटाई कर दे तो उसे हम हज़रत जालूत की तरह बरदाश्त करें। न यह कि हम हज़रत उमर की तरह पिटाई शुरू कर दें। हज़रत उमर की पिटाई के साथ उनका तक़वा भी बहुत बढ़ा हुआ था जो हमारे तुम्हारे बस की बात नहीं।

हज़रत मौलान इलियास साहिब रह० का अख़्लाक़

हज़रत मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि थके-मांदे रात को लेटे। मैवात के बड़े-बड़े चौधरियों में से दो चौधरी मिलने आये। हज़रत मौलाना के क़रीब ख़िदमत करने वाले लोग रहते थे। उन्होंने उन चौधरी साहिबान को रोक दिया और कहा: हज़रत आराम कर रहे हैं। आप चले जायें, सुबह को आना। हज़रत मौलाना को पता चल गया कि कोई चौधरी मिलने आये हैं। मौलाना उठकर कमरे में बैठ गये और कहा कि चौधरी को बुलाओ।

इसलिये कि दुनियावी लाईन का जो चौधरी होता है उसका भी इकराम करना चाहिए। दुनियावी लाईन का कोई भी बड़ा आदमी आये तो उसका इकराम (अदब और सम्मान) करना चाहिए।

हर क़ौम के सम्मानित आदमी का इक्राम करो

रसूले करीम सल्ल० का पाक इरशाद और अ़मल

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इरशाद है।

اَكْرِمُوْا كَرِيْمَ كُلِّ قَوْمٍ

तर्जुमाः- हर क़ौम के बड़े आदमी का इकराम (सम्मान व अदब) करो। चाहे वह दीनदार न हो। जब तुम उसका इकराम करोगे तो वह क़रीब आयेगा।

हातिम ताई के बेटे जिनका नाम अ़दी इब्ने हातिम था। बड़े लोगों में से थे। वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मिलने आये तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने बिस्तर से उठ गये और अपने कपड़े को बिछा दिया कि मेरे इस कपड़े पर से चलकर मेरे बिस्तर पर आओ। हालाँकि हज़रत अ़दी इब्ने हातिम उस वक़्त तक मुसलमान न थे। तब भी सारे नबियों के सरदार उठ गये और खड़े होकर अपना कपड़ा बिछा दिया कि इस पर से होकर बिस्तर पर आयें।

लेकिन मेरे भाई! दुनियावी लाईन के जो चौधरी होते हैं, उनके अन्दर भी बड़ी सूझ-बूझ होती है। अ़दी इब्ने हातिम ने उस कपड़े को उठा लिया और उठाकर अपने सर पर रख लिया और कहा कि यह आपका कपड़ा ऐसा नहीं है कि मेरे पैरों के नीचे आये। यह कपड़ा तो सर पर उठाने के क़ाबिल है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बैठ गये। आपने उनको दीन की दावत दी। उन्होंने कलिमा पढ़ लिया। हमारी जमाअ़तों के अन्दर ख़ुसूसी गश्त इसी लिये होता है।

किसी भी लाईन का कोई बड़ा आये तो उसका इकराम करना। इकराम करके उसको मानूस करना। मानूस करोगे तो यह बड़ा आदमी एक बार ज़बान से कह देगा कि यह अच्छा काम है तो न मालूम कितने आदमी इससे मानूस हो जायेंगे।

मेरे दोस्तो! अगर काम उसूल के साथ करेंगे तो हम दूसरों को इस काम से जोड़ने वाले बनेंगे।

अल्लाह तआ़ला हमें इस काम की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें और हम, लोगों को इस काम से जोड़ने वाले बनें, और इस काम पर अपनी जान व माल को लगाने वाले बनें। आमीन।

तक़रीर (4)

यह तक़रीर 8 नवम्बर 1992 को बंगले वाली मस्जिद देहली में की गई।

जिस तरह अल्लाह तआला ने चीज़ों के अन्दर तासीर रखी है इसी तरह अल्लाह ने आमाल के अन्दर भी तासीर रखी है। लेकिन चीज़ों की तासीर के बारे में अल्लाह ने तजुर्बा करा दिया और आमाल की तासीर के बारे में अल्लाह ने वायदा किया। इनसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की बात अल्लाह का वायदा है।

इनसान के तजुर्बे के ख़िलाफ़ हो सकता है लेकिन अल्लाह के वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ!

मेरे मोहतरम बुजुर्गो और दोस्तो! इनसान जो मेहनत करता है उससे दो माया तैयार होती हैं। एक माया इनसान के अन्दर बनती है और एक माया इनसान के बाहर बनती है।

इनसान के अन्दर की माया

इनसान के अन्दर की जो माया बनती है उससे ईमान बनेगा या कुफ़्र बनेगा। इल्म बनेगा या जहालत बनेगी। अमानत बनेगी या ख़ियानत बनेगी। अल्लाह का ध्यान बनेगा या ग़फ़लत बनेगी। रहम बनेगा या जुल्म बनेगा। सच्चाई बनेगी या झूठ बनेगा। इख़्लास बनेगा या रियाकारी बनेगी।

इनसान की मेहनत से उसके बाहर की माया

और इनसान के बाहर जो माया बनती है उससे जायदाद बनेगी, माल बनेगा, घटिया क़िस्म की ग़िज़ा बनेगी या बढ़िया क़िस्म की ग़िज़ा बनेगी। बड़ी दुकान बनेगी या छोटी दुकान बनेगी। तो इनसान के अन्दर भी एक माया बनती है और बाहर भी एक माया बनती है।

कामयाबी का दारोमदार अन्दर की माया पर

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस माया पर जो बाहर बनती है उस पर कामयाबी और नाकामी का मदार नहीं बनाया, उसको कोई अहमियत नहीं

दी। बल्कि इनसान के अन्दर जो माया है उसको कामयाबी और नाकामी का दारोमदार बनाया। अगर अन्दर की माया बिगड़ गई तो दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी भी बिगड़ गई। और अगर अन्दर की माया बन गई तो दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी बन गई।

हर अ़मल में तासीर

जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने चीज़ों के अन्दर तासीर रखी है इसी तरह अल्लाह ने आमाल के अन्दर भी तासीर रखी है। लेकिन चीज़ों की तासीर के बारे में अल्लाह ने तजुर्बा करा दिया और आमाल की तासीर के बारे में अल्लाह ने वायदा किया। इनसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की बात अल्लाह का वायदा है।

इनसान का तजुर्बा ख़िलाफ़ हो सकता है अल्लाह का वायदा नहीं

इनसान के तजुर्बे के ख़िलाफ़ हो सकता है लेकिन अल्लाह के वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। इनसान का तजुर्बा यह है कि आग जलाती है लेकिन बाज़ मर्तबा नहीं जलाती। देखो! हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग के अन्दर डाले गये लेकिन आग ने नहीं जलाया। इनसान का तजुर्बा यह है कि ज़हर मारता है लेकिन बाज़ मर्तबा नहीं मारता। देखो! हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ज़हर की पूरी शीशी पी ली मगर नहीं मरे।

इसी तरह आमाल की जो तासीर अल्लाह और उसके रसूल ने बताई है, वह बिल्कुल सही है। मिसाल के तौर पर नमाज़ पर कामयाबी का वायदा है:-

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلٰوتِهِمْ خٰشِعُوْنَ o

(پ۱۸، سورۃ المومنون)

यानी कामयाबी पा गये वे मोमिन हज़रात जो ख़ुशू ख़ुज़ू से (यानी नमाज़ को उसके आदाब के साथ) अदा करते हैं।

ख़ुशू ख़ुज़ू वाली नमाज़ पढ़ोगे तो अल्लाह कामयाब करेंगे। इसी तरह दुआ़ पर क़बूल होने का वायदा हैः-

اُدْعُوْنِیٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ (پ۲)

यानी मुझसे दुआ़ माँगो, मैं क़बूल करूँगा।

इसी तरह ज़िक्र पर इत्मीनान व सुकून होने का वायदा हैः-

اَلَا بِذِکْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (پ۱۳)

बेशक अल्लाह के ज़िक्र ही से दिल चैन व सुकून पाते हैं।

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आमाल की तासीर पर जो वायदे किये हैं वे भी बिल्कुल सही हैं। मिसाल के तौर परः

"शादी करने से तंगदस्ती दूर होती है"

हालाँकि ज़ाहिर में मालूम होता है कि तंगदस्ती बढ़ जायेगी।

अ़मल में ताक़त ज़रूरी

तो अल्लाह और उसके रसूल के जितने वायदे हैं, वे बिल्कुल सही हैं। लेकिन एक बात ज़ेहन में बिठा लो कि यह उस वक़्त में होगा जब अ़मल जानदार हों और अ़मल ताक़तवर हों। ख़ाली अ़मल का ढाँचा हो तो उस पर वायदा नहीं है। इसकी मिसाल यह है कि जब भैंस ताक़तवर और तन्दुरुस्त होगी तो दूध-घी मिलेगा। लेकिन अगर सिर्फ़ भैंस का फ़ोटू हो या भैंस मरी हुई हो तो न उससे दूध मिलेगा और न घी मिलेगा।

अ़मल में जान कैसे आये?

अब आमाल जानदार कैसे हों? तो हमें हर अ़मल के लिये पाँच बातें करनी होंगी और उनको सीखना होगा।

पहली बात यक़ीन का सही होना।

दूसरी बात जज़्बे का सही होना।

तीसरी बात तरीक़े का सही होना।

चौथी बात ध्यान का सही करना।

और पाँचवीं बात नीयत का सही करना।

पहली बात यक़ीन का सही होना, इसका नाम है ईमान। दूसरी बात जज़्बे का सही होना, इसका नाम है एहतिसाब। तीसरी बात तरीक़े का सही होना, यानी हर काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर करना। चौथे ध्यान का सही होना, इसका नाम एहसान है। और पाँचवीं बात नीयत का सही करना इसका नाम इख़्लास है।

सब कुछ करने वाले अल्लाह हैं

पहली चीज़ ईमान है। इसको हासिल करने के लिये दो काम करने हैं। एक अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर लाना है और दूसरे तमाम मख़्लूक़ का यक़ीन दिल से निकालना है। सारी मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता, करने वाले अल्लाह हैं। कारोबार करने से कुछ नहीं होता रिज़्क़ देने वाले अल्लाह हैं। दवा-इलाज करने से कुछ नहीं होता शिफ़ा देने वाले अल्लाह हैं। हर काम अल्लाह करने वाले हैं। अल्लाह जिसको चाहते मारते हैं और जिसको चाहते हैं ज़िन्दा रखते हैं। जिसको चाहते हैं इज़्ज़त देते हैं और जिसको चाहते हैं ज़िल्लत देते हैं।

जमाअ़तों की चलत-फिरत का मक़सद

हमारी ये जमाअ़तें इसी लिये चल-फिर रही हैं ताकि हमें अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए वायदों पर यक़ीन आ जाये। और सारी मख़्लूक़ात और सारी लाईनों से अपने रिश्ते को काटकर एक अल्लाह से जुड़ने वाले बनें।

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यक़ीन

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के अन्दर अल्लाह और उसके रसूल के वायदे पर यक़ीन को पैदा

किया। और इस क़द्र पैदा किया कि हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी मस्जिद में एक बार बैठे थे। किसी ने आकर ख़बर दी कि हज़रत मौहल्ले में आग लग गई है, आपका भी मकान जल गया। तो हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नहीं जला। दूसरे ने ख़बर दी तब भी कहा कि नहीं जला। इसी तरह कई आदमियों ने कहा और आप इत्मीनान से बैठे रहे। थोड़ी देर के बाद एक आदमी आया उसने कहा कि पूरा मौहल्ला जल गया और आपका घर बच गया। उन्होंने कहा कि मैंने तो पहले ही से कहा था कि मेरे मकान में आग नहीं लगी।

लोगों ने पूछा कि हज़रत! आपने इतने इत्मीनान से कहा कि आग नहीं लगी, आख़िर क्या बात है? हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दुआ़ बताई थी और उसके साथ-साथ यह भी बताया था कि जो शख़्स इसको सुबह में पढ़ लेगा तो वह शाम तक के अचानक के हादसों से महफ़ूज़ रहेगा। और अगर शाम को पढ़ लेगा तो सुबह तक के अचानक के हादसों से महफ़ूज़ रहेगा। मैंने उस दुआ़ को पढ़ लिया था। तो तुम कहते हो कि आग लग गई और अल्लाह के प्यारे नबी कहते हैं कि नहीं लगी। तो मैं तुमको सच्चा मानूँ या अल्लाह के प्यारे नबी को सच्चा मानूँ?

इसी तरह दोस्तो! हमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातों के यक़ीन को अपने दिल के अन्दर उतारना है और ईमान को मज़बूत और ताक़तवर बनाना है।

ईमान एक गहरा समन्दर है

देखो याद रखो! ईमान एक गहरा समन्दर है। जितनी इसकी मश्क़ करते रहोगे उतना ईमान बढ़ता रहेगा। किसी मौक़े पर जाकर यह बात ज़ेहन के अन्दर न आये कि मेरा ईमान मुकम्मल हो गया। हाथ-पैर मारते रहो। सहाबा किराम का ईमान इतना बढ़ा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु यूँ कहते हैं कि मेरे को अकेले सात हज़ार के मजमे के

मुक़ाबले में भेज दो।

हम ईमान की लाईन से बहुत कमज़ोर हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो! इस वक़्त मेरे ऊपर जो ग़लबा है वह यह कि हमारा ईमान बढ़ता रहे। अभी तो हम इसमें बहुत कमज़ोर हैं। अगर एक तरफ़ चीज़ों का निज़ाम (व्यवस्था) हो और दूसरी तरफ़ आमाल का निज़ाम हो, आमाल पर जो ख़ुदा तआ़ला के वायदे हैं, उन पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता, बल्कि हम तो चीज़ों के निज़ाम (व्यवस्था) को अपनाते हैं। अगर हमारे हालात ना-मुवाफ़िक़ हुए तो हम अपने हालात को मुवाफ़िक़ बनाने के लिए हर क़िस्म के तरीक़े इख़्तियार करते हैं और अल्लाह की तरफ़ रुजू नहीं करते तो हम ईमान के अन्दर बहुत कमज़ोर हैं। इसलिए हमें ईमानियात की लाईन को बहुत मज़बूत और ताक़तवर बनाना है।

इकराम और अख़्लाक़ के फ़ायदे

उसके बाद जब ईमान मज़बूत हो जाये और ताक़तवर हो जाये तो हमारे दिलों के अन्दर लोगों का इकराम (सम्मान) करना आयेगा। लोगों से हम अख़्लाक़ वाला मामला करेंगे और लोगों से मेलजोल रखेंगे, तो लोग इस्लाम की तरफ़ आयेंगे। "सुलह हुदैबिया" के अन्दर यही चीज़ पाई गई। जिससे लोग गिरोह के गिरोह इस्लाम में आने लगे और आज भी लोग इस्लाम की तरफ़ गिरोह के गिरोह आ सकते हैं अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली समाजी ज़िन्दगी, तरीक़ा, मामलात और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला अख़्लाक़ हमारे अन्दर आ जाये।

ज़िन्दगी में हुज़ूरे पाक की सुन्नतें, जैसे बदन में रूह

अब मैं एक मिसाल दूँ कि ये दुनिया की जितनी माद्दी चीज़ें हैं, इनकी मिसाल बदन की सी है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों और उनकी सुन्नतों की मिसाल रूह की सी है। बदन में अगर रूह है तो बदन काम करेगा। रूह के बग़ैर बदन काम नहीं करेगा।

तो ऐसे ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला तरीक़ा ज़िन्दगियों के अन्दर अगर है तो अल्लाह उनको कामयाब करेगा। और अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला तरीक़ा ज़िन्दगियों से निकल गया है तो आदमी जहन्नम के गढ़े के क़रीब होता चला जायेगा और आख़िर में अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम में डाल देंगे। जिसकी वजह से वह नाकाम और बरबाद हो जायेगा।

सुन्नते नबवी से ख़ाली ज़िन्दगी बेजान लाश है

और जब ज़िन्दगी के अन्दर हुज़ूरे पाक का तरीक़ा नहीं है तो उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे आपके घर के अन्दर दस पहलवान हैं। लेकिन उन दसों पहलवनों की जान निकली हुई है। लाशें पड़ी हुई हैं। तो उन पहलवानों की लाशें आपके किसी काम की नहीं हैं।

तो जब एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर पन्द्रह बड़े-बड़े कारख़ाने बनाये। पन्द्रह फ़्लेट बनाये और बढ़िया क़िस्म की कारें ख़रीदीं, तो यह समझो कि यह लाशें तैयार कर रहा है। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर जितनी भी दुनिया बनायी जायेगी वे लाशें हैं। उसमें मुसीबतों के कीड़े पड़ेंगे। आज पूरी दुनिया के अन्दर कीड़े पड़े हुए हैं, इसलिये कि लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर दुनिया को बढ़ा लिया है।

दुनिया खेल थी

मेरे मोहतरम दोस्तो! क़ब्र के अन्दर जो लोगों को अ़ज़ाब दिये जाते हैं, वे ज़िन्दों को दिखाई नहीं देते। लेकिन मरने वाले को दिखाई देते हैं। जिस वक़्त वह मरेगा उसकी समझ में आ जायेगा कि दुनिया खेल थी। और उस खेल के अन्दर सारी ज़िन्दगी गुज़ार दी, और ये मुसीबतें सर पर आ गईं।

हर एक के अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा करना हमारी ज़िम्मेदारी

इसलिये मेरे मोहतरम दोस्तो! अपनी भी फ़िक्र करनी है, घर वालों की भी फ़िक्र करनी है, ख़ानदान वालों की भी फ़िक्र करनी है, बस्ती की और आस-पास वालों की भी फ़िक्र करनी है।

एक बात ज़ेहन में रखो कि ये जितने लोग दुनिया में लगे हुए हैं, दुनिया को अपना मक़सद बनाये हुए हैं। इसके हासिल करने के लिये हर मुम्किन कोशिश करते हैं। इन्हें अल्लाह और उसके दीन की तरफ़ बुलाना है। उनको दावत देनी है। ताकि उनकी ज़िन्दगी अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर आ जाये। उनको अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए वायदों पर यक़ीन आ जाये। क़ब्र, हश्र, जन्नत, दोज़ख़ का यक़ीन हो जाये और अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो जाये और उनको इनामात से नवाज़े।

मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर भी दीन का काम करना है

लेकिन यहाँ पर आप हज़रात के ज़ेहन में यह बात आई होगी कि बाज़ मर्तबा आदमी दीन पर होता है और दीन का काम भी करता है लेकिन इसके बावजूद भी उसके ऊपर कई लाईन की परेशानियाँ आती हैं। मुश्किलें भी आती हैं लेकिन उससे घबराने की ज़रूरत नहीं है। हर नबी ने मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर दीन का काम किया। वे अल्लाह के दीन का काम करते रहे और हर क़िस्म की क़ुरबानी बरदाश्त करते रहे।

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की साबित-क़दमी (दृढ़ता)

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। उन्होंने अल्लाह के दीन की तरफ़ लोगों को बुलाया। लोगों ने उनकी बात नहीं मानी। और उन लोगों ने हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की दावत के अन्दर रुकावट

पैदा की। इसके बावजूद जब आप दावत का काम करते रहे, तो उन लोगों ने आपके बदन को आरे के ज़रिये दो टुकड़ों में तक़सीम कर दिया।

रुकावटें बस अण्डे का छिलका

तो जिन लोगों ने मुख़ालिफ़ (ना-मुवाफ़िक़) फ़िज़ा का मुक़ाबला किया, साबित-क़दम (जमे) रहे और अल्लाह का दीन फैलाते रहे, वही लोग कामयाब हुए। मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर हमें भी दीन का काम करना है। इसमें हक़ की तरबियत होती है जैसे अण्डे के छिलके की रुकावट। इस रुकावट की वजह से अन्दर से गर्मी की फ़िज़ा मिली। फिर अल्लाह तआ़ला ने उस छिलके को तोड़ दिया।

इसलिये झगड़े की ज़रूरत नहीं, बल्कि सहाबा किराम का तरीक़ा अपनाने की ज़रूरत है

इसलिये हमें किसी से झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। फ़िज़ा जैसी भी हो, उसके अन्दर हमें दावत के काम को काम बनाकर चलना है। और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के तरीक़े पर चलना है। जिस अन्दाज़ से उन्होंने दीन की दावत दी और लोगों को अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाया, बिल्कुल वही अन्दाज़ वही तरीक़ा हमें भी इख़्तियार करना है। किसी से झगड़ना नहीं है।

हज़रत इक्रिमा की इस्लाम से दुश्मनी और फिर इस्लाम क़बूल करना

अब देखिये! हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ज़िन्दगी भर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त करते रहे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने समझाया-बुझाया इसके बावजूद वह नहीं माने, यहाँ तक कि फ़तहे-मक्का के दिन हज़रत इक्रिमा ने मुसलमानों पर हमला किया। इतनी सख़्त दुश्मनी थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से और

मुसलामानों से, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने मक्का फ़तह कराया तो उस मौक़े पर हुज़ूरे पाक ने ऐसे अख़्लाक़ बरते जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। हज़रत इक्रिमा चूँकि हर दम लड़ाई झगड़े में रहे इसलिये उनको ख़तरा महसूस हुआ कि अगर मैं पकड़ा गया तो क़त्ल कर दिया जाऊँगा। इसलिये वह फ़ौरन मक्का से निकल भागे। उनकी बीवी मुसलमान हो गई थीं। उनके भाग जाने के बाद वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आईं और अ़र्ज़ किया, हज़रत! मेरे शौहर को अमन दे दीजिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अमन दे दिया। अब बीवी उनको ढूँढने चली। इक्रिमा तो मक्का से भागकर समन्दर की तरफ़ चले और कश्ती में बैठ गये। कि अब मैं मक्का में नहीं रहूँगा। लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! आँसू बड़े काम आते हैं। काम करने वालों की कुरबानी अल्लाह पाक सुरक्षित और महफ़ूज़ करते हैं, उनके आँसुओं को भी अल्लाह पाक महफ़ूज़ करते हैं, और उनकी दुआ़ओं को भी अल्लाह पाक महफ़ूज़ करते हैं।

हज़रत इक्रिमा कश्ती में सवार हो चुके थे। सहाबा की दुआ़यें, उनकी बीवी की दुआ़यें और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़यें रंग ला रही हैं। अल्लाह की शान देखिये, कश्ती भंवर में फंस गई। डूबने के क़रीब हो गई। सारे सवार परेशान हैं। कश्ती वाले ने कहा कि तुम बच नहीं सकते। उन लोगों ने कहा क्या करें? कश्ती वाले ने कहा कि कलिमा पढ़ लो तो बच सकते हो। हज़रत इक्रिमा कहते हैं कि हम इसी कलिमे से तो भागकर आये हैं, और यह कलिमा हमें यहाँ भी घेर रहा है।

मेहनत और दुआ़ की ज़रूरत

दोस्तो! दावत के इस काम की बरकत से वे लोग जो ख़ुदा का इनकार करने वाले थे, वे ख़ुदा का इक़रार करने वाले बने। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को अपने अन्दर जगह देने वाले बने। हराम व हलाल की परवाह करने वाले बने। और अब हम

अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह अपना फ़ज़्ल व करम उन लोगों पर को जो एक से ज़्यादा खुदा को मानते हैं। उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं। उनको मुश्किल-कुशा (संकट दूर करने वाला) और नफ़ा व नुक़सान का मालिक मानते हैं। अल्लाह उन लोगों पर भी अपना फ़ज़्ल फ़रमाये कि ये लोग भी अल्लाह से जुड़ने वाले बनें। और उसी को हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार मानें।

जब कश्ती डूबने के क़रीब हुई तो उसके अन्दर के लोगों ने कलिमा पढ़ लिया। इक्रिमा की बीवी भी वहाँ पहुँच गईं। उन्होंने रूमाल दिखाया कि आ जाओ। इक्रिमा ने कहा कि मक्का वाले मेरा गला काट डालेंगे। बीवी ने कहा कि मैं अमन ले चुकी हूँ। मियाँ-बीवी दोनों चले। रास्ते में बीवी से सोहबत (संभोग) करनी चाही। बीवी ने कहा कि यह नहीं होगा। इसलिये कि तुम काफ़िर हो और मैं मुसलमान हूँ। इसका इक्रिमा पर बड़ा ज़बरदस्त असर पड़ा। वह हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाये। अल्लाह के रसूल ने सहाबा किराम से कहा कि इक्रिमा आ रहे हैं। उनके बाप अबू जहल को बुरा-भला मत कहना। गाली दोगे तो मुर्दे को नहीं पहुँचेगी, लेकिन ज़िन्दा को तकलीफ़ होगी। उनको सदमा होगा। जब इक्रिमा आये तो उनके स्वागत के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम खड़े हो गये और हाथ पकड़कर अपने बिस्तर पर बिठाया और फ़रमाया कि इक्रिमा! अब भी कलिमा समझ में नहीं आया? फ़ौरन हज़रत इक्रिमा ने कलिमा पढ़ लिया और यूँ फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के प्यारे नबी! अब तक जितनी ताक़त मैंने इस्लाम के मिटाने पर लगाई है, उसकी दोगुनी ताक़त इस्लाम को ज़िन्दा करने के लिये लगाऊँगा। और अब तक जितना माल इस्लाम को मिटाने के लिये लगाया है, उसका दोगुना माल इस्लाम को ज़िन्दा करने पर लगाऊँगा।

सहाबा-ए-किराम की बेमिसाल क़ुरबानियाँ

इसी तरह आप सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी का

मुताला (अध्ययन) करके देख लें तो आपको मालूम हो जायेगा कि तमाम सहाबा किराम ने दीन के फैलाने और इसको ज़िन्दा व रोशन करने के लिये हर क़िस्म की कुरबानियाँ दीं।

माल की कुरबानी दी।

वतन को कुरबान कर दिया।

हिजरत करके हब्शा और मदीना चले गये।

औलाद को कुरबान कर दिया।

बीवी को कुरबान कर दिया।

हर क़िस्म की कुरबानी देकर इस्लाम को बुलन्द और ऊँचा किया।

आज भी इस्लाम इसी तरह रोशन और मुनव्वर है। लेकिन इसे मानने वालों के अन्दर ऐश-परस्ती, ज़र-परस्ती और इस क़िस्म की बहुत सी ख़राबियाँ पैदा हो गई हैं। जिसकी बिना पर दिलों से इस्लाम की वक़अ़त निकल गई। और आज हर क़िस्म की कुरबानियाँ दीन के बजाए दुनिया के लिये हो रही हैं।

दावत का काम और इसके फल

अल्लाह का फ़ज़्ल व करम हुआ कि उसने हमारे इस गिरावट के दौर में जहाँ इस्लाम की जड़ों को काटा जा रहा है और इस्लाम को मिटाने की हर मुम्किन कोशिशें हो रही हैं, इस दौर के अन्दर भी अल्लाह तआ़ला ने अपने कुछ नेक बन्दों के अन्दर दावत का एहसास पैदा किया, और अल्लाह तआ़ला ने इसके लिये हालात को साज़गार बनाया। और इस काम की वजह से बहुत से लोगों ने बुराई से तौबा कर ली। अच्छे काम करने वाले बने। और कितने लोगों ने अपने मामलात, सामाजिक ज़िन्दगी और अख़्लाक़ की हर लाईन की बुराईयों को दुरुस्त कर लिया। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर अपना हर काम करने लगे। अब मैं अपने बयान को ख़त्म करता हूँ लेकिन इसका कुछ नतीजा भी निकलना चाहिये। अब वे लोग खड़े हो जायें जिनको अल्लाह के रास्ते में

चार महीने और चालीस दिन के लिये जाना है। खड़े हो जायें। अल्लाह तआ़ला हम सब का अल्लाह के रास्ते में निकलना आसान फ़रमायें और हमें अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कामिल पैरवी नसीब फ़रमायें, आमीन।

तक़रीर (5)

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारी जमाअ़तों की चलत-फिरत और सरगरमी जहाँ-जहाँ हो रही है, इसमें हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ कराना न हो। जमातों की चलत-फिरत से हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों का ताल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से हो जाये, और वे अच्छे आमाल पर आ जायें ताकि उनके बेड़े पार हो जायें। किसी का बेड़ा हमें ग़र्क़ नहीं कराना है, सब के बेड़े पार कराने हैं। लेकिन सब का बेड़ा पार उस वक़्त होगा जबकि सब का ताल्लुक़ अल्लाह से जुड़े, अल्लाह की ज़ात का ताल्लुक़ उन्हें मिले और उनके आमाल अच्छे हो जायें।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (پ١٤ع١٩ف٣٤)

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दुनिया के अन्दर ज़िन्दगी बसर करने के दो रास्ते हैं- एक रास्ता अल्लाह की मर्ज़ी वाला है, और वह ईमान का रास्ता है। दूसरा रास्ता इनसान की अपनी मर्ज़ी वाला है, और वह ख़्वाहिशात (इच्छाओं) का रास्ता है, चीज़ों वाला रास्ता है। उसमें अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़कर आदमी अपनी मर्ज़ी पर चलता है।

दीन का रास्ता सीधा है

ये दो रास्ते हैं। इनमें बिल्कुल सीधा और आसान रास्ता कामयाबी और अमन व अमान लाने वाला रास्ता, चैन व सुकून, रहमतें और बरकतें उतरवाने वाला रास्ता, ज़मीनों के अन्दर से बरकतें और मुहब्बतें पैदा करने वाला रास्ता, मरने के बाद क़ब्र में सुकून पहुँचाने वाला रास्ता, हमेशा-हमेशा की जन्नत में दाख़िल करने वाला रास्ता, वह अल्लाह की मर्ज़ी वाला रास्ता है। जिस पर चलकर अल्लाह को राज़ी करते हैं।

दुनिया का रास्ता परेशानियों वाला है

दूसरा रास्ता वह है जो इनसान का अपनी मर्ज़ी वाला रास्ता है। जी चाही वाला रास्ता है। जिसके अन्दर उसका ज़ेहन चीज़ों को हासिल कराता और अपनी मर्ज़ी को पूरा कराता है। यह शुरू में और ज़ाहिर के अन्दर बहुत मज़ेदार और अच्छा मालूम होता है लेकिन अन्जाम के एतिबार से इस रास्ते पर दुनिया के अन्दर भी परेशानियाँ हैं, आपस की दुश्मनियाँ हैं, बरकतें उठ जाती हैं, हर एक की जान व माल और अबरू ख़तरे में पड़ जाती है। इस रास्ते पर चलने वाले चाहे नौकरी पेशा हों, ओहदेदार हों, विकसित देशों के हों या ग़रीब देशों के, वे इस रास्ते में परेशान होते हैं। जब वे अपनी मर्ज़ी पर चलते हैं, अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़ते हैं।

हमारे ज़ेहन में यह होता है कि जितना मुल्क व माल होगा और चीज़ें होंगी, उतनी ज़िन्दगी बनेगी। लेकिन यह सोच रखने वाले और यह नज़रिया रखने वाले, और इस पर चलने वाले मौत के वक़्त, क़ब्र और फिर उससे आगे हश्र में, फिर उससे आगे जहन्नम में, राहत व आराम से मेहरूम होंगे। तकलीफ़ों व परेशानियों में होंगे, ज़िल्लत में होंगे।

दुनिया का सिस्टम फ़ना होने वाला और आख़िरत का सिस्टम बाक़ी रहने वाला है

दुनिया के अन्दर खाना भी है और भूख भी। अगर भूख महसूस हो रही है, आपने खाना खाया, भूख ख़त्म हो गई। तो दुनिया का निज़ाम फ़ना होने का है और ख़त्म होने वाला है। लेकिन आख़िरत का जो निज़ाम है, वह बाक़ी रहने वाला है। वहाँ एक ही बात होगी सिर्फ़ राहत या सिर्फ़ तकलीफ़। दुनिया के अन्दर दोनों बातें हैं, राहत भी है और तकलीफ़ भी है। अगर भूख है तो इसको मिटाने के लिये खाना भी है। प्यास है तो इसके लिये पानी भी है। रात का अंधेरा आया दिन का उजाला ख़त्म, गर्मी का मौसम आया सर्दी का मौसम ख़त्म। दुनिया में दोनों चीज़ें साथ

मिलेंगी। आदमी चाहे नेक हो या बुरा, तकलीफ़ हर एक पर आती है, और राहत भी हर एक पर आती है। कोई आदमी दुनिया में ऐसा नहीं कि जिसके लिये ज़िन्दगी भर राहत रही हो। या जिस पर ज़िन्दगी भर तकलीफ़ रही हो। हर एक पर राहत और तकलीफ़ दोनों आती हैं।

इनसान का आख़िरत का अन्जाम

मगर मौत के बाद एक चीज़ मुतैयन हो जाती है, राहत या तकलीफ़। अगर तकलीफ़ मुतैयन हो गयी तो फिर तकलीफ़ बढ़ती रहेगी। अगर बग़ैर ईमान के दुनिया से गया तो फिर वह तकलीफ़ हमेशा रहेगी। अगर मरने के बाद राहत तजवीज़ हो गयी, फिर तो राहत मरने के बाद ही से शुरू हो जायेगी। फ़रिश्तों के ज़रिये स्वागत होगा। क़ब्र के अन्दर जन्नत की खिड़की खोल दी जायेगी। उसे लिटा दिया जायेगा और कह दिया जायेगा कि जिस तरीक़े से दुल्हन सोती है सो जा। दिन में दो बार जगाकर उस खिड़की से उसका ठिकाना दिखाया जायेगा कि यह है तेरा ठिकाना। तो यह अल्लाह का महबूब बन्दा और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने वाला कहेगा कि ऐ अल्लाह! तू क़ियामत को जल्दी से क़ायम कर, ताकि मैं तेरे इनामात की जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। क़ियामत तक वह क़ब्र में रहेगा। और जब क़ियामत का दिन आयेगा तो उसका हिसाब व किताब और हश्र के मर्हले इतने कम और मुख़्तसर वक़्त में होंगे कि जितना वक़्त चन्द रकअ़त नमाज़ पढ़ने में गुज़रता है। गोया कि इतना वक़्त गुज़ारा और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। जन्नत में दाख़िल होगा तो फिर वहाँ पर किसी क़िस्म की तकलीफ़ ही नहीं। बाग़ात, नहरें, मकानात, बीवियाँ, अच्छे कपड़े, घूमना, टहलना खाना, पीना, अल्लाह की ज़ियारत करना, अल्लाह से बात करना नसीब होना। न जन्नत कभी ख़त्म होगी न जन्नती ख़त्म होंगे।

इनसान के मुजाहदे की मिक़्दार

लेकिन यह सब कुछ किसके लिये है? उसके लिये जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चले। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने में एक मुजाहदा है, उस मुजाहदे के लिये आदमी तैयार हो जाये। मिसाल के तौर पर एक आदमी की साठ सत्तर साल उम्र होती है। उसमें भी पन्द्रह साल गुज़र गये बचपने के, बाक़ी बचे पैंतालीस-पचास साल, तो इसके अन्दर से रातें निकल गयीं सोने के अन्दर, अब रह गये सिर्फ़ दिन, तो इतनी देर तक अल्लाह की मर्ज़ी पर रहना है और इसमें सिर्फ़ एक ही मुजाहदा है और एक तकलीफ़ उठाना है। वह क्या है? वह है अपनी मर्ज़ी को छोड़ना। इसे आदमी बरदाश्त कर ले यानी अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये अपनी मर्ज़ी को छोड़ दे। अपनी मर्ज़ी को जब छोड़ेगा तो अल्लाह की मर्ज़ी पूरी होगी। इस मुजाहदे पर अल्लाह तआ़ला दरवाज़ा खोलते हैं हिदायत का। जब आदमी इस मुजाहदे को बरदाश्त करता है तो अल्लाह की छुपी हुई मदद उसके सामने आती है।

तू मुझे राज़ी करेगा तो मैं तुझे राज़ी करूँगा

ज़िन्दगी भर अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करना है। अगर मालदार है तो अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? इसकी तहक़ीक़ करे। ग़रीब अगर है तो अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? अगर शौहर है तो बीवी के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? बीवी के लिये शौहर के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? अपने बारे में, औलाद के बारे में, पड़ोसियों के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? बस इस बात को आदमी ठान ले और अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान कर दे। फिर तो अल्लाह पाक बताते हैं कि अगर तू मुझे राज़ी कर लेगा तो मैं भी तुझे राज़ी कर दूँगा।

अच्छे आमाल के लिये शर्त

अब अल्लाह की मर्ज़ी वाला रास्ता, जिस पर चलकर अपनी मर्ज़ी को

कुरबान करना है, वह कौनसा रास्ता है? दो जुमले याद रखियेः-

"ईमान वाला रास्ता"...... और......"आमाल वाला रास्ता"

यानी दिल के अन्दर का ईमान व यक़ीन मज़बूत हो। दूसरे आमाल अच्छे हों। आमाल अगर अच्छे बनाने हैं तो उस वक़्त तक नहीं बन सकते जब तक अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ न हों, रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ न हों। खाना खाना भी अगर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हो, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ हो, तो यह खाना भी अच्छा अ़मल बन गया। और इसकी क़ीमत अल्लाह क़ियामत के दिन देंगे। इसी तरह कारोबार करना, शादी करना, नमाज़ पढ़ना अच्छा अ़मल बनता है। रोज़ा रखना, दावत का काम करना, मकान बनाना, यह भी अच्छे अ़मल बनेंगे लेकिन कब बनेंगे?

जबकि अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ हों। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ हों। आमाल के अच्छा बनने और उनके क़बूल होने के लिये पहली शर्त ईमान की है।

ईमान की क़द्र व क़ीमत

ईमान इतनी क़ीमती दौलत है कि अगर इसका एक ज़र्रा लेकर आदमी इस दुनिया से गया तो उसको कभी न कभी जन्नत का मिलना तय है। अगर मरते वक़्त उसके दिल में ईमान है तो यह आदमी कभी न कभी जन्नत में ज़रूर जायेगा। अगर उसने दुनिया में गुनाह के काम किये हैं तो उन गुनाहों की सज़ा भुगत कर जन्नत में जायेगा। हाँ! अगर अल्लाह का मामला फ़ज़्ल का हुआ तो बिना सज़ा के भी अल्लाह जन्नत में दाख़िल कर देंगे। अल्लाह तआ़ला तो क़ादिरे मुतलक़ हैं। अगर अल्लाह अ़द्ल (इन्साफ़) पर आ गये तो गुनाहों की सज़ा देकर जन्नत में दाख़िल करेंगे। और अगर अल्लाह ने फ़ज़्ल का मामला किया तो हो सकता है कि किसी की शफ़ाअ़त पर अल्लाह माफ़ करके जन्नत दे दे या महज़ अपने

फ़ज़्ल से जन्नत दे दे। बहरहाल! जन्नत में जाना उस आदमी का बिल्कुल तय है। यह अल्लाह का वायदा है।

ईमान नहीं तो आमाल की ताक़त नहीं

लेकिन मरने के वक़्त तक ईमान बाक़ी रहे यह कैसे होगा? यह उस वक़्त होगा कि ज़िन्दगी भर आदमी ईमान की मेहनत करता रहे। आमाल की मेहनत करता रहेगा तब यह ईमान महफ़ूज़ रहेगा। कुरआन पाक में आप देखेंगे कि अल्लाह पाक ने आमाल पर जितने वायदे किये वे ईमान की शर्त पर किये।

नमाज़ पर अल्लाह का वायदा "कामयाबी" का है।

ज़िक्र पर अल्लाह का वायदा "इत्मीनान" का है।

रोज़े पर अल्लाह तआ़ला का वायदा "तक़वा" का है।

इसी तक़वा पर अल्लाह का वायदा "मदद" का है।

ये जितने वायदे आमाल पर अल्लाह ने बताये या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताये, ये सब ईमान की शर्त के साथ हैं। अगर ईमान है तो आमाल में ताक़त है। अगर ईमान नहीं है तो फिर आमाल की कोई क़ीमत नहीं। ईमान पर अल्लाह ने वायदे किये हैं, और अल्लाह वायदा-ख़िलाफ़ी नहीं करता। कुरआन में जगह-जगह है:-

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ٥ (پ۳)

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِیْلًا ٥ (پ۵)

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ٥ (پ۵)

यानी अल्लाह अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। अल्लाह से ज़्यादा सच बोलने वाला कोई नहीं। अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात कहने वाला कोई नहीं।

अल्लाह की ताक़त

अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ है। अल्लाह बड़ी ताक़त वाला है। बहुत ख़ज़ानों वाला है। उसके ख़ज़ाने बेशुमार हैं। उसकी ताक़त बेइन्तिहा है। जितने वायदे अल्लाह करते हैं वे सब अपनी ताक़त से पूरा करते हैं। अपने ख़ज़ाने से पूरा करते हैं।

अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत जिसकी न कोई हद है न हिसाब

अल्लाह कैसे ताक़त वाले हैं? अल्लाह ऐसे ताक़त वाले हैं कि ज़मीन व आसमान, चाँद व सूरज बनाया और किसी का सहारा नहीं लिया, अकेले अल्लाह ने बनाया। इसी तरह अपनी क़ुदरत के इस्तेमाल करने में मस्लेहत और हिक्मत के तौर पर इनसान से भी चीज़ों पर मेहनत कराते हैं, और फिर अपनी क़ुदरत से उसका नतीजा निकालते हैं। मियाँ-बीवी का मिलना एक सबब का दर्जा है। अन्दर बच्चे का पैदा करना यह अल्लाह का काम है। रोज़ाना तक़रीबन दो लाख सोलह हज़ार बच्चे दुनिया के अन्दर पैदा होते हैं। अल्लाह ऐसे क़ादिरे मुतलक़ हैं कि एक वक़्त में उन सारे बच्चों को उनकी माँओं के पेट में एक ही वक़्त में बनाते हैं। करोड़ों मादा जानवरों के पेट में अल्लाह एक ही वक़्त में बच्चे बनाते हैं। करोड़ों बीजों और गुठलियों के अन्दर से अल्लाह एक ही वक़्त में पौधे उगाते हैं। और फिर उसे दरख़्त बनाते हैं। फिर उसमें फल, फ़रूट, मैवे, तरकारियाँ उगाते हैं। अल्लाह ऐसे क़ादिरे मुतलक़ हैं।

दुनिया के अन्दर सारी फैली हुई चीज़ें अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से बनाईं और उसके बाद ये चीज़ें अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं निकलीं, बल्कि अल्लाह के क़ाबू में हैं। इन चीज़ों से अगर ज़िन्दगियों के बनाने का अल्लाह तआ़ला ने फ़ैसला किया तो ज़िन्दगियाँ बन जायेंगी। और अगर अल्लाह ने इन चीज़ों से ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला किया तो

ज़िन्दगी उजड़ जायेगी।

ज़िन्दगी का बनना और बिगड़ना अल्लाह के फ़ैसले पर है

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में डाले गये। आग उजाड़ने वाली चीज़ है। लेकिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी बन गयी। क़ारून, हामान, शद्दाद, नमरूद और फ़िरऔन को मुल्क व माल के नक़्शे में ज़िन्दगी बनना दिखाई देता था। लेकिन अल्लाह ने उजाड़ने का फ़ैसला किया तो मुल्क व माल ज़िन्दगी न बना सका। क्योंकि ख़ुदा के फ़ैसले का मुक़ाबला दुनिया की कोई ताक़त नहीं कर सकती।

लेकिन ख़ुदा के यहाँ ज़िन्दगी के बिगाड़ने और बनाने का फ़ैसला अंधाधुंध नहीं होता। ज़िन्दगियों के बनाने का फ़ैसला अल्लाह उस वक़्त करते हैं जब आदमी के अन्दर ईमान और आमाल हों। और ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला उस वक़्त करते हैं जब इनसान के अन्दर ईमान न हो और आमाल भी ख़राब हों, तब अल्लाह ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला करते हैं।

ईमान वालों के लिये मुजाहदा भी होता है

एक बात ज़ेहन में रहे कि ईमान और आमाल वालों की ज़िन्दगियाँ अल्लाह बनाते हैं, लेकिन शुरू में उन्हें मुजाहदा (मेहनत, तकलीफ़ और जद्दोजहद) करना पड़ता है। वह मुजाहदा है क्या?

अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान करना। इस मुजाहदे पर अल्लाह पाक की मदद आती है और ज़िन्दगी बनती है।

ग़लत लोगों को ढील दी जाती है

जो ईमान की दौलत से मेहरूम हैं, आमाल उनके पास नहीं हैं, अल्लाह पाक उनकी ज़िन्दगी एक दम से नहीं उजाड़ते बल्कि उन्हें मौत तक का मौक़ा देते हैं। अगर अल्लाह पाक ग़लत आदमियों की ज़िन्दगी

एक दम उजाड़ने पर आ जायें तो दुनिया में कोई ज़िन्दा बाक़ी नहीं रह सकता। अक्सर व बेश्तर बन्दों से ग़लती हो ही जाती है।

आदमी कितना ही ग़लत और बुरा काम करे लेकिन उसकी ज़िन्दगी एक दम से नहीं उजाड़ते बल्कि अल्लाह उसको मौक़ा देते हैं। मौत तक मौक़ा देते हैं और सीधे रास्ते की तरकीबें अल्लाह पाक करते हैं। उसपर तकलीफ़ें लाते हैं ताकि गिड़गिड़ा कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये। या राहतें लाते हैं कि शुक्र के तौर पर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये। उसके पास समझाने वाले भेजते हैं। जब तक अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ज़माना था, अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम तकलीफ़ें उठा-उठाकर उन ग़लत चलने वाले लोगों को समझाते थे। नबियों का आना बन्द हुआ। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी आये, आपके बाद कोई नया नबी क़ियामत तक नहीं आयेगा तो अब इस पूरी दुनिया के अन्दर सही बात समझाना और पहुँचाना कौन करेगा? इसके लिये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सवा लाख सहाबा का मजमा तैयार किया और उसको नमूना बनाया।

अब क़ियामत तक आने वाली उम्मत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस तरबियत पाये हुए मजमे को सामने रखकर अपनी ज़िन्दगी की तरतीब बनाये। अपने जान व माल का इस्तेमाल करे तो उसके ज़रिये इन्शा-अल्लाह सुम्-म इन्शा-अल्लाह दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले इनसानों तक ईमान वाली बात, आमाल वाली बात और अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करने वाली बात, दुनिया में अमन व अमान ला देने वाली बात और मरने के बाद जन्नत पाने वाली बात पूरी दुनिया के अन्दर पहुँच सकती है।

इस बिना पर अल्लाह तआ़ला ख़राब काम करने वालों को बिल्कुल से उजाड़ते नहीं बल्कि बहुत मौक़े और गुंजाईश देते हैं।

अल्लाह की पकड़ कब आती है?

मौक़ा देने के बावजूद, सही राह दिखाने वालों के भेजे जाने के बावजूद, उतार-चढ़ाव राहत व तकलीफ़ उन पर जो आता है उसके बावजूद अगर आदमी अपनी जी चाही पर रहा, और अपनी मन मानी पर रहा, अपनी ख़ुदग़र्ज़ी पर रहा, अपने बैर पर रहा, अपनी ज़िद पर रहा, तो आख़िरी दर्जे में जब अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आती है तो अल्लाह की पकड़ आने के बाद दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तें अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं। ग़लती की और फ़ौरन पकड़ा, ऐसा नहीं करते। अल्लाह बहुत करम वाले, बहुत फ़ज़्ल वाले, रहम वाले हैं। ख़ुदा ख़ूब मौक़े देते हैं। नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को साढ़े नौ सौ साल का मौक़ा दिया।

फ़िरऔ़न को लम्बी मुद्दत तक का मौक़ा दिया। क़ैसर व किस्रा को मौक़ा दिया। इसी तरह याजूज व माजूज को हज़ारों साल का मौक़ा दिया जो ज़ुल्क़रनैन की दीवार के पीछे हैं। इसी तरह दज्जाल को मौक़ा देंगे।

इसी तरह जितने ग़लत काम करते हैं उन्हें मौक़ा देते हैं। एक दम से अल्लाह तआ़ला नहीं पकड़ते। लेकिन मौक़ा देने के बावजूद जब आदमी अपने इख़्तियार को नहीं समझता तो जब अल्लाह की आख़िरी पकड़ आती है तो उस ग़लत आदमी को अल्लाह की पकड़ से बचाने के लिये दुनिया की पूरी ताक़तें मिल जायें तो भी नहीं बचा सकतीं।

अल्लाह ने इनसान के अन्दर दो इख़्तियार रखे हैं। अपनी मर्ज़ी पर चलना और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना। अगर आदमी अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर दे दे तो ज़िन्दगी बन जायेगी। और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहे तो उसकी ज़िन्दगी बिगड़ जायेगी। तो इनसान जब अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर दे दे तो ज़िन्दगी बन जायेगी और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहे तो उसकी ज़िन्दगी बिगड़ जायेगी। तो इनसान जब अपनी मर्ज़ी को अपने इख़्तियार पर चलाता रहा और ख़राब काम करता रहा तो

अल्लाह ठीक होने और संभलने का मौक़ा देते हैं। फिर भी ठीक नहीं हुआ तो अल्लाह की पकड़ होगी जिससे बच पाना नामुम्किन होगा।

फ़िरऔ़न पर अल्लाह की पकड़ आई तो पूरा लश्कर जो उसके साथ था उसको बचा नहीं सका। क़ारून पर अल्लाह की पकड़ आई तो उसका माल उसके घर में था लेकिन वह उसे धंसने से बचा नहीं सका। कोई ताक़त नहीं बचा सकती अल्लाह की पकड़ से।

रूहानी ताक़तें भी अल्लाह की पकड़ से न बचा सकीं

बल्कि इससे भी आगे तरक़्क़ी करके अगर यह बात कही जाये तो ग़लत नहीं होगी कि जैसे सारी ताक़तें अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं, इसी तरह रूहानी ताक़तें भी अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं। यहाँ तक कि जब अल्लाह की पकड़ आई तो नूह अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी। यह याद रखना कि रूहानी ताक़तों का काम अल्लाह की पकड़ से बचाना नहीं, बल्कि जब अल्लाह की पकड़ आने वाली हो तो उससे डराना है। इरशाद फ़रमाया अल्लाह पाक नेः-

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِہٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَکَ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَھُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ○ (پ۲۹)

यानी अपनी क़ौम को समझाओ हमारी पकड़ आने से पहले।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम वालों को साढ़े नौ सौ साल तक समझाया और डराया लेकिन जब पकड़ आयी तो अपनी क़ौम को क्या बचाते अपने बेटे को नहीं बचा सके। तो यह ज़ेहन में बैठ जाये कि अल्लाह की पकड़ आने से पहले-पहले तक समझाने का काम इन रूहानी ताक़तों का है।

हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ करना न हो

और भाई यह जमाअ़तों की चलत-फिरत और सक्रियता भी पूरी दुनिया को अल्लाह की पकड़ से बचाने के लिये है कि पूरी दुनिया अल्लाह की पकड़ से बच जाये। नूह अ़लैहिस्सलाम की साढ़े नौ सौ साल की मेहनत अपनी क़ौम का बेड़ा ग़र्क़ करने के लिये नहीं थी बल्कि अपनी क़ौम का बेड़ा पार कराने के लिये थी। लेकिन क़ौम का बेड़ा ग़र्क़ क्यों हुआ? इसलिये कि उन्होंने बात नहीं मानी। नूह अ़लैहिस्सलाम की नीयत क़ौम का बेड़ा पार कराने की थी। वह तो बहुत ग़म और दर्द के साथ क़ौम को दिन-रात समझाते रहते थे।

इसी तरह मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारी जमाअ़तों की चलत-फिरत और सरगरमी जहाँ-जहाँ हो रही है, इसमें हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ कराना न हो। जमातों की चलत-फिरत से हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों का ताल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से हो जाये, और वे अच्छे आमाल पर आ जायें ताकि उनके बेड़े पार हो जायें। किसी का बेड़ा हमें ग़र्क़ नहीं कराना है, सब के बेड़े पार कराने हैं। लेकिन सब का बेड़ा पार उस वक़्त होगा जबकि सब का ताल्लुक़ अल्लाह से जुड़े, अल्लाह की ज़ात का ताल्लुक़ उन्हें मिले और उनके आमाल अच्छे हो जायें।

नमूना कौन लोग?

पूरी दुनिया अल्लाह की बातों पर यक़ीन करके अपने आमाल को अच्छा करे इसके लिये नमूना पहली सदी के सहाबा थे। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी को जब लोगों ने देखा तो लोग गिरोह के गिरोह ईमान की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अब आज के ज़माने में पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसान अगर उन कलिमा पढ़ने वालों की पाकीज़ा ज़िन्दगियों को देखेंगे, उनके ईमान की ताक़त को देखेंगे, उनके आमाल के भला होने को

देखेंगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि उनका रुख़ अल्लाह की तरफ़ होगा।

अल्लाह पर यक़ीन रखने वालों के लिये वायदे

अब मैं आप हज़रात के सामने अर्ज़ करूँगा कि अल्लाह की ताक़त पर ईमान रखने वाले के लिये क्या-क्या वायदे हैं?

अल्लाह का वायदा एक तो जन्नत देने का है। वहाँ पर हमेशा-हमेशा के लिये राहत होगी। और ईमान पर इस दुनिया में अल्लाह के बहुत से वायदे हैं:

اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٥

ईमान पर सर बुलन्दी का वायदा है।

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

ईमान पर इज़्ज़त का वायदा है।

इज़्ज़त अल्लाह की तरफ़ से चलती है, रसूल के वास्ते से आती है और ईमान वालों को मिलती है।

एक वायदा ईमान वालों के लिये मदद का है।

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ٥ (پ۱۳)

यहाँ रसूलों और ईमान वालों की मदद का वायदा किया है, दुनिया में भी और क़ियामत के दिन भी।

तो कामयाबी, सरबुलन्दी, इज़्ज़त और परेशानियों से छुटकारे का वायदा अल्लाह पाक ने फ़रमाया। फिर इससे आगे हिफ़ाज़त का वायदा भी फ़रमाया है।

وَكَذٰلِكَ نُنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ٥

तर्जुमाः- और इसी तरह ईमान वालों को हम नजात देंगे।

اِنَّ اللّٰهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (پ۱۷)

यानी अल्लाह पाक दूर करते हैं ईमान वालों से इस्लाम के दुश्मनों के मक्र व फ़रेब को।

अल्लाह का एक वायदा यह भी है कि उसका फ़ज़्ल मोमिनों के शामिले हाल रहता है:

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ○ (پ٢٢)

और सब से आख़िरी बात यह कि अल्लाह ने अपनी ताईद व नुसरत (मदद और सहयोग) यहाँ तक कि अपना साथ भी मोमिनों के साथ होना बतला दिया है:

وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ○ (پ٩)

अल्लाह के ये सब वायदे ईमान पर हैं।

अल्लाह की ताक़त कब साथ होगी?

ईमान ताक़त वाला होगा तो इन्शा-अल्लाह आमाल भी अच्छे बनते जायेंगे। ईमान और आमाल अगर कमज़ोर लोगों में हों, ताक़तवर लोगों में हों, मालदार लोगों में हों, ग़रीबों में हों, तो अल्लाह राज़ी होकर एक काम तो यह करेंगे कि अल्लाह की ताक़त उनकी हिमायत में आ जायेगी। दूसरा काम यह होगा कि अल्लाह की नेमत के जो ख़ज़ाने हैं उनसे ताल्लुक़ और कनक्शन हो जाने के बाद फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकतों वाला मामला होगा।

हमें मामूली रद्दोबदल करना है

एक बात मेरी सुन लें कि जब आप ईमान वाली लाईन पर आयेंगे तो जो अपनी ज़ाहिरी तरतीब कमाने खाने और घरों पर रहने की है, उस ज़ाहिरी तरतीब को ज़रा आगे-पीछे करना पड़ेगा। अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में ज़ाहिरी तरतीब की हम परवाह नहीं करेंगे। यह काम करना पड़ेगा लेकिन अगर यह ज़ाहिरी तरतीब थोड़ी आगे-पीछे हो गई तो फिर अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चलेगा। और फिर ग़ैबी निज़ाम से अल्लाह

ज़रूरतों को पूरा करेगा। उस ग़ैबी निज़ाम से परेशानियों को ख़त्म करेगा और ग़ैबी निज़ाम से अल्लाह अपने दीन को फैलायेगा और उसमें उन काम करने वालों को इस्तेमाल करेगा।

ज़ाहिरी तरतीब में नेक व बद बराबर

ख़ुदा तआ़ला की जो ज़ाहिरी तरतीब है उसमें ख़ुदा का मामला आ़म तौर पर सबके साथ बराबर बराबर है। कितना ही ख़राब आदमी हो, कितना ही बिगड़ा हुआ आदमी हो, अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी करने वाला हो, अगर वह भी दूध का जानवर लेगा तो अल्लाह उसे भी दूध देंगे। अण्डे के जानवर पालेगा तो अल्लाह उसे अण्डे देंगे। ज़मीनों पर मेहनत करेगा तो अल्लाह सब्ज़ियाँ, फल, फ़रूट, मैवे देंगे। यह नहीं कहेंगे कि तू बिगड़ा हुआ है, मैं तेरी खेती में अनाज नहीं होने दूँगा। ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह का मामला सबके साथ एक जैसा है। दीनदार आदमी हल चलाये तो अल्लाह उसे अनाज देंगे, बेदीन चलाये तो उसे भी अनाज दे देंगे।

ज़ाहिरी तरतीब के अन्दर जो चीज़ तकलीफ़ पहुँचाने वाली है उससे दीनदार को भी तकलीफ़ होगी, बेदीन को भी तकलीफ़ होगी। पत्थर अगर किसी दीनदार आदमी को मारा जाये तो उस पत्थर से उसको भी तकलीफ़ होगी। यहाँ तक कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ताइफ़ के अन्दर पत्थर मारे गये तो आपके बदने मुबारक से भी ख़ून निकला। और यही पत्थर अगर किसी बेदीन को मारा जाये तो उसके बदन से भी ख़ून निकलेगा। राहत व आराम की ज़ाहिरी तरतीब में आ़म तौर से सब बराबर हैं।

ग़ैबी निज़ाम कब हिमायत में आयेगा?

अलबत्ता जो ईमान वाले हैं, वे अपनी तरतीब को आगे पीछे करते हैं। उसमें थोड़ी तकलीफ़ आती ज़रूर है, जैसे पेट पर पत्थर बाँधना, दाँतों

से पत्ते चबाना और तरह-तरह की तकलीफ़ों को उठाना। इन मुजाहदों को आदमी बरदाश्त करे और अल्लाह का हुक्म पूरा करे तो फिर उसके लिये अल्लाह का ग़ैबी इन्तिज़ाम होगा ज़रूरतों को पूरा करने का, परेशानियों के ख़त्म होने का और अल्लाह के दीन के फैलाने का। ये तीनों चीज़ें अल्लाह पाक ग़ैबी तरीक़े पर पूरा करेंगे।

बनी इस्राईल को अल्लाह की ग़ैबी मदद ने बचाया

अब इसकी आप हज़रात मिसालें सुन लें। बनी इस्राईल कमज़ोर, कम-ताक़त और संख्या में कम थे लेकिन उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरबियत में ईमान और आमाल वाला रास्ता इख़्तियार किया। उस पर परेशानियाँ और दिक़्क़तें पेश आईं लेकिन उन्होंने अल्लाह के हुक्म को नहीं तोड़ा। ईमान और आमाल वाली लाईन को नहीं छोड़ा। अब बाद में अल्लाह की ग़ैबी मदद आ गयी। मिसाल के तौर पर अल्लाह ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये बनी इस्राईल से यह इरशाद फ़रमाया कि:

اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِیْ (پ۱۶)

मेरे बन्दों को लो और मिस्र से निकल जाओ।

जब तक मिस्र में थे, फ़िरऔ़न के आदमी मारते थे, पीटते थे, ज़लील करते थे। और अब अल्लाह का हुक्म हुआ कि मिस्र को छोड़ दो। उन्होंने जब इस हुक्म को पूरा किया तो कुछ ज़ाहिरी तरतीब खाने-कमाने की ज़रूर मुतास्सिर (प्रभावित) हुई लेकिन उन्होंने इस हुक्म को पूरा किया और निकल गये। अब पीछे से फ़िरऔ़न अपना लश्कर लेकर आ गया। सामने समन्दर, ये बेचारे बीच में एक बहुत बड़े मुजाहदे में आ गये। सब कह पड़े: "हज़रत! हम तो पकड़े गये।"

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह का ग़ैबी मदद का वायदा था:

لَا تَخَافُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰی ○

डरना मत कि तुम्हें फ़िरऔ़न पकड़ लेगा, और न ही किसी भी और

तरह का ख़ौफ़ करना।

इस वायदे पर भरोसा करते हुए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ऐलान किया:

كَلَّآ إِنَّ مَعِىَ رَبِّى سَيَهْدِينِ ٥

हरगिज़ वह बात नहीं जो तुम कह रहे थे। मेरे साथ मेरा अल्लाह है जो रास्ता निकालेगा।

ज़ाहिरन कुछ नज़र नहीं आता था लेकिन अल्लाह पाक ने समन्दर में बारह रास्ते कर दिये। बनी इस्राईल उससे पार उतर गये। जब उन्हीं रास्तों पर फ़िरऔ़न आया तो पानी मिल गया और वह डूब गया।

इस तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने बनी इस्राईल को फ़िरऔ़न के शर (बुराई) से बचाया। मगर कब? जब उन्होंने अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिये अपनी ज़ाहिरी तरतीब को आगे-पीछे कर दिया, और ख़ुदाई तक़ाज़ों को पूरा कर दिया। तब ग़ैबी तरीक़े पर अल्लाह ने उनको बचा लिया।

सहाबा की कुरबानियाँ और अल्लाह की मदद

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! आप हज़रात इस बात को तय करें कि ईमान और आमाल के लिये हमें जो ज़ाहिरी तरतीब कुरबान करनी पड़ेगी हम उसे कुरबान कर देंगे लेकिन अल्लाह का हुक्म नहीं छोड़ेंगे। इसकी आला और मुकम्मल मिसाल सहाबा ने दी। सहाबा कमज़ोर थे। हर लाईन में कम-तक़ात थे। कम संख्या में थे। लेकिन वे अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये अपनी ज़ाहिरी तरतीबें बराबर कुरबान करते रहे।

अगर हुक्म पूरा करने के लिये हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपनी बीवी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा छोड़नी पड़ीं तो छोड़ दिया, और उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अपना बच्चा छोड़ना पड़ा तो छोड़ दिया, लेकिन हुक्म को पूरा किया। इतना मुजाहदा पड़ा कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा मक्का मुअ़ज़्ज़मा के बाहर आकर बड़ी मुद्दत तक

रोती रहतीं, अपने शौहर की जुदाई पर और अपने बेटे की जुदाई पर, लेकिन अल्लाह का हुक्म पूरा किया।

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये माल छोड़ना पड़ा तो उन्होंने माल छोड़ा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये पूरा माल लेजाने की ज़रूरत पेश आई तो सारा का सारा माल ले गये। इसी तरह मुहाजिरीन सहाबा को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये वतन को एक दम से छोड़ना पड़ा तो वतन को हमेशा के लिये छोड़ दिया। मदीने वालों को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये, उन वतन छोड़ने वाले मुहाजिरीन का साथ देने के लिये मदीने के अन्सार सहाबा ने जो कुछ किया उन सब में ज़ाहिरी तरतीबें आगे-पीछे हो गईं। अन्सार ने मुहाजिरीन को अपना मकान दिया, अपना माल व असबाब दिया। यहाँ तक कि अगर किसी के पास दो बीवियाँ थीं तो एक को तलाक़ देकर अपने मुहाजिर भाई के साथ उसका निकाह कर दिया।

"मैं कहता हूँ कि अल्लाह के दीन का क्या होगा?"
(हज़रत सिद्दीक़े अकबर का जवाब)

नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार का मजमा हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुल्क शाम की तरफ़ भेजने का हुक्म दे गये थे। इस हुक्म को ख़लीफ़ा-ए-अव्वल सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूरा किया। ऐसे वक़्त में जबकि रोम का बादशाह दो लाख का मजमा लेकर मदीना मुनव्वरा को तहस-नहस करने के लिये निकल चुका था। एक तरफ़ मुसैलमा कज़्ज़ाब नुबुव्वत का दावा कर चुका था। एक बड़ा मजमा उसके साथ हो चुका था। चारों तरफ़ से फ़ितने और फ़साद आ चुके थे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ लेजाने के बाद सारा मदीना ख़तरों से घिर चुका था। ऐसी हालत में हज़रत सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म "कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की जमाअ़त को रवाना कर दो" को पूरा किया। उन्होंने जमाअ़तें रवाना कर दीं। अगरचे सहाबा ने सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि उन्हें रोक लो। लाखों का हमला होने वाला है, मदीने की औ़रतों बच्चों का क्या होगा? लेकिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मदीने की औ़रतों बच्चों को कहते हो, मैं कहता हूँ कि नबी के हुक्म का क्या होगा। अल्लाह के नबी का हुक्म जब बदर में पूरा हुआ तो बावजूद यह कि ज़ाहिरी तरतीब हमारी आगे पीछे थी लेकिन अल्लाह की मदद से काम बना।

ग़ज़वा-ए-हुनैन में हमारी ज़ाहिरी तरतीब बहुत मज़बूत और संगठित थी। बारह हज़ार का मजमा साथ था। तैयारी और सामान बहुत था। सामने वाले सिर्फ़ चार हज़ार थे। उनकी तैयारी और सामान इतना नहीं था लेकिन हमारे अन्दर ज़रा-सा यह ख़्याल आ गया कि हम तो भारी संख्या में हैं, और वे थोड़ी। कुछ लोगों की निगाह अल्लाह से हटकर अपनी संख्या पर रुकी तो अल्लाह की मदद आसमान पर रुक गई। तब ये बारह हज़ार का मजमा चार हज़ार के मुक़ाबले में भागने लगा, सिवाय चन्द के जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ रुक गये। जबकि ग़ज़वा-ए-बदर में तीन सौ तेरह, हज़ार के मुक़ाबले में थे और जम गये क्योंकि वहाँ अल्लाह की मदद थी।

क्यों मदद थी?

इसलिये कि बात पूरी कर दी थी।

अब यहाँ से मदद क्यों उठ गयी?

इसलिये कि बात पूरी होने में कसर रह गयी।

ग़जवा-ए-उहुद के अन्दर अल्लाह की मदद उठ गयी। इसलिये कि नबी ने एक बात फ़रमा दी थी, वह बात चन्द आदमियों से छूट गयी। नबी की बात का छूट जाना अल्लाह की मदद का रुक जाना है। नबी की बात का पूरा होना अल्लाह की मदद का उतरना है।

हम बग़ैर अल्लाह की मदद के कुछ नहीं कर सकते। न हमारा सामान कुछ कर सकेगा और न हमारी संख्या। हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने हुक्म पूरा किया। सब को भेज दिया। सिर्फ़ सौ दो सौ रह गये।

दोबरा फिर तक़ाज़ा आया, सूचनाएँ मिलीं कि कुछ लोग दीन इस्लाम से फिर रहे हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हम सब लोग चलें, इस फ़ितने की रोकथाम करें। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया:

ऐ अमीरुल् मोमिनीन! मदीने की औरतों और बच्चों का क्या होगा?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ेहन में क्या था? कि तुम कहते हो कि मदीने की औरतों और बच्चों का क्या होगा? मैं कहता हूँ कि "अल्लाह के दीन का क्या होगा?"

एक तरफ़ मदीने की औरतों का ज़िन्दा रहना और मरना, एक तरफ़ अल्लाह के दीन का ज़िन्दा होना और मिटना है। इन दोनों का जब मुक़ाबला पड़ गया तो हम दीन को मुक़द्दम करेंगे। (यानी दीन को पहले सामने रखेंगे)।

अल्लाह के दीन का मिटना मैं गवारा नहीं कर सकता

(हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान)

मुर्तद (दीन इस्लाम से फिर जाने वाले) लोगों से मुक़ाबले की तहरीक (आन्दोलन) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने चलायी और कहा कि इस राह में मेरी भी शहादत हो जाये, उम्महातुल् मोमिनीन (नबी करीम की पाक बीवियाँ) शहीद हो जायें, हमारी लाशें तड़प रही हों, हमारा दफ़न करने वाला कोई बाक़ी न रहे, जंगल के भेड़िये और कुत्ते हमारी लाशों को खायें। सब कुछ मैं गवारा कर सकता हूँ लेकिन अल्लाह के दीन का मिटना मैं गवारा नहीं कर सकता।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर का हौसला और ख़ुदा की ग़ैबी मदद

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अ़ज़्म व इरादे (हौसले व हिम्मत) के आगे सब की हुज्जतें (दलीलें और तर्क) शिकस्त खा गईं। सब निकल गये, मदीना ख़ाली हो गया। सिर्फ़ औ़रतें और बच्चे रह गये। चारों तरफ़ से परेशानियाँ ही परेशानियाँ घेरे हुए थीं। लेकिन जब क़ुरबानी दी तो अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चला।

अल्लाह रब्बुल् इ़ज़्ज़त ने हिरक़्ल (रोम के बादशाह) पर रौब डाल दिया। वह दो लाख का मजमा लेकर मदीना पर हमला किये बग़ैर वापस चला गया। मुर्तद (दीन से फिर जाने वाले) लोगों पर भी अल्लाह ने रौब डाला, वे सब के सब फिर ईमान की तरफ़ लौट आये। इस तरह महीने दो महीने के अन्दर, जो फ़िज़ा हज़रत नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम छोड़कर गये थे, वैसी ही फ़िज़ा हो गयी।

तेईस साला नबवी दौर ढाई साला सिद्दीक़ी दौर में मुजाहदात और उन पर मुरत्तब परिणाम

नबी पाक की सारी सीरत (जीवनी) में ख़ास तौर पर तेईस साल की नबवी ज़िन्दगी और ढाई साल के सिद्दीक़ी दौर में क्या मिलेगा?

अल्लाह के हुक्म पर दीन के तक़ाज़े पर क़ुरबानी देना। ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करना। इस पर तीन दरवाज़े अल्लाह ने खोलेः

1. ज़रूरतों का पूरा करना।

यानी 'क़ैसर व किस्रा' (रोम और ईरान के बादशाहों) के सारे ख़ज़ाने सहाबा के क़दमों पर डाल दिये। महज़ पच्चीस साल के अन्दर। अगर सात सौ साल तक कमाते तो इतना न मिलता। अल्लाह ने उससे ज़्यादा दे दिया।

2. परेशानियों के दूर करने में अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चला। मुर्तद (दीन से फिर जाने वाले) लोगों का फ़ितना दबा दिया गया। ज़कात रोक लेने वालों को फिर ताबेदारों में दाख़िल किया गया। क़ैसर व किस्रा की शिकस्त के बाद पूरे आ़लम पर रौब बैठ गया।

3. अल्लाह के दीन का फैलना।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ वाली तकलीफ़ पर हम हिन्दुस्तान वालों को ईमान मिला

हम हिन्दुस्तान वालों को जो ईमान मिला, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ की तकलीफ़ पर मिला। ताइफ़ में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो तकलीफ़ उठायी कि आप पर पत्थर मारे गये, बेहोश हुए, बेहोशी की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बाग़ में लाया गया। पानी का छिड़काव किया गया। आपकी आँख खुली। देखा कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम खड़े हैं। उनके सामने पहाड़ों का फ़रिश्ता खड़ा है। हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि अल्लाह ने सब देख लिया, सब सुन लिया। अल्लाह ने पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है। प्यारे नबी आप इस फ़रिश्ते से जो कहेंगे, यह वही करेगा। अल्लाह के हुक्म से आया है। अगर कहिये तो दोनों पहाड़ मिलाकर ताइफ़ वालों को पीस दे।

लेकिन हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिल मुबारक में इनसानियत का ग़म था। इनसानियत का दर्द था। इनसानियत की फ़िक्र थी। आपको कोई धक्के मारता तो भी दोबारा उसके पास जाते।

मोहतरम दोस्तो! बावजूद इसके कि लोग धक्के मार रहे थे। पत्थर मार रहे थे, लेकिन अल्लाह के नबी अल्लाह के अ़ज़ाब को रुकवा रहे थे।

ऐ मेरे अल्लाह! तू अ़ज़ाब को रोक दे। यह नहीं मानते तो हो सकता है कि इनकी औलाद मान ले।

एक तरफ़ से अज़ाब रुकवाया जा रहा है, और जिनके ऊपर से अज़ाब रुकवाया जा रहा है जब उनके पास जाते हैं तो वे पत्थर मार-मारकर बेहोश करते हैं। इस बेहोशी के बाद आपने जो दुआ माँगी वह किस क़द्र रहम-दिली और दर्द से भरी होगी। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआयें जो किताबों में आ गई हैं वे दुआयें ऐसी हैं जिनको सुनने वालों ने सुना लेकिन तन्हाई की दुआयें जो पूरी इनसानियत के ग़म में माँगी जाती थीं उनको किसी ने नहीं सुना। न मालूम वे कितनी दर्द भरी दुआयें होंगी।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मारने वाले और धक्का देने वालों की हरकत पर हमें ग़म और सदमा है। लेकिन सदमा हमें इस बात पर भी होमा चाहिये कि जिस पाकीज़ा ज़िन्दगी के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने धक्के खाये, आज मुसलमानों के घर से हुज़ूरे पाक का पाकीज़ा दीन और तरीक़ा धक्का खा रहा है। कारोबार और शादियों से धक्के खा रहा है।

यह बड़ी दर्द भरी बात है कि वे ज़ालिम दुश्मन थे। उन ज़ालिमों ने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को धक्के मारे। लेकिन दोस्तो! जिस पाकीज़ा दीन और पाकीज़ा तरीक़े को जारी करने के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने धक्के खाये, वही दीन और पाक तरीक़ा आज कलिमा पढ़ने वालों के घरों से धक्के खा रहा है और कारोबार से धक्का खा रहा है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोई बद्-दुआ नहीं की और कहा कि अगर ये नहीं मानते हैं तो इनकी औलाद मानेगी। हालात ऐसे थे कि दीन के फैलने की कोई सूरत उस वक़्त नज़र नहीं आ रही थी। लेकिन आख़िर वक़्त में यही ताइफ़ वाले मदीने में आये और उन्होंने कलिमा पढ़ा। उन्हीं की नस्ल में हज़रत मुहम्मद इब्ने क़ासिम सक़फ़ी पैदा हुए। वह ईमान और आमाल वालों की एक जमाअ़त वहाँ से

लेकर चले और हिन्दुस्तान आये। सिन्ध के इलाक़े में क़दम रखा। उस ज़माने में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश, बर्मा ये सब मुल्क हिन्दुस्तान ही में थे। वह ईमान और आमाल वाली एक जमाअ़त साथ लाये थे। लोगों ने उसे देखा और देखकर ईमान वाली बातें फैलीं और फैलती चली गईं। यहाँ तक कि आज करोड़ों की संख्या में कलिमा पढ़ने वाले मुल्क में फैले हुए हैं। जिनमें हम और आप भी हैं। यह मुहम्मद इब्ने क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साथ आने वाली ईमान और आमाल वाली जमाअ़त की बरकत है।

घबराने की ज़रूरत नहीं

अब एक बात समझिये जो मैं आपको बता रहा हूँ। जमाअ़तों के फिरने में ज़ाहिर में कुछ होता दिखाई नहीं देता लेकिन फिर भी आप हज़रात काम करते रहें। अल्लाह तआ़ला ने इसके अन्दर दीन के फैलाने की, अमन व अमान लाने की, रहमतों के उतारने की, दीन के फैलने की ग़ैबी तरकीबों को अन्दर ही अन्दर छुपा रखा है। बाज़ मर्तबा ये चीज़ें हमारे सामने ज़ाहिर हो जाती हैं और बाज़ मर्तबा ग़ैर-मौजूदगी (अनुपस्तिथि) में ज़ाहिर होती हैं। इस बिना पर क़तई तौर पर घबराने की ज़रूरत नहीं कि इतने सालों से मैं मक़ामी काम कर रहा हूँ लेकिन कोई सुनता ही नहीं, और मैं फ़लाँ मुल्क में गया वहाँ किसी ने सुना ही नहीं। इसकी बिल्कुल परवाह न करें।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ साल तक मेहनत की। बात मानने वाले सिर्फ़ अस्सी आदमी थे। फिर भी काम करते रहे, तो उनकी नस्ल जो क़ियामत तक चली उसमें न मालूम कितने अल्लाह की बात मानने वाले पैदा हुए और होते रहेंगे।

अल्लाह उसी ताक़त के साथ आज भी मौजूद है

मैंने बनी इस्राईल की बात सुनाई। सहाबा की बात सुनाई। अब आगे

हमारी तुम्हारी बारी क्या है?

हम ईमान और आमाल वाली लाईन अपने अन्दर उतार लें। इसके दुनिया में आ़म करने की मेहनत को और इस काम को अपना काम बनायें। इस काम को अपना काम बनाने में अगर ज़रूरतों की ज़ाहिरी तरतीब आगे पीछे हो गई तो परवाह न करो और परेशानियाँ आएँ तो झेल जाओ। तब अल्लाह के हुक्म और फ़ैसले को देखो। आज भी वही ग़ैबी निज़ाम चलेगा। क्योंकि अल्लाह उसी ताक़त और उसी ख़ज़ाने के साथ आज भी मौजूद है।

अल्लाह की मदद के वायदे क़ियामत तक के लिये हैं

लेकिन जी यह चाहता है कि आज वाली बात को रोक करके क़ियामत से पहले आने वाले ज़माने का ज़िक्र करूँ। इसलिये कि आ़म ज़ेहनों में यह आता है कि बनी इस्राईल का ज़माना डंडों, ऊँटों और तलवारों वाला था। सहाबा का ज़माना भी डंडों, तलवारों और ऊँटों वाला था। और आज का ज़माना राकिट और ऐटम का ज़माना है। तो आज के ज़माने में भी क्या ईमान पर अल्लाह की मदद का जो वायदा है वह हो सकता है? बिल्कुल हो सकता है। क्योंकि अल्लाह के जो वायदे हैं, वे आज के लिये भी हैं। चाहे दुनिया कितनी ही ताक़त में आगे बढ़ जाये, तेज़-रफ़्तारी में आगे बढ़ जाये, ख़ज़ानों में आगे बढ़ जाये। यही नहीं आज के ज़माने को छोड़ दीजिये आज के बाद भी जो आने वाला ज़माना है जो ज़ाहिर-परस्तों, माद्दा-परस्तों के लिये आज से भी ज़्यादा तरक़्क़ी याफ़्ता (विकसित) दौर होगा, उस वक़्त भी अल्लाह की क़ुदरत, अल्लाह की ताक़त, अल्लाह के ख़ज़ाने, अल्लाह की बादशाहत भरपूर होगी। किसी दूसरे की शिरकत के बग़ैर होगी, किसी कमी के बग़ैर होगी, असीमित क़ुदरत व ताक़त के साथ ख़ुदा अपनी ग़ैबी मददों और ख़ज़ानों के साथ ईमान वालों की पुश्त को मज़बूत फ़रमायगा। उस वक़्त दीन के लिये बड़ी-बड़ी रुकावटें आयेंगी। एक रुकावट होगी दज्जाल की सरमायेदारी के

एतिबार से, एक रुकावट आयेगी याजूज व माजूज की ताक़त के एतिबार से। ये दो रुकावटें ऐसी होंगी कि अब तक दुनिया में ऐसी रुकावट नहीं आई।

दज्जाल के बारे में हर नबी ने पनाह माँगी है। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी पनाह माँगी है। उससे पनाह माँगने की तदबीरें बताई हैं।

याजूज व माजूज की इतनी बड़ी ताक़त आने वाली है कि उनकी संख्या पूरी दुनिया के इनसानों की संख्या से ज़्यादा होगी। उनकी संख्या सारी ग़लत ताक़तों से बढ़कर होगी। ये दोनों रुकावटें आख़िरी ज़माने में आयेंगी।

उस ज़माने में भी जो लोग ईमान व आमाल की लाईन पर अपनी ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करेंगे, क़ुरबानियों के लिये तैयार होंगे, अल्लाह के हुक्म को पूरा करेंगे तो फिर उनके लिये वही तीनों ग़ैबी मदद के दरवाज़े खुलेंगे। ग़ैबी मदद के ये तीनों दरवाज़े हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से अब तक खुलते रहे हैं और क़ियामत तक खुलते रहेंगे। तो आज ये तीनों दरवाज़े कैसे नहीं खुल सकते?

दज्जाल का फ़ितना

अब आप कुछ और सुनें। दज्जाल आयेगा और ख़ुदाई का दावा करेगा। जो उसो ख़ुदा मानेगा उसको राहत में रखेगा। चालीस दिन तक ईमान और आमाल वाले तकलीफ़ उठायेंगे। उनके लिये खेतों में तंगी, जानवर उनके दुबले, लेकिन उन्होंने तक़ाज़ों से मुँह मोड़ा, ख़ुदा की तरफ़ रुख़ किया, क़ुरबानी दी तो ख़ुदाई मदद आ पहुँचेगी और अगरचे वे अपनी आँख से देखेंगे कि जिन लोगों ने दज्जाल को ख़ुदा माना तो दज्जाल अपने को ख़ुदा मानने वालों के दुबले जानवरों को मोटा कर देगा, आसमान से कहेगा "बरस जा" तो वह बरस जायेगा। और वे लोग बड़े मज़े में रहेंगे। यह ख़ुदा की तरफ़ से इम्तिहान होगा। दज्जाल के कहने पर

अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, यह अल्लाह की तरफ़ से होगा। जैसे हम लोगों का इम्तिहान हमारा कारोबार है। कारोबार कराकर अल्लाह हमारी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। हालाँकि अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ है। लेकिन इम्तिहान के तौर पर कारोबार को हमारे सामने डाल दिया है।

इस वक़्त सामूहिक तौर पर पूरी दुनिया का जो इम्तिहान है वह साइंस की तरक़्क़ियाँ हैं। इन साइंस की तरक़्क़ियों को अल्लाह ने चलवाया। लेकिन आ़म ज़ेहन यह है कि साइंस वालों ने किया।

इसी तरह उस ज़माने को जो बेदीन होंगे वे समझेंगे कि दज्जाल ख़ुदा है क्योंकि बारिश बरसाता है, मुर्दों को ज़िन्दा करता है, जो कहता है वह हो जाता है। तो कुछ लोग उसे ख़ुदा मानेंगे और अल्लाह का हुक्म तोड़ेंगे और चालीस दिन तक मज़े में रहेंगे।

ईमान वाले और अच्छे आमाल वाले साफ़ कह देंगे कि तू ख़ुदा नहीं है। हमारा ख़ुदा तो अल्लाह है और वही कारसाज़ है। लोग उनका मज़ाक़ उड़ायेंगे और कहेंगे कि देखो दज्जाल को ख़ुदा नहीं माना तो कितनी तकलीफ़ में हो। वे कहेंगे कि हम इन तकलीफ़ों को बरदाश्त करके अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान करेंगे। ख़ुदा की मर्ज़ी को पूरा करेंगे।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथी अभी से बन रहे हैं

दज्जाल के जब चालीस दिन पूरे हो जायेंगे तो फिर ईमान वालों के लिये अल्लाह की ग़ैबी मदद होगी। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जो लम्बी मुद्दत से आसमान पर हैं, वह उतरेंगे और जामा मस्जिद के पूरबी मीनारे पर उतरेंगे। सीढ़ी लायी जायेगी। आप नीचे तशरीफ़ लायेंगे और दज्जाल को "बाबे लुद" पर ख़त्म करेंगे।

आज "बाबे लुद" जहाँ है वहाँ की जमाअ़त हिन्दुस्तान में आयी। काम करके वहाँ गई जहाँ दज्जाल आने वाला है। वहाँ मस्जिद्वार जमाअ़तें बनी हुई हैं और काम कर रही हैं। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का इन्तिज़ार हो रहा है और दज्जाल के साथी तो पूरी दुनिया के अन्दर हैं,

वह तो आप जानते ही हैं। लेकिन हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथी भी अभी से बन रहे हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू दज्जाल को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हाथों ख़त्म करा देंगे और जितने दज्जाल के चैले होंगे उन्हें भी ख़त्म कर देंगे। फिर ईमान वालों, बेकसों, बेबसों के लिये अल्लाह की तरफ़ से मदद के ग़ैबी दरवाज़े खुलेंगे।

याजूज व माजूज का फ़ितना

अब दूसरा मुजाहदा जो आयेगा वह याजूज व माजूज से होगा। याजूज व माजूज बड़ी लम्बी उम्र वाले हैं। किताबों में आता है कि एक एक जोड़ा याजूज व माजूज में से उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक कि एक हज़ार आदमी उसकी नस्ल में पैदा न हो जायें। बड़ी ज़बरदस्त ताक़त वाले हैं। हज़रत ज़ुल्क़रनैन की दीवार के पीछे सब के सब मौजूद हैं। रोज़ाना दीवार को तोड़ने की कोशिश करते हैं लेकिन अभी तक नहीं तोड़ सके। क़ियामत से पहले वे तोड़ सकेंगे। वे तोड़ताड़ करके या ऊपर चढ़-चढ़ा करके लोगों के सामने आयेंगे, क्योंकि उनके बदन लम्बे-तड़ंगे होंगे। उनकी बड़ी भारी संख्या होगी। जितने इनसान होंगे उससे कई गुना ज़्यादा याजूज व माजूज होंगे। और पूरी दुनिया पर छा जायेंगे। यह पूरी दुनिया के लिये बहुत बड़ा हादसा होगा। जितने बेदीन और ग़लत क़िस्म के लोग होंगे, माद्दी ताक़तों और सरमायों पर घमण्ड और गर्व करने वाले लोग हैं, वे सब के सब हैरत में पड़ जायेंगे। चाँद पर चढ़ने वाले, जो हो सकता है कि कुछ दिनों में नामालूम दुनिया "मरीख़" पर कमन्द डाल दें और वहाँ पहुँच जायें, वे भी सब के सब हैरत में पड़ जायेंगे। ऐटमी ताक़त की खोज करने वाले न मालूम और कौन-कौनसी ताक़त की खोज कर चुके होंगे। वे भी सब के सब याजूज व माजूज के मुक़ाबले में ढीले पड़ जायेंगे।

याजूज व माजूज पर ख़ुदाई क़हर और ईमान वालों की ग़ैबी मददें

लेकिन ईमान वाले और आमाल का ज़ख़ीरा रखने वाले बेकसी के साथ-साथ ज़ाहिरी तरतीब और तक़ाज़ों को क़ुरबान करके पहाड़ों के ग़ारों में जा बसेंगे जहाँ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले जायेंगे। परेशानियाँ ही परेशानियाँ होंगी। याजूज व माजूज ऐसे तमाम लोगों को खा-पीकर साफ़ कर देंगे जो दुनियादार थे। जो ज़ाहिरी तरतीब में लगने वाले थे। जिन्हें अल्लाह के हुक्मों की परवाह नहीं थी। जिन्हें अल्लाह ने सही रास्ते पर आने का मौक़ा दिया और उन्होंने उससे फ़ायदा नहीं उठायाः

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ٥

तर्जुमाः- और ऐसे ही पीछे लगाते हैं हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ लोगों के उनके करतूतों की बिना पर।

याजूज व माजूज कहेंगे कि बताओ हमारे मुक़ाबले में कौन है? यहाँ तक कि बैतुल्-मक़्दिस में जो बड़ा पहाड़ है उसके ऊपर चढ़ेंगे और आसमान की तरफ़ तीर चलायेंगे। अल्लाह पाक उन तीरों को ख़ून में भरकर वापस भेजेंगे। वे कहेंगे कि देखो दुनिया में तो हम ही हैं आसमान में भी हमने ख़ूँरेज़ी कर दी। दनदनाते फिरेंगे। अल्लाह तआ़ला ग़लत लोगों को भी मोहलत दे देते हैं कि कर लो, फिर आख़िर में पकड़ करते हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उन ईमान वालों को खाने-पीने की सारी ज़ाहिरी तरतीब को छोड़कर ग़ार में जाना पड़ेगा। अब उनके खाने-पीने का क्या होगा? ग़ैब से अल्लाह पाक खाने पीने का इन्तिज़ाम करेंगे। वे लोग **"सुब्हानल्लाहि, अल्-हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बरु"** पढ़ेंगे। और इनके पढ़ने पर उनके पेट भरते रहेंगे। यह ग़ैबी इन्तिज़ाम ज़रूरतों के पूरा करने का होगा। लेकिन परेशानी कैसे ख़त्म हो।

तो ख़ूब रो-रोकर दुआयें माँग रहे होंगे। अल्लाह पाक बाज़ मर्तबा दीन का काम करने वालों के ज़ाहिरी सहारों को चारों तरफ़ से कभी हटा देते हैं और सिवाय अल्लाह के सहारे के कोई सहारा बचता नहीं। तब उस वक़्त जब वे गिड़गिड़ाते हैं तो अल्लाह की मदद आती है। यहाँ भी अल्लाह की मदद आयी परेशानियों के दूर करने की। वह यह कि याजूज व माजूज की गर्दनों पर कीड़े पड़ेंगे और कीड़े पड़ने की वजह से जो हज़ारों साल से ज़िन्दा थे थोड़ी देर के अन्दर ख़त्म हो जायेंगे। इस तरह उनसे नजात (छुटकारा) हासिल होगी। परेशानी ख़त्म होगी। लम्बी गर्दनों वाले जानवर याजूज व माजूज की लाशों को लेजाकर न मालूम कहाँ फेंक देंगे। फिर ईमान व आमाल वाले ग़ारों से बाहर आयेंगे और देखेंगे कि पूरी दुनिया से बेईमान ख़त्म हो गये। सिर्फ़ दीन ही दीन है, ईमान ही ईमान है।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और उनके साथियों की ख़ुदाई मददें

फिर अल्लाह बारिश बरसायेंगे। इतनी बरकत होगी कि एक बकरी का दूध एक जमाअ़त पेट भरकर पियेगी। एक अनार इतना बड़ा होगा कि पूरी एक जमाअ़त पेट भरकर खायेगी। उसका छिलका इतना बड़ा होगा कि छतरी की तरह ओढ़ा जायेगा।

ग़ैबी तरीक़े पर ज़रूरतों के पूरा होने का इन्तिज़ाम हुआ।

ग़ैबी तरीक़े पर परेशानियों के दूर होने का इन्तिज़ाम हुआ।

ग़ैबी तरीक़े पर दीन ही दीन होने का ऐसा इन्तिज़ाम हुआ कि सारी दुनिया में ईमान ही ईमान होगा, बेईमान एक भी न होगा।

ईमान और नेक आमाल क्या हैं?

अब मैं अ़र्ज़ करूँगा कि अल्लाह की ग़ैबी मदद जिन आमाल पर मिलेगी वे आमाल क्या हैं और कौनसे हैं। वे आमाल इस कलिमे में इकट्ठे कर दिये हैं:

آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ؕ

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्-यौमिल् आख़िरि वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला वल्-बअ़्सि बअ़्दल् मौति।

आमन्तु बिल्लाही

ईमान लाया मैं अल्लाह पर।

इसके मायने यह हैं कि दुनिया में जितनी ज़ातें (शख़्सियतें) हैं, उनका यक़ीन दिल से निकल जाये और अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाये। मुल्क व माल, सोना-चाँदी, रुपया-पैसा, इसका यक़ीन दिल से निकल जाये और अल्लाह का यक़ीन दिल में आ जाये। यह है अल्लाह पर ईमान लाना।

इसके लिये दो काम करने पड़ेंगे- एक यह कि अल्लाह का यक़ीन दिल में लाना और दूसरे मख़्लूक़ात का यक़ीन दिल से निकालना। मख़्लूक़ात दिखाई देती हैं और अल्लाह दिखाई नहीं देता। तो अल्लाह का यक़ीन ख़ुद नहीं आता उसे लाना पड़ता है। और मख़्लूक़ का यक़ीन ख़ुद आता है, उसे निकालना पड़ता है।

अल्लाह का यक़ीन कैसे आयेगा?

अब यह कि अल्लाह का यक़ीन कैसे लाया जाये और मख़्लूक़ात का यक़ीन कैसे निकाला जाये? इसके लिये दो काम करने पड़ेंगे- अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर लाने के लिये बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना। जितना अल्लाह को बोलना और सुनना होगा उतना ही अल्लाह का यक़ीन आयेगा। लेकिन कारोबार और घर का यक़ीन दिल से निकालने के लिये हमें दूसरा काम करना पड़ेगा। वह क्या है? वह "क़ुरबानी" है।

क़ुरबानी के ज़रिये चीज़ों का यक़ीन दिल से निकलेगा और बार-बार अल्लाह की बोली बोलने से अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर आयेगा।

अब बार-बार अल्लाह की बोली बोलना और सुनना, इसके क्या मायने हैं?

यही मायने हैं दावत के।

दावत के क्या मायने हैं?

बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना। इसी तरह अगर आप हज़रात रोज़ाना मस्जिदों को आबाद करने के लिये ढाई घन्टे का वक़्त देंगे, मस्जिद्वार जमाअ़त बानायेंगे, गश्त करेंगे तो ईमान के अन्दर तरक़्क़ी होती चली जायेगी।

लेकिन इसे पहले सीखना पड़ता है। इसे सीखने के लिये जमाअ़तों के अन्दर चार-चार महीने फिरकर कारोबार और घर की कुरबानी देना सीखा जाता है। ताकि अपनी ज़ाहिरी तरतीब को अल्लाह के दीन के तक़ाज़े पर कुरबान करके अल्लाह के हुक्म को पूरा करना आ जाये। इसमें सब से पहली बात यह है कि सब का ताल्लुक़ निकल कर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन आ जाये। और यह दावत और कुरबानी की फ़िज़ा के अन्दर हासिल होगा।

व मलाइ-कतिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह के फ़रिश्तों पर।

फ़रिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जितना ज़ाहिरी निज़ाम दुनिया का है, मुल्क का, घर का, कारोबार का, सारे ज़ाहिरी निज़ामों से हमारा यक़ीन हटे और जो फ़रिश्तों वाला छुपा हुआ निज़ाम है उस पर हमारा यक़ीन आये। ज़ाहिरी निज़ाम आदमी के पास कितना ही बड़ा हो लेकिन अगर ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम फ़रिश्तों वाला ख़िलाफ़ हो तो इस ज़ाहिरी निज़ाम में ज़िन्दगी उजड़ जायेगी।

ज़ाहिरी निज़ाम हाथों में चाहे कम हो, लेकिन फ़रिश्तों वाला ग़ैबी

निज़ाम हिमायत में है तो ज़िन्दगी बन जायेगी।

नमरूद, हामान, फ़िरऔन, क़ारून इनके पास तो ज़ाहिरी निज़ाम था। ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम इनके ख़िलाफ़ था तो नतीजा बुरा निकला। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और दूसरे अम्बिया और उनके मानने वाले लोगों के पास आ़म तौर से ज़ाहिरी निज़ाम बहुत कमज़ोर था लेकिन ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम उनकी हिमायत में था। तो उनकी ज़िन्दगी बन गई।

तो इस पर ईमान लाना पड़ेगा कि ज़ाहिरी निज़ाम से यक़ीन हटे और ग़ैबी निज़ाम पर यक़ीन आये।

ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम क्योंकर हिमायत में आयेगा?

अब यह तरीक़ा सीखना पड़ेगा कि ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम हिमायत में कैसे आये?

जैसा कि बता दिया गया कि ईमान में ताक़त पैदा हो और आमाल अच्छे हों तो फिर ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम हिमायत में आयेगा। लेकिन इसके लिये भी मुजाहदा (मेहनत और कोशिश) करना पड़ेगा। ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करना पड़ेगा। पूरे चार महीने देने का मौक़ा नहीं था और निकल गये अल्लाह की ग़ैबी मदद पर यक़ीन करके तो अब ख़ुदा तआ़ला की ग़ैबी मदद आयेगी।

व कुतुबिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह की किताबों पर।

इसके ज़रिये अल्लाह ने बताया कि जितने इनसानी उलूम हैं, उनसे यक़ीन हटकर अल्लाह के उलूम पर यक़ीन आ जाये। इनसानी उलूम क्या हैं? सोने-चाँदी, मुल्क व माल से यूँ होगा। ये इनसानी उलूम हैं। और अल्लाह के उलूम क्या हैं? जो अल्लाह ने इनसानों को आसमानी किताबों के ज़रिये दिया वह यह कि:

नमाज़ से कामयाबी, रोज़े से तक़वा, दुआ़ से क़बूलियत, आमाल से

तासीर, क़ुरबानी से मदद।

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ (پ٢٦)

अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।

अल्लाह का इल्म क्या है?

वह यह है कि किस अ़मल पर बुरा नतीजा निकलेगा और किस अ़मल पर अच्छा नतीजा निकलेगा। तो जब अल्लाह के उलूम वाली बातों पर हमारा अ़मल होगा तो आसमान से ज़िन्दगियों के बनाने के फ़ैसले आयेंगे। और जब अल्लाह के उलूम को छोड़ दिया और चीज़ों के चक्कर में पड़ गये तो जब "आसमानी फ़ैसला" ज़िन्दगियों के उजाड़ने का आयेगा तो सारी दुनिया की ताक़तें मिलकर ज़िन्दगी नहीं बना सकतीं।

व रुसुलिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह के रसूलों पर।

शख़्सियत रसूलों की है। शख़्सियत मुल्क और माल से नहीं बनती। पैरवी के क़ाबिल अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम हैं। इस वजह से नबियों की पैरवी करनी है। आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हमें पैरवी करनी है। उन पर यक़ीन लाना है। उनकी बात मानने पर हमारी कामयाबी है। न मानने पर नाकामी है।

वल्-यौमिल् आख़िरि

और ईमान लाया मैं आख़िरत के दिन पर।

आज के दिन का यक़ीन दिल से निकाला जाये और आख़िरत के दिन का यक़ीन लाया जाये। हम और आप जो कुछ करें वह क़ियामत के दिन को सामने रखकर करें। आज को सामने रखकर न करें। कारोबार करें तो आज को सामने रखकर न करें। क़ियामत को सामने रखें। अगर हमने कारोबार के अन्दर ऐसी तरतीब रखी कि माल तो ज़्यादा मिला लेकिन अल्लाह का हुक्म टूटा तो क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने

जाना पड़ेगा और हिसाब देना पड़ेगा।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طَآئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتَابًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ٥ (پ ١٥)

तर्जुमाः- आदमी का बुरा या भला अ़मल उसके गले का हार बना हुआ है और क़ियामत के दिन ऐ इनसान! वह तेरे सामने आयेगा।

اِقْرَاْ كِتَابَكَ، كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا٥ (پ ١٥)

तर्जुमाः- अपना रजिस्टर तू ख़ुद ही पढ़ ले, और अपना हिसाब तू ख़ुद ही कर ले।

आज हमें जो करना है वह क़ियामत के दिन को सामने रखकर करना है कि क़ियामत में हमारी रुस्वाई और ज़िल्लत न हो। आज के दिन का यक़ीन निकले और क़ियामत के दिन का यक़ीन आये।

वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला

और ईमान लाया मैं इस पर कि अच्छी-बुरी तक़दीर अल्लाह की तरफ़ से है।

इनसान के ऊपर तकलीफ़ वाले हालात, राहत वाले हालात जो भी आते हैं वे अल्लाह की तरफ़ से आते हैं। लेकिन उसके अन्दर अपनी मर्ज़ी को छोड़ना और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना है। जो हाल तकलीफ़ वाला या राहतों वाला है, वह तो ख़त्म होगा लेकिन उस हाल के अन्दर जो अच्छा अ़मल या बुरा अ़मल किया है वह बाक़ी रहेगा। और उसका असर क़ब्र में, हश्र में, जहन्नम में पड़ेगा।

इसलिये मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हालात से न तो घबराइये और न इतराइये। अच्छे हालात में इतराना नहीं, बुरे हालात में घबराना नहीं। अगर अच्छे और बुरे हालात में अल्लाह के हुक्म को पूरा कर दिया तो ये आमाल हमेशा बाक़ी रहेंगे। और क़ियामत के दिन जन्नत के अन्दर लेजा कर अल्लाह जो राहतें देंगे वे इन्हीं आमाल पर देंगे। और यूँ कहेंगेः

اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ (پ٢٧)

जो तुमने अ़मल किया था, यह उसी का बदला है।

वल्-बअ्सि बअ्दल् मौति

और ईमान लाया मैं इस पर कि मरने के बाद ज़िन्दा होना है।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना है। इसका यक़ीन दिल के अन्दर आ जाये। यह सब ईमानियात की लाईन है। यह बार-बार बोलने और सुनने से मज़बूत होगी। मस्जिदे नबवी के अन्दर बाक़ायदा ईमानियात वाली लाईन चलती थी और ख़ूब इसके मुज़ाकरे होते थे।

ईमान के बढ़ने का तरीक़ा

ईमान की जो बातें आप हज़रात के सामने अ़र्ज़ की गई, उसके बढ़ने का तरीक़ा बताया गया कि बार-बार मस्जिदों के अन्दर, घरों के अन्दर अल्लाह का तज़किरा हो। उसकी क़ुदरतों, ताक़तों और ख़ज़ानों का तज़किरा हो। अल्लाह की पकड़, अल्लाह के क़ैदख़ाने जहन्नम, अल्लाह के मेहमान-ख़ाने जन्नत, हिसाब-किताब के दिन क़ियामत का बार-बार मुज़ाकरा हो। जितना ज़्यादा मुज़ाकरा होगा उतना ज़्यादा ईमान बढ़ेगा। ये चार महीने, ये चिल्ले, ये महीने के तीन दिन, यह तो सीढ़ी है। यह आ़दत डालने के लिये है। जब हमारी और आपकी आ़दत पड़ जाये, इसके अन्दर अल्लाह पाक आगे बढ़ा दें और हमें नबियों वाला ग़म नसीब हो जाये तो फिर अल्लाह के दीन के तक़ाज़ों पर हम खड़े होने लगेंगे। हमारे कारोबारी और घरेलू तक़ाज़ों की ज़ाहिरी तरतीब आगे-पीछे होती रहेगी। और अल्लाह पाक अपने ग़ैबी निज़ाम से ज़रूरतें पूरी करेंगे। ग़ैबी निज़ाम से परेशानियाँ दूर करेंगे। अल्लाह पाक ग़ैबी निज़ाम से दीन के फैलाने के लिये हम सब को इस्तेमाल करेंगे। उसके बाद जब मौत आयेगी तो क़ियामत तक पाँव पसार कर सोना है।

जागना है जाग ले अफ़्लाक के साये तले
हश्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साये तले

सोने की जगह क़ब्र और ऐश व आराम के साथ खाने पीने और ज़िन्दगी गुज़ारने की जगह जन्नत है। दीन का काम ख़ूब करने की जगह यह दुनिया है। इनामात लूटने की जगह आख़िरत है। अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने दीन के लिये क़बूल फ़रमायें और अपनी मर्ज़ी के आमाल पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें। (आमीन)

तक़रीर (6)

यह तक़रीर 11 दिसम्बर 1994 को सालाना तब्लीग़ी इज्तिमा भोपाल में की गई।

गुनाहगार इनसान की मिसाल ऐसी है जैसे गन्दगी में लत-पत बच्चा। ऐसे बच्चे के साथ क्योंकि गन्दगी लगी हुई है, इसलिये उस गन्दगी से माँ को नफ़रत है, लेकिन बच्चे से माँ को मुहब्बत है। गन्दगी की वजह से माँ उस बच्चे को फेंक नहीं देती, बल्कि उसकी गन्दगी साफ़ करती है। फिर उसे सीने से लगाती है। इसलिये अगर कोई गुनाहगार मुसलमान मिले तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये। और ईमान की वजह से उससे मुहब्बत होनी चाहिये।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (پ۱۴)

وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى:

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ٥ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ٥ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ٥ (پ۱۶)

ईमान और आमाल वाला रास्ता

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! ईमान और आमाल के बग़ैर जो आदमी चलता है, भटक जाता है। और ईमान व आमाल के साथ जो आदमी चलता है वह भटकता नहीं है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास मुल्क था लेकिन वह इसके बावजूद ईमान और आमाल वाले रास्ते पर रहे, और यह रास्ता क़ियामत तक आने वाले लोगों को बता दिया।

ज़िन्दगी के दो दौर

एक ज़िन्दगी दुनिया की है जो मौत के वक़्त ख़त्म होगी और एक ज़िन्दगी आख़िरत की है जो मरने के वक़्त से शुरू होगी और कभी ख़त्म नहीं होगी। अल्लाह तआ़ला ने बहुत पड़ा फ़ज़्ल व करम फ़रमाया कि उसने नबियों को भेजा। उन अम्बिया-ए-किराम ने आख़िरत की ज़िन्दगी को खोलकर बता दिया।

और दूसरा इन्तिज़ाम यह किया कि आसमान से 'वह्य' (फ़रिश्ते के ज़रिये अम्बिया पर अपना पैग़ाम) भेजी। अल्लाह की आसमानी 'वह्य' ने यह बात बताई कि मर्द हो या औ़रत, जिसने भी भला अ़मल किया उसके लिये दो फ़ायदे हैं।

दो फ़ायदे

एक फ़ायदा दुनिया के अन्दर है:

فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً (پ۱۴)

कि उसकी ज़िन्दगी ख़ुशगवार होगी।

चाहे वह तंगदस्त हो या मालदार...... चाहे बीमार हो यह तन्दुरुस्त...... चाहे उसके ऊपर तकलीफ़ें हों या नेमतें...... दोनों हालतों में उसकी ज़िन्दगी ख़ुशगवार होगी।

दूसरा फ़ायदा यह बताया कि जो अ़मल यहाँ ईमान की ताक़त के साथ किया है, उस पर आख़िरत में अच्छे से अच्छा बदला इनायत फ़रमायेंगे। चुनाँचे फ़रमाया:

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (پ۱۴)

यानी हम उनको उनके आमाल का बेहतरीन बदला इनायत फ़रमायेंगे।

जब अल्लाह बदला देने वाले होंगे तो अपनी शान के मुताबिक़ देंगे। छोटी से छोटी जन्नत अगर मिली तो उसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान के

बराबर होगी और लम्बाई की कोई हद नहीं।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! इसलिये ईमान और नेक आमाल मर्द और औ़रत दोनों करें। दुनिया और आख़िरत के अन्दर इसके बारे में अल्लाह पाक ने वायदा फ़रमाया है।

दो तरह की सज़ायें

दूसरी आयते करीमा जो मैंने पढ़ी, उसके अन्दर अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाते हैं कि जिस आदमी ने अल्लाह पाक की नसीहतों से मुँह मोड़ा, उसके लिये भी दो तरह की सज़ायें हैं। एकः

فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا (پ١٦)

कि उसकी ज़िन्दगी की राहें बिल्कुल तंग होंगी।

उसके दिल को चैन व सुकून न होगा। चाहे उसके पास कितना ही बड़ा बंगला और कारख़ाना हो और चाहे कितना ही रुपया और पैसा हो। और दूसरी सज़ा मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में होगी। फ़रमायाः

وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ٥ (پ١٦)

और क़ियामत के दिन हम उनको अन्धा करके उठायेंगे।

जैसी करनी वैसी भरनी

रब्बे ज़ुल्जलाल की तरफ़ से सज़ा पाकर वह यूँ कहेगाः

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ٥ (پ١٦)

ऐ अल्लाह! मुझको अन्धा क्यों बना दिया। मैं तो आँखों वाला था।

आलात (उपकरणों) के ज़रिये मैं बहुत दूर-दराज़ तक देखा करता था। तो अल्लाह पाक इरशाद फ़रमायेंगेः

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ٥ (پ١٦)

कि तेरे सामने मेरी आयतें बयान की गईं लेकिन तूने उनका ख़्याल नहीं किया और उन पर ध्यान नहीं दिया, तो अब हम भी तेरे ऊपर रहम

व करम का मामला नहीं करेंगे।

जैसी करनी वैसी भरनी, न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख़ भी, न माने तो मरके देख

तो इन आयतों के अन्दर सुधरे हुए और बिगड़े हुए इनसानों की दुनिया और आख़िरत की दोनों बातें अल्लाह ने बता दीं।

अव्वल 'ईमान बिल्ग़ैब' की ज़रूरत

मरने के बाद इनसान पर नेमतें आएँ या तकलीफ़ें आएँ। इसको मरने वाला जानता है। जो लोग ज़िन्दा हैं वे नहीं जानते। लिहाज़ा सब से पहले 'ईमान बिल्ग़ैब' (ग़ैब पर ईमान) हो। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातों पर यक़ीन हो। इसी लिये अल्लाह पाक ने कुरआन के अन्दर अ़क़्ली दलीलें भी ख़ूब पेश फ़रमाईं ताकि मेरे बन्दे ईमान और आमाल से मेहरूम न रह जायें और उनकी हमेशा की ज़िन्दगी न बिगड़े।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जो बिगड़े हुए लोग हैं, उनका भी इकराम (सम्मान) करना चाहिये। क्योंकि यह नहीं देखा जायेगा कि फ़लाँ कौन है? और किस ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता है? और किस मुल्क का है? चूँकि उसने कलिमा पढ़ लिया है इसलिये वह क़ाबिले एहतिराम है। हाँ! अगर वह गुनहगार है तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये, उससे नहीं। ईमान की वजह से उसका इकराम हो और गुनाह की वजह से उसके गुनाह से नफ़रत, न कि उसकी ज़ात से।

गुनाहगार की मिसाल

गुनाहगार इनसान की मिसाल ऐसी है जैसे गन्दगी में लत-पत बच्चा। ऐसे बच्चे के साथ क्योंकि गन्दगी लगी हुई है, इसलिये उस गन्दगी से माँ को नफ़रत है, लेकिन बच्चे से माँ को मुहब्बत है। गन्दगी की वजह से माँ उस बच्चे को फेंक नहीं देती, बल्कि उसकी गन्दगी साफ़ करती है। फिर

उसे सीने से लगाती है। इसलिये अगर कोई गुनाहगार मुसलमान मिले तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये। और ईमान की वजह से उससे मुहब्बत होनी चाहिये।

गुनाहों से साफ़ करने की सूरत

अब गुनाह साफ़ कैसे हो?

उसे अच्छे और भले माहौल के अन्दर लाना चाहिये और भला माहौल जमाअ़तों के अन्दर निकलने से ख़ूब मिलता है। क्योंकि जो जमाअ़तें काम करती हैं, वे भला माहौल बनाती हैं। जब गुनाहगार निकलते हैं तो अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से कितने सुधर भी जाते हैं। ऐसे वाक़िआ़त इस दौर में भी हैं।

इस्लाही कोशिशें बेकार नहीं जातीं

अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का ज़माना तुम्हारे सामने पेश किया जाये तो ज़ेहनों में यह आता होगा कि वह तो बड़ा अच्छा दौर था। उस वक़्त बिगड़े हुए लोग जल्दी से दुरुस्त हो जाते थे। आज भला कहाँ सुधरते हैं?

अल्लाह का शुक्र है कि आज भी "डाका डालने वाले" दीन के दाई (दावत देने वाले) बन गये। और "शराब पीने वालों" ने खुद शराब छोड़ दी और न मालूम कितनों के सुधारने वाले बन गये। इन वाक़िआ़त को खुद आपने देखा होगा। इस मज्लिस के अन्दर भी बहुत से ऐसे होंगे कि जिनके अन्दर पहले बिगाड़ था लेकिन अब अल्लाह के फ़ज़्ल से सुधार आया है और यह सब इस्लाही (सुधार की) कोशिशें, तज़किये (गुनाहों से पाक करने) की, तालीम की, तब्लीग़ की बेकार नहीं जातीं।

इकराम की तरग़ीब

इस उमूमी सुधार के लिये हमें क्या करना पड़ेगा?

इसके लिये जो ईमान वाले हैं उनको जोड़ना और उनका इकराम

(सम्मान) करना है। जैसे हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत दूर से तशरीफ़ लाये। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से कोई रिश्तेदारी नहीं थी। लेकिन हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनको खिलाया पिलाया।

इसी तरह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने देखा कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर बहुत ज़ुल्म हो रहा है तो उन्होंने उनको ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

मक्की आयाते क़ुरआनी तीन मज़ामीन मर मुश्तमिल

सब से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कलिमा पढ़ने वालों को कलिमे की दावत पर खड़ा कर दिया। जब कलिमे की दावत दी जाने लगी और परेशानियाँ आईं तो क़ुरआन पाक के अन्दर मक्का में तीन बातें उतरीं।

1. अल्लाह पाक ने नबियों के पिछले क़िस्से सुनाये कि नबियों ने कैसी तकलीफ़ें उठाईं। और फिर आख़िर में अल्लाह की ग़ैबी मदद कैसी आयी। भटके और बिगड़े हुए लोग ख़ूब उछल-कूद कर रहे थे। उन पर अल्लाह पाक की कैसी पकड़ आयी ताकि उसे देखकर मौजूदा ज़माने के लोग अपनी फ़िक्र करें।

2. मरने के बाद क़ियामत तक की लम्बी ज़िन्दगी जो आने वाली है उसको ख़ूब बयान फ़रमाया। जन्नत को बयान फ़रमाया। दोज़ख़ को बयान फ़रमाया। क़ियामत का दिन कितना भारी है। किन लोगों के लिये आसान होगा और किन लोगों के लिये वह दिन भारी होगा। इसको बहुत तफ़सील से बयान फ़रमाया।

3. अल्लाह पाक ने बयान फ़रमाया कि वह यानी अल्लाह पाक तो दिखाई नहीं देता।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ۝(پ ۷)

ये आँखें इस दुनिया में अल्लाह पाक को नहीं देख सकतीं और वह सब को देखता है।

और जब अल्लाह पाक दिखाई नहीं देते तो उनकी मारिफ़त (पहचान) कैसे हो? तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

قَدْ جَآءَ كُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا (پ٧)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम्हारे पास निशानियाँ आयेंगी। अब जो उसको गहरी निगाह से देखेगा तो उसका काम बन जायेगा और जो अन्धा बनेगा उसका काम नहीं बनेगा। बल्कि वह बरबाद हो जायेगा।

अल्लाह की कुदरत व ख़ज़ाने का इल्म कैसे?

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह पाक ने बताया कि मैं तो तुमको दिखाई नहीं देता लेकिन अपनी निशानियाँ तुमको दिखाऊँगा। इसी वजह से कुरआन पाक के अन्दर मक्की आयतों (यानी मक्का में उतरने वाली कुरआन पाक की आयतों) में ज़्यादा तर अपनी निशानियों का ज़िक्र फ़रमाया है।

ज़मीन, चाँद, सूरज, सितारे, समन्दर की मछलियाँ। इसी तरह शहद की मक्खी, इन चीज़ों का अल्लाह ने ख़ूब तज़किरा फ़रमायाा और समझाया किः

मेरी निशानियों को, मेरी कुदरत को और मेरे ख़ज़ाने को पहचानो।

तो एक तरफ़ कलिमे की दावत दी गयी। और जब कलिमे की दावत क़बूल करने के बाद उन पर तकलीफ़ें आईं तो कुरआन नाज़िल हुआ यानी दावत के बाद मक्का मुकर्रमा के अन्दर दो तरह की बातें पेश आईं। बाज़ लोगों ने बात को माना और बाज़ लोगों ने क़बूल नहीं किया।

हज़रत तुफ़ैल इब्ने अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इसलाम क़बूल करना

हज़रत तुफ़ैल इब्ने अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु क़बीला बनू दौस के थे। बहुत बड़े शायर और ख़तीब थे। मक्का मुकर्रमा के अन्दर तशरीफ़ लाये। वहाँ काफ़िरों ने यूँ कहा कि देखो! उनकी (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) बात को न सुनना। उनकी बात में असर बहुत होता है। जिसकी वजह से हर घर के अन्दर दो हिस्से हो गये हैं। बाज़ ईमान वाले और बाज़ ग़ैर-ईमान वाले। तो तुम्हारे भी क़बीले के दो हिस्से हो जायेंगे। यह उन लोगों ने इसलिये कहा कि क़बीला दौस में बड़ा इत्तिहाद (एकता और संगठन) था।

लेकिन दोस्तो! बातिल (झूठ और ग़ैर-हक़) पर मुत्तहिद (संगठित) रहना अच्छा नहीं है। अगर पूरी बस्ती यह तय कर ले कि हमें डाका डालना है लेकिन उसके अन्दर पाँच-सात लोग खड़े होकर कहें कि नहीं! ऐसा नहीं करना है, तो यह इख़्तिलाफ़ और मतभेद करना बहुत अच्छा है। वरना सब के सब क़ियामत के दिन जहन्नम के अन्दर जायेंगे और दुनिया के अन्दर भी परेशान होंगे।

तो जब उन लोगों ने कहा कि उनकी बात के अन्दर बहुत असर है। हर घर के अन्दर दो क़िस्म के लोग हो गये हैं, तो हज़रत तुफ़ैल बिन अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने कानों के अन्दर रूई डाल ली ताकि नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई बात सुन ही न सकें, जो प्रभावित कर दे।

लेकिन एक बार जबकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल्लाह शरीफ़ (ख़ाना काबा) के अन्दर नमाज़ पढ़ रहे थे। यह अपने कान में रूई डाले हुए वहाँ से गुज़रे। ख़्याल आया कि मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी तो नहीं हूँ। अ़रब का बड़ा शायर और ख़तीब हूँ। आपकी बात

सुनूँ। अगर समझ में आ गई तो मान लूँगा और अगर समझ में नहीं आई तो नहीं मानूँगा। यह सोचकर उन्होंने कान से रूई निकाल दी और थोड़ी सी बात सुनी। बात अच्छी लगी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे-पीछे गये और आपके दरवाज़े पर जाकर अ़र्ज़ किया कि आप अपनी बात पूरी करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरी सूरत पढ़कर सुनाई। बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए। वहीं पर कलिमा पढ़ लिया। कलिमा पढ़कर कहा कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं अपनी क़ौम के पास जाऊँ और उनको दावत दूँ। उनको दीन की तरफ़ बुलाऊँ ताकि वे लोग भी जहन्नम से बच जायें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी।

इकराम भी मशक़्क़त भी

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुज़ुर्गो! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने मान लिया और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इकराम किया। और बहुत से बिगड़े हुए लोगों ने मार-धाड़ शुरू कर दी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक-एक को समझाते थे।

कोई आपके चेहरे पर थूक देता।

कोई आपके ऊपर धूल डालता।

कोई आपके रास्ते में काँटे बिछाता।

कोई नमाज़ की हालत में आपके ऊपर ओझ डालता।

तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दोनों तरह के हालात आ रहे थे।

तकलीफ़ पर घबराना नहीं, आराम पर इतराना नहीं

अगर तकलीफ़ आये तो आदमी घबराये नहीं। और अगर आराम व नेमत मयस्सर हो तो आदमी इतराये नहीं। इसके लिये अल्लाह का ध्यान

रहना चाहिये और अल्लाह का ध्यान हासिल करने के लिये अल्लाह का ज़िक्र है। कुरआन की तिलावत है। दुआयें माँगना है।

चुनाँचे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम मक्का के अन्दर इन चीज़ों के अन्दर लग गये।

दूसरी बात यह कि जिन लोगों ने कलिमा पढ़ा है उनको इसकी दावत पर खड़ा करना है। तीसरी बात यह कि तालीम के हल्क़े बनाना, और चौथी बात इकराम की तरग़ीब (तवज्जोह दिलाना और दिलचस्पी पैदा करना) हो।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी दुनिया के लिये रहमत

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाने वाले, कलिमा पढ़ने वाले अलग-अलग क़बीले से ताल्लुक़ रखने वाले थे। कोई क़बीला बनी तमीम का, कोई क़बीला अश्हल का, कोई अ़ब्दे शम्स का, तो उनके अन्दर एकता और संगठन पैदा करने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दूसरे को इकराम करने की तरग़ीब दी।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ख़ानदान या एक घराने के लिये तशरीफ़ नहीं लाये बल्कि आप पूरी दुनिया के लिये रहमत बनकर तशरीफ़ लाये।

दावत का नबवी तरीक़ा

भटके हुए लोगों को डराने के लिये और सुधरे हुए लोगों को ख़ुशख़बरी देने के लिये आप तशरीफ़ लाये।

जो "मग़ज़ूब अ़लैहिम" (वे लोग जिन पर अल्लाह का गुस्सा और नाराज़गी हुई) और "ज़ाल्लीन" (रास्ते से भटके हुए और गुमराह लोगों) वाले रास्ते पर चलने वाले थे, उनको तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम डराते थे। और सीधे रास्ते पर चलने वालों को ख़ुशख़बरी देते थे।

पूरी इनसानियत की फ़िक्र ज़रूरी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी दुनिया के लिये तशरीफ़ लाये तो जिसने आपका कलिमा पढ़ा है, वह भी पूरी दुनिया की फ़िक्र करेगा।

अपनी फ़िक्र करेगा। घर वालों की फ़िक्र करेगा। ख़ानदान वालों की फ़िक्र करेगा। क़ौम की फ़िक्र करेगा। पूरी इनसानियत की फ़िक्र करेगा। यहाँ तक कि क़ियामत तक आने वाले सारे इनसानों की फ़िक्र करेगा।

दावत का काम, हर कलिमा पढ़ने वाले के लिये ज़रूरी

अल्लाह तआ़ला ने दावत का काम हर कलिमा पढ़ने वाले को दिया। अल्लाह पाक फ़रमाते हैं:

يَآاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْآاَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ٢٨)

तर्जुमाः- ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपको जहन्नम से बचाओ, और इसी तरह अपने घर वालों को जहन्नम से बचाओ।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने एक जगह और फ़रमाया कि:

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ٥ (پ١٩)

तर्जुमाः- और अपने रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों को डराओ।

यहाँ ख़िताब तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को है, लेकिन जो ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को होगा वह पूरी उम्मत के लिये होगा। अगर वह ख़ुसूसियत के साथ आपके लिये न हो। इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में दो बातें बताईं। एक तो यह कि तुम रसूलुल्लाह की पैरवी करो:

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ٥ (پ٩)

कि तुम आपकी पैरवी करो तो हिदायत पा जाओगे।

और दूसरी बात यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

इताअ़त (हुक्मों का पालन) करोः

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ (پ۵)

और रसूल की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) करो।

पैरवी और इताअ़त में फ़र्क़

पैरवी और इताअ़त में फ़र्क़ है। पैरवी का मतलब जो करें वह करो। और इताअ़त का मतलब जो कहें वह करो। तो ये दो आयतें और इसके अ़लावा बहुत सी आयतें हैं जिनके अन्दर यह बताया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो करेंगे वह हम करेंगे, और जो हम से कहेंगे वह भी हम करेंगे।

इसलिये जो ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को होगा, वह ख़िताब पूरी उम्मत के लिये होगा। बशर्ते कि वह ख़िताब आपके साथ ख़ास न हो।

नबी के लिये कुछ ख़ुसूसी अहकाम

बाज़ मर्तबा ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़ुसूसियत के साथ होता है। जैसे चार औ़रतों से ज़्यादा शादियाँ करना आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये ख़ास था। अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि यह सारे ईमान वालों के लिये नहीं है बल्कि सिर्फ़ आपके लिये है।

चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी उम्र का पच्चीस साल का हिस्सा सिर्फ़ एक बेवा औ़रत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ गुज़ारा। उसके बाद जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये तो बहुत समय तक चार बीवियाँ रहीं। फिर आख़िर में नौ तक पहुँच गईं ताकि क़ियामत तक आने वालों को मालूम हो जाये कि बीवी कैसी हो, और उसके साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये। यह बात पूरी उम्मत को मालूम हो जाये।

दावत का काम औ़रतों के लिये भी ज़रूरी

दावत का काम मर्द और औ़रत सब के लिये अल्लाह जल्ल जलालुहू ज़रूरी बताते हैं।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ، اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ (پ١٠، سورة التوبة)

तर्जुमाः- मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के साथी हैं। ये भली बातें बतायें, बुरी बातों से रोकें। और नमाज़ क़ायम करें। ज़कात दें और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करें। उन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।

औ़रत की चार निस्बतें

एक मर्द के पास आ़म तौर से चार क़िस्म की औ़रतें होती हैं:

एक तरफ़ माँ ...... एक तरफ़ बीवी ...... एक तरफ़ बहन ...... एक तरफ़ बेटियाँ।

इसी तरह औ़रतों के चारों तरफ़ तक़रीबन चार क़िस्म के मर्द होते हैं:

एक तरफ़ बाप ...... एक तरफ़ शौहर ...... एक तरफ़ बेटा ...... एक तरफ़ भाई।

तो चार क़िस्म के मर्दों के बीच में एक औ़रत, और चार क़िस्म की औ़रतों के बीच में एक मर्द। जो एक दूसरे के साथी हैं। और उन सभों को क्या करना है?

يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، (پ١٠)

1. एक दूसरे को भली बातें बतायें।
2. एक दूसरे को बुरी बातों से रोकें।

3. नमाज़ क़ायम करें।
4. ज़कात अदा करें (यानी हुक़ूक़ की अदायगी)।
5. अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (हुक्मों को पूरा) करें।

अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना है

अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना है। अल्लाह पाक ईमान वालों को जहन्नम के अन्दर जहन्नमियों को निकालने के लिये भेजेगा कि जाओ जहन्नम के अन्दर दाख़िल हो जाओ। और एक दीनार के बराबर भी जिसके अन्दर ईमान है, उसको निकाल लाओ। ये उसे निकाल लायेंगे। फिर कहा जायेगा कि जिसके अन्दर ज़र्रा बराबर ईमान हो, उसे निकाल लाओ।

अल्लाह बड़ा मेहरबान है। हम लोग ग़लतियाँ करते हैं, अगर वह पकड़ने पर आ जाये तो दुनिया के अन्दर कोई बच नहीं सकता। लेकिन अगर अल्लाह के रहम, करम, फ़ज़्ल और मेहरबानी की कोई नाक़द्री करे, तो नाक़द्री की पकड़ भी अल्लाह के पास बहुत है।

दो क़िस्म के इनसान

दो क़िस्म के इनसान हैं:
एक तो शुक्रगुज़ार और दूसरे नाशुक्रे।

مَايَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ٥ (پ٥)

तुम्हें ख़ुदा अज़ाब देकर क्या करेगा? अगर तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो, अल्लाह पर ईमान लाओ, तो अल्लाह बड़ा क़द्रदान है, जानकार है।

अल्लाह ईमान वालों की हर जगह मदद करता है

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह पाक अगर रहम करने पर आ जाये तो दुनिया में भी करेगा और आख़िरत में भी। कच्चे मकान में

करेगा और पक्के मकान में भी। तंगदस्ती में करेगा और मालदारी में भी। बीमारी में करेगा और तन्दुरुस्ती में भी। तकलीफ़ों में करेगा और नेमतों में भी। क़ब्र में करेगा और हश्र में भी। यहाँ तक कि जहन्नम के अन्दर जाकर ईमान वालों को जहन्नमियों को निकालना पड़ा तो जहन्नम के अन्दर भी करेगा। बल्कि जहन्नम के ऊपर से ईमान वाले जब गुज़रेंगे तो जहन्नम कहेगी कि जल्दी से तू मेरे ऊपर से गुज़र जा, कहीं तू मुझे ठन्डा न कर दे। तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ईमान वालों की हर जगह मदद करेगा। अल्लाह तआ़ला हाकिम भी है हकीम भी है। उसका हर काम हिक्मत (मस्लेहत और भेद) से भरा हुआ है।

दावत में औ़रतों के सहयोग का फ़ायदा

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! घर-घर इसलिये तालीम की तरतीब बनाना चाहिये ताकि औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन बने। बाज़ औ़रतें, मर्दों से ज़्यादा काम करने वाली बन जाती हैं। बाज़ औ़रतों के दिल के अन्दर दीन का बड़ा दर्द होता है। जिनकी वजह से मर्द दीनदारी पर आ जाते हैं। अगर मर्द थोड़ी कुरबानी पर था तो औ़रतों ने उसे ज़्यादा कुरबानी पर खड़ा कर दिया।

इसलिये दावत के काम के संबन्ध में हर आदमी अपनी फ़िक्र करे, अपने घर वालों की फ़िक्र करे, अपनी बस्ती की फ़िक्र करे, अपने ख़ानदान की फ़िक्र करे, अपनी क़ौम की फ़िक्र करे, पूरी इनसानियत की फ़िक्र करे।

दावत प्यार व मुहब्बत से

घर वालों की फ़िक्र में सब से ज़्यादा नमाज़ की पाबन्दी करानी चाहिये। कुरआन पाक में है:

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا (پ١٦)

अपने घर वालों को नमाज़ की ताकीद करो और ख़ुद भी पढ़ो।

सारा मजमा तय कर ले कि सारी ज़िन्दगी नमाज़ नहीं छोड़नी है। और घर वालों को नमाज़ पढ़ाना है। मगर लड़ाई झगड़ा करके नहीं, प्यार व मुहब्बत से उन लोगों को नमाज़ पर लाना चाहिये। अगर कोई ग़लत काम हो रहा हो तो उसको सही करना है, ऐसे तरीक़े पर कि कोई झगड़ा न हो।

इसलिये कि झगड़ा हो गया तो बाज़ मर्तबा इस तरह से एक हक़ पूरा किया जाता है तो पन्द्रह हुक़ूक़ टूट जाते हैं।

बुराईयों से बेज़ारी भी ज़रूरी

हम यह नहीं कहते कि कोई ग़लत काम हो रहा हो तो उसको होने दो। बल्कि अगर ग़लत काम हो रहा है और उसको होने दिया गया बावजूद यह कि इसकी सलाहियत आपके अन्दर है कि न होने दें तो उसका वबाल बहुत ज़्यादा है।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ (پ۹)

उस वबाल से डरो और बचो जो सिर्फ़ ग़लत काम करने वालों पर ही नहीं आयेगा, और जान लो! अल्लाह सख़्त पकड़ने वाले हैं।

जो चापलूसी और बुराई को देखकर उसको नज़र-अन्दाज़ करने के तौर पर ख़ामोश रहा ताकि लोग मेरे साथ जुड़ते चले जायें और उसको ठीक नहीं किया, बावजूद यह कि उसके अन्दर बग़ैर फ़ितने के ठीक करने की सलाहियत थी। तो यह भी वबाल से नहीं बच सकेगा। इसलिये अगर कहीं ग़लत काम हो रहा हो तो उसको सही करना है:

وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ (پ۶)

गुनाह और नाफ़रमानी के कामों पर मददगार और सहयोगी मत बनो।

खुली फ़तह

हक़ बात कड़वी होती है। जब उसके ऊपर अख़्लाक़ की चाश्नी (मिठास) लगाओगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद करो कि तुम्हारा साथी कड़वे बोल को निगल लेगा। देखो मक्का के काफ़िर तेरह साल मुसलमानों को ख़ूब सताते रहे। उसके बाद हिजरत करके मुसलमान मदीना चले गये। वहाँ भी पाँच साल तक मुक़ाबला रहा। लेकिन अल्लाह की मदद ईमान वालों के साथ आयी। चुनाँचे जब छठे साल उमरा करने के लिये ईमान वाले डेढ़ हज़ार की संख्या में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ चले तो उन भटके हुए लोगों ने 'हुदैबिया' के स्थान में रोक दिया कि तुमको उमरा करने नहीं देंगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हम लड़ाई करने नहीं आये हैं। हम तो वहाँ जाकर इबादत करेंगे। बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे। फिर भी उन लोगों ने रोका।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को उन्हें समझाने के लिये भेजा गया। उनके वापस आने में देर हो गई और यहाँ मुसलमानों में ख़बर ग़लत मशहूर हो गई कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद कर दिये गये। तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने एक पेड़ के नीचे हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाथों पर बैअ़त कर ली कि हज़रत! आप हमें मौत पर बैअ़त कर लें।

मक्का के काफ़िर पहले ही अल्लाह की मदद देख चुके थे। जब ईमान वालों ने बैअ़त कर ली तो वे घबरा गये और सुलह करने के लिये आ गये। जंगबन्दी (युद्धविराम) पर सुलह करने की पेशकश की। सहाबा ने जब उन्हें देखा कि ये घबराये हुए हैं और हमारी ताक़त तस्लीम कर रहे हैं तो हम उनसे ज़रा डटकर सुलह करें। अपनी भी मनवायें।

लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह की तरफ़ से यह हुक्म था कि तुम दबकर सुलह करो। यह बात किसी के गले नहीं उतरी सिवाये हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के। आप सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने दबकर सुलह कर ली। वहाँ से वापस लौटे तो रास्ते ही में यह सूरः नाज़िल हुई।

اِنَّا فَتَحْنَا لَکَ فَتْحًا مُّبِیْنًا ۝ (پ۲۶)

हमने तुमको खुली फ़तह दे दी।

दावत की सीमाएँ

हमारा और आपका जज़्बा आ़म तौर से खाना और कमाना है। लेकिन अल्लाह पाक का हुक्म क्या है? दावत! कितनी दावत? अपनी फ़िक्र हो! अपनी क़ौम की फ़िक्र हो! आस-पास वालों की फ़िक्र हो! बस्ती की फ़िक्र हो! पूरी इनसानियत की फ़िक्र हो।

क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे लिये नमूना हैं। आपके बारे में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝ (پ۱۷)

1. हमने आपको पूरी दुनिया के लिये रहमत बनाकर भेजा है।

وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا کَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِیْرًا وَّنَذِیْرًا ۝ (پ۲۲)

2. नहीं भेजा हमने आपको मगर सारे इनसानों को खुशख़बरी सुनाने और डराने के लिये।

قُلْ یٰٓاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْکُمْ جَمِیْعًا (پ۹)

3. आप कह दीजिये कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ।

तो अल्लाह तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पूरी इनसानियत के लिये भेजा है, इसलिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो ग़म था, जो फ़िक्र थी, वह पूरी इनसानियत के लिये थी। और उम्मत के दिल के अन्दर भी पूरी इनसानियत की यही फ़िक्र डाली। अपनी फ़िक्र हो और पूरी इनसानियत की फ़िक्र हो तो पूरी इनसानियत सुधार के रास्ते पर आयेगी। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के अन्दर तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना है।

मोहतरम दोस्तो! जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़िक्र पूरी इनसानियत के लिये क़ियामत तक के ज़माने के लिये है तो हमारी फ़िक्र भी पूरी इनसानियत के लिये हो और क़ियामत तक के ज़माने के लिये हो।

तवज्जोह के लायक़ बात

पूरी इनसानियत की फ़िक्र के क्या मायने हैं?

इसका मतलब है कि जिसने कलिमा पढ़ा हो, उसके अन्दर वह पाक ज़िन्दगी फ़ौरन और अ़मली तौर पर आ जाये। उसकी ज़ाती ज़िन्दगी का निज़ाम सही तरतीब पर हो। ऐसा न हो कि बात भी ठीक करता है, अ़मल भी ठीक करता है, लेकिन ख़ुदा न करे दिल के अन्दर यह बात आ गई कि मैं दुरुस्तगी पर हूँ। मैं अच्छे अ़मल वाला हूँ तो ख़ुदा हिफ़ाज़त फ़रमाये! यह बोल तबाह कर देने वाला है। यह बात तवज्जोह के लायक़ है। आदमी के दिल में शैतान यह बात पैदा करता है।

एक आदमी पहले डाका डाला करता था और अब दीन की दावत देने वाला बन गया, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से, तो उसके ज़ेहन के अन्दर शैतान डालता है कि तू डाकू था, अब कैसा अच्छा बन गया। बेशक डाका डालने के मुक़ाबले में उसने अच्छा काम किया। दावत का काम करता है, रोज़ा रखता है, हज करता है, लेकिन दिल के अन्दर जब यह बात आ गई कि मैं तो डाकू था और अब कैसा अच्छा बन गया, तो यह तकब्बुर हो गया। और जब तकब्बुर आ गया तो अच्छा बनकर भी बरबाद होगा।

सुलह हुदैबिया ने दावत का मैदान उपलब्ध किया

बहरहाल! मैं कह रहा था कि हुदैबिया की सुलह हुई और दबकर हुई। जो किसी के गले से नहीं उतरी। मगर उसका फ़ायदा क्या हुआ?

जितने भटके हुए लोग थे, उनके साथ आपसी मेलजोल शुरू हो गया। मुलाक़ातें होने लगीं। मुलाक़ातों में उन्होंने देखा कि उन ईमान वालों का ईमान कितना मज़बूत है। उनकी इबादतें कैसी जानदार हैं। उन लोगों की समाजी ज़िन्दगी और रहन-सहन कितना दिलों को खींचने वाला है। उनके मामलात, लेन-देन कितने साफ़ हैं। किसी को ये लोग धोखा नहीं देते। उनका अख़्लाक़ी मेयार कितना बुलन्द है। जब ये सब बातें उन्होंने देखीं तो मानूस हुए और मानूस होकर ईमान की तरफ़ आने लगे।

लेकिन बाज़ ज़िद्दी और हठधर्मी वाले होते हैं। उन्होंने दो साल के अन्दर यह सुलह तोड़ दी। चुनाँचे जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की तरफ़ चले तो अब उस वक़्त तक दस हज़ार सहाबा किराम का मजमा आपके साथ था।

जब अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को ताक़त दी और ताक़त के बावजूद उन्होंने दबकर सुलह कर ली, और नर्मी बरती तो काफ़िरों की समझ में आ गया कि बावजूद ताक़त के ये लोग दबकर सुलह कर रहे हैं। ये ख़ुशामदी लोग नहीं हैं। ये बड़े अख़्लाक़ वाले लोग हैं। चुनाँचे सन् आठ हिजरी में मक्का फ़तह हुआ तो सुलह हुदैबिया के बाद से अब तक सिर्फ़ दो साल के अन्दर ये ईमान वाले दस हज़ार की संख्या में हो गये।

अब दस हज़ार लोगों ने मक्का के अन्दर जाकर जो अख़्लाक़ बरता। अच्छे व्यवहार का जो नमूना पेश किया, उनके अख़्लाक़ व किरदार से मुतास्सिर (प्रभावित) होकर मक्का मुकर्रमा के अधिकतर क़बीले ईमान वाले हो गये। यहाँ तक कि सन् नौ हिजरी में तबूक का सफ़र हुआ। जिसमें तीस हज़ार का मजमा था। सन् दस हिजरी में तक़रीबन सवा लाख का मजमा ईमान वाला बन गया। जब नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ने आख़िरी हज का खुतबा इरशाद फ़रमाया था और दावत वाले काम को इस उम्मत के हवाले करके इस दुनिया से तशरीफ़ ले गये थे।

दावत का ढंग और तरीक़ा

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और तमाम सहाबा किराम का दावत के काम का ढंग और तरीक़ा क्या था? कि जिसको हमें भी इख़्तियार करना है। सबसे पहले यह कि जिसने कलिमा पढ़ा वह कलिमे की दावत दे। दूसरी बात यह कि तालीम का हल्क़ा हो। तीसरी बात अल्लाह पाक का ज़िक्र हो। कुरआन पाक की तिलावत और दुआ़ का मांगना ज़्यादा से ज़्यादा हो। चौथी बात एक दूसरे का इकराम किया जाये।

नमाज़ दाई के लिये ख़ज़ानों की कुन्जी है

अब मुझे जो कहना है वह यह कि यह काम आ़लमी पैमानो (विश्व स्तर) पर करने का है। हर जगह जमाअ़त को भेजना है। और आमदनी का ज़ाहिर में कोई ज़रिया नहीं है। दो घण्टे दावत दो, दो घण्टे ज़िक्र करो, दो घण्टे तालीम करो, लेकिन जेब में एक पैसा भी नहीं आता, उलटा इकराम की तालीम व तल्क़ीन पर अ़मल करो तो जेब से निकलेगा ही। तो जिस काम के अन्दर ज़ाहिर में आमदनी न हो उस काम में ख़र्च ही ख़र्च हो, तो वह काम पूरी दुनिया के अन्दर कैसे चलेगा?

इसके लिये अल्लाह पाक ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को आसमान पर बुलाया और अपने ख़ज़ाने दिखाये। और उन ख़ज़ानों की कुन्जी दे दी और वह कुन्जीं यही नमाज़ है।

दूसरे जितने अहकाम व आमाल हैं, वे तो ज़मीन पर उतरे लेकिन नमाज़ वाला हुक्म देने के लिये आसमान पर बुलाया गया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वहाँ से नमाज़ का तोहफ़ा लेकर तशरीफ़ लाये। तब सब सहाबा किराम खुश हो गये कि हमें तो सारे ख़ज़ानों की कुन्जी मिल गई। अब जहाँ भी हमको ज़रूरत पड़ेगी, नमाज़ पढ़कर

अल्लाह से माँगेंगे।

जमाअ़त बनाना ज़रूरी

मोहतरम दोस्तो! जो बातें मैंने आप हज़रात से अ़र्ज़ कीं उनको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का के अन्दर शुरू फ़रमाया तो अफ़राद तैयार हुए, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चाहते थे कि एक मजमा तैयार हो। क्योंकि फ़िज़ा मजमे से बनेगी। इसी लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अन्दर एक-एक के पास जाते थे।

मालूम हुआ कि अकेले काम न करें, बल्कि साथी बनायें। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारह "नुक़बा" (साथी) थे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के "हवारिय्यीन" (साथी) थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी अपने साथी बनाये थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने भी अपने साथी बनाये थे। इसलिये जितना भी दुनिया के अन्दर दावत का काम हो रहा है सिर्फ़ अकेले न करें। अगर साथी बनाये गये तो बीमारी की वजह से, मौत की वजह से, सफ़र की वजह से, काम रुकेगा नहीं बल्कि आगे तक चलता रहेगा। और अगर साथी नहीं बनाया बल्कि अकेला करता है तो एक आदमी आख़िर कितना काम करेगा।

शैतान का धोखा

बड़े हज़रत जी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का एक मलफ़ूज़ (उपदेश) मैंने पढ़ा तो मैं हैरत में पड़ गया। इरशाद फ़रमायाः

"आदमी ख़ूब काम करे और अपने आपको थका दे, लेकिन दूसरे काम करने वाले आदमी न बनाये तो यह उसके लिये शैतान का धोखा है"।

इसलिये ख़ुद को भी लगाता रहे और दूसरों को भी लगाये। यह हर नबी ने किया, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी किया।

दावत में संगठन की अहमियत

हमारे काम करने वालों को "बाँझ" बनकर नहीं मरना है। बाँझ बनने के क्या मायने हैं?

"फ़लाँ आदमी मर गया तो काम बन्द हो गया"

"फ़लाँ आदमी उस इलाक़े से सफ़र करके चला गया तो काम बन्द हो गया"

नहीं! ऐसे अन्दाज़ से काम किया जाये कि दूसरे काम करने वाले बनें। जिस क़द्र काम करने वाले आगे बढ़ते रहेंगे तो इन्शा-अल्लाह पीछे वालों को उतना ही ज़्यादा काम करने का तजुर्बा होगा।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ किसी ने नहीं दिया। मदीना के अन्सार ने साथ दिया। अन्सार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आपको मदीना मुनव्वरा ले गये। यहाँ पर जो काम इनफ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर हो रहा था वह अब इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर होने लगा। तालीम का हल्क़ा इज्तिमाई तौर पर होने लगा। नमाज़ जमाअ़त के साथ होने लगी। एक दूसरे से हमदर्दी करना यह इज्तिमाई तौर पर होने लगा। और एक बड़ी पाकीज़ा ज़िन्दगी मुहाजिरीन और अन्सार की मिलकर बनी। जिसके परिणामस्वरूप बदर, ख़न्दक़, और उहुद वग़ैरह की जंगों के यादगार कारनामे और अल्लाह की मदद के वाक़िआ़त पेश आये।

इमामों के इमाम वाली नमाज़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह पाक ने ऊपर बुलाया। क्योंकि ऊपर वालों की भी तमन्ना थी। नीचे वाले आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर ज़ियारत कर लेते थे। लेकिन ऊपर वाले यानी फ़रिश्ते उनमें जिनको इजाज़त होती है वही यहाँ आ सकते थे। तो यह तमन्ना थी कि एक बार हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ऊपर वालों को भी अपना जलवा दिखा जायें। तारीख़ तय हो गई। हज़रत

जिबराईल अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये। सवारी के लिये मख़्सूस जानवर पर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम और हज़रत रसूले कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हुए। पहला सफ़र बैतुल्-मक़्दिस का हुआ। थोड़ी ही देर में वहाँ पहुँचे। सारे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम नमाज़ के इन्तिज़ार में थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। हालाँकि सभी रूहानियत की लाईन के इमाम थे। और हर नबी की रूहानी ताक़त वह थी जिसका मुक़ाबला फ़िरऔ़न, हामान, क़ारून, क़ौमे लूत, क़ौमे आ़द और क़ौमे समूद नहीं कर सकीं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इन इमामों के इमाम बने।

तो हमको जो नमाज़ मिली है वह इमामों के इमाम की नमाज़ है। हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली नमाज़ मिली है। बड़ी ताक़त वाली नमाज़ है जो अल्लाह ने हमें दी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की ताक़त

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। समन्दर के अन्दर बारह रास्ते बने और उसके अन्दर उनकी उम्मत अपने नबी के साथ चली। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े में क्या ताक़त है?

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ब्र मुबारक के अन्दर तशरीफ़ रखते हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़ का दौर है। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ हज़ारों का मजमा है। सामने दरिया-ए-दजला है और दरिया-ए-दजला के उस पार ईरान का बादशाह किस्रा लाखों के मजमे के साथ है। चूँकि वे लोग अल्लाह की मदद देख चुके थे। तो उनके ज़ेहन में यह बात थी कि इन लोगों से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिये। इन लोगों से छेड़छाड़ करेंगे तो ये अल्लाह को पुकारेंगे। और जब

अल्लाह की मदद इन लोगों के साथ आयेगी तो उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। फिर उन लोगों ने सोचा कि दरिया-ए-दजला बीच में है लिहाज़ा कश्तियाँ और पुल तोड़ दिये जायें ताकि ये लोग इस पार आ ही न सकें।

दजला और क़तरा बराबर

अब ये लोग क्या करें?

इन लोगों ने सोचा कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में एक जैसी है। "अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में दजला और क़तरा बराबर हैं।" अगर अल्लाह मारने पर आये तो क़तरे से मार सकता है। और अगर न मारने पर आये तो दजला भी नहीं मार सकता।

हमारे और तुम्हारे नज़दीक दजला (नहर) और क़तरा बराबर नहीं हैं। और सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का ज़ेहन था कि दजला और क़तरा बराबर हैं। इनकी कोई हैसियत नहीं है। करने वाली ज़ात अल्लाह की है। यह कहकर घोड़े दरिया-ए-दजला में डाल दिये गये।

तारीख़ के लिखने वाले इस क़िस्से को तारीख़ से मिटा नहीं सकते। इसलिये कि जिन पर यह क़िस्सा हुआ वे हज़ारों की संख्या में थे। और जिन्होंने अपनी आँखों से देखा है वे लाखों की संख्या में थे। कितना भी रद्दोबदल कर डाला लेकिन तारीख़ लिखने वाले इस क़िस्से को बदल नहीं सके।

हम यतीम व मिस्कीन नहीं

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। समन्दर के अन्दर बारह रास्ते बने और उसके अन्दर उनकी उम्मत अपने नबी के साथ चली तो बनी इस्राईल का यह हाल था। उम्मती चले, नबी के साथ चले। रास्ता बना, उस रास्ते में चले। और यहाँ क्या हाल है?

सिर्फ़ उम्मती चले, नबी के बग़ैर चले, और पानी के ऊपर चले और

उम्मती क्या उम्मती के घोड़े भी चले।

यह है ताक़त रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम की। इसलिये हम यतीम नहीं, हम मिस्कीन नहीं। हमारे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ पाक तरीक़ा है।

क़सूरवार हम हैं

आज सारी मुसीबत और बला इसलिये है कि इस पाक तरीक़े की नाक़द्री हो रही है। मिसाल के तौर पर चौराहे का सिपाही है जो हाथ देता है और ट्रैफ़िक को कन्ट्रोल करता है। जब चौराहे का सिपाही हट जाता है तो गाड़ियाँ एक दूसरे से टकरा जाती हैं। ठीक उसी ट्रैफ़िक पुलिस की तरह आज पूरी दुनिया के अन्दर जितने टकराव हो रहे हैं, उसके क़सूरवार हम और आप हैं। इसलिये कि यह उम्मत चौराहे के सिपाही की तरह है। यह हर जगह लोगों को कन्ट्रोल करती थी। और उनको रास्ते पर लाती थी।

चाँद पर पहुँच जाना कमाल नहीं

बहरहाल! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई। पहला स्टेशन बैतुल-मक़्दिस था। दूसरा स्टेशन पहला आसमान। लोकल गाड़ियों की तरह रास्ते में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कहीं नहीं रुके। क्योंकि फ़ास्ट (मेल) गाड़ियाँ छोटे-छोटे स्टेशन पर नहीं रुकतीं। आप चाँद पर नहीं उतरे। चाँद के ऊपर साइंस वाले अब उतरे हैं। सैकड़ों साल की मेहनत के बाद चाँद के ऊपर पहुँचना कोई कमाल नहीं है बल्कि उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर देना बहुत बड़ा कमाल है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उंगली से इशारा किया, चाँद के दो टुकड़े हो गये।

मक़सद का दर्जा दलील से बढ़कर

यह मोजिज़े (अल्लाह की तरफ़ से दी हुई पैग़म्बरी की निशानी) के

तौर पर था। लेकिन मोजिज़ा नुबुव्वत का मक़सद नहीं है। मोजिज़ा नुबुव्वत की दलील है। **अत्तहिय्यात** में "**अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु**" पर जो उंगली उठी थी, यह नुबुव्वत के मक़सद में से है। आपका नमाज़ के अन्दर हरकत करना नुबुव्वत के मक़सद में से है और चाँद का दो टुकड़े कर देना यह नुबुव्वत की दलील के तौर पर है। और मक़सद का दर्जा दलील से बढ़कर है। आपकी उंगली का इशारा जो **अत्तहिय्यात** में होता था उसमें ताक़त ज़्यादा है, चाँद के दो टुकड़े करने के मुक़ाबले में।

अब आपका बदन मुबारक जो नमाज़ में हरकत करता था, बताओ उसमें कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दावत के अन्दर हरकत करते थे उसमें कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। आपकी हिजरत में कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। और यह सब रूहानी ताक़त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी उम्मत के अन्दर तक़सीम कर गये हैं। तो जितना आपका रूहानियत वाला अ़मल अपनाया जायेगा, उसके अन्दर भी अल्लाह तआ़ला रूहानियत वाली ताक़त मुन्तक़िल फ़रमायेंगे।

हमारे नबी की रूहानी ताक़त

मेरे मोहतरम दोस्तो! आपके आसमानी सफ़र यानी मेराज का दूसरा स्टेशन पहला आसमान था और इस तरह सातों आसमानों पर आपका जाना हुआ। आपने जन्नत को देखा, आपने जहन्नम को देखा। ज़मीन से ऊपर आमाल का जाना देखा। आसमान से फ़ैसले का उतरना देखा। बाज़ अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम से अलग-अलग मुलाक़ातें भी हुईं। फिर आप सातों आसमान से ऊपर भी तशरीफ़ ले गये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इतने ऊपर तशरीफ़ ले गये कि एक मक़ाम पर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि इसके ऊपर मैं नहीं जा सकता। हालाँकि हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम बड़े रूहानी ताक़त वाले और सारे फ़रिश्तों के सरदार हैं। जिनके एक पर के एक किनारे से क़ौमे लूत की

सारी बस्तियाँ उलट गईं। जब हज़रत जिबराईल की इतनी ज़्यादा जिस्मानी ताक़त है तो अन्दाज़ा लगाओ कि रूहानी ताक़त किस क़द्र होगी।

लेकिन एक मक़ाम पर जिबराईल अ़लैहिस्सलाम कहते हैं कि इससे ऊपर मैं नहीं जा सकता।

अगर यक सरे मू-ए-बरतर परम
फ़रोग़े तजल्ली बसोज़द् परम

तर्जुमाः- बाल बराबर भी अगर मैं ऊपर उड़ा तो अल्लाह तआ़ला की तजल्ली मुझे जलाकर राख कर देगी।

यहाँ पर आकर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम की रूहानी और जिस्मानी ताक़त ख़त्म हो गई। जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जिस्मानी परवाज़ उससे भी ऊपर की हुई है। इससे अन्दाज़ा लगायें कि आपकी रूहानी परवाज़ कितनी होगी।

हम यतीम नहीं हैं, मिसकीन नहीं हैं। हमारे पास इस क़द्र ताक़त वाला नबी है जो हमें यह तरीक़ा देकर गया है। पस इस तरीक़े पर चलकर आपकी ताक़त क़ियामत तक हमारे लिये मददगार रहेगी।

दरे फ़ैज़े मुहम्मद वा है, आये जिसका जी चाहे
न आये आतिशे दोज़ख़ में जाये जिसका जी चाहे

فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (پ١٥)

तर्जुमाः- पस जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे कुफ़्र करे।

ज़िक्रे रसूल के साथ फ़िक्रे रसूल भी अपनाना ज़रूरी

मोहतरम दोस्तो! यह रजब का महीना सिर्फ़ मेराज के वाक़िआत बयान करके ख़त्म करने का नहीं है। रबीउल् अव्वल का महीना रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सिर्फ़ ज़िक्रे पैदाईश के लिये नहीं है बल्कि आपकी फ़िक्र के लिये है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र सिर्फ़ रबीउल् अव्वल के ही महीने में नहीं करना है बल्कि आपका ज़िक्र क़दम-क़दम पर करें।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मेराज के महीने की क़द्रदानी यह है कि हम सब के सब नीयत करें कि जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरी उम्मत के ऊपर यह काम डाला, तो एक-एक उम्मती के ज़िम्मे अपनी फ़िक्र, अपने घर की फ़िक्र, ख़ानदान की फ़िक्र, बस्ती की फ़िक्र, आस-पास की फ़िक्र और पूरी इनसानियत की फ़िक्र, यहाँ तक कि क़ियामत तक आने वाले ज़माने की फ़िक्र, अल्लाह और उसके रसूल ने हम सब पर डाला। तो हम सब इस फ़िक्र को अपने अन्दर पैदा करें।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! नीयत करो कि पूरे आ़लम के अन्दर जितने उम्मती बसे हुए हैं, उनमें दावत के काम को अपनी पूरी ज़िन्दगी का मक़सद बनायेंगे।

दावत का काम लोगों में हैसियत के मुताबिक़

मोहतरम दोस्तो! चूँकि यह काम सामूहिक है। कारोबार करने वाला हो या कारख़ाने वाला, खेती करने वाला हो या बन्जर बस्तियों में रहने वाला। यह काम उन सब का है और उन सब लोगों में करना है। बन्जर बस्तियों में जाकर अगर कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम लोगों के कलिमे को ठीक करा दो। अगर एक आदमी का कलिमा ठीक हो गया तो न मालूम कितनों का कलिमा ठीक होगा। कलिमे के अल्फ़ाज़ ठीक कराने के साथ उनकी ज़बान में उसके मायने भी बताये जायें कि: **अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।** फिर इस कलिमे का जो तक़ाज़ा है और कलिमे से हमने जो मुआ़हदा किया है वह सब के सामने आ जाये।

दावत में यूसुफ़ी किरदार की ज़रूरत

मोहतरम दोस्तो! यह इज्तिमाई (सब के मिलकर करने का) काम है। और इज्तिमाई काम के अन्दर अख़्लाक़ी मेयार ऊँचा होना चाहिये। अपनों के साथ भी और दूसरों के साथ भी।

चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब सहाबा किराम का दस हज़ार का मजमा लेकर मक्का के अन्दर दाख़िल हुए तो मक्का वालों ने समझा कि हमने इन लोगों को जो इक्कीस साल सताया है, आज ये लोग हमसे बदला लेंगे। हमको क़त्ल करेंगे, हमारी औ़रतों और बच्चों को बाँदी और ग़ुलाम बनायेंगे। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको जमा करके फ़रमाया कि क्या तुमको मालूम है कि मैं आज तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ?

उन लोगों ने एक ज़बान में कहा कि आप हमारे नेक भाई की नेक औलाद हैं, हम आप से भलाई की उम्मीद करते हैं।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आज मैं तुमसे वही कहूँगा जो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने भाईयों से कहा था:

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ ٥ (پ۱۳)

"आज तुम पर कोई ज़्यादती और ज़ुल्म नहीं होगा। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, वह बड़ा ही रहम करने वाला है।"

आज तुम सब के सब आज़ाद हो!

पत्थर-दिल हिन्दा भी मोम हो गईं

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ऐसा करीमाना अख़्लाक़ देखकर हिन्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी पत्थर-दिल औ़रत भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर बैअ़त हो गईं और कहने लगीं कि कल यही वक़्त था और मक्का मुकर्रमा के बाहर सारे ख़ेमे लगे हुए थे। दरमियान मैं आपका ख़ेमा था। सारे ख़ेमों में सबसे दुश्मन ख़ेमा आपका था। लेकिन चौबीस घण्टे में मेरा ज़ेहन इतना बदल गया कि इस वक़्त मक्का मुकर्रमा में सारे ख़ेमों के बीच में आपका ख़ेमा है। और सारे ख़ेमों में सबसे महबूब ख़ेमा मेरे नज़दीक आपका है। इसी तरह हमें भी

अपने अख़्लाक़ के मेयार को बुलन्द करना है और हर एक के साथ अख़्लाक़ बरतना है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं अपने बयान को ख़त्म करता हूँ मगर इसका कोई नतीजा निकलना चाहिये। इसलिये एक वायदा यह करो कि जब तक तश्कील का काम न हो जाये, तब तक आप हज़रात जमकर बैठेंगे और मजमे के जमाने का सवाब लेंगे। ख़ुद उठकर मजमें को उखाड़ने वाले नहीं बनेंगे।

अब हमारे तश्कील वाले हज़रात जहाँ न पहुँचे हों वहाँ पहुँच जायें, और जहाँ मौजूद हों, वहाँ खड़े हो जायें और आप हज़रात अपना अपना नाम लिखवायें। अल्लाह तआ़ला हम को दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये। आमीन।

तक़रीर (7)

हर्ज इसमें है कि जिससे मुनासबत हो उसकी नाहक़ तरफ़दारी की जाये। यह है ग़लत और लड़ाई की चीज़। और जिससे मुनासबत नहीं उसका जो हक़ है वह भी दबा लिया जाये। अपने ग्रुप के आदमी की नाहक़ तरफ़दारी करना और दूसरे ग्रुप की हक़-तल्फ़ी करना, इसका नाम अ़सबिय्यत है। और यह आदमी को अल्लाह से दूर करने वाली चीज़ है।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

इनसानों के मुख़्तलिफ़ तबक़े

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसानों को मुख़्तलिफ़ तबक़ों में पैदा किया है। अल्लाह ने इनसानों का एक तबक़ा नहीं बनाया। किसी को अल्लाह ने मर्द बनाया, किसी को औ़रत बनाया। किसी को हाकिम बनाया, किसी को महकूम बनाया। किसी को अल्लाह ने कारख़ाने वाला बनाया और किसी को मज़दूर बनाया। किसी को अल्लाह ने एशियन और यूरोपियन बनाया, किसी को अफ़रीक़न बनाया। अल्लाह ने मुख़्तलिफ़ तबक़ों में इनसानों को पैदा किया है। और अल्लाह ने सारे तबक़ों की कामयाबी जोड़ में रखी है, और तोड़ में नाकामी रखी है। इन सारे तबक़ों में अगर जोड़ है तो इसमें अल्लाह तआ़ला कामयाब करेंगे। और अगर इनमें आपस में तोड़ है तो अल्लाह तआ़ला नाकाम करेंगे।

जोड़ और कामयाबी का तरीक़ा

अब जोड़ कैसे होगा? और तोड़ कैसे होगा? इसको समझो। अगर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ रूहानी तरीक़ा ज़िन्दगियों में आ जाये तो इससे आ़लमी पैमाने (विश्व स्तर) पर जोड़ होगा। जितना-जितना रूहानी तरीक़ा आता जायेगा उतना जोड़ होता

जायेगा। क़ौमों का जोड़ क़ौमों से, मुल्कों का जोड़ मुल्कों से। ख़ानदानों का ख़ानदानों से। घर वालों का आपस में जोड़। सबके अन्दर जोड़ होगा अगर रूहानी तरीक़ा आयेगा।

तोड़ और नाकामी का रास्ता

और अगर रूहानी तरीक़ा निकल कर "नफ़सानी तरीक़ा" आयेगा। "जी चाही वाला तरीक़ा" आयेगा तो इसके अन्दर तोड़ होगा। क़ौमों में तोड़ होगा, ख़ानदानों में तोड़ होगा, यहाँ तक कि जब रूहानी तरीक़ा निकल जाता है तो घर वालों के अन्दर भी तोड़ होता है। मियाँ-बीवी में तोड़ होता है, बाप बेटे में तोड़ होता है। और अगर "रूहानी तरीक़ा" हो तो पूरब और पश्चिम वालों में जोड़ हो जाता है। और अगर रूहानी तरीक़ा निकल जाता है तो आपस के अन्दर भी लड़ाईयाँ हो जाती हैं।

अलग रंग अलग ढंग

और इसके समझने की मिसाल जो है, वह बदन और रूह है। पूरे बदन के अन्दर जोड़ है। इसलिये कि अन्दर रूह मौजूद है। रूह निकल जाती है तो पूरे बदन का जोड़ ख़त्म हो जाता है। हालाँकि बदन के अन्दर अल्लाह ने जो हिस्से बनाये वे अलग-अलग डिज़ाईन के बनाये। अलग-अलग रंग के बनाये। हर हिस्से का काम अलग है। हाथ का काम पकड़ना, पैर का काम चलना, कान का काम सुनना, हर एक का काम अलग है, हर का डिज़ाईन अलग है। आँख का डिज़ाईन देखिये कैसा, नाक कैसी उभरी हुई, कान कैसे दबे हुए, पेट कैसा उभरा हुआ। कमर कैसी पिचकी हुई, हाथ कैसे लटके हुए और पैर कैसे ज़मीन पर अटके हुए। तो हर एक की जगह भी अलग, हर एक का काम भी अलग, हर एक का रंग भी अलग और हर एक का डिज़ाईन भी अलग।

बदन के अंग जोड़ का अच्छा नमूना

लेकिन इन सब के अन्दर आपस में जोड़ है। और खुदा न करे

आदमी कहीं जा रहा है और कीचड़ में फिसल कर गिर गया और कमर की हड्डी टूट गई, तो ज़बान शोर मचायेगी, डाक्टर को बुलायेगी। डाक्टर से बात करेगी। हालाँकि ज़बान को कोई तकलीफ़ नहीं है। कान डाक्टर की बात सुनेगा। हाथ डाक्टर को पैसा देगा दूसरा हाथ डाक्टर से दवा लेगा, और जहाँ तक हाथ पहुँच सकेगा वह मरहम-पट्टी करेगा। तो पूरा बदन कमर की हड्डी को फ़ायदा पहुँचाने में लगा हुआ है। आँख का देखना, कान का सुनना, ज़बान का बोलना, हाथ का पकड़ना, ये सब कमर की हड्डी के ठीक होने के लिये इस्तेमाल हो रहे हैं।

इसी तरह अगर पैर में साँप ने काट लिया तो पूरा बदन उसके इलाज की तरफ़ मुतवज्जह होगा। और आपने यह कभी नहीं देखा होगा कि जब फिसल कर हड्डी टूटी तो बदन के किसी हिस्से ने ताना दिया हो कि कमबख़्त पैर! तूने फिसल कर कमर की हड्डी तोड़ दी। यह नहीं होता। बल्कि हर अंग उसकी हमदर्दी में लग जाता है। इसी तरह मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का रूहानी तरीक़ा आयेगा तो मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) तबक़ों में जोड़ होगा।

दोस्तो! बावजूद यह कि हर आदमी की सूरत अल्लाह ने अलग बनायी, आवाज़ अलग बनायी। किसी की आवाज़ दूसरे से मिलती है। किसी की सूरत दूसरे से मिलती-जुलती है। किसी का मिज़ाज और तबीयत दूसरे से मिलती है। और बाज़ों का दूसरे से कुछ नहीं मिलता। न मिज़ाज मिलता है, न तबीयत मिलती है, न शक्ल व सूरत मिलती है, न आवाज़ मिलती है।

लेकिन इसमें कोई हर्ज नहीं, यह तो अल्लाह की तरफ़ से है और "आ़लमे अर्वाह" (रूहों की दुनिया) में यह तय हो चुका है। जैसा कि हदीस में है:

اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُّجَنَّدَةٌ

वहाँ रूहें सारी की सारी एक साथ में थीं।

वहाँ जिसको जिससे मुनासबत हो गयी उनका यहाँ भी आपस में जोड़ बैठेगा और जिसको जिससे मुनासबत नहीं हुई यहाँ भी उससे जोड़ नहीं बैठेगा और न मुनासबत होगी। लेकिन इसमें कोई हर्ज नहीं।

अ़सबिय्यत बुरी चीज़ है

हर्ज कहाँ है? हर्ज इसमें है कि जिससे मुनासबत हो उसकी नाहक़ तरफ़दारी की जाये। यह है ग़लत और लड़ाई की चीज़। और जिससे मुनासबत नहीं उसका जो हक़ है वह भी दबा लिया जाये। अपने ग्रुप के आदमी की नाहक़ तरफ़दारी करना और दूसरे ग्रुप की हक़-तल्फ़ी करना, इसका नाम अ़सबिय्यत है। और यह आदमी को अल्लाह से दूर करने वाली चीज़ है।

मुनासबत का होना और न होना इसमें कोई हर्ज नहीं। बाज़ों से होगी और बाज़ों से नहीं होगी। कोई आदमी ऐसा नहीं कि जिससे सभी मुहब्बत करते हों, कुछ को मुहब्बत होगी कुछ को नफ़रत होगी।

अपने आपको थका दो

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़लीफ़ा बनाया तो बहुत सी वसीयतें फ़रमाईं। उनमें एक बात हज़रत सिद्दीक़ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह फ़रमायी कि मैं तुम्हारे ऊपर ऐसा काम डालता हूँ जो थका देने वाला है। इस वक़्त में अल्लाह पाक ने अपने करम से हमें और तुम्हें जो यह काम दिया है यह थका देने वाला है अगर कोई करे। और अगर कोई न करे तो सारे दिन पड़ा रहे। कोई पूछने वाला नहीं कि तू क्यों सारे दिन पड़ा रहता है। और अगर आदमी करता रहे तो ख़ूब थका देने वाला काम है। इस काम के अन्दर अपने को थका देने वाला कामयाब है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि नींद भी पूरी न करे, खाना भी न खाये। अपनी तन्दुरुस्ती बाक़ी रखनी पड़ेगी ताकि ज़्यादा काम कर सके।

ऐसा भी है कोई जिसे सभी अच्छा कहें

हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर से यूँ कहा कि मैं तो दुनिया से जा रहा हूँ और काम तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ। और यह थका देने वाला काम है। उसके बाद यह एक बड़ी अ़जीब बात इरशाद फ़रमायी। वह सुनने की है। फ़रमायाः

اَحَبَّکَ مُحِبٌّ وَاَبْغَضَکَ مُبْغِضٌ

बहुत से आदमी तुमसे मुहब्बत करेंगे। कहेंगे कि हाँ! अच्छा हुआ यह काम हज़रत उमर के हवाले हो गया। यह वे कहेंगे जिनको तुम्हारे मिज़ाज से मुनासबत होगी। और जिन लोगों को तुम्हारे मिज़ाज से मुनासबत नहीं होगी, उन्हें बड़ी नागवारी होगी। वे कहेंगे कि अरे-अरे यह काम इनके हवाले हो गया? ठीक नहीं हुआ।

तो फिर दोस्तो! हमारी और तुम्हारी क्या हैसियत है? हम क्यों यह समझें कि सारे के सारे लोग हमारी हाँ में हाँ मिलायेंगे। ऐसा होगा नहीं।

मश्विरा आपस में जोड़ का रूहानी तरीक़ा

तो मिज़ाज भी अलग, सूरत भी अलग, आवाज़ भी अलग, राहें भी अलग, अब इसमें जोड़ बिठाने का रूहानी तरीक़ा क्या है?

दोस्तो! वह है मश्विरा। मश्विरा एक बड़ी अ़जीब व ग़रीब चीज़ है। हर काम मश्विरे से हो। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

مَاخَابَ مَنِ اسْتَخَارَ وَمَا نَدِمَ مَنِ اسْتَشَارَ وَمَا عَالَ مَنِ اقْتَصَدَ

तीन बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाईं:

1. जिसने इस्तिख़ारा किया वह नुक़सान नहीं उठायेगा।
2. जिसने मश्विरा किया वह नहीं पछतायेगा।
3. और जो दरमियानी चाल चलेगा वह मोहताज नहीं होगा।

अल्लाह की ताक़त सबसे बड़ी है

और हमारी दावत क्या है? नबियों वाली है। हमारी दावत यह है कि अल्लाह की ताक़त इतनी बड़ी है कि सारी की सारी ताक़तें इसके सामने कोई हैसियत नहीं रखतीं। और अल्लाह के ख़ज़ाने इतने बड़े हैं कि दुनिया के सारे ख़ज़ाने उनके सामने कोई हैसियत नहीं रखते।

खुदा की ताक़त को तस्लीम कर लो। ख़ुदा के ख़ज़ाने को तस्लीम कर लो। ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात को मानो और ख़ुदा की बात को मानो, अल्लाह की मदद तब आयेगी।

जिस तरह बेकसी और बेबसी में अल्लाह की मदद बदर में आयी, क़ियामत तक अल्लाह की मदद आती रहेगी। अपनी बेकसी और बेबसी पर घबराने की ज़रूरत नहीं। हम जिस अल्लाह के मानने वाले हैं, वह अल्लाह बेकस और बेबस नहीं है। वह अल्लाह बड़ी ताक़त वाला है। एक हुक्म से ज़मीन व आसमान बन गये और फिर एक हुक्म के ज़रिये ज़मीन व आसमान को तोड़ देगा।

हो जा, तो वह हो जाता है

वह जिस काम को करना चाहता है सिर्फ़ कह देता है "हो जा" तो वह हो जाता है। अगर कहें "जल्दी-जल्दी हो जा" तो वह चीज़ जल्दी-जल्दी हो जाती है। और अगर कह दें कि धीमे-धीमे हो जा, तो वह चीज़ धीमे-धीमे होती है।

दुनिया में धीरे-धीरे और आख़िरत में झटपट

दुनिया में आ़म तौर से अल्लाह तआ़ला धीरे-धीरे करते हैं। आख़िरत में अल्लाह तआ़ला आ़म तौर से झटपट कर देंगे। पलक झपकते काम कर देंगे।

अल्लाह तआ़ला धीमे-धीमे करते हैं। चाँद धीमे-धीमे बड़ा होता है। सूरज धीमे-धीमे ऊपर आता है। इनसान नौ महीने में बनता है। मुर्ग़ी का

बच्चा उनतीस दिन में बनता है। तरबूज़ की बैल चार महीने में फैलती है।

शायद कुछ लोगों को हमारी यह बात अ़जीब सी लगती हो कि मौलवी साहिब पुराने ख़्याल के आदमी हैं। कहते हैं कि मुर्ग़ी का बच्चा उनतीस दिन में बनता है। हालाँकि अब चन्द घण्टों में मुर्ग़ी का बच्चा पैदा हो जाता है।

तो दोस्तो! यह ग़ैर-साबितुन्नसब (जिसके माँ-बाप का पता न हो) बच्चा होता है। उसमें वह तत्व नहीं होता जो साबितुन्नसब बच्चे में होता है। मुर्ग़ी का वह बच्चा जो डायरेक्ट मुर्ग़ी के परों के नीचे से निकलता है। उसमें जो बात होती है मशीनों के ज़रिये बनकर निकलने वाले बच्चे में नहीं होती। वह रूखा-सूखा होता है। उसमें वह बात नहीं होती जो बात कुदरती चीज़ों के अन्दर होती है। लेकिन बहरहाल फिर भी कुछ देर तो लगती ही है।

दुनिया में अल्लाह पाक हर काम करते हैं धीमे-धीमे। ज़मीन व आसमान को छह दिन में बनाया। और इनसान को ज़मीन में दफ़न करने के बाद फिर उसे क़ियामत के दिन उठायेंगे। लेकिन आख़िरत में अल्लाह पाक हर काम झटपट करेंगे। दूध की नहरें झटपट, शहद की नहरें झटपट। जन्नती जो माँगेगा उसको झटपट मिलेगा, देर नहीं लगेगी। वहाँ का हर काम झटपट होगा।

पहला सूर फूँका, झटपट सब मर जायेंगे। दूसरा सूर फूँका झटपट सब ज़िन्दा हो जायेंगे। यह नहीं कि छोटा बच्चा जैसे धीरे-धीरे जवान होता है। ऐसा नहीं होगा। सब एक दम से बिल्कुल ज़िन्दा, और एक दम से जन्नत के अन्दर नेमतें और जहन्नम के अन्दर तकलीफ़ें। हर काम वहाँ का झटपट और हर काम यहाँ का धीमे-धीमे। लेकिन बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक अपनी कुदरत को दिखाने के लिये दुनिया के अन्दर भी कामों को झटपट कर देते हैं। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डंडा डाला, अज़्दहा बन गया। अज़्दहे को पकड़ा, डंडा बना दिया। यह झटपट हुआ।

अल्लाह के सामने रोना

ईमान वालों का सबसे बड़ा हथियार

और झटपट करने में क्या होता है? इसमें ईमान वालों की मदद होती है। कभी-कभी अल्लाह तआ़ला दिखा देते हैं कि ये ईमान वाले जो हर वक़्त मुजाहदा बरदाश्त करते हैं, ये ख़ूब मारे-पीटे गये, वतन छोड़ा हबूशा गये, तीन साल के बायकाट का मुजाहदा बरदाश्त किया। फिर बदर के अन्दर मुजाहदा, ये बे-सरोसामान और थोड़े से लेकिन उनके पास जो सबसे बड़ी ताक़त है वह अल्लाह पर यक़ीन है कि करने वाली ज़ात अल्लाह की है। ये अल्लाह से माँगते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरे यहाँ तो कोई कमी नहीं है।

सारी रात हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रोते रहे और सुबह को भी बहुत रोये कि ऐ अल्लाह! सब तेरे हाथ में है। ऐ अल्लाह! तू ही करने वाला है। ईमान वालों का बहुत बड़ा हथियार अल्लाह के सामने रोना और अल्लाह से माँगना है।

करने वाले अल्लाह हैं

ज़ाहिर के अन्दर कुछ दिखाई नहीं देता। अबू जहल का मजमा (फ़ौज) यह समझता था कि बस थोड़ी देर और है, ज़्यादा देर नहीं। फिर करेंगे चाय-पार्टी और फिर करेंगे बहुत बड़ा खाना-पीना। उसके ज़ेहन में यह था। और मुसलमान जो हैं उनके ज़ेहन में यह था कि करने वाला अल्लाह है। हम अल्लाह से माँगेंगे। अब यहाँ पर तेरह-चौदह साल के मुजाहदे के बाद जो मदद आयी झटपट आयी। ऐसी झटपट कि ऊपर से फ़रिश्ते उतर आये और एक मुट्ठी कंकर अबू जहल के मजमे पर डाली तो वे आँख ही मलते रहे और ईमान वालों ने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ उनके ज़हरीले फोड़ों का आपरेशन शुरू कर दिया। सत्तर फोड़ों का आपरेशन हो गया और उनके सत्तर जगादरी पकड़े गये और बाक़ी

सहम गये और भाग गये। और वे सोच रहे हैं कि आख़िर यह हुआ क्या? तेरह-चौदह साल तक जिनको हमने पीटा वे आज हमको पीट रहे हैं। हुआ यह कि तेरह-चौदह साल से वे यह कह रहे थे कि देखो! करने वाले अल्लाह पाक हैं, मख़्लूक़ात से धोखा न खाना। इन मख़्लूक़ात से कुछ नहीं होता।

मेरे लिये मेरा अल्लाह काफ़ी है

हर क़िस्से में यही दिखाई देता है। नमरूद कहता है: "MY WORSHIP MY ORDER" (मेरी पूजा करो यह मेरा आदेश है)। उसका जो वज़ीर था वह बावला था। उसने कहा कि मैं नमरूद की मान लूँगा तो पब्लिक जो होगी वह भी बात मान लेगी। आग जलाई और कहा कि इसमें इब्राहीम को डाल दो। लेकिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का हथियार क्या था?

"मेरे लिये मेरा अल्लाह काफ़ी है"

दोस्तो! अल्लाह पर भरोसा, यह बड़ी भारी चीज़ है। हमारे काम करने वालों को तक़वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) तक पहुँचना है। जब आदमी दावत का काम करेगा तब ईमान की जड़ बनेगी और बराबर दावत दोगे तो उसमें ईमान का पानी चलेगा फिर दीन का दरख़्त बनेगा। तो ज़ाहिरी आमाल बदलेंगे, चहरे बदलेंगे, लिबास बदलेंगे, नमाज़ पढ़ेंगे, रोज़े रखेंगे, ज़कात देंगे, हज करेंगे, तालीम के हल्क़े क़ायम करेंगे, ज़िक्र करेंगे, अच्छी-अच्छी बातें करेंगे, कुरआन पढ़ेंगे, मस्ज़िदों को आबाद करेंगे।

ज़ाहिरी आमाल मक़बूल भी और ना-मक़बूल भी

लेकिन लोगों के जो ज़ाहिरी आमाल होते हैं, ये तो कभी मक़बूल होते हैं और कभी ना-मक़बूल। कभी तो अल्लाह के यहाँ क़बूल और कभी रद्द। नमाज़ दो तरह की होती है। एक नमाज़ जन्नत में ले जाती है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلٰوتِهِمْ خَاشِعُوْنَ o (پ١٨)

कामयाब हो गये वे मुसलमान जो अपनी नमाज़ों को ख़ूब ध्यान और तवज्जोह (और आजिज़ी) के साथ पढ़ते हैं।

लेकिन एक नमाज़ वह होती है जो जहन्नम में ले जाती है:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلٰوتِهِمْ سَاهُوْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ o (پ٣٠)

ऐसे नमाज़ियों के लिये बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (यानी छोड़ देते हैं)। जो ऐसे हैं कि जब नमाज़ पढ़ते हैं तो रियाकारी (दिखावा) करते हैं। और ज़रूरतमन्द को मामूली इस्तेमाली चीज़ भी नहीं देते।

रोज़ा भी दो तरह का होता है। एक रोज़ा जन्नत में ले जायेगा और दूसरा रोज़ा जहन्नम में ले जायेगा। शहीद भी दो तरह के हैं एक शहीद वह जिसके बड़े ऊँचे दर्जे हैं, और एक शहीद वह जो जहन्नम में जायेगा। सख़ी (दानवीर) भी दो तरह के होते हैं। हाफ़िज़ भी दो तरह के होते हैं, एक हाफ़िज़ वह कि जिन्हें कहा जायेगा "पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों में चढ़ता जा" और बहुत से कुरआन की तिलावत करने वाले ऐसे हैं कि कुरआन उन पर लानत करता है।

तो जितने ज़ाहिरी आमाल हैं वे दो तरह के हैं। मक़बूल या ना-मक़बूल। लेकिन अब एक दिशा मुतैयन करनी है कि मक़बूल हो जायें। तो इसके लिये क्या करना पड़ेगा? अन्दर की ख़ूबियाँ बनानी पड़ेंगी। जिन्हें ईमानी सिफ़ात कहते हैं। और वह तक़वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (ख़ुदा पर भरोसा) हैं।

दो बुनियादी चीज़ें तक़वा और तवक्कुल

फिर एक बार सुनो! दावत दोगे तो ईमान का पानी मिलेगा। ज़ाहिरी आमाल बनेंगे। और बराबर दावत देते रहोगे तो ईमान का पानी मिलता

रहेगा। फिर अन्दर की ख़ूबियाँ बनेंगी। जिसका नाम ईमानी सिफ़ात है। और वह तक़्वा और तवक्कुल है।

एक बार फिर सुनो।

दावत का काम बराबर उसूलों के साथ होता रहा, ईमान को पानी मिलता रहा तो आमाल ज़ाहिर होते रहेंगे। और इन्शा-अल्लाह ईमानी सिफ़ात पैदा होती रहेंगी। तक़्वा और तवक्कुल पैदा होगा। सब्र पैदा होगा। एहसान की कैफ़ियत (यानी यह तसव्वुर कि मेरे हर अ़मल को अल्लाह देख रहे हैं) पैदा होगी। फिर इन्शा-अल्लाह आदमी मक़बूल हो जायेगा और उसे अल्लाह की हिमायत मिलेगी।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते है:-

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ○ (پ۲)

बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ○ (پ۱۰)

और जान लो कि अल्लाह साथ है डरने वालों के।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ○ (پ۱۴)

और अल्लाह उनके साथ है जो परहेज़गार हैं और जो नेकी करते हैं।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ (پ۲۱)

बेशक अल्लाह साथ है नेकी वालों के।

जहाँ-जहाँ अल्लाह ने "मअ़" शब्द का ज़िक्र किया है (यानी मेरी हिमायत...... मैं तुम्हारे साथ हूँ) तो वहाँ अन्दरूनी सिफ़ात के बारे में कहा है। ज़ाहिरी आमाल को नहीं कहा।

अल्लाह ने यूँ नहीं कहा कि "मैं नमाज़ियों के साथ हूँ" "ज़कात देने वालों के साथ हूँ" "रोज़ेदारों के साथ हूँ" "हाजियों के साथ हूँ" क्योंकि नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात दोनों तरह के होते हैं- मक़बूल भी ना-मक़बूल भी। इसलिये अल्लाह ने यह कहा कि मैं मुत्तक़ियों के साथ हूँ। मैं एहसान

की सिफ़त रखने वालों के साथ हूँ। मैं सब्र कने वालों के साथ हूँ। और ये सब की सब ईमानी सिफ़तें हैं।

काम करने वालों को ईमानी सिफ़ात तक पहुँचना है। और ईमानी सिफ़ात यानी तक़्वा और तवक्कुल दिल के अन्दर छुपा होता है। कोई आदमी दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं अन्दर से बना हुआ हूँ। आख़िर तक फ़िक्रमन्द रहना पड़ेगा।

ये दो बड़ी ख़ूबियाँ हैं तक़्वा और तवक्कुल। क्योंकि ईमानी आमाल को सारी दुनिया देख रही है कि यह आदमी तालीम के हल्क़े में बैठता है, ज़िक्र करता है, कुरआन पढ़ता है, नमाज़ पढ़ता है, सदक़ा करता है, ख़ैरात करता है, खाना देता है, दूसरों का क़र्ज़ा अदा करता है। यह सब दिखाई देता है।

लेकिन ईमानी सिफ़ात, यह अन्दर की छुपी हुई चीज़ है। तक़्वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) अन्दर की चीज़ है। यह अन्दर की चीज़ जब बन जायेगी तो अल्लाह की ग़ैबी मदद आयेगी। यह जो ग़ैबी मदद से कुरआन भरा हुआ है और सहाबा के मुताल्लिक़ जो तुम सारी ग़ैबी मदद सुनते हो। और ताबिईन (सहाबा की ज़ियारत करने वाले मोमिनों) के साथ जो सारी ग़ैबी मदद सुनते हो, और जितनी ग़ैबी मदद अल्लाह की बाद वालों के साथ सुनते हो। वह ग़ैबी मदद अल्लाह पाक क़ियामत तक करता रहेगा। लेकिन इसके लिये ज़रूरी है कि दावत की फ़िज़ा हो, ईमान का पानी हो। ज़ाहिरी आमाल बनें और ईमानी सिफ़ात यानी तक़्वा और तवक्कुल अन्दर आये।

जमाअत का काम दुनिया के कोने-कोने में

अल्लाह ने अपनी कुदरत से इस काम को ग़ैबी मदद के ज़रिये दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाया।

पाकिस्तान, बंगलादेश, फ़ीजी, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अफ़रीक़ा, जापान, कम्बोडिया, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशिया,

इमारात, ख़लीज के सारे देश, सीरिया, इस्तंबोल, कनाडा, यूरोपियन देश, कैलिफ़ोरनिया, फ़्राँस।

अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से हर जगह जमाअ़त को पहुँचा दिया। अब हर जगह अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की आवाज़ लग रही है।

फ़्राँस के अन्दर दो हज़ार स्थानों पर पंज-वक़्ता नमाज़ें हो रही हैं और उसमें "अल्लाहु अकबर" की आवाज़ लग रही है। दावत की इस मेहनत से अल्लाह ने इतना फ़ज़्ल फ़रमाया, इतना फ़ज़्ल फ़रमाया कि अब हवाई जहाज़ के चालक भी "अल्लाहु अकबर" कहते हैं। कैलीफ़ौरनिया जहाँ फिल्म कंपनी के अड्डे हैं वहाँ पर फ़िल्म एक्टर भी अल्लाहु अकबर की आवाज़ लगा रहे हैं। फ़िल्म एक्टर भी चार महीने लगाकर गया है।

हम बेसहारा और बे-मददगार नहीं हैं लेकिन.......

सबसे बड़ा अल्लाह, ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला अल्लाह। मूसा अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबी मदद करने वाला अल्लाह। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबी मदद करने वाला अल्लाह। बदर के मैदान में मदद करने वाला अल्लाह।

दोस्तो! क्या वह आज हमें बेसहारा और बे-मददगार छोड़ देगा? लेकिन हम उसकी ज़ात पर भरोसा तो करें। अपने अन्दर तक़्वा और तवक्कुल तो पैदा करें। अपने अन्दर यह यक़ीन तो पैदा करें कि करता-धरता अल्लाह ही हैं। दुनिया की मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता।

सारी मख़्लूक़ अल्लाह के नियंत्रण में

सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू के अन्दर है। अल्लाह ख़ालिक़ (पैदा करने वाला और बनाने वाला) है। सारी चीज़ें मख़्लूक़ (पैदा की हुई और बनाई हुई) हैं। और मख़्लूक़ ख़ालिक़ के क़ाबू में रहती है। आग बन गई। अल्लाह के क़ाबू से नहीं निकली कि हर एक को जला डाले। आग हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को नहीं जला सकी। और हज़रत अबू मुस्लिम

ख़ौलानी को नहीं जला सकी।

मुसैलमा कज़्ज़ाब की नुबुव्वत की मन्तिक़ नहीं चली तो उसने हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी को उठाया और आग में डाल दिया। लेकिन आग उन्हें नहीं जला सकी। इसलिये कि अल्लाह पाक ने आग की ड्यूटी बदल दी थी।

उसके बाद मुसैलमा कज़्ज़ाब और परेशान हुआ और उसने कहा कि यह आदमी अगर यहाँ रहा तो मेरी नुबुव्वत की मन्तिक़ नहीं चलेगी। तो उन्हें उठाकर बाहर निकाल दिया।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْلَتَعُوْدُنَّ فِىْ مِلَّتِنَا فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ o وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ o (پ۱۳)

यानी बेईमानों ने नबियों से कहा कि या तो हमारा धर्म क़बूल करो, नहीं तो हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे। जिनका यक़ीन अल्लाह पर नहीं था और जो ज़ाहिर पर यक़ीन करने वाले थे उन बेईमानों ने हर ज़माने में नबियों से और नबियों का काम करने वालों से कहा कि या तो हमारा धर्म क़बूल करो, नहीं तो हम तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे। जब उन्होंने यह कहा तो आसमानी पैग़ाम आया कि हम उन सब को तबाह व बरबाद कर देंगे और उनकी जगह तुमको बसायेंगे।

فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ o وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ o (پ۱۳)

ये आयतें पढ़-पढ़कर अबू जहल के मजमे को सुनाईं तो उन लोगों ने कहा कि ये तो पुराने क़िस्से हैं। फ़िर अल्लाह ने बदर के अन्दर ग़ैबी मदद करके बताया तो सब की आँखें खुल गईं।

अल्लाह ने नबियों के मानने वालों को बसाया। नूह अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। हूद अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। सालेह

अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। लूत अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। मूसा अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। और बाक़ी सारे ख़त्म हो गये।

और अल्लाह का यह वायदा क़ियामत तक के लिये है। लेकिन कब?

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ٥ (پ١٣)

यह उसके लिये है जो क़ियामत के दिन मेरे सामने खड़े होने से डरे, और मेरी धमकियों से डरे। और अपने अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा करे।

पूरी दुनिया की समस्याओं का हल

तो सारे आ़लम की समस्याओं का हल क्या है? ख़ूब क़ियामत का तज़किरा, ख़ूब आख़िरत का तज़किरा और ख़ूब आख़िरत का बोलना और सुनना। इतना बोलना और सुनना कि अपने भी दिल में उतर जाये और दूसरों के दिल में भी उतर जाये। यहाँ तक कि पूरी ज़िन्दगी अहकामे खुदावन्दी पर जारी हो जाये। नमाज़ें भी चालू हो जायें। ज़कातें भी चालू हो जायें और होते-होते तक़्वा और तवक्कुल तक पहुँच जायें।

मेरे मोहतरम दोस्तो! अच्छी तरह समझ लो यह बात पूरी दुनिया के अन्दर चलानी है कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू में है। जो अल्लाह का फ़ैसला होगा वह करेंगे। और अल्लाह ने अपना फ़ैसला बता दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी अगर तुम्हारी ज़िन्दगी में होगी तो मेरा फ़ैसला तुम्हारी हिमायत में होगा। और जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी को छोड़ेगा तो मेरा फ़ैसला उसके ख़िलाफ़ होगा। और जब अल्लाह का फ़ैसला ख़िलाफ़ होगा तो कामयाबी के सारे सामान में भी आदमी उजड़ जायेगा। और अल्लाह का फ़ैसला अगर हिमायत में होगा तो अगरचे सारा सामान तकलीफ़ों वाला होगा लेकिन अल्लाह उसके अन्दर कामयाब करेंगे। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में डाले जा रहे हैं। सारा सामान तकलीफ़ों

वाला है। लेकिन अल्लाह का फ़ैसला हिमायत में है। तो अल्लाह ने क्या किया कि आग की ड्यूटी बदल दी:

قُلْنَا يَانَارُ كُونِى بَرْدًا وَّسَلَامًا عَلَى إِبْرَاهِيمَ ٥ وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ٥ (پ١٧)

आग से कह दिया कि ठंडी हो जा। आग ठंडी हो गयी। और उन लोगों ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में जो प्लान बनाये थे, वे सब फ़ेल हो गये।

अल्लाह की शान बड़ी है

लेकिन इनसान कमज़ोर क़िस्म का है। वह इस हक़ीक़त को नहीं समझता। अल्लाह तेरे जैसा नहीं, अल्लाह की शान बड़ी ऊँची है। तू तो ऐसा है कि अगर तूने पिस्तौल बनाई और वह तेरे हाथ से निकल गयी और दुश्मन के हाथ में पहुँच गयी तो वह तेरी बनाई हुई पिस्तौल से तुझे गोली मार देगा। लेकिन अल्लाह की शान यह है कि उसने आग बनाई और वह दुश्मन के हाथ में पहुँच गयी तब भी वह अल्लाह के हुक्म से बाहर नहीं निकली।

जब दुश्मन ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को आग में डाला तो आग उन्हें नहीं जला सकी, क्योंकि अल्लाह ने आग से कह दिया "ठण्डी हो जा" तो वह ठण्डी हो गयी।

हज़रत ख़ालिद का बेमिसाल यक़ीन

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिहाद के मैदान में हैं। सामने जो अल्लाह के दुश्मन थे उनके पास ज़हर की शीशी थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा कि इसे क्यों लिये हुए हो। वे बोले कि अगर हम हारेंगे तो यह ज़हर खाकर मर जायेंगे तुम्हारे क़ाबू में नहीं आयेंगे। और कहा कि यह ऐसा ज़हर है कि अगर कोई एक क़तरा भी पी ले तो वह मर जायेगा।

हज़रत ख़ालिद ने कहा कि ज़हर मुझे दो। ज़हर लिया और यूँ कहा:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اِسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ. وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ٥

शुरू करता हूँ उस अल्लाह के नाम से कि नहीं नुक़सान पहुँचा सकती है उसके नाम के साथ कोई चीज़ ज़मीन में और न आसमान के अन्दर। और वह हर एक की बात को सुनने वाला और हर एक चीज़ को जानने वाला है।

यह दुआ पढ़ी और पी लिया। मरे नहीं। वे सारे हैरत में पड़ गये। अरे यह क्या हुआ?

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल व दिमाग़ में बैठा हुआ था कि मौत व ज़िन्दगी अल्लाह के हाथ में है। ज़हर से कुछ नहीं होता।

ज़रूरी तंबीह

लेकिन दोस्तो! मेरी इस बात को सुनकर तुम ज़हर न पीने लगना। इसलिये कि हमको अल्लाह ने ज़ाहिरी असबाब का पाबन्द बनाया है। और अल्लाह पाक ने हमें ज़ाहिरी असबाब में लगने का हुक्म भी दिया है। और देखो! ये जितने वाक़िआत ख़ुदा की ग़ैबी मदद के हैं इनके बारे में हमेशा याद रखो कि ख़ुदा की ग़ैबी मदद इनसान के क़ाबू में नहीं होती। ग़ैबी मदद अल्लाह के क़ाबू में है।

जब अल्लाह पाक ग़ैबी मदद करने पर आते हैं तो वह हैरत-अंगेज़ (आश्चर्य जनक) काम करा देते हैं। जिस तरह हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से करा दिया कि उन्होंने ज़हर पी लिया अैर मरे नहीं।

जो जान माँगो तो जान दे दें

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अगर नमरूद को ख़ुदा का बेटा कहते तो वह आग में न डालता। लेकिन फिर जहन्नम की आग में जाना पड़ता। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने आपको आग में डाल दिया।

अल्लाह ने आग ठंडी कर दी।

क़ैसर व किस्रा भी थर्रा गये

अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ हैं। अल्लाह कामयाब करने पर आ जायें तो नाकामी के नक़्शों में भी कामयाब कर देते हैं।

सहाबा किराम के मकान छोटे, कपड़े उनके मोटे और वे खजूरें खाकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले, लेकिन उनके मुक़ाबले में बड़ी-बड़ी हवेलियों वाले 'क़ैसर' (रोम का बदशाह) व 'किस्रा' (ईरान का बादशाह) थर्रा गये।

काम करने वाले दोस्तों में तवक्कुल की सिफ़त ज़रूरी

दोस्तो! तवक्कुल की सिफ़त हमारे काम करने वालों में पैदा होनी चाहिये। अल्लाह तआ़ला खुद कहते हैं कि में पूरब व पश्चिम का निज़ाम चलाने वाला हूँ। लिहाज़ा तुम लोग मुझ एक अल्लाह की इबादत करो और मुझ एक अल्लाह की बात मानो। और तुम्हारे जो काम हैं, वे मेरे हवाले कर दो और तुम अपने कामों का मुझे वकील बना दो। जब पूरब व पश्चिम के कामों को मैं करता हूँ तो अगर तुम मुझे अपने कामों का वकील बनाओगे तो क्या मैं तुम्हारे कामों को नहीं बना सकूँगा।

अल्लाह तआ़ला खुद फ़रमाते हैं:

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝ (پ۲۹)

पूरब व पश्चिम का निज़ाम अल्लाह चलाते हैं। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है।

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात माननी है:

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

और उनकी पैरवी करो, उम्मीद है कि तुम हिदायत पा जाओ।

और सहाबा किराम के तरीक़े पर चलना है।

तवक्कुल की हक़ीक़त

तवक्कुल का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह की बात मान कर काम करना। तवक्कुल के मायने कुछ लोग यह समझते हैं कि कारोबार छोड़ दिया जाये। यह ग़लत है। बहुत सों से यह ग़लती हुई है।

तवक्कुल हर एक में था

सहाबा दो तरह के थे- एक क़िस्म वह थी कि कारोबार के साथ दीन का काम करते थे। और एक क़िस्म 'अस्हाबे सुफ़्फ़ा' की थी। उनको कारोबार का वक़्त नहीं मिलता था। तो सहाबा दोनों क़िस्म के मिलेंगे। कारोबार के साथ दीन का काम करना और बग़ैर कारोबार के दीन का काम करना। लेकिन एक बात याद रखना कि तवक्कुल दोनों में था। और किसी ने सुस्ती की बिना पर दीन के काम को छोड़ा नहीं।

कारोबार पाँव की ज़न्जीर न बने

कारोबारियों में तवक्कुल के साथ दो बातें होनी चाहियें। एक तो कारोबार में हलाल व हराम को देखें। पैसे के कम-ज़्यादा होने को न देखें। और कारोबारियों के लिये दूसरी बात यह है कि जब दीन के तक़ाज़े आयें और अल्लाह का हुक्म आये तो यह कारोबार रुकावट न बने। जैसे 'ग़ज़वा-ए-तबूक' कि कारोबारी सीज़न में अल्लाह का हुक्म आया तो कारोबारी सीज़न उनके लिये रुकावट नहीं बना।

ख़न्दक़ की लड़ाई हो या उहुद की लड़ाई। जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को आवाज़ दी तो सहाबा एक दम से तैयार हो गये। उन्होंने कभी कोई उज़्र नहीं किया।

आज मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों को धक्का दे रहा है

खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किस-किस तरह की

तकलीफ़ें बरदाश्त कीं, और सहाबा किराम कितनी बड़ी संख्या में शहीद हुए। तब यह दीन हम तक पहुँचा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ प्यारा दीन आज मिट रहा है। हुज़ूर का तरीक़ा मिट रहा है। लेकिन इस पर जान देने वाला तो कौन कहे, रोने वाले भी नहीं हैं। जिस पाक दीन और पाक तरीक़े के लिये रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने धक्के खाये, आज नबी करीम का वह पाकीज़ा रूहानी तरीक़ा मुसलमानों के घरों से धक्के खा रहा है।

मुसलमानों के कारोबार से हुज़ूरे पाक का तरीक़ा धक्के खा रहा है। शादियों में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा धक्के खा रहा है। मुसलमानों के कपड़ों से धक्के खा रहा है। मुसलमानों के चेहरों से धक्के खा रहा है।

मेरे दोस्तो! यह बहुत ज़्यादा रोने की चीज़ है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के करीमाना अख़्लाक़

मेरे मोहतरम दोस्तो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दस हज़ार का मजमा लेकर मक्का में फ़ातिहाना (विजयी) दाख़िल हो रहे हैं लेकिन शाही रौब व दबदबे के साथ नहीं, बल्कि अख़्लाक़े करीमाना के साथ और बारी तआ़ला की शुक्रगुज़ारी के साथ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) के अन्दर तशरीफ़ ले गये। आपके सीने में पूरी इनसानियत का दर्द था। आपने वहाँ पर जाकर दर्द भरी दुआ़यें माँगीं कि ऐ अल्लाह! इस इनसानियत का तेरे से ताल्लुक़ हो जाये ताकि यह जहन्नम से बचकर जन्नत में चली जाये।

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन यह समझ रहे थे कि अब तो मुसलमान इक्कीस साल का सारा बदला लेंगे। मक्का में ख़ून की नदियाँ बहेंगी। हमें लूटा जायेगा। तबाह व बरबाद किया जायेगा। ख़ून बहाया जायेगा।

लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी शख़्स

को जो ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाया है, यह जायज़ नहीं कि वह मक्का में ख़ूँरेज़ी करे, और इनसान तो इनसान किसी हरे-भरे पेड़ का भी काटना जायज़ नहीं। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐलान फ़रमा दियाः

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ اِذْهَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَآءُ

आज तुम पर कोई मलामत नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब हम अख़्लाक़ बरतेंगे तो इनसानी दिल अल्लाह की तरफ़ पलटा खाते चले जायेंगे।

अख़्लाक़े करीमाना से हज़रत हिन्दा का पत्थर जैसा दिल मोम हो गया

अबू सुफ़ियान की बीवी, उ़तबा की बेटी हिन्दा, जिसने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नाक कान काटे, आँखें निकालीं, सीना चाक करके जिगर निकाला और उसको दाँतों से चबाया था। वह भी इस्लाम क़बूल करने और हुज़ूर की बैअ़त क़बूल करने के लिये आगे बढ़ी। कुछ लोगों ने कहा कि कल तक तो तुम बहुत शोर मचाती थीं, आख़िर यह चौबीस घण्टे में तुम्हें क्या हो गया?

हिन्दा ने कहा कि जब यह दस हज़ार मुसलमानों का मजमा मक्का के अन्दर दाख़िल हुआ तो मैंने अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया और मेरा ख़्याल था कि तेरह साल मक्का के और आठ साल मदीना मुनव्वरा के, इक्कीस साल का बदला मुसलमान हम से लेंगे। ख़ूब क़त्ल करेंगे। मक्का में ख़ून की नदियाँ बह रही होंगी और लाशें उसके अन्दर तड़प रही होंगी। ये औ़रतों के साथ बदकारियाँ करेंगे। ढोल बजायेंगे। चिराग़ाँ करेंगे। यह मेरा ज़ेहन था।

लेकिन रात का बड़ा हिस्सा गुज़र गया। कहीं से रोने की आवाज़

नहीं आयी। मैंने चुपके से घर का दरवाज़ा खोला तो मैंने देखा कि पूरे मक्के के अन्दर अंधेरा है। तो मुझे बहुत हैरत हुई कि इक्कीस साल के बाद मुसलमानों के हाथों मक्का फ़तह हुआ लेकिन न तो चिराग़ जलाये जा रहे हैं, न गाना बजाना है, न किसी को क़त्ल कर रहे हैं, न किसी की अ़स्मत लूट रहे हैं। और यह सारा मजमा गया कहाँ?

मैं ख़ाना काबा के पास पहुँची तो देखा कि सारे के सारे इबादत में लगे हुए हैं। कोई तवाफ़ कर रहा है, कोई नमाज़ पढ़ रहा है, कोई तिलावत कर रहा है।

गालियाँ सुनकर दुआ़यें दीं

हिन्दा कहती है कि मेरी पूरी ज़िन्दगी मक्का में गुज़र गयी लेकिन हरम शरीफ़ के अन्दर इतनी इबादत होते हुए मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखी, जितनी आज की रात इबादत हुई और सारे दहाड़ें मार-मारकर रो रहे थे। मैं तो यह समझी थी कि आज ये बैतुल्लाह पर पहुँचे हैं तो जो हमने इनको इक्कीस साल सताया है, ये ख़ूब बद्-दुआ़यें देंगे। लेकिन ये लोग कह रहे थे कि या अल्लाह! तू इन लोगों को हिदायत दे ताकि जहन्नम के अ़ज़ाब से ये लोग बचें। ऐ अल्लाह! तू इन मक्के वालों पर करम कर। रो-रोकर ये दुआ़यें कर रहे थे।

हिन्दा कहती है कि मेरा दिल भर आया और मुझे यक़ीन हो गया कि ये लोग सिवाये हमारी भलाई के और कुछ नहीं चाहते। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में गईं और इस्लाम क़बूल किया और कहा कि आज से पहले आपके ख़ेमे, आपके नाम और आपके काम से बदतर मेरे नज़दीक कोई ख़ेमा, कोई नाम और कोई काम न था। लेकिन अब आपके ख़ेमे, आपके नाम और आपके काम से बढ़कर और कोई चीज़ महबूब और प्यारी नहीं है।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! जब हम अख़्लाक़ बरतेंगे तो इनसानों के दिल अल्लाह की तरफ़ पलटा खाते चले जायेंगे।

क़ाबिले क़द्र अफ़रीक़ी और अमरीकी भाईयो

हमें आपस के अन्दर भी एक दूसरे के साथ अख़्लाक़ बरतना है। ये जो अफ़रीक़ा और अमरीका के भाई हैं, इनकी ख़ुसूसियत के साथ क़द्र करना। ये अपने आराम व राहत को छोड़ कर तुम्हारे मुल्क में आये हैं महज़ दीन के लिये। अल्लाह हम सब को उनकी क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

अफ़रीक़ा के अन्दर हमारे अफ़रीक़न भाई जब जमाअ़त के काम से लगे हैं तो वहाँ उन्होंने अपनी जान व माल को किस तरह से दीन के काम पर लगाया। वहाँ पैदल जमाअ़तें काम कर रही हैं। सैकड़ों मकतब (दीनी मदरसे) क़ायम हो गये। उनके अन्दर कुरआन के हिफ़्ज़ करने वाले बने, क़ारी बने, जो मस्जिदों में इमामत कर रहे हैं। उनकी औ़रतों के अन्दर पर्दे आ गये। उनकी औ़रतों में दीनदारी आ गयी।

ख़ास तौर पर पूरबी अफ़रीक़ा के अन्दर हमारे जो भाई हैं, उनकी ज़िन्दगियों को देखिये तो रोना आता है।

बस दोस्तो! अल्लाह जिससे काम लेना चाहे ले लेता है। मैं अपने अमरीकी भाईयों और अफ़रीक़ी भाईयों से हाथ जोड़कर अ़र्ज़ करूँगा कि अगर हमारे से कोई कोताही हो जाये तो अल्लाह के वास्ते तुम उसे माफ़ करना।

काश! पूरी उम्मत दीन की दावत पर खड़ी हो जाये

याद रखो मेरे मोहतरम दोस्तो! छह नम्बरों की पाबन्दी के साथ काम करना। और काम करने वाले आदमी बनाना। फिर वे आदमी दूसरों को बनायें। इस तरह पूरे आ़लम का एक प्रोग्राम बनाना, मक़ामी कामों का प्रोग्राम बनाना। ग़रीब बस्तियों के अन्दर भी जाना और मालदारों को भी नहीं छोड़ना। सबको लगाना है, और रातों को उठकर दुआ़यें माँगनी हैं। और पूरी उम्मत दीन की दावत पर खड़ी हो जाये, इसकी फ़िक्र करनी है।

लेकिन दोस्तो! इसका पहला क़दम ज़िन्दगी में एक बार चार महीना है। कितनी-कितनी कुरबानियाँ, देने वालों ने दीं और आज भी बड़ी से बड़ी कुरबानियाँ देने वाले दे रहे हैं। तो क्या आप ज़िन्दगी में एक बार चार महीने नहीं दे सकते।

बोलो भाई हिम्मतें करके बोलो! चार महीना नक़द चाहिये। बाद की तारीख़ नहीं। आज की तारीख़ में खड़े हो जाओ। और जो तुम्हारी मजबूरियाँ हों, उनके दूर होने के लिये अल्लाह से रो-रोकर दुआ़ माँगो।

अब बोलो हिम्मत करके। चार-चार महीने के लिये कौन-कौन तैयार हैं। अपने-अपने नाम पेश करो। अल्लाह तआ़ला हम सबके लिए अपने दीन के रास्ते में निकलना आसान फ़रमाये और रुकावटों को दूर फ़रमाये। आमीन।
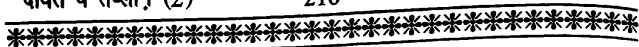
तक़रीर (8)

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नबी बनकर आये तो सब से पहले एक मर्द ने आपकी बात मानी। यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने। एक औ़रत ने मानी यानी हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने। एक बच्चे ने मानी यानी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने।

तो अगर मर्द लगे रहे और औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन न बना तो हमारा काम पूरा नहीं होगा। औ़रतों और बच्चों के ज़ेहन बने बग़ैर हमारा काम अधूरा होगा। आप काम में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। अगर घर वालों का ज़ेहन न बना हो। इसलिये घर वालों का ज़ेहन बनाना ज़रूरी है।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ০

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ نَحۡمَدُهٗ وَنَسۡتَعِيۡنُهٗ وَنَسۡتَغۡفِرُهٗ وَنُؤۡمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيۡهِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنۡ شُرُوۡرِ اَنۡفُسِنَا وَمِنۡ سَيِّئَاتِ اَعۡمَالِنَا، مَنۡ يَّهۡدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسۡلِيۡمًا كَثِيۡرًا كَثِيۡرًا. اَمَّا بَعۡدُ!

فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطَانِ الرَّجِيۡمِ ০ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ০ قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى:

رَبَّنَا وَابۡعَثۡ فِيۡهِمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الۡكِتَابَ وَالۡحِكۡمَةَ وَيُزَكِّيۡهِمۡ ، اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ০ (پ۱،سورۃ البقرۃ)

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इनसानों की भलाई और उनके लिये हमेशा-हमेशा की कामयाबी के लिये जो राह दिखायी वह कुरबानी की राह है। कुरबानी की इस राह पर चलकर इनसान दुनिया और आख़िरत की भलाई पा सकता है।

चुनाँचे एक मर्द की कुरबानी, यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम।

एक औ़रत की कुरबानी, यानी हज़रत हाजरा अ़लैहस्सलाम।

एक बच्चे की कुरबानी, यानी हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम।

इन कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने बैतुल्लाह शरीफ़ (काबा शरीफ़) की तामीर करवाई। फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ माँगी। उम्मते मुस्लिमा का वजूद माँगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वजूद माँगा।

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की दुआ़

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُوْلاً مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِکَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ، اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (پ۱،سورۃ البقرۃ)

ऐ अल्लाह! इस उम्मत में एक ऐसा नबी पैदा कर दे जो तीन काम करे- एक तो दावत के ज़रिये ईमान में ताक़त पैदा करे। और जब ईमान के अन्दर ताक़त पैदा हो जाये और लोग अ़मल की तरफ़ आने लगें तो ऐ अल्लाह! उनको इल्म दे। इल्म के साथ-साथ ज़ाहिरी आमाल बनेंगे तो उसी के साथ उनका तज़किया (बातिन की सफ़ाई) भी कर दे कि अन्दर की सफ़ाई होती रहे।

ईमान और अख़्लाक़ ताक़तवर होते रहें, ज़ाहिरी आमाल बनें, तक़्वा और तवक्कुल पैदा हो और अन्दर की सफ़ाई होती रहे।

दावत, तालीम, तज़किया इन तीनों कामों की तरबियत करने वाला नबी दे दे।

काम पूरा कब होगा?

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नबी बनकर आये तो सब से पहले एक मर्द ने आपकी बात मानी। यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने। एक औ़रत ने मानी यानी हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने। एक बच्चे ने मानी यानी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने।

तो अगर मर्द लगे रहे और औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन न बना तो हमारा काम पूरा नहीं होगा। औ़रतों और बच्चों के ज़ेहन बने बग़ैर हमारा काम अधूरा होगा। आप काम में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। अगर घर वालों का ज़ेहन न बना हो। इसलिये घर वालों का ज़ेहन बनाना ज़रूरी है।

मर्दों से ज़्यादा क़ुरबानी औ़रतों की है

औ़रतें नरम दिल की होती हैं। उनके सामने जब ढंग से बात आती

है तो उनके दिल मर्दों से ज़्यादा नरम होते हैं। बड़ी रोने वाली होती हैं। और जब मर्द जमाअ़त में निकलते हैं तो कुरबानी मर्दों से ज़्यादा औ़रतों की होती है। मर्द जब अल्लाह के रास्ते में निकलता है तो उस औ़रत पर क्या बीतती है वह हम नहीं समझ सकते। जब उसका ज़ेहन बना होता है तो सारी तकलीफ़ें बरदाश्त करती है।

बाप तो गया जमाअ़त में, ईद का दिन आया, अब बच्चे रो रहे हैं। माँ का ज़ेहन बना हुआ है। वह अल्लाह के रास्ते में निकलने की अहमियत और क़द्र व क़ीमत समझती है। ईद अल्लाह के रास्ते में हो इस पर हमें क्या मिलेगा, वह इस बात को जानती है।

ईद के दिन जब बच्चे रोने लगे तो उसने बच्चों को समझाना शुरू किया कि देखो बेटे! मौहल्ले वालों की ईद आज है, कल बासी और परसों ख़त्म। और तुम्हारे अब्बा जो अल्लाह के रास्ते में गये हैं तो उसके बदले में अल्लाह पाक हमको जन्नत में ऐसी ईद देंगे जो हमेशा-हमेशा रहेगी। वह ईद कभी बासी नहीं होगी।

जन्नत का राहत व आराम

और फिर बच्चों को कुरआन की आयतें पढ़कर सुनाईं और उनका ज़ेहन बनायाः

وَالسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ ٥ اُولٰٓئِکَ الْمُقَرَّبُوْنَ ٥ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ٥ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ ٥ وَقَلِیْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ۲۷)

जो लोग दीन के काम में आगे बढ़ने वाले हैं, वे अल्लाह के ख़ास और क़रीबी होंगे। और नेमतों वाले बाग़ीचों में होंगे। पहले ज़माने में ऐसे बहुत ज़्यादा होते थे, बाद के ज़माने में ऐसे कम हुए हैं।

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّکِئِیْنَ عَلَیْھَا مُتَقٰبِلِیْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ۲۷)

सोने के तार से जड़े हुए तख़्तों पर जन्नत में तकियों पर टेक लगाये हुए आमने-सामने बैठे होंगे।

जन्नत वालों की ख़ुराक

يَطُوْفُوْنَ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ٥ بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ٥ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ٥ (سورة الواقعہ پ ۲۷)

ख़िदमत गुज़ार (सेवक) छोटी उम्र के चारों तरफ़ चक्कर लगा रहे होंगे। ऐसे आबख़ोरों (प्यालों) और गिलासों के साथ जो ऐसी शराब से भरे होंगे जो पाक होगी। गन्दी नहीं होगी। न सिर दुखेगा और न बकवास लगेगी।

यह तो जन्नत में पीने के लिये अल्लाह पाक ने बताया। और खाने के लिये?

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ٥ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٥ (سورة الواقعہ پ ۲۷)

यानी जिस परिन्दे का गोश्त पसन्द आ जाये खा लो। जो मेवे पसन्द आ जायें खा लो। यह तो खाना और पीना बताया।

मन पसन्द जन्नती औ़रतें

इसके बाद ज़रूरत पड़ती है मर्दों को औ़रतों की, और औ़रतों को मर्दों की। इसके बारे में अल्लाह पाक फ़रमाते हैं:

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ٥ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ٥ (سورة الواقعہ پ ۲۷)

निहायत ख़ूबसूरत औ़रतें होंगी जैसे छुपे हुए मोती।

दूसरी जगह अल्लाह पाक हूरों के कुछ और गुण बयान फ़रमाते हैं। इरशाद फ़रमाया:

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥

(سورة الرحمٰن پ ۲۷)

उन औ़रतों को किसी इनसान और न किसी जिन्न ने छुआ भी नहीं होगा। ऐ इनसानो और जिन्नातो! तुम अल्लाह की कौन-कौनसी नेमतों को

झुठलाओगे।

आगे इरशाद फ़रमाया:

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ٥ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥ (سورۃ الرحمٰن پ ٢٧)

उन सब बाग़ों में अच्छी औ़रतें हैं ख़ूबसूरत। फिर तुम क्या-क्या नेमतें अल्लाह की झुठलाओगे।

यानी वे औ़रतें चहरे-मोहरे के एतिबार से शौहर को पसन्द आयेंगी। और मिज़ाज व अख़्लाक़ के एतिबार से भी।

दुनिया के अन्दर बाज़ मर्तबा चेहरा तो पसन्दीदा लेकिन मिज़ाज ना-पसन्दीदा। और बाज़ मर्तबा मिज़ाज और अख़्लाक़ अच्छे हैं लेकिन चेहरा पसन्द नहीं।

पाकीज़ा जन्नत

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ٥ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ٥ (سورۃ الواقعۃ پ ٢٧)

कोई बेहूदा बकवास जन्नत के अन्दर सुनने में नहीं आयेगी। सलाम सलाम की आवाज़ चारों तरफ़ से आयेगी।

फ़रिश्ते सलाम करेंगे। जन्नती आपस में सलाम करेंगे और जब जन्नती अल्लाह पाक से मुलाक़ात करेंगे तो उस वक़्त में अल्लाह पाक भी सलाम करेंगे जैसा कि इसको क़ुरआन पाक में इस तरह बयान किया है:

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ٥ (سورۃ یٰسٓ پ ٢٣)

जहन्नम वालों की परेशानकुन ज़िन्दगी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! इसके विपरीत दूसरी ज़िन्दगी परेशानकुन है। जिसने हाथ, पैर, कान वग़ैरह को अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ और नबी पाक के तरीक़े को छोड़कर इस्तेमाल किया तो क़ियामत के दिन कहा जायेगा:

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥ (سورۃ یٰسٓ پ ٢٣)

ऐ मुजरिमो! अलग हो जाओ। तुम्हारा रास्ता अलग है उनका रास्ता अलग है।

फिर वहाँ मुजरिमों के लिये परेशानियाँ ही परेशानियाँ होंगी।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِیْ وَالْاَقْدَامِ o (سورۃ الرحمٰن پ ۲۷)

मुजरिमों को फ़रिश्ते देखकर पहचान लेंगे और उनके पेशानी के बाल और पैरों को पकड़कर जहन्नम में ले जायेंगे।

इतना भयानक मन्ज़र सामने आने वाला है। अल्लाह ने मरने से पहले इस दुनिया में ही ख़बर दे दी है ताकि उस भयानक मन्ज़र से अपने को बचाने के लिये तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ और दावत की फ़िज़ा बनाओ और नबियों के तरीक़े को इख़्तियार करो।

कहीं अल्लाह गद्दों पर मिलता है?

अल्लाह पाक रहमान व रहीम (रहम और मेहरबानी करने वाले) हैं तो क़ह्हार व जब्बार (क़हर वाले और गुस्सा करने वाले) भी हैं। अगर कोई बात अल्लाह को ना-पसन्द आयी और अल्लाह पाक ने धुतकार दिया तो बड़ी परेशानी होगी।

हज़रत इब्राहीम इब्ने अधम अपने वक़्त के बादशाह थे। बहुत ही ऐश व आराम में रहते थे। अल्लाह पाक जब किसी को हिदायत देने पर आते हैं तो ग़ैबी तरीक़े से मदद करते हैं। छत के ऊपर से खट-खट की आवाज़ आयी। उन्होंने कहा कि कौन है? आवाज़ आयी कि मैं आया हूँ। उन्होंने कहा क्या बात है? उसने कहा कि मेरा ऊँट गुम हो गया है मैं छत पर तलाश कर रहा हूँ।

उन्होंने कहा कि ऊँट कहीं छत पर मिलता है?

इस पर आवाज़ आयी कि कहीं अल्लाह गद्दों पर मिलता है? अगर अल्लाह की तलाश है तो निकल जाओ और अल्लाह के दीन का काम करो। हज़रत इब्राहीम इब्ने अधम बेचैन हो गये और अल्लाह के दीन के काम में निकल गये।

तो सीधी-सीधी बात सुन लो कि अल्लाह गद्दों पर नहीं मिलता। ऐश व आराम घर का छोड़ने में तकलीफ़ ज़रूर है मगर जहन्नम की तकलीफ़ से, हश्र की तकलीफ़ से, क़ब्र की तकलीफ़ से इसे ज़रा भी निस्बत नहीं।

लेकिन दोस्तो! यह बात भी ज़ेहन में रहे कि अल्लाह तक पहुँचने के लिये फ़क़ीरी की गुदड़ी ही ओढ़ना ज़रूरी नहीं। वाक़िआत हर तरह के मिलते हैं। आख़िर औरंगज़ेब आ़लमगीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि को हुकूमत के नक़्शे में रहते हुए अल्लाह से ताल्लुक़ मिला।

हज़रत अहमद चिन्टू का वाक़िआ़

इसी तरह अहमदाबाद में हज़रत अहमद चिन्टू रहमतुल्लाहि अ़लैहि थे। बड़े बुज़ुर्गों में थे। हज को गये तो बड़े-बड़े उलेमा ने रास्ते में फ़ैज़ हासिल किया। अहमदाबाद गये तो उनके दिमाग़ में एक बात पड़ी। सोच-बिचार किया कि मेरे बाद यह सिलसिला किसके ज़रिये क़ायम रहेगा। जैसे ज़िम्मेदार लोग जब मरते हैं तो अपने काम को बड़े को सौंप देते हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब इस दुनिया से जाने लगे तो बता दिया कि मेरा यह काम मेरी उम्मत के लिये है। तो उन्होंने कहा कि मेरी नमाज़े जनाज़ा वह शख़्स पढ़ायेगा जिसने बग़ैर वुज़ू आसमान न देखा हो। और फिर मेरे बाद रूहानियत का काम भी वही करेगा। आपका इन्तिक़ाल हो गया तो वसीयत के मुताबिक़ ऐलान हुआ। ऐलान सुनकर अहमदाबाद की हुकूमत चलाने वाले अहमद शाह निकल आये और कहा कि आज मेरे शैख़ ने मुझे बेनक़ाब कर दिया। मेरे राज़ को खोल दिया और ख़ुद जनाज़े की नमाज़ पढ़ायी।

यही वह थे जिन्होंने बग़ैर वुज़ू के आसमान नहीं देखा था। हुकूमत का कारोबार भी चलाते रहे और फिर लोगों की रूहानी तरबियत का सिलसिला भी शुरू कर दिया।

ज़िन्दगी के हर शोबे (विभाग) के अन्दर आदमी रूहानी बन सकता है

तो आदमी तिजारतों के साथ रूहानी बन सकता है। खेतों के साथ रूहानी बन सकता है। हुकूमतों के साथ रूहानी बन सकता है। मुलाज़मतों के साथ रूहानी बन सकता है। हर शोबे के अन्दर रहकर रूहानी बन सकता है।

किसी शोबे (मैदान और विभाग) के अन्दर रहकर रूहानियत छोड़नी पड़े, ऐसा नहीं है। और यह मुजाहदे वाली ज़िन्दगी जो हम कह रहे हैं यह थोड़े वक़्त के लिये है। हमेशा के लिये नहीं। कारोबार को घर-बार को मशग़ूलियात को थोड़े वक़्त के लिये छोड़ना है। हमेशा के लिये नहीं।

ग़लत से सही की तरफ़ मोड़ो

हम यह नहीं कहते कि हमेशा के लिये छोड़ो बल्कि यह कहते हैं कि ग़लत से सही की तरफ़ मोड़ो। मोड़ने के अन्दर आपको मुजाहदा (मेहनत और कुरबानी) करना पड़ेगा। एक बात यह भी डंके की चोट पर कह रहा हूँ कि दावत का काम अल्लाह ने पूरी उम्मत के लिये ज़िन्दगी भर के लिये कर दिया है। इसलिये दावत का काम ही असल होगा। बक़िया बातें ज़िमनी होंगी। (यानी इसी के अन्तर्गत होंगी)।

इस तरह बच्चों में माहौल बनेगा

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! उन बच्चों की माँ ने जिनका बाप अल्लाह की राह में निकल गया था। अपने बच्चों को ख़ूब सुनाया और समझाया। बच्चों के सामने जन्नत का मन्ज़र खींचा तो बच्चे बहुत ख़ुश हुए। बाहर निकल गये। मौहल्ले के बच्चों को बिठाया और माँ वाली बात बच्चों के सामने कहनी शुरू कर दी और कहा कि तुम्हारी ईद कल बासी होगी और परसों ख़त्म हो जायेगी। और हमारी ईद हमेशा ताज़ी रहेगी।

जन्नत में क़िस्म-क़िस्म के फल मिलेंगे।

तो उस दाअ़ी (दीन की दावत देने वाले) के बच्चे कह रहे थे और मौहल्ले के बच्चे सुन रहे थे। और दाअ़ी का जज़्बा अपने बच्चों के ज़रिये नई नस्ल में मुन्तक़िल हो रहा था।

जिस इलाक़े के अन्दर अल्लाह ने दीन के ऐसे-ऐसे दाअ़ी तैयार कर दिये उनका जज़्बा, उनका दिल का दर्द, उनकी तड़प इन्शा-अल्लाह नस्ल-दर-नस्ल मुन्तक़िल होगी। दीन के दाअ़ी जन्म लेते रहेंगे, जमाअ़तें निकलती रहेंगी। फिर पिछलों के उन नेक आमाल का सवाब उनके आमाल नामे में अल्लाह पाक लिखते रहेंगे। क़ियामत तक यह काम चलता रहेगा। और क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा।

असल चीज़ अल्लाह का हुक्म है

मोहतरम दोस्तो! बाज़ मर्तबा तक़ाज़ा होता है कि "बस खड़े हो जाओ" और बाज़ मर्तबा यह होता है कि नहीं! जितना बस में है उतना सामान करो।

बदर के दिन अल्लाह ने सामान नहीं करने दिया क्योंकि वहाँ यह बताना था कि हमारे साथ ईमान है। हम सामान लेकर नहीं आये हैं। चुनाँचे अल्लाह की मदद से मुसलमान जीते। यह इसलिये था ताकि सब के दिल पर चोट पड़ जाये। लेकिन कभी यह भी क़िस्सा हुआ कि बहुत दूर का सफ़र है, तेज़ गर्मी, कारोबारी सीज़न, खजूरें पक्की तैयार हैं। बहुत बड़ी ताक़तवर फ़ौज से मुक़ाबला है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब जिहाद में जाते थे तो अगर आपको पूरब की तरफ़ जाना होता तो आप पश्चिम के हालात पूछते। छुपाने के लिये ऐसा किया जाता ताकि दुश्मन चौकन्ना न हो जाये। लेकिन यह ऐसा ग़ज़वा (दीन की लड़ाई) था कि इसके अन्दर अगर बग़ैर तैयारी के लोग चले चलते तो परेशानी हो सकती थी। इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बता दिया कि फ़लाँ जगह जाना है, ताकि

लोग तैयारी करके चलें।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरा माल लगाया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आधा लगाया।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरे लश्कर के तिहाई ख़र्च का ज़िम्मा लिया।

हर सहाबी ने अपनी हिम्मत के अनुसार भरपूर हिस्सा लिया।

सहाबी औ़रतों ने अपने ज़ेवरात उतार दिये। मगर यह सरोसामान, मालों के ढेर, काफ़ी नहीं हुआ। लेकिन अल्लाह की क़ुदरत बहुत बड़ी है। सामान से कुछ नहीं होता। अगर अल्लाह सामान की तैयारी का हुक्म करें तो करो, और अगर हुक्म न करें तो न करो।

आँखों देखी राह और कानों सुनी राह

देखो! दो रास्ते हैं। एक रास्ता तो हिदायत वाला है और दूसरा गुमराही वाला। हिदायत वाला रास्ता अल्लाह का बताया हुआ है। नबियों का रास्ता है। कामयाबी तक पहुँचाने वाला रास्ता है।

और गुमराही वाला रास्ता जी चाही वाला रास्ता है। इनसान को नाकाम करने वाला रास्ता है। हिदायत वाले रास्ते में अल्लाह पाक जो कहेंगे करना है। गुमराही वाले रास्ते में जो जी में आये वह करना है। गुमराही वाले रास्ते में आदमी आँखों देखी पर चलेगा। हिदायत वाले रास्ते पर अल्लाह और उसके रसूल की बात को कानों से सुनकर चलेगा, चाहे वह आँखों से दिखायी न दे।

दीन को ताक़त कब मिलेगी?

यह बात आदमी में उस वक़्त आयेगी जबकि अल्लाह की ताक़त, अल्लाह का ख़ज़ाना, अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की सिफ़ात का मुज़ाकरा (ज़िक्र करना और बार-बार दोहराना) इतना हो कि उसका यक़ीन दिल के अन्दर उतर जाये। इसलिये ईमान की और अल्लाह की बातों का करना

और सुनना नये लोगों के लिये भी बार-बार ज़रूरी है, और काम में लगे हुए पुराने लोगों के लिये भी ज़ेहन के अन्दर घबराहट बिल्कुल नहीं आनी चाहिये कि कलिमे वाली बातों का मुज़ाकरा तो हम करते ही हैं, हर जगह कलिमे वाली बात होती है। हम हज करके आयें फिर भी कलिमे वाली बात, नमाज़ पढ़कर आयें तो कलिमे वाली बात, बार-बार कलिमे वाली बात हो। घबराना बिल्कुल नहीं। इसलिये कि घबराने के अन्दर बिगड़े हुए लोगों की बू पायी जाती है:

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

(سورۃ الزمر پ۲۴)

सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र मुश्रिकीन के सामने किया जाता था तो उनके दिल डूब जाते थे।

हालाँकि वे अल्लाह तआ़ला की बड़ाई को जानते थे। ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले अल्लाह को जानते थे। जब किसी मुसीबत में फंस जाते थे तो सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारते थे। अल्लाह का बिल्कुल इनकार नहीं था। लेकिन उनका दिल देवी-देवताओं में लगता था। अगर देवी-देवताओं का तज़किरा किया जाता तो उनके दिल ख़ुश हो जाते थे। उछल जाते थे। लेकिन अगर सिर्फ़ अल्लाह का तज़किरा होता तो सुन लेते थे। लेकिन उनकी तबीयतें बुझी होती थीं। इसलिये उन लोगों से हमें मुनासबत (ताल्लुक़) नहीं होनी चहिये। (कि हम भी उन जैसे बन जायें)।

बार-बार अल्लाह का तज़किरा, अल्लाह की बोल बोलना। बार-बार अल्लाह वाली बात सुनना है। इससे अल्लाह की ताक़त मिलेगी, मदद मिलेगी, दिल के अन्दर नूर आता रहेगा और वह ताक़तवर बनता रहेगा। जिस तरह ग़िज़ा बदन के लिये ज़रूरी है, नहीं खायेगा तो आदमी कमज़ोर हो जायेगा। परेशानी होगी। इसी तरह रूह की ग़िज़ा अगर मिलनी बन्द हो गयी तो धीरे-धीरे रूह अन्दर से कमज़ोर हो जायेगी। और जब रूह कमज़ोर पड़ जायेगी तो रूहानियत वाले आमाल भी कमज़ोर पड़ जायेंगे।

नमाज़ भी कमज़ोर हो जायेगी। धीरे-धीरे सारे आमाल कमज़ोर हो जायेंगे। फिर दुआयें कमज़ोर होती चली जायेंगी।

इनसानियत जा रही है, हैवानियत आ रही है

बुज़ुर्गो और दोस्तो! हमको अल्लाह ने इसलिये पैदा किया ताकि हमें अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) मिले। अल्लाह की बात को मानें। अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठायें। अल्लाह के अ़ज़ाब से बचें।

जानवरों का सुनना सरसरी तौर पर होता है। वह सरसरी तौर पर देखकर और मौजूदा नफ़े और नुक़सान को सामने रखकर आगे बढ़ता और पीछे हटता है। इनसानों में भी जानवरों जैसे लोग होते हैं:

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا. اُولٰٓئِکَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ، اُولٰٓئِکَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ٥

(سورۃ الاعراف، پ۹)

तर्जुमाः- उनको दिल दिये समझते नहीं। आँख दी देखते नहीं। कान दिये सुनते नहीं। ये जानवरों जैसे हैं बल्कि इससे भी ज़्यादा ग़ाफ़िल हैं।

हालाँकि इस ज़माने में मशीनों के ज़रिये हज़ारों मील दूर की चीज़ें देख लेते हैं। सुनना तो ऐसा हो गया है कि चाँद पर बैठकर कुत्ता खाँसा और ज़मीन पर बैठकर उसको सुन रहे हैं। रेडियो, टेलीफ़ोन के ज़रिये बात सुनी जा रही है। तो सुनना भी बहुत ज़्यादा हो गया और देखना भी बहुत ज़्यादा हो गया और समझना भी। अपनी समझ से ऐटमी ताक़त खोज निकाली। अपनी समझ से रॉकिट बनाये और न मालूम कहाँ तक पहुँचे। कैसी-कैसी तहक़ीक़ात (खोज) कर डालीं। तो ज़ाहिर के अन्दर सुनना भी हो गया, देखना भी हो गया और समझना भी हो गया। लेकिन अल्लाह शिकायत करते हैं कि:

आँख दी लेकिन देखते नहीं...... कान दिये लेकिन सुनते नहीं...... दिल दिये लेकिन समझते नहीं...... ये जानवरों की तरह हैं बल्कि इससे

भी गये गुज़रे हो गये हैं।

यानी देखते तो हैं लेकिन सरसरी तौर पर, जानवरों की तरह मौजूदा नफ़े व नुक़सान को देखते हैं। सुनते तो हैं लेकिन सरसरी तौर पर मौजूदा नफ़े व नुक़सान को जानवरों की तरह। समझते भी हैं लेकिन मौजूदा नफ़े और नुक़सान को जानवरों की तरह।

इसके मुक़ाबले में अल्लाह को कैसा देखना और सुनना पसन्द है, वह आपको बताऊँ?

गहरी निगाह से देखना! दिल की आँखों से देखना!

जिस तरह ज़ाहिरी आँखें हैं इसी तरह दिल की भी आँखें हैं। जिस तरह ज़ाहिरी कान हैं इसी तरह दिल के भी कान हैं।

इसलिये गहरी निगाह से देखना दिल की आँखों से देखना है:

فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ٥

(سورۃ الحج پ۱۷)

यानी आम तौर से ये आँखें अंधी नहीं होतीं। अलबत्ता दिल की आँखें अंधी होती हैं।

ज़ाहिरी निगाह दुरुस्त है दिल की निगाह अंधी है। यह आँख फ़िरऔन को भी दी थी। हामान को भी दी थी। क़ारून को भी दी थी। अबू जहल को भी दी थी।

ज़ाहिरी निगाह दुरुस्त होने के बावजूद ये अंधे थे। इन आँखों से जानवरों की तरह सरसरी निगाह से देखने की वजह से। कुरआन किस अन्दाज़ में समझा रहा है:

فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ٥

(سورۃ الحج پ۱۷)

यानी आम तौर से ये आँखें अंधी नहीं होतीं। अलबत्ता दिल की आँखें अंधी होती हैं।

दिल की निगाह की ख़राबी का असर क्या होगा इसको भी साफ़ तौर से बता दिया गयाः

مَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (سورۃ بنی اسرائیل، پ۱۵)

जो यहाँ अंधा होगा वह आख़िरत में भी अंधा होगा।

और यह बात साफ़ हो गयी कि यहाँ अंधा होने के मायने उनके दिल की आँखों का अंधा होना है।

मख़्लूक़ात की दो क़िस्में

अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से दो क़िस्म की चीज़ों को बनाया है। एक तो वह जो हमको बनाकर दिखा दिया। और एक वह जो हमारी नज़र से पोशीदा हैं। जैसे अल्लाह ने फ़रिश्ते बनाये। इस वक़्त ज़मीन से आसमान तक मजमे पर अल्लाह पाक की ज़ात से उम्मीद है कि फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं। जैसा कि हदीसे पाक में आता है कि जहाँ अल्लाह की पाकी बयान की जाती है तो वहाँ ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते जमा हो जाते हैं। और जब आदमी दीन सीखने निकलता है तो फ़रिश्ते उसके पैर के नीचे अपने पर बिछाते हैं। तो उनके बारे में ख़बर दी गयी, मगर ये हमें दिखायी नहीं देते।

जो मख़्लूक़ अल्लाह ने ऐसी बनायी कि दिखायी देती और महसूस होती है उसको आँखों से देखकर उस पर ग़ौर करें तो इन्शा-अल्लाह मारिफ़त मिलेगी। और दूसरी वह मख़्लूक़ जो अल्लाह ने बनायी और हमको दिखायी नहीं देती मगर उसकी ख़बर दे दी है तो ऐसी मख़्लूक़ को ग़ौर से सुनना। जैसा कि आप इस बयान में सुन रहे हैं। तालीम के हल्क़ों में मुज़ाकरा कर रहे हैं। गश्तों के अन्दर आप ज़बान से बोल रहे हैं।

हासिल यह कि दिखायी देने वाली मख़्लूक़ को गहरी निगाह से देखता है और न दिखायी देने वाली मख़्लूक़ के बारे में ग़ौर से सुनता है। आँख का काम देखना, कान का काम सुनना, ज़बान का काम उसको बार-बार

बोलना है। आँख, कान, ज़बान इन तीनों बातों को समझ लिया तो इन्शा-अल्लाह ईमान की ताक़त दिल के अन्दर उतरनी शुरू हो जायेगी। और जितनी ईमान की ताक़त दिल के अन्दर उतरेगी, आदमी उतना ही आमाल में अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलेगा। इसके लिये जो मुजाहदा (मेहनत, तकलीफ़ और कोशिश) आयेगा, आदमी उसको गवारा करेगा।

आमाल की ताक़त

मुजाहदों के बाद आमाल में कुव्वत व ताक़त आयेगी। आमाल में अल्लाह ने कितनी ताक़त रखी है यह बात तो ख़ासकर मरने के बाद ज़ाहिर होगी। हाँ! कभी आमाल की ताक़त दुनिया में भी ज़ाहिर होती है। मरने के बाद जो ताक़त ज़ाहिर होगी वह मरने वाला देखेगा।

चूँकि हमें दुनिया के अन्दर दावत देनी है। अल्लाह पाक ने हिदायत का एक इन्तिज़ाम यह भी किया है कि आमाल वाली लाईन पर चलने वालों के आमाल की ताक़त ज़ाहिर कर देते हैं। इसके बावजूद कि यह बे-सरोसामान होते हैं लेकिन इनकी ताक़त ज़ाहिर हो जाती है। अक्सर अम्बिया और उनके मानने वाले बे-सरोसामान और उनके मुक़ाबले में आने वाले ख़ूब साज़ो-सामान वाले, लेकिन अल्लाह पाक ने उनकी ग़ैबी मददें कीं। जिसको दुनिया वालों ने देखा।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! आमाल की ताक़त कब नसीब होगी? जब देखना, बोलना, सुनना सही हो जायेगा। और अल्लाह का यक़ीन, उसके ख़ज़ाने का यक़ीन हम दिलों में उतार लेंगे:

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ○

(سورۃ بنی اسرائیل، پ۱۵)

आँख, कान और दिल के बारे में क़ियामत के दिन पूछा जायेगा कि तुमने इनको कहाँ इस्तेमाल किया।

इसी को अल्लाह तआ़ला शिकायत के अन्दाज में कहते हैं:

"दिल दिया समझते नहीं, कान दिये सुनते नहीं, आँख दी देखते नहीं"।

अल्लाह के ख़ज़ाने की वुस्अ़त

गहरी निगाह से अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने का देखना और उसकी निशानियों को पहचानना और फिर उसको क़बूल करना ही कामयाबी है। तुम जितने लोग बैठे हो हर एक की सूरत अलग-अलग और नई-नई है। हर एक की आवाज़ अलग है। यह ख़ुदा के ख़ज़ाने की निशानी है। ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत की निशानी है। अल्लाह तआ़ला की शान देखो! जितने इनसान आज तक पैदा हुए और रोज़ाना दो तीन लाख बच्चे पैदा होते हैं। हर एक को अल्लाह तआ़ला आवाज़ अलग देता है, हर एक को अल्लाह सूरत अलग देते हैं। एक सूरत के और एक आवाज़ के पूरी दुनिया में दो आदमी आप नहीं पा सकते। तो ख़ुदा तआ़ला के ख़ज़ाने में सूरतें बेशुमार हैं और आवाज़ें बेशुमार हैं। हर एक को अलग-अलग दे रहा है। लेकिन ख़त्म नहीं हो रही है। यह ख़ुदा तआ़ला की क़ुदरत और ख़ज़ाने की निशानी है।

सोना और जागना मरने-जीने की निशानी है

अल्लाह की निशानियों में से ज़मीन व आसमान का पैदा करना है। अल्लाह की निशानियों में से लहजा अलग देना है। हर एक को सूरत अलग देना है।

लेकिन निशानी है किसके लिये? जो ग़ौर करेंगे, जानकार होंगे। उनके लिये निशानी है। जो मौजूदा नफ़ा और नुक़सान के लिये फ़िक्रमन्द हैं उनके लिये नहीं।

इसी तरह अल्लाह तबारक व तआ़ला हमें एक दूसरी निशानी बता रहे हैं, वह नींद है। हमको अल्लाह ने नींद भी एक निशानी दी है।

रात को सोना और दिन में जागना

जी हाँ मरने के बाद भी क़ब्र में सोना और क़ियामत के दिन जागना है। दिन में सब चारों तरफ़ कारोबार करते हैं। रात हुई तो सो गये। सुबह हुई तो फिर उठे और चल-फिरकर कारोबार शुरू किया। फिर रात को सो गये। तो यह सोना और जागना निशानी है मरने और जीने की। सोने और जागने पर आदमी ग़ौर करे तो समझ में आ जायेगा मरना और जीना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ o

तर्जुमाः- तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये साबित हैं, जिसने हमको मरने के बाद ज़िन्दा किया। और क़ियामत के दिन उसी के पास जाना है।

हश्र की तकलीफ़ें क़ब्र से बढ़कर हैं

तो क़ब्र में सोये हुए क़ियामत में जागे। जैसे रात में सोये हुए दिन में जागे। अब तुम कहोः

"मौलवी साहिब! जो लोग काफ़िर और गुनाहगार हैं उनको तो अज़ाब होगा। वे कहाँ सोते हैं?"

तो मेरे भाई क़ियामत के दिन का भयानक मन्ज़र ऐसा होगा कि उसके मुक़ाबले में जो क़ब्र का मन्ज़र था वह ऐसा होगा जैसे ख़्वाब। जिस तरह दुनिया ख़्वाब के अन्दर एक आदमी बहुत परेशान दिखायी दे रहा है लेकिन उस परेशानी के बाद थानेदार ने उसको जगा दिया, हथकड़ियाँ लगाईं, पिटाई शुरू कर दी और भरे बाज़ार में लेकर चला। तो उसे मालूम होगा कि ख़्वाब के अन्दर जो तकलीफ़ें देख रहा था वे बहुत हल्की थीं और धोखा था, और ये तकलीफ़ें हक़ीक़त हैं।

इसी तरह मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! क़ब्र में भी आदमी को चाहे जितनी मुसीबतें हों, कुफ़्र व शिर्क या किसी दूसरे गुनाह की वजह से होंगी लेकिन क़ियामत के दिन जो तकलीफ़ आयेगी उसके मुक़ाबले में यह

कहेगा कि इससे अच्छा था कि मैं क़ब्र में रहता।

مَنْ ۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا، هٰذَا مَا وَعَدَالرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ٥

(سورۃ یٰسٓ، پ ۲۳)

अरे हमको हमारे इस सोने की जगह से किसने उठाया। तो उससे कहा जायेगा कि यह वह बात है जिसका अल्लाह ने वायदा किया और नबियों ने ख़बर दी।

बिल्कुल ऐसी ही मिसाल जब थानेदार ने मारना शुरू किया तो मालूम हुआ कि ख़्वाब (सपने) की तकलीफ़ धोखा थी। और यह हक़ीक़त है।

और इसी तरह ईमान वाले जब उठेंगे तो क़ियामत के दिन नेमतें ही नेमतें होंगी। क़ब्र में भी नेमतें थीं और हश्र में भी नेमतें।

आख़िरत की कामयाबी के लिये मतलूबा सिफ़तें

दुनिया में भी और आख़िरत में भी अल्लाह की नेमतों से लज़्ज़त हासिल करने, जन्नत में मक़ाम पाने के लिये अब हमें करना क्या होगा? तो बुज़ुर्गो और दोस्तो!

आख़िरत की फ़िक्र पैदा हो जाना, अल्लाह की बड़ाई दिलों में आ जाना, अल्लाह का डर पैदा होना ही नेमतों की अधिकता और ज़्यादा होने का सबब होगा। जन्नत का हमेशा का सुकून बख़्शेगा। सारी दुनिया की बेहैसियती का यक़ीन पैदा करेगा। सच कहता हूँ अगर आख़िरत की फ़िक्र पैदा हो जाये, अल्लाह की बड़ाई लोगों के अन्दर आ जाये तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े में कामयाबी दिखायी देने लगेगी और धीरे-धीरे सारे मसाइल (समस्याएँ) चुटकी में हल हो जायेंगे।

दूसरी सिफ़त

दूसरी चीज़ तक़्वा (परहेज़गारी) पैदा करना है। तक़्वा ऐसा कि अल्लाह की बड़ाई व किबरियाई के सामने ग़ैरुल्लाह और शैतानी कुव्वतें बेहैसियत नज़र आयें।

तीसरी चीज़

अन्दरूनी सिफ़ात के बनाने में ख़ूब फ़िक्र पैदा करना। फिर ज़ाहिरी सामान जितना बस में हो उसका मुहैया करना ज़रूरी है। बदर के अन्दर ज़ाहिरी सामान किया गया जितनी हैसियत थी। फिर तबूक के अन्दर ज़ाहिरी सामान करने में ख़ूब तरग़ीब दी। (यानी इसकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई)।

फ़िक्र का माहौल कैसे बनेगा?

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब आप हज़रात अल्लाह के दीन के वास्ते और अल्लाह के वास्ते खड़े हो जायेंगे, और दीन के काम को अपना काम बनायेंगे तो विभिन्न प्रकार के हालात होंगे। उन हालात के बारे में बैठकर फ़िक्र करना पड़ेगा। लेकिन यह फ़िक्र कब करोगे? जब आपकी औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन बना होगा। और ज़ेहन बनाने के लिये मानूस करना ज़रूरी है। बहुत से काम करने वाले पहुँचते हैं तो सारी औ़रतें और बच्चे सहमे हुए होते हैं। माँ कहती है तुम्हारे अब्बा आ रहे हैं। ज़रा ख़ूब अदब से बैठ जाओ। बीवी सहमी हुई कि न मालूम किस बात पर आकर ख़फ़ा हो जायें। जैसे कोई थानेदार घर में आ गया हो। यह तो बिल्कुल शरीअ़त के ख़िलाफ़ है।

माहौल बनाने का नबवी तरीक़ा

थानेदार की तरह घर में जाना कि सारी औ़रतें डर रही हों, बच्चे डर रहे हों, सहम रहे हों। यह हमारा तरीक़ा नहीं होना चाहिये। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तो वहशत (सहमने और ख़ौफ़ पैदा करने) का माहौल बनाने की तालीम नहीं देते।

एक जंग के मौक़े पर हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा कि चलिये मैं और आप दौड़ लगायें और देखें कौन आगे आता है? रसूले करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम पीछे रह गये और हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आगे हो गईं। देखो! एक बीवी को किस अन्दाज़ से मानूस किया जाता है? यह हम लोगों के लिये रहबरी होना, एक दम से दारोग़ा की तरह जाना बिल्कुल ठीक नहीं। औलाद को तुम मानूस करो। औलाद बिल्कुल बिगड़ी हुई हो, नमाज़ न पढ़ती हो, बीवी बिल्कुल बेपर्दा हो, बेदीन हो, लेकिन उसको मानूस करोगे तो तुम जीतोगे।

औ़रत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है

मानूस करने के बावजूद, दावत का काम करने के बावजूद, बहुत सी बातें तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होंगी, उसे बरदाश्त करो। इसलिये कि औ़रत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। अगर टेढ़ी रखते हुए काम लोगे तो ले सकोगे, और टेढ़ी को बिल्कुल सीधी करना चाहोगे तो टूट जायेगी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बढ़ गयीं। फिर दूसरे सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़रा दौड़ें। अब हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बदन ज़रा भारी हो चुका था। दौड़ीं, लेकिन पीछे रह गईं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आगे निकल गये। अब हुज़ूर पाक फ़रमाते हैं:

देखो! वहाँ तुम आगे हो गईं और यहाँ पर मैं आगे हो गया।

हाय! तुम में से एक भी बीवी के साथ दौड़ने वाला नहीं। यह सुन्नत तो किसी ने अदा नहीं की।

उलटी को उलटी करोगे तो सीधी हो जायेगी

यह भी नहीं कि बीवी की हर बात में "हाँ में हाँ" मिलाओ। अगर वह बात ढंग की कर रही है तो बात मानो। और अगर बात ठीक नहीं है तो उसका ज़ेहन बनाओ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है जो हमने उलेमा से सुना है। मैंने इसे मौलाना यूसुफ़ साहिब से सुना है:

شَاوِرُوْهُنَّ وَخَالِفُوْهُنَّ

मश्विरा करो, फिर उलटा कर दो।

औ़रतें आ़म तौर से उलटी बात करेंगी। तो मशिवरे करो। लेकिन जो राय वे दें, उसका उलटा करो।

बात औ़रतें उलटी करती हैं। जब उलटी को उलटी करोगे तो सीधी हो जायेगी। पस "मश्विरा करो, फिर उलटा कर दो", सीधा हो जायेगा। लेकिन यह क़ायदा अगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का साबित हो जाये तो क़ायदा कुल्लिया नहीं होगा। यह क़ायदा अक्सरिया है। लेकिन अगर कोई बीवी तुमसे यह कहे कि तुम चार महीने के लिये जमाअ़त में चले जाओ तो उसको मान लेना।

दावत हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी

मेरे मोहतरम दोस्तो! इस मजमे में एक हिस्सा पर्दा में रहने वाली औ़रतों का भी है। वे सुनें और जो न हों तो ये सब मर्द मौजूद हैं। हर मर्द चार क़िस्म की औ़रतों के बीच रहता है- बीवी, माँ, बहनें और बेटियाँ। और औ़रतें चार क़िस्म के मर्दों के बीच रहती हैं- बाप, शौहर, भाई, बेटे। यह तो हमारी इज्तिमाई (सामूहिक) ज़िन्दगी है। औ़रतें मर्दों वाली हैं और मर्द औ़रतों वाले हैं। और अल्लाह पाक ने दावत का काम मर्द और औ़रत दोनों के ज़िम्मे डाला है:

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، (پ١٠، سورة التوبة)

तर्जुमाः- मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रत एक उसूल के साथ जुड़े साथी हैं कि भली बातों का हुक्म करते हैं, बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ों को क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं, अल्लाह की बात मानते हैं और उसके रसूल की।

अल्लाह जल्द ही रहम करेगा

अल्लाह हाकिम है। लेकिन जिस अन्दाज़ का तुम रहम चाहते हो, वैसा रहम न दे तो तुम घबरा न जाना। क्योंकि अल्लाह हकीम भी है। जो तुम चाहते हो वैसा वह नहीं करता।

अ़रब वालों ने कहा मौलाना यहं सारा मामला क्या है? हम भी जिहाद करते हैं लेकिन हमारी मदद नहीं होती। तो फिर हमने उनका गुस्सा ठंडा किया और यह बात सुनायी। जिस पर अ़रब वालों ने मुझे डाँटना शुरू कर दिया। मैंने कहा वायदा तो किया है अल्लाह ने, और डाँट रहे हो मुझको। यह मेरा वायदा नहीं है, वायदा तो अल्लाह का है। तब वे हंस पड़े। इससे मेरा मक़सद उनके गुस्से को ठंडा करना था। उसके बाद फिर वह बात जो आप हज़रात को सुनाई, उनको सुनायी कि अल्लाह ने पहले तेरह साल रोका। फिर मदीने में कहा कि आपरेशन तुम खुद करो ताकि चन्द का आपरेशन होकर, दूसरे सही रास्ते पर आ जायें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रहमत की शान

दूसरे नबियों के ज़माने में आ़म तौर पर यह होता रहा कि जितने लोग बिगड़े हुए थे, उन सब का सफ़ाया अल्लाह ने किया। ज़लज़ला, तूफ़ान और सैलाब वग़ैरह से। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम जहानों के लिये रहमत हैं। आ़लमी तौर पर ज़लज़ले नहीं आयेंगे। बस कहीं-कहीं ज़लज़ला, कहीं-कहीं सैलाब और कहीं-कहीं तकलीफ़ व परेशानी। अल्लाह पाक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि आप खुद और सहाबा किराम भी मिलकर उनका आपरेशन करो। उन्होंने आपरेशन किया।

अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने रहमत की रियायत न होती तो जितने मुजरिम दुनिया के अन्दर हैं सबको अल्लाह ख़त्म कर देता। लेकिन चूँकि फ़रमाँबरदार भी हैं इसलिये अल्लाह पाक कहीं-कहीं

ज़लज़ले लाते हैं। ताकि मुजरिमों की आँखें खुलें। सारे मुजरिमों को अल्लाह पाक ख़त्म नहीं करते।

आ़लमी नबी का एहतिराम

अलबत्ता जब ऐसा दिन आयेगा कि पूरे आ़लम में आ़लमी (विश्व व्यापी) नबी की बात मानने वाला एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहेगा। ऐसा भी कोई न हो जो अल्लाह ही कहता हो, तो उस दिन जो ज़लज़ला आयेगा वह आ़लमी पैमाने पर आयेगा। और जो सैलाब आयेगा, आ़लमी पैमाने पर आयेगा। उस दिन आसमान भी टूटेगा। पूरी ज़मीन फटेगी। और अल्लाह इस आ़लम को तोड़-फोड़कर क़ियामत ला देगा। लेकिन अगर आ़लमी नबी की बात मानने वाला एक भी रहा और वह भी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज कुछ नहीं कर रहा है, सिर्फ़ अल्लाह-अल्लाह कर रहा है तो ज़मीन, आसमान, चाँद, सूरज का निज़ाम चलता रहेगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आ़लमी नबी होने के एहतिराम व सम्मान में।

ख़ुदा की ताक़त का अन्दाज़ा

जब अल्लाह के नाम में इतनी ताक़त है कि आसमान व ज़मीन का सारा निज़ाम बरक़रार है सिर्फ़ नाम पर, तो अल्लाह के बताये हुए काम में कितनी ताक़त होगी? और वह ताक़त क़ियामत के दिन ज़ाहिर होगी। इसी लिये इसका बार-बार मुज़ाकरा करने की ज़रूरत है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हंस रहे हैं। फ़रमाया कि मौत का तज़किरा करो। जो सारी लज़्ज़तों को तोड़ने वाली है। ख़त्म करने वाली है।

اَكْثِرُوْا ذِكْرَهَادِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتُ

अगर तुम बार-बार इसके तज़किरे करोगे तो फिर तुम्हारी यह कैफ़ियत नहीं होगी। जो तुम नहीं जानते अगर वह तुमको मालूम हो जाये

तो हंसना बन्द कर दोगे रोना शुरू कर दोगे। मैदानों में चले जाओगे। औरतों से सोहबत (संभोग) करना छोड़ दोगे।

नेक व बद के साथ क़ब्र का मामला

फिर इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र रोज़ाना ऐलान करती है कि:

मैं वहशत का घर हूँ। कीड़ों का घर हूँ। तन्हाई का घर हूँ। अजनबियत का घर हूँ।

जब कोई ईमान वाला क़ब्र के अन्दर जाता है तो वह कहती है कि दुनिया में जितने लोग हैं उनमें सबसे ज़्यादा मुझे तू प्यारा है। आज तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या सुलूक करती हूँ। फिर क़ब्र जहाँ तक नज़र पहुँचे वहाँ तक कुशादा (खुली हुई) हो जायेगी और जन्नत का दरवाज़ा खुल जायेगा। इतना खुल जायेगा, जहाँ तक उसकी निगाह जा सकती है।

और अगर कोई मुजरिम दुनिया से जायेगा तो क़ब्र कहती है कि पूरी दुनिया के अन्दर जितने लोग जीते हैं उनमें तू मेरा सबसे बड़ा दुश्मन था। और मुझे तुझसे नफ़रत है। अब तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या सुलूक करती हूँ। उसके बाद वह क़ब्र दोनों तरफ़ से मिल जायेगी और उसकी पसलियाँ ऐसी मिल जायेंगी जैसे दोनों हाथ की उंगलियाँ एक दूसरे में दाख़िल कर दी जायें और उसे काटने के लिये सत्तर अज़्दहे ऐसे मुक़र्रर कर दिये जायेंगे कि अगर उनमें का एक भी ज़मीन पर फूँक मार दे तो क़ियामत तक वहाँ घास और दाने का उगना बन्द हो जाये।

सुनने-सुनाने में तरतीब का लिहाज़ ज़रूरी है

मेरे मोहतरम दोस्तो! क़ियामत का दिन तो इतना भारी होगा कि वह उस क़ब्र की तकलीफ़ को भूल जायेगा। ऐसा समझेगा जैसे सपना देख रहा हो और कहेगा:

مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا، هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ○

(سورۃ یٰس، پ۲۳)

अरे हमको हमारे इस सोने की जगह से किसने उठाया। तो उससे कहा जायेगा कि यह वही है जिसका अल्लाह ने वायदा किया था और नबियों ने सच बात कही थी।

इसलिये दावत के मुज़ाकरे हों, क़ब्र के मुज़ाकरे हों, क़ियामत के मुज़ाकरे हों। ख़ूब ख़ूब मुज़ाकरे हों।

मर्दों में हों, घर में औरतों के सामने इसके मुज़ाकरे हों, बच्चों के सामने मुज़ाकरे हों।

लेकिन भाई ज़रा एहतियात के साथ। छोटे बच्चों के सामने इतना भयानक मन्ज़र क़ियामत का क़ायम करोगे तो बच्चे डर जायेंगे। ऐसा नहीं करना है। सब कुछ तरतीब से हो। किसको कितना सुनाना है तरतीब के साथ हो।

मुसलमानों की ज़िन्दगी में पाँच बातें लानी हैं

(1) मुसलमानों के अन्दर दावत को पहुँचाओ।

(2) मुसलमानों की ज़िन्दगी अमली ज़िन्दगी बन जाये इसकी मेहनत करो।

(3) ईमान के अन्दर ताक़त आ जाये।

(4) हमारा रहन-सहन और समाजी ज़िन्दगी और कारोबारी लाईन नबवी तरीक़े पर आ जाये।

(5) हमारा अख़्लाक़ी मेयार ऊँचा हो जाये।

ये पाँच बातें हमें कोशिश करके मुसलमानों के अन्दर लानी हैं। जो सहाबा के अन्दर हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मेहनत से आईं।

इस्लामी तर्ज़े ज़िन्दगी के साथ इस्लामी आईडियल ज़िन्दगी के साथ अगर कोई दुनिया में जियेगा तो जहाँ पर करने वाले होंगे, न करने वाले भी होंगे। वे जब इस पाक ज़िन्दगी को देखेंगे तो गुट के गुट ईमान की तरफ़ चले आयेंगे। कोई लड़ाई-झगड़े की ज़रूरत इन्शा-अल्लाह नहीं होगी।

हमारी आवाज़ सब से अलग हो

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जमाअ़तों को बाहर भेजा करते थे तो यूँ फ़रमाते थे कि पहले तो कलिमे की दावत देना। न मानें तो समझौते और मेलजोल की बात करो। यानी जिज़या (जान व माल की हिफ़ाज़त के बदले में टैक्स) अदा करो। और अगर वे सुलह-सफ़ाई के लिये तैयार न हों तो फिर उसके बाद का आपरेशन करो।

जैसे फ़ायर ब्रिगेड (आग बुझाने वाली गाड़ी) मोटर के सामने पाँच आदमी आ जायें तो डरेगा नहीं। मोटर को उन पाँच आदमियों के ऊपर चढ़ा देगा।

लेकिन फ़ायर ब्रिगेड की आवाज़ अलग होती है, सब रास्ते ख़ाली कर देते हैं। इसी तरह पूरे आ़लम के अन्दर आवाज़ें लग रही हैं, वे हैं:

मुल्क व माल ...... सोना चाँदी ...... रुपये पैसे ...... दुकान खेत।

इससे यह हो जायेगा, उससे वह हो जायेगा।

हमारी आवाज़ यह हो कि इनसे कुछ नहीं होता। करने वाले अल्लाह हैं। जैसे फ़ायर ब्रिगेड (आग बुझाने वाली गाड़ी) की आवाज़ अलग होती है, उसको सुनकर सब हट जाते हैं। अगर हमारी आवाज़ यह होगी तो धीरे-धीरे लोगों को इत्मीनान होगा और लोग बात मानेंगे और दीन का काम करने लगेंगे, इन्शा-अल्लाह।

जिहाद बग़ैर दावत के नहीं

एक बार जॉर्डन में जमाअ़त गई। अ़रब नौजवान जमा हो गये और कहा कि यहूदियों से क़िताल बाद में करेंगे पहले तो तब्लीग़ करने वालों से जिहाद करना चाहिये। क्योंकि इन तब्लीग़ करने वालों ने जिहाद का जज़्बा मुसलमानों के अन्दर ठंडा कर दिया है। जबकि सारी क़ौमों में जिहाद का जज़्बा भरा पड़ा है।

मामला सामने आया। अमीर सूझ-बूझ रखने वाला था। वह खड़ा हो

गया और उन नौजवानों से यूँ कहा कि सारे नौजवानों को तुम जमा करो और पाँच मिनट की बात तुम सुन लो। अगर समझ में न आये तो हमें क़त्ल कर देना। सब जमा हो गये।

उसने खड़े होकर एक बात कही कि जिहाद बग़ैर दावत के ऐसा है जैसे नमाज़ बग़ैर वुज़ू के। दावत है नहीं और जिहाद कर रहे हैं। नमाज़ बग़ैर वुज़ू के होती नहीं और जिहाद भी बग़ैर दावत के करोगे तो अल्लाह पाक उसे क़बूल नहीं करेगा। वे सब के सब सन्नाटे में आ गये।

जोश के साथ होश और होश के साथ जोश ज़रूरी

फिर कुछ नौजवान खड़े हो गये और उन्होंने कहा कि पहले यहूदियों को दावत देंगे ताकि अल्लाह की मदद आये। नौजवानों को जोश बहुत होता है उनको तो होश की लगाम लगानी पड़ती है। और बड़ी उम्र वालों में ज़रा जोश का धक्का लगाना पड़ता है। दोनों ही काम करने पड़ते हैं।

अब अगर तुम्हारे अन्दर इतना होश हो गया कि ज़िन्दगी में चार महीने देने की हिक्मत समझ गये लेकिन अभी तैयार नहीं हो तो इस काम के लिये तुमको जोश का धक्का लगाना पड़ेगा। और जोश इतना आ गया कि बीवी को डाल दूँगा बेवाख़ाने में और बच्चों को डाल दूँगा यतीम ख़ाने में। और घर बेच दूँगा और पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के रास्ते में निकल जाऊँगा तो उसके ऊपर ज़रा होश की लगाम देंगे। दोनों काम यहाँ होते हैं। अब अगर यह नहीं मालूम कि फ़लाँ के अन्दर होश ज़्यादा है या जोश तो वहाँ मश्विरे की ज़रूरत है।

लेकिन जिसने पूरी ज़िन्दगी में चार महीने दिये तो उसके सामने इतनी जोशीली बात करनी चाहिये कि वह आज ही चार महीने दे दे। अगर तुम कहो कि तरतीब कामों की बनाकर फिर दूँगा, ऐसा नहीं है। जो 'घर' गया वह 'घिर' गया। जिसने कहा 'फिर' वह हो गया 'फुर'। वह हमारे क़ाबू में नहीं आता। यहाँ पर खड़े होकर जो चार महीने लिखवायेगा तो सब कहेंगे "हाँ" और जब घर जाओगे और वहाँ इरादा करोगे तो सब कहेंगे ना!

जब हाँ की फ़िज़ा में हाँ न कह सको तो ना की फ़िज़ा में हाँ कैसे कह सकोगे? इसलिये शैतान के चक्कर में न आना और आज ही चार महीने के लिये खड़े हो जाओ।

इस्लामी ज़िन्दगी का नमूना भी ज़रूरी है

बहरहाल! मैं अ़र्ज़ कर रहा था अ़रब वालों की बात। अमीर ने फिर पाँच मिनट बैठकर बात सुन लेने की दरख़्वास्त की और कहा कि यहूदियों को जिस इस्लाम की दावत दोगे वह कौनसा इस्लाम है?

वह इस्लाम जो किताबों में लिखा है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में था, या वह इस्लाम जो आज मुसलमानों के अन्दर है।

अगर मुसलमानों के अन्दर जो इस्लाम है उस इस्लाम की दावत दोगे तो कहेंगे कि यह इस्लाम तो हमारे अन्दर भी है। आज चोरी, डकैती, लूट, खसूट, धोखा, ग़बन, ख़ियानत मुसलमान मुसलमान होकर करते हैं तो हम यहूदी होकर करते हैं। अगर इस्लाम यह है जो आज के मुसलमानों में है तो मुसलमान होकर तुम्हारा यह इस्लाम है और हमारा यह इस्लाम यहूदी बनकर है। पस वे लेग इस ज़माने के इस्लाम को तो क़बूल करेंगे नहीं। और अगर तुम कहो कि वह इस्लाम जो किताबों में लिखा है जो हमारे बुज़ुर्गों में और सहाबा में था, ताबिईन में था, उस इस्लाम पर आ जाओ। तो वे साफ़-साफ़ कह देंगे कि वह इस्लाम तो हुज़ूरे पाक के ज़माने में चलने के क़ाबिल था। रॉकिट के ज़माने में चलने के क़ाबिल नहीं। अगर रॉकिट के ज़माने में चलने के क़ाबिल होता तो सब से पहले मुसलमान इस पर चलता। वे लोग तो तुम से यही कहेंगे। इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि पहले हमारे अन्दर इस्लामी ज़िन्दगी आ जाए। और मुसलमानों को इस्लामी तरीक़े पर लाने के लिये सीखने की ज़रूरत है। इसके लिये मुसलमानों को सब्र सीखना पड़ेगा। बरदाश्त सीखना पड़ेगा। कड़वी-कड़वी सुननी सीखना पड़ेगी।
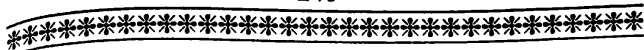
सीखे बग़ैर कामयाबी नहीं

एक इलाक़े के अन्दर जमाअ़त ने काम किया। नमाज़ी बहुत बढ़ गये तो वहाँ के इमाम से अ़र्ज़ किया कि आप भी चलिये जमाअ़त में। उन्होंने कहा कि जमाअ़त का काम तो देख लिया है अब हम ख़ुद ही कर लेंगे। चुनाँचे उन्होंने दिन में पाँच बार गश्त करना शुरू कर दिया। सुबह के वक़्त जो सोये रहते थे उनकी चारपाईयें को मस्जिद में लाकर रख दिया और उनसे नमाज़ पढ़ने के लिये कहा। तो पहले दिन तो उन्होंने बरदाश्त कर लिया। दूसरे दिन वे डंडा लेकर सोये। जब सुबह का वक़्त हुआ और उनके साथी गश्त के लिये आये तो उनकी ख़ूब पिटाई की। तो सीखे बग़ैर मुसलमानों के अन्दर दावत देने जाओगे तो कामयाब नहीं होगे।

चार महीने के अन्दर क्या सीखा?

जॉर्डन की जमाअ़त वालों ने अ़रब के नौजवानों से कहा कि चार महीने के लिये हमारे मुल्क में आ जाओ। चुनाँचे उनकी चार महीने की जमाअ़त बन गयी और उसे पूरा भी कर दिया। फिर मैं उन लोगों को लेकर बैठा। मैंने कहा कि हाथ में चूड़ियाँ पहन ली हैं क्या? जिहाद का वह जज़्बा बिल्कुल ख़त्म क्यों हो गया? ढीला क्यों पड़ गया? उन्होंने कहा कि मौलवी साहिब! आप ताने क्यों मार रहे हैं? मैंने कहा कि तुम जाओगे अपने मुल्क और वहाँ लोग यह पूछेंगे तो मैं उनका बनकर आप से पूछ रहा हूँ। वे लोग तुमसे पूछेंगे कि चार महीने के अन्दर तुमने क्या सीखा?

तो मैं तुमको ख़ुद बताऊँ कि तुमने चार महीने में कितना सीखा है? तुमने चार महीने में ज़िन्दगी के हर शोबे (विभाग) को नबवी तरीक़े पर चलाना सीखा है ताकि अल्लाह की मदद आ जाये।

कारोबारी लाईन, घरेलू लाईन, सियासी लाईन यहाँ तक कि फ़ौज में अगर तुम हो, वह भी नबवी तरीक़े पर आ जाये।

जब आप नबवी तरीक़े पर आ जायेंगे और नबवी तरीक़ा ज़िन्दगी में

होगा तो अल्लाह की मददें आयेंगी। अब उनकी समझ में आ गया कि दीन को हर जगह लाना है और जब अल्लाह की मदद आयेगी तो पहला काम यह होगा कि लोगों के ज़ेहन दीन की तरफ़ आयेंगे और पूरे आ़लम के अन्दर दीन की फ़िज़ा बनेगी। फिर जब दीन की फ़िज़ा पूरे आ़लम में बननी शुरू होगी तो उसके असरात दूसरों पर पड़ने शुरू होंगे। और जब दूसरों पर पड़ेंगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि चाहे गोरा हो या काला, हर एक का ताल्लुक़ अल्लाह से हो जायेगा।

दावत से ख़िलाफ़त तक

जब सब के सब ईमान की तरफ़ आ जायेंगे तो उनका बन्दोबस्त चलाने के लिये कोई अमीरुल्-मोमिनीन (मुसलमान बादशाह) होना चाहिये। तब सब के सब लोग और उलेमा तलाश करेंगे कि अमीरुल्-मोमिनीन किसको बनायें? ख़लीफ़ा किसको बनायें? जिसमें सलाहियत हो और सलाहियत तो हुकूमत चलाने वालों में है, दीन नहीं था वह उनमें आ गया। उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि चलो गोरे चौधरी से कहेंगे कि आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। वहाँ जाकर देखा गोरा चौधरी रात को रो रहा है। सब लोग और उलेमा उससे मिले और कहा कि आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। वह हिचकियाँ मार-मारकर रोयेगा। इन्शा-अल्लाह कहेगा भाई! नहीं मैं तो अपने ही लिये डरता हूँ क़ियामत के दिन बड़ी अ़दालत में हाज़िर होने से। जब सारे लोगों का ख़लीफ़ा बन जाऊँगा तो सब का हिसाब मुझे देना पड़ेगा। मैं ख़लीफ़ा नहीं बनूँगा।

अब तुम लोग लाल चौधरी के पास चले। देखा तो उसका भी वही हाल है, उसने भी कह दिया कि मैं नहीं। मेरा क़ियामत का मामला बिगड़ जायेगा।

मश्विरा होगा कि अब काले चौधरी के पास जाओ। तो वे लोग काले चौधरी के पास जाकर कहते हैंः आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। हमारे हाकिम बन जायें। उससे भी मयूसी होगी तो उलेमा मिल-बैठकर मश्विरा

करके किसी एक को ख़लीफ़ा बना देंगे। फिर पूरे आलम के अन्दर तीन बातें चलेंगी:

या तो कलिमा पढ़ो ...... या तो जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स) दो और सुलह करो ...... या तो आ जाओ क़िताल (जंग) के लिये।

अभी से वह काम जो उस अमीर के करने का है, तुम करने लग जाओ। अभी से अगर आपने ग़ैर-मुस्लिमों को मारना शुरू कर दिया तो मुझे बाज़-बाज़ मौक़ों पर इसमें गुनाह होने का ख़तरा मालूम होता है। तब वे मजबूर होंगे अपनी जान बचाने के लिये। अपने बचाव के लिये कुछ न कुछ करने पर।

हमारे काम की शुरुआत कच्ची ईंट से

मैं कहता हूँ कि इस तरीक़े के लड़ाई-झगड़े से हमारा दीन मुतास्सिर (प्रभावित) होगा। हमारा काम तो कच्ची ईंट से शुरू होगा। सब से पहले वही पाँच बातें मुसलमानों में पैदा हों, तब पूरे आलम में उसके असरात ज़ाहिर होंगे।

अब एक बात कहकर मैं अपनी बात ख़त्म करूँ। ये पाँच बातें हमारे काम करने वालों में अभी नहीं हैं। लेकिन इसके बावजूद अल्लाह ने पूरे आलम पर असर डाला या नहीं? अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये। कुरआन उतरा तो 'क़ैसर' व 'किसरा' की हुकूमतें मातहत हो गईं। आप पैदा हुए तो 'किसरा' (ईरान के बादशाह) के महल के चौदह कंगूरे टूट पड़े और महल की दीवार में दरार पड़ गये।

'किसरा' ने एक सपना देखा था। दरबार में आया। नजूमियों (ज्योतिषियों) को बुलवाया। उनके बस में ताबीर नहीं थी। शाम के अन्दर एक बड़ा नजूमी था। उससे पूछने गये। वह मरने के क़रीब था। मरते-मरते उसने कहा कि बनी इस्राईल से नुबुव्वत निकल चुकी। बनी इसमाईल में आ गयी। और वह नबी आ चुके हैं।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ये असरात हैं। अभी 'वह्य' (अल्लाह का पैग़ाम) आप पर नहीं उतरी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की चालीस साल की उम्र भी नहीं हुई। सिर्फ़ पैदा ही हुए हैं और पूरे आ़लम पर असरात ज़ाहिर हो गये।

यह बात भी जो हम कह रहे हैं वह वजूद में आयेगी लेकिन अभी हम लोगों में वह सलाहियत वे सिफ़तें नहीं। हमारे अल्लाह ने, महबूब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरे आ़लम के अन्दर असर डाला है, हम भी अगर कुरबानी में आगे बढ़ गये तो क्या अ़जब है कि क़ौमें की क़ौमें और मुल्क के मुल्क ईमान वाले बन जायें। तब देखेंगे कि क़ियामत के दिन एक-एक आदमी लाखों करोड़ों को जन्नत में लेकर जा रहा है। यह बात बग़ैर कुरबानी दिये नहीं हो सकती।

इसलिये खड़े होकर ऐसे लोग अपना नाम पेश करें जिन्होंने आज तक अपना नाम पेश नहीं किया है।

ख़त्म शुद

तक़रीर (9)

यह तक़रीर नवम्बर 1992 में बंगले वाली मस्जिद देहली में की गई।

आप और हम अल्लाह से अपने बारे में जो चाहते हैं हम अल्लाह के बन्दों के बारे में वह करना शुरू कर दें। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह, बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हमारे ऐबों पर पर्दा डाले तो हम दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालें। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हम पर रहम करे तो हम दूसरों पर रहम करें। यह बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम यह चाहते हैं कि अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करे तो हम दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करें। इससे अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करेगा। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

****

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ ○ هُوَالَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ○ يٰٓاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذَالِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ يَغْفِرْلَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذَالِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ، وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

चीज़ों के तीन दर्जे

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हर चीज़ के तीन दर्जे होते हैं। एक मेहनत और कोशिश का, दूसरा दर्जा उस चीज़ का वजूद, तीसरा दर्जा उसका फ़ायदा। खेती के अन्दर भी यह चीज़ है। पहले मेहनत फिर खेती

फिर उसका फ़ायदा। बिल्कुल इसी तरीक़े से दीन का मामला है। पहले मेहनत होती है कोशिश होती है, उसके बाद दीन वजूद में आता है, और उसके बाद उसका फ़ायदा होता है।

दीन का असल फ़ायदा

दीन का जो असल फ़ायदा है वह है अल्लाह का राज़ी होना। अल्लाह जब राज़ी हो गये तो बहुत बड़ा फ़ायदा मरने के बाद भी होगा। हमेशा की जन्नत में आदमी जायेगा। और हमेशा की जहन्नम से आदमी बचेगा।

दुनिया के अन्दर अल्लाह के राज़ी होने का फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह तआ़ला खुश होकर अपनी कुदरत को हिमायत में लायेंगे। अपनी नेमतों के ख़ज़ाने से ताल्लुक़ पैदा फ़रमा देंगे। तो अल्लाह तआ़ला बरकतें, रहमतें, सुकून, चैन, इत्मीनान, मुहब्बतें, अमन व अमान, यह देंगे। इलाक़ाई तौर पर, व्यक्तिगत तौर पर, अ़मली तौर पर जितना-जितना दीन ज़िन्दा होगा, अल्लाह राज़ी होंगे।

मगर दीन एक दम से ज़िन्दा नहीं होता। इसपर मेहनत करनी पड़ती है। हर नबी ने मेहनत की। फिर दीन ज़िन्दा हुआ। हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दीन की मेहनत करने का जो तरीक़ा बतलाया उस तरीक़े पर जितनी मेहनत होती जायेगी तो अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से दीन को ज़िन्दा फ़रमाते जायेंगे, और इसका फ़ायदा भी देते चले जायेंगे। लेकिन इनसान मेहनत सही करे।

अब ये हमारी जमाअ़तें जो अल्लाह के रास्ते में जा रही हैं। ये उस मेहनत को सीखने के लिये जा रही हैं, और उस मेहनत का करना तो ज़िन्दगी भर है (इन्शा-अल्लाह) घर पर रहें तो अपने मक़ाम पर वह मेहनत करनी है, बाहर जायें तो बाहर जाकर वह मेहनत करनी है। लेकिन मेहनत पहले सीखी जाती है। तो इस वक़्त मैं आप हज़रात से बात मुख़्तसर तौर पर अ़र्ज़ करूँगा।

दीन को ज़िन्दा करने की मेहनत का तरीक़ा

इस मेहनत का तरीक़ा क्या है? यह मेहनत कैसे की जाये, जिससे दीन ज़िन्दा हो? इस मेहनत के करने में सब से पहले जो चीज़ मिलेगी वह हिदायत का नूर मिलेगा दिल में इन्शा-अल्लाह। नबियों वाली मेहनत जो करता है अल्लाह उसे हिदायत का नूर देता है। एक तो नबियों वाली मेहनत हो और एक दुआ हो। ये दो बातें अगर हों तो अल्लाह पाक हिदायत का नूर देते हैं।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○

नबियों वाली मेहनत पर अल्लाह तआ़ला का हिदायत का वायदा है। और जिस आदमी में अल्लाह की तरफ़ रुजू हो, तलब हो अल्लाह उसे हिदायत देता है। नबियों वाली मेहनत क्या है? इसको आप हज़रात के सामने बहुत मुख़्तसर अन्दाज़ में अ़र्ज़ किया जायेगा। हमारी जाने वाली जो जमाअ़तें हैं वे ख़ूब ध्यान से इस बात को सुनें और जो मित्रगण वापस जाने वाले हैं, वे हज़रात भी ग़ौर से सुनें। क्योंकि वापस जाने वाले जो हज़रात हैं, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि वे इज्तिमा में शरीक होकर अगर नक़द जमाअ़त में निकले नहीं हैं तो उम्मीद है कि आईन्दा निकलेंगे, इसलिये ये बातें काम आयेंगी। और अपने मक़ाम पर जाकर भी वे काम शुरू कर देंगे। अल्लाह का यह फ़ज़्ल है कि हर जगह काम करने वाले कुछ न कुछ मौजूद हैं। इसलिये मक़ाम पर जाकर ही काम शुरू कर दें।

तब्लीग़ के काम का तरीक़ा

अब काम का तरीक़ा क्या है? ये जमाअ़तें जो अल्लाह के रास्ते में जा रही हैं। ये काम किस तरीक़े से करें? एक तो इस बात को ज़ेहन में बिठा लें कि इस मेहनत को छह बातों की पाबन्दी के साथ करना है। छह नम्बरों से हटना नहीं है। ख़ूब इसे ज़ेहन में बिठा लें। और यह काम करने के लिये हमारा वक़्त मस्जिदों के अन्दर गुज़रे। और एक बात यह

ज़ेहन में बिठा लें कि जो ज़िम्मेदार (अमीर) जमाअ़त का बना हो, उससे जुड़कर काम करें। उसकी बात को मानें। बाज़ार में घूमना-फिरना न हो। काम के अन्दर लगे रहें। अब मैं वे छह बातें अ़र्ज़ कर दूँ।

छह नम्बर पूरा दीन नहीं

छह बातें क्या हैं? किस तरह हमें काम को शुरू करना है, और आख़िर तक काम को उसी तरीक़े पर करना है। ये जो छह नम्बर हैं यह पूरा दीन नहीं हैं। लेकिन पूरे दीन पर चलने की इससे इस्तेदाद (सलाहियत और योग्यता) पैदा होती है।

पहली चीज़

इन छह नम्बरों में सब से पहली चीज़ कलिमा है। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब नबी बने तो आपने कलिमे की दावत को लेकर घर-घर फिरना शुरू किया। वह कलिमे की दावत को लेकर घर-घर दर-दर फिरे। तो सब से पहली चीज़ कलिमा है। कलिमे के एक तो मायने हैं, और एक होता है इसका लफ़्ज़। इसका लफ़्ज़ (यानी उच्चारण) भी ठीक करना चाहियेः

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

बहुत आसान है। इसका तर्जुमा यह हैः

"सिवाये अल्लाह के कोई माबूद (इबादत और पूजने के क़ाबिल) नहीं, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके सच्चे रसूल हैं।"

अल्लाह का शुक्र है, उसका एहसान है कि हम सब की पेशानी अल्लाह ही के सामने टिकती है।

जड़ मज़बूत होनी चाहिये

लेकिन इस कलिमे को दिल में उतारने के लिये बार-बार अल्लाह की अ़ज़मत (बड़ाई) और अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत, अल्लाह के ख़ज़ाने, अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की सिफ़ात, अल्लाह की नाफ़रमानियों पर

पकड़ और फ़रमाँबरदारियों पर मदद, मरने के बाद अल्लाह ख़ुश होकर जन्नत में दाख़िल करें, नाराज़ हो जायेंगे तो जहन्नम में दाख़िल करें, बार-बार अल्लाह का तज़किरा हो, अल्लाह की बड़ाई का तज़किरा हो। यह जितना ज़बान से बोलेंगे और कानों से सुनेंगे उतना ही हमारे दिलों के अन्दर अल्लाह का यक़ीन उतरेगा, जड़ जमेगी। कलिमे की जड़ जम जाने के बाद फिर अगले सारे आमाल बड़े ताक़तवर बनते हैं। हर अ़मल में ताक़त पैदा होती है। अगर पेड़ की जड़ न जमी हो और आप पत्तों में पानी पिलाते रहे। फलों में पानी पिलाते रहे लेकिन जड़ सूख रही है, तो ख़ाली पत्तों और फलों को पानी पिलाने से कुछ नहीं होगा। जड़ मज़बूत होनी चाहिये। कलिमा यह जड़ है, और ज़ेहन के अन्दर यह बात बिठानी है कि कलिमा बोलकर और सुनकर ही अल्लाह की बड़ाई और उसकी ताक़त व क़ुदरत का यक़ीन आयेगा।

ज़िन्दगियों का बनाना और ज़िन्दगियों का बिगाड़ना अल्लाह के हाथ में है। दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों से ज़िन्दगियों के बनने और बिगड़ने का ताल्लुक़ नहीं है। जिसकी ज़िन्दगी अल्लाह बनाये उसकी ज़िन्दगी बनेगी। जिसकी ज़िन्दगी अल्लाह बिगाड़े उसकी बिगड़ेगी। लेकिन अल्लाह ज़िन्दगियों को अंधाधुंध बनाते भी नहीं और बिगाड़ते भी नहीं।

ज़िन्दगियों के बनाने का क़ानून

अल्लाह के नज़दीक ज़िन्दगियों के बनाने का उसूल और क़ानून मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ पाकीज़ा तरीक़ा है। जितना वह ज़िन्दगियों में आयेगा तो उतनी ज़िन्दगियाँ बनती चली जायेंगी, दुनिया व आख़िरत की। और जितना वह तरीक़ा ज़िन्दगियों से निकलता जायेगा, उतनी ज़िन्दगियाँ उजड़ती चली जायेंगी दुनिया और आख़िरत की। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा पूरी ज़िन्दगी में आये इससे अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला ज़िन्दगियों के बनाने का होगा। नेमतों के दरवाज़े अल्लाह तआ़ला खोलेंगे। और अगर तकलीफ़ें आईं तो उन तकलीफ़ों के अन्दर अल्लाह की मददें छुपी होंगी, और

अल्लाह की रहमतें छुपी होंगी। अगरचे तकलीफ़ है लेकिन उसके अन्दर आदमी को मज़ा आयेगा, अल्लाह का ताल्लुक़ मिलने की वजह से। यह है कलिमा! इसकी दावत को लेकर घर-घर और दर-दर फिरना और बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना है।

नमाज़ पर अल्लाह की मदद आती है

जब हमने यह इक़रार कर लिया कि हमें अल्लाह की बात को मानना है और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को मानना है। जब यह बात तय कर ली तो देखना पड़ेगा सब से पहले जो हुक्म है अल्लाह का, दिल में कलिमे का यक़ीन जमाने के बाद वह हुक्म नमाज़ का है। पाँचों वक़्त की नमाज़ यह हर मुसलमान मर्द और औ़रत पर ज़रूरी है। अब यह नमाज़ सिर्फ़ उठक-बैठक बनकर न रहे बल्कि नमाज़ ऐसी चीज़ है कि इस पर अल्लाह की मदद आती है। क्योंकि नमाज़ में अल्लाह पाक खुद हम से यह कहलवा रहे हैं:

اِيَّاکَ نَعْبُدُ وَاِيَّاکَ نَسْتَعِيْنُ ٥

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

मदद अल्लाह से माँगेंगे इबादत करने के बाद।

इबादत पर अल्लाह की मदद कब आयेगी?

लेकिन इबादत पर अल्लाह की मदद कब आयेगी? जब यह इबादत अल्लाह को पसन्द आ जाये। बाज़ार में कोई चीज़ लेकर आप बैठते हैं तो उसकी क़ीमत कब मिलती है? जब ख़रीदार को आपकी वह चीज़ पसन्द आ जाये तो फिर वह उसकी क़ीमत देता है। इसी तरह नमाज़ भी अल्लाह को पसन्द आ जाये।

नमाज़ अल्लाह को कब पसन्द आयेगी?

पसन्द जब आयेगी कि नमाज़ सही तरीक़े पर पढ़ी जा रही हो।

नमाज़ को सही तरीक़े पर पढ़ने में पहले तो उसका रुकूअ़-सज्दा, सही तरीक़े पर खड़ा होना, इसके साथ-साथ नमाज़ के अन्दर जो चीज़ें पढ़ी जाती हैं वे हमें सही याद हों। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें जो दुआ़यें बताई हैं वे हमें सही याद हों, और इसके साथ-साथ नमाज़ के अन्दर अल्लाह का ध्यान हो, नमाज़ के मसाइल से भी जानकारी हो। नावाक़फ़ियत (जानकारी न होने) पर नमाज़ सही नहीं होती।

इख़्तिलाफ़ी मसाइल जमाअ़त में बयान न किये जायें

तब्लीग़ का यह काम पूरे आ़लम में हमें करना है तो इसके अन्दर जो इख़्तिलाफ़ी मसाइल हैं, उनके तज़किरे को मना करते हैं। और वजह इसकी यह है कि हर आदमी मसले का बताने वाला बन जायेगा। हमारी जमाअ़तों में ज़्यादातर ऐसे लोग निकलते हैं जो नावाक़िफ़ होते हैं। तो हर आदमी मसले बताने वाला न बने। और दूसरी मस्लेहत यह है कि मसाइल में इख़्तिलाफ़ (राय का मतभेद) होता है। तो अगर मसाइल बयान करने शुरू किये तो इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और मतभेद) हो जायेगा और काम नहीं होगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मसाइल का तज़किरा नहीं किया जाता, फ़ज़ाइल का तज़किरा किया जाता है।

बड़ी अ़जीब चीज़

आसान सी तदबीर बता दी जाये आपको कि आप और हम अल्लाह से अपने बारे में जो चाहते हैं हम अल्लाह के बन्दों के बारे में वह करना शुरू कर दें। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह, बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हमारे ऐबों पर पर्दा डाले तो हम दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालें। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हम पर रहम करे तो हम दूसरों पर रहम करें। यह बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम यह चाहते हैं कि अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करे तो हम दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करें। इससे अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करेगा। बड़ी अ़जीब

चीज़ है यह।

मैंने तेरे खोटे अ़मल क़बूल किये

एक हिकायत

एक आदमी था। उसकी आ़दत यह थी कि वह खोटे रुपये ले लेता था, और माल पूरा देता था। पूरी ज़िन्दगी उसकी गुज़र गयी और उसका इन्तिक़ाल हुआ। मशहूर हो चुका था कि फ़लाँ दुकान पर खोटा सिक्का चल जाता है। और वह खोटे सिक्के ले लेता था। चीज़ पूरी देता था और वह खोटा सिक्का खुद किसी को नहीं देता था। दूसरे को खोटा सिक्का देना यह बुरा है। लेकिन खोटा सिक्का जान कर ले लेता था। लेना बुरा नहीं। मरने के बाद अल्लाह के सामने पेशी हुई। "क्या लाया है?" उसने कहा ऐ अल्लाह! कोई अ़मल तेरी शान के मुताबिक़ मेरे पास नहीं। तेरी शान बहुत बड़ी है। बस दुनिया से मैं इतना करके आया हूँ कि मैंने लोगों के खोटे सिक्के ले लिये, तो अल्लाह तआ़ला इसका जवाब देंगे कि तूने दुनिया में लोगों के खोटे सिक्के लिये तो मैं भी तेरे खोटे अ़मल क़बूल कर लूँगा। यह बड़ी अ़जीब चीज़ ज़िक्र कर रहा हूँ।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह से अपने बारे में जो मामला कराना हो, बन्दों के साथ वह मामला करना शुरू कर दो। बड़ी अ़जीब चीज़ है। बहुत मश्क़ का मौक़ा है। जमाअ़तों में निकल कर मश्क़ का मौक़ा है। साथियों के साथ भी और जहाँ जाओगे वहाँ वालों के साथ भी। यह है चौथी चीज़।

तब्लीग़ का काम सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये हो

एक है पाँचवीं चीज़...... वह है नीयत का ख़ालिस करना। यानी काम

जो दीन का किया जाये वह सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाये। उसमें दुनिया की कोई ग़रज़ न हो। अल्लाह को राज़ी कर लें। और मैं आपको बताऊँ कि अल्लाह को कौन राज़ी करेगा? जिस आदमी के अन्दर अल्लाह के ख़ज़ानों का यक़ीन उतरा होगा, अल्लाह की क़ुदरत और ताक़त का यक़ीन उतरा होगा, तो वह आदमी दीन का काम इस छोटी सी दुनिया की ग़रज़ के लिये नहीं करेगा। कभी भी वह नहीं करेगा। क्योंकि अल्लाह के ख़ज़ानों के मुक़ाबले में यह पूरी दुनिया मच्छर के पर की भी हैसियत नहीं रखती। तो जिसने अल्लाह के ख़ज़ानों का यक़ीन पैदा कर लिया अपने दिल में और अल्लाह की क़ुदरत का यक़ीन पैदा किया तो इन्शा-अल्लाह सुम्-म इन्शा-अल्लाह वह दीन का काम दुनिया के लिये कभी नहीं करेगा। बड़ा बनने के लिये कभी नहीं करेगा, सिर्फ़ अल्लाह के लिये करेगा।

ईमान और इख़्लास में ताक़त क्योंकर पैदा हो?

इसको मैं दूसरे लफ़्ज़ों में बताऊँ। जितनी ईमान के अन्दर ताक़त होगी उतना इस आदमी के इख़्लास में ताक़त होगी। और ईमान की ताक़त जो पैदा होती है वह बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना जिसका नाम है दावत की फ़िज़ा। इसमें ईमान की ताक़त पैदा होती रही तो इन्शा-अल्लाह इख़्लास की ताक़त भी पैदा होगी। हर अ़मल अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाये, इसकी हमें मश्क़ करनी है। इसमें किसी लाईन की ख़ुदग़र्ज़ी न आये, इसमें अपनी जी चाही न आये, बस अल्लाह राज़ी हो जाये।

अल्लाह राज़ी कब होगा?

लेकिन अल्लाह राज़ी कब होगा? जब वे पाँच बातें जो बताई गईं- ईमान की ताक़त हो, नमाज़ वाला जज़्बा हो, हुज़ूर वाला तरीक़ा हो, अल्लाह वाला ध्यान हो और ईसार व हमदर्दी हो। फिर यह लोगों के

हुक़ूक़ अदा करता रहे। बन्दों के हुक़ूक़ का अदा करना। यह तो बिल्कुल क़ानूनी हुक्म है ख़ुदा का। इसके बाद फिर ईसार व हमदर्दी वाली बात आती है जो अख़्लाक़ी हुक्म है कि जिस पर अल्लाह इसके दर्जों को बुलन्द करेगा। ये चन्द बातें जो आप हज़रात के सामने अ़र्ज़ की हैं, इसकी अन्दरूनी कैफ़ियतें हर अ़मल के अन्दर वजूद में आती चली जायें।

तब्लीग़ की मेहनत नबियों वाली मेहनत है

और एक छठी बात है और वह है दावत की मेहनत मक़ाम पर रहे तो करनी, बाहर रहे तो करनी। क्योंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं, और आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है। यह अल्लाह पाक ने तय कर दिया। नबियों का आना बेहद ज़रूरी था। क्योंकि नबियों के आने पर लोगों को अल्लाह वाला रास्ता मिलता था और लोग अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करते थे। अल्लाह को राज़ी करते थे। दुनिया में चमकते थे। मरने के बाद जन्नत में जाते थे लेकिन नबियों का आना जब बन्द हुआ तो फिर नबियों वाला काम रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस उम्मत के हवाले कर दिया कि यह नबियों वाला काम पूरी उम्मत मिलकर करेगी। ताकि पूरे आ़लम के अन्दर अल्लाह के बन्दों का ताल्लुक़ अल्लाह से हो जाये और अल्लाह के बन्दे ईमान वाले रास्ते पर आ जायें। अल्लाह के बन्दे अमन व अमान में आ जायें। अल्लाह की रहमतों में आ जायें। क्योंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरे आ़लम के लिये रहमत हैं। पूरी दुनिया वालों की परेशानी ख़त्म हो जायेगी। यह कब होगा? जब यह उम्मत इस दावत के काम को करे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस दावत के काम को कराने के लिये सवा लाख सहाबा किराम का मजमा तैयार कर दिया। क़ियामत तक के लिये वह नमूना रहेगा। क्योंकि क़ियामत तक जो लोग दुनिया में आयेंगे, अनेक हालात के, अनेक मिज़ाज के तो वे किस तरीक़े से दावत के काम को करें। ग़रीब आदमी कैसे करेगा, मालदार आदमी

कैसे करेगा, ज़्यादा सूझ-बूझ वाला आदमी कैसे करेगा, कम सूझ-बूझ वाला आदमी कैसे करेगा। क्योंकि हमारे इस दावत के काम में कोई अनफ़िट नहीं है।

हर अ़मल में हुज़ूरे पाक की पैरवी ज़रूरी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दावत का यह काम, तब्लीग़ का यह काम जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नियाबत में और नबियों की नियाबत में इस पूरी उम्मत को मिला है, वह पूरी ज़िन्दगी के लिये मिला है। अल्लाह तआ़ला ने यह कहा:

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप कह दो सब से कि अगर तुम लोग मुझसे मुहब्बत करते हो तो तुम मेरी पैरवी करो। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी करो। जब तुम रसूले पाक की पैरवी करोगे तो मैं तुमसे मुहब्बत करने लगूँगा।

अल्लाह कहते हैं कि मैं तुमसे मुहब्बत करने लगूँगा। पहला दर्जा तो यह है कि हम अल्लाह से मुहब्बत करें। दरमियान का वास्ता क्या है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी करें तो नतीजा क्या निकलेगा, अल्लाह हमसे मुहब्बत करने लगेंगे। और अल्लाह जब मुहब्बत करने लगेंगे तो इससे ऊँची दौलत क्या होगी हमारे लिये। लेकिन इसमें बीच की कड़ी क्या है? रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी। यानी आपके तरीक़े पर चलिये। अब देखिये खाने में हुज़ूर का तरीक़ा, पीने में, शादी में, मकान में, नमाज़ में, रोज़े में, हज में हुज़ूर का तरीक़ा ज़िन्दगी भर के लिये। चार महीने के लिये नहीं, चिल्ले के लिये नहीं, बल्कि ज़िन्दगी भर के लिये।

एक बात बड़े ध्यान से और ज़रा दिल लगाकर सुनो कि खाना, पीना, इस्तिन्जा, नमाज़, रोज़ा, इनमें हुज़ूरे पाक का तरीक़ा, हुज़ूरे पाक की पैरवी।

अ़र्ज़ यह करता हूँ कि वह मेहनत व दावत की लाईन और वह कोशिश जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नुबुव्वत मिलने के दिन से शुरू की और दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के दिन तक करते रहे, कोई दिन इससे ख़ाली नहीं गया।

दावत के काम को कितना और कैसे करें?

सहाबा ने जब से कलिमा पढ़ा, मौत तक उन्होंने दावत की मेहनत की। तो इसमें भी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा होना चाहिये। जैसे खाने में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा, पीने में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा। तो दावत की और दीन की मेहनत और कोशिश की जो लाईन है इसमें भी तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा होना चाहिये। और फिर बेतकल्लुफ़ अ़र्ज़ कर दूँ कि हुज़ूरे अकरम ने इस काम को कितना किया और कैसे किया। सहाबा ने कितना किया और कैसे किया। तो आपका दिल गवाही देगा कि यह दावत का काम और यह दीन की मेहनत का काम इसको सहाबा ने अपना काम बनाया ज़िन्दगी भर के लिये। तो यह तब्लीग़ का जो काम है यह तो हमें अपना काम बनाना है और काम बना करके करना है। लेकिन चूँकि हम इससे बहुत दूर हो चुके हैं, इन चौदह सौ सालों के अन्दर, तो हमारे बड़ों ने इसकी बिल्कुल पहली सीढ़ी हमें यह बता दी कि ज़िन्दगी में एक बार चार महीने अल्लाह के रास्ते में निकलना और इस पाकीज़ा ज़िन्दगी को सीखना और इस पाकीज़ा काम को सीखना, फिर साल का एक चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, एक अपनी मस्जिद में एक दूसरी मस्जिद में, और रोज़ाना की तालीम अपने घर में, अपनी औ़रतों, बच्चों के अन्दर यह रोज़ाना की दो तालीमें। और रोज़ाना ढाई घण्टे अपनी मस्जिद के आबाद करने में फ़ारिग़ करना, रोज़ाना के ढाई घण्टे इसके साथ तस्बीहात व तिलावत वग़ैरह की पाबन्दी में, इतना अगर आदमी कर ले तो उसने गोया पहली सीढ़ी पर क़दम रखा इस पाकीज़ा काम की, जो पाकीज़ा काम अल्लाह के नबी पूरी

उम्मत के सुपुर्द कर गये हैं, ज़िन्दगी भर के लिये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को हम अपना काम बनायेंगे तो हमारी समस्याएँ हल होंगी

ध्यान से इस बात को दिल में उतार लो कि हम हुज़ूरे पाक के काम को जितना अपना काम बनायेंगे। आप हज़रात बिल्कुल इस बात के बारे में परेशान न होना कि हमारी औ़रतों की परवरिश का क्या होगा और हमारे बच्चों की परवरिश का क्या होगा। जो अल्लाह डाकुओं को पालता है, तो अगर यह मजमा और हम सारे के सारे रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को अपना काम बनायें, तो क्या अल्लाह हमें भूखा रखेगा? हमारी औ़रतों को भूखा रखेगा? अल्लाह हमारे बच्चों को भूखा रखेगा? इतनी बड़ी बात अल्लाह के बारे में समझना, हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं। नीयत करें हम सारे के सारे कि अल्लाह पाक हमको इस छोटी सी ज़िन्दगी जो चालीस-पचास साल की ज़िन्दगी है, मौत आने के बाद हम कुछ नहीं कर सकेंगे, चाहेंगे तो भी नहीं कर सकेंगे। तो यह ज़िन्दगी हमारी सिर्फ़ खाने कमाने में न गुज़रे बल्कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को हम अपना काम बनायें, और हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बनायें। हुज़ूरे पाक के ग़म को अपना ग़म बनायें।

ग़ैबी तरीक़े पर अल्लाह परेशानियों को दूर करेगा

अगर हमने हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बना लिया तो मैं सच कहता हूँ कि यह दुनियावी लाईन की जो तकलीफ़ें हैं, या तो अल्लाह पाक इन तकलीफ़ों से नजात देगा और अगर तयशुदा तकलीफ़ें आ भी गईं तो वे तकलीफ़ें आसान होंगी हुज़ूरे पाक के दर्द और ग़म के मुक़ाबले में। और अल्लाह ग़ैबी तरीक़े से उन परेशानियों को दूर करेगा। जैसे किसी की नाक बन्द हो गई और वह नोशादर और चूना रगड़ कर सूँघे तो कैसे नाक उसकी खुल जाती है। तो अल्लाह पाक परेशानियों को दूर करेगा,

ज़रूरतों को पूरा करेगा।

अल्लाह थोड़े वक़्त में बरकत देगा

इसका यह मतलब बिल्कुल न लिया जाये कि हुज़ूरे पाक के काम को अपना काम बनाने वाला आदमी कारोबार नहीं करेगा या घर नहीं देखेगा। कारोबार भी करना होगा, घर भी देखना होगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सब किया। लेकिन हुज़ूर के काम को काम बनाने का मतलब यह हो कि जब अल्लाह के दीन का तक़ाज़ा आ जाये तो अपनी कारोबारी और घरेलू तरतीब को थोड़ा आगे-पीछे करना और दीन के तक़ाज़े को मुक़द्दम करना। उससे फ़ारिग़ होकर फिर कारोबार और घर को देखना। और उसमें अल्लाह पाक का मामला यह होगा कि वक़्त चाहे थोड़ा बचे, कारोबार में भी और घर में भी, लेकिन अल्लाह पाक थोड़े से वक़्त के अन्दर हैरत-अंगेज़ बरकतें दे देगा। वह क़ादिरे मुतलक़ है।

हमारे करने का काम क्या है?

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारे बड़ों ने बहुत सोच-समझकर हमारी सारी कमज़ोरियों की रियायत फ़रमाकर हमें यह बताया है कि तुम कुछ नहीं कर सकते तो पूरी ज़िन्दगी में से एक बार चार महीने दे दो। और फिर सालाना, माहाना, रोज़ाना और हफ़्ते की जो तरतीब बतायी गयी वह करो। इसके अन्दर क्या होगा? कारोबार और घरेलू तरतीब जो है, उसको ज़रा आगे-पीछे करना होगा। आगे-पीछे तो होगा ही लेकिन उसके आगे-पीछ करने में हमारा अल्लाह से जो ताल्लुक़ होगा, मक़ामी काम और बाहरी काम करने में जो हम सब के दिल में अल्लाह का ताल्लुक़ पैदा होगा, और जो नबियों का ग़म और दर्द दिलों के अन्दर पैदा होगा, कि ऐ अल्लाह! दुनिया के अन्दर करोड़ों आदमी बग़ैर कलिमे वाले मर-मरकर जहन्नम में जाते रहे और हमने इसके बारे में कुछ नहीं किया।

और हमारे करने का काम क्या है? कि जिसने कलिमा पढ़ा, उसमें

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली पाकीज़ा ज़िन्दगी, रहन-सहन आ जाये, पाकीज़ा मामलात और लेद-देन आ जाये। अख़्लाक़ ऊँचे और शरीफ़ाना आ जायें।

आख़िरत की दौलत व सरमाया

इस मक़सद के लिये मेहनत व दावत की वह तरतीब दरकार है जो अ़र्ज़ की गयी। साथ ही महीने के तीन दिन इस काम के लिये फ़ारिग़ हों। पहले तो रोज़ाना ढाई घण्टे हों, न मालूम उस ढाई घण्टे के अन्दर आप कितने घरों और दरों पर जायेंगे और आप कितने दर्द और फ़िक्र के साथ उस ढाई घण्टे के अन्दर न मालूम कितने लोगों का रुख़ अल्लाह की तरफ़ मोड़ने का ज़रिया बन जायेंगे।

यह आपके लिये एक दौलत व सरमाया होगा और आख़िरत के अन्दर आपके काम आयेगा। इसलिये सारे का सारा मजमा इस बात को ठान ले कि ऐ मेरे अल्लाह! हम इस दुनिया के अन्दर आये हुए थे हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दर्द को अपना दर्द बनाने, ऐ अल्लाह! हम कहाँ लग गये, सिर्फ़ खाना और कमाना। इसलिये अल्लाह से माफ़ी माँगकर और यह कहकर कि ऐ अल्लाह! हमारी कमज़ोरियों की रियायत करके, हमारे बड़ों ने जो उम्र भर के चार महीने कहे हैं, ऐ अल्लाह! वह हम से तू दिलवा ही दे। और सालाना चिल्ला और माहाना तीन दिन ऐ अल्लाह! इतना तो हम कम से कम कर गुज़रें। सारा मजमा इसके लिये नीयत करे।

क़ीमती लोग

दो क़िस्म के लोग इस मजमे में बैठे हैं। कुछ तो अल्लाह के रास्ते में जा रहे हैं। अल्लाह के रास्ते में जाने वाले इतने क़ीमती लोग हैं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको छोड़ने जाया करते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनको छोड़ने जाया करते थे।

अल्लाह की राह में निकलने के फ़ज़ाइल

अल्लाह की राह में निकलने के फ़ज़ाइल बताये गयेः

لَغَدْوَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْرَوْحَةٌ خَيْرٌ مِّنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا

एक सुबह या एक शाम अल्लाह के रास्ते में निकलना दुनिया और इसके अन्दर की सारी चीज़ों से बेहतर है।

किस क़द्र ख़ुशनसीबी, किस क़द्र नेकबख़्ती है। अल्लाह के रास्ते में निकलने वालों के कपड़ों के ऊपर जो धूल और बदन पर जो धूल आती है, उस बदन पर जहन्नम का धुआँ हराम हो जाता है। कितनी ख़ुशनसीबी है निकलने वाली जमाअ़तों की कि अल्लाह तआ़ला उनके चेहरों की तरफ़ देखने में भी हम उम्मीद रखते हैं कि सवाब देगा। ये कितने मुबारक चहरे हैं अल्लाह के रास्ते में जाने वालों के, चाहे ये अपने घरों पर दर्ज़ी थे, सुनार थे, लुहार थे, टैक्सी वाले थे, खेती वाले थे, लेकिन इस वक़्त तो ये अल्लाह के रास्ते में जा रहे हैं। इसलिये अल्लाह के रास्ते में जाने वाले ये बड़े क़ाबिले क़द्र हैं।

मक़ामी ज़िम्मेदारों से गुज़ारिश

पूरे मजमे से और पूरे हिन्दुस्तान के लोगों से हम हाथ जोड़कर यह गुज़ारिश करेंगे कि ये पाकीज़ा और मुबारक लोग तुम्हारे इलाक़ों में जब आयें, जब तुम्हारे गाँव में आयें, तुम्हारे प्रदेश में और ज़िले में जब आयें तो बिल्कुल इनको लिपट जाओ। इनको इस्तेमाल करो, इनकी सलाहियतों से फ़ायदा उठाओ।

जमाअ़त में निकलने वाले फ़रिश्ते नहीं

मेरे मोहतरम दोस्तो! इन हमारी निकलने वाली जमाअ़तों से अगर कुछ भूल-चूक हो जाये इसलिये कि निकलने वाले ये लोग फ़रिश्ते नहीं हैं, न मालूम किन-किन को ये लोग छोड़कर निकले हैं। अगर इनसे कुछ चूक हो जाये तो बजाय इसके कि इनको लानत-मलामत की जाये, हर जगह

हमारे काम करने वाले दोस्त मौजूद हैं। वे इनके साथ लगकर इनके अन्दर की कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करें।

एक तरफ़ से हिजरत, दूसरी तरफ़ से नुसरत

यह हमारा पुराना काम करने का तब्क़ा मुल्क में फैला है। ये जमाअ़तें जो जा रही हैं, इनके साथ रहें। इनको गश्त करायें। इनसे तालीमें करायें और इनसे जमाअ़तें निकलवायें। इनमें जो सलाहियतों के लोग हैं, उस सलाहियत (क़बलियत और योग्यता) के एतिबार से इनको इस्तेमाल किया जाये, यही नुसरत (मदद) है। जो मदीने वालों ने मक्का वालों के साथ की थी। इसको इतनी अहमियत हासिल है, इतना ज़रूर करें। एक तरफ़ हिजरत एक तरफ़ नुसरत।

काम छह नम्बरों की पाबन्दी से करें

मैंने आप हज़रात के सामने छह नम्बर बताये। इन छह नम्बरों की पाबन्दी के साथ हमें काम करना है। एक बात और अ़र्ज़ कर दूँ। चन्द बातें ऐसी हैं जिनमें अपने वक़्त को मशग़ूल करना है। जो जाने वाले अहबाब (दोस्त) हैं, वे भी ध्यान से सुन लें कि चन्द बातें ऐसी हैं जिनमें अपने वक़्त को मशग़ूल करना है।

एक तो दावत के काम में। हमारे काम करने वाले जमाअ़तों में घूमने वाले एक तो अपना वक़्त दावत के काम में लगायें। दावत के काम के अन्दर एक तो उमूमी गश्त है, एक ख़ुसूसी गश्त है। एक इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर जो भाई मिले तो उसके सामने भी अल्लाह की बात करना, अपने ज़िम्मेदार की इजाज़त के साथ।

अमीर के बजाए "ज़िम्मेदार" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करें

अमीर के बजाए अब लफ़्ज़ "ज़िम्मेदार" का अ़र्ज़ किया जाता है। इसलिये कि अमीर के लफ़्ज़ में एक जगह हमें बड़ी परेशानी हुई। अमीर के मायने उनके यहाँ गवर्नर के हैं। वहाँ के लोग बहुत फ़िक्र में थे कि

बाहर का कौन गवर्नर आ गया।

अब हमारे मुल्क के अन्दर अमीर एक ओहदा बन गया तो इस पर परेशानियाँ आईं तो हमारे मौजूदा हज़रत जी दामत बरकातुहुम ने मस्लेहत को सामने रखकर यह कई बार फ़रमाया कि भाई ज़रा लफ़्ज़ ज़िम्मेदार कहो, ज़िम्मेदार का लफ़्ज़ कहो। अल्लाह तआ़ला हमें बड़ाई से बचाये। बड़ाई हम में न आये।

हमारा वक़्त बरबाद न हो

उमूमी गश्त और खुसूसी गश्त के साथ इज्तिमाई दावत का भी एहतिमाम हो। जैसे मजमे के अन्दर बयान हो रहा है, उसमें हमारा वक़्त लगे। या हमारा वक़्त लगे तालीम के अन्दर। तालीम के अन्दर किताबों का पढ़ना भी है। इन्फ़िरादी (व्यकितगत) तौर पर सीखना-सिखाना भी है, वक़्त ज़ाया (बरबाद) न हो जाये। तालीम में वक़्त लगे, ज़िक्र व तिलावत में, दुआओं में, नमाज़ों में। और एक साथी दूसरे साथी की ख़िदमत गुज़ारी में वक़्त लगाये।

चन्द ऐसी बातें जिनसे बचना ज़रूरी है

अब चन्द ऐसी बातें हैं जिनसे बचना बहुत ज़रूरी है। एक तो किसी से कुछ माँगा न जाये। दूसरे यह कि अपने दिल के अन्दर दूसरे से माल या खाने का ख़्याल न लाया जाये। तीसरी यह बात कि भाई हमको अगर अल्लाह ने बहुत कुछ दे रखा हो तो फ़ुज़ूलख़र्ची से बचें। ये चन्द बातें ऐसी हैं कि जिनसे हम बचें।

ऐसे काम जिनमें वक़्त कम से कम लगायें

अब चन्द ऐसे काम हैं कि उनमें वक़्त ज़रूरत के लिहाज़ से कम से कम लगे। लगाना तो पड़ेगा ही, जैसे खाना और पीना, पाख़ाना व पेशाब, सोना और ज़रूरत की बात करना। इसमें ज़्यादा वक़्त न लगे। इस बात का लिहाज़ हमें रखना है।
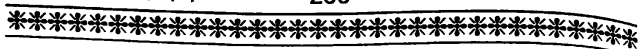
ज़िम्मेदार यानी अमीर की बात मान कर चलें

एक बात का ख़ूब ख़्याल रहे कि जो जमाअ़त बनेगी उसका एक ज़िम्मेदार होगा। उस ज़िम्मेदार की बात मानकर चलना। और जो साथी ज़िम्मेदार हो, वह अपने साथियों को तरग़ीब के साथ चलाये।

सफ़र के मामूलात क्या हों?

ऊपर ज़िक्र हुई बातों और छह नम्बरों के बयान में बहुत सी बातें आ गयी हैं आपके सामने, लेकिन चौबीस घण्टे का वक़्त कैसे गुज़ारना है यह मैं मुख़्तसर तौर पर अ़र्ज़ करूँगा। एक बात पहले अ़र्ज़ कर दूँ कि आप जहाँ जायेंगे, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि अक्सर जगहों पर हमारे पुराने काम करने वाले आपको मिल जायेंगे। आप उन पुराने काम करने वालों को बाख़बर करके, उन सब को साथ लेकर अ़मली ज़िन्दगी उनसे सीखें। आप सब हज़रात यहाँ से जब हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल् हसन साहिब अमीरे जमाअ़त) से मुसाफ़ा करके रवाना हों तो अपनी जगह तजवीज़ कर लें। आगे जो रेल या मोटर वग़ैरह जो इन्तिज़ाम करना हो, उनके साथी मुक़र्रर कर दें, और पूरे वक़्त का नज़्म (व्यवस्था) कर लें कि किस वक़्त तालीम करनी है, किस वक़्त आराम करना है, किस वक़्त जाना है।

आप हज़रात पैसे भी जमा कर लें थोड़े-थोड़े किसी ऐसे आदमी के पास कि जिस पर आपको इत्मीनान हो। बाज़ मर्तबा ऐसे अजनबी होते हैं कि लेकर चले जाते हैं। उसके बाद परेशानी होती है। मोटर स्टैंड पर आप जायें तो जो जानकार आदमी हो, वह अपना काम करे और आप बैठकर तालीम का हल्क़ा करें। चूँकि हर तरह के लोग होंगे, हमारे मुल्क में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिम भाई भी, तो उस तालीम के हल्क़े में ईमान की बात हो, अख़्लाक़ की बात हो, आख़िरत की बात हो, अल्लाह की बात हो, जिससे उनके दिल मानूस हों वे भी आयें और बैठ जायें। रेल का वक़्त हमारा ज़ाया न हो। साथियों का तारुफ़ (परिचय) करें, पहचानें

उनकी सलाहियत कैसी है? अगर उनमें सलाहियत है तो काम के अन्दर उसका इस्तेमाल हो। उसी के अन्दर अन्दाज़ा लगायें कि हमारे कौनसे साथी को पूरी नमाज़ याद है कौनसे साथी को पूरी याद नहीं। किसको कलिमा याद है, किसको याद नहीं। तो यह ज़रा ध्यान दो, सीखना और सिखाना। क्योंकि चिल्ला भी आदमी गुज़ार कर आये, उसको नमाज़ भी याद न हो तो वक़्त अच्छा नहीं गुज़रा। यह सब काम रेल से ही शुरू कर दो। रेल के मुसाफ़िरों से अख़्लाक़ वाला मामला हो। नमाज़ का वक़्त आये तो नमाज़ को वक़्त के अन्दर रेलों में खड़े होकर अगर स्टेशन पर उतरने की गुंजाइश न हो, और अगर फ़रागत हो तो उतर कर पढ़ें तो ज़्यादा अच्छा है। लेकिन ख़ूब इत्मीनान हो घबराकर नहीं। रेल से उतरने के बाद अपना सामान, अपने सामने रखकर, साथियों का ज़ेहन बनाकर दुआ माँगकर वहाँ से आप बस्ती के अन्दर रवाना हों।

शैतान का ज़हरीला तीर

रवानगी के वक़्त नज़रें नीची करके ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र करते हुए रास्ते के एक तरफ़ हों। नज़रों की बड़ी हिफ़ाज़त की जाये। तस्वीरों की तरफ़ या औरतों की तरफ़ निगाहें नहीं जानी चाहिएँ। टेलीवीज़न यह शैतान का ज़हरीला तीर है। अल्लाह बचाये गुनाह की शुरुआत नज़र से होती है और इन्तिहा ज़िनाकारी पर होती है। तो आदमी शुरुआत ही में बचा रहे। इसलिए नज़रों की बड़ी हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

बस्ती में पहुँचकर क्या करें?

अब उसके बाद जिस मस्जिद में आपको जाना है, वहाँ आप पहुँचें। अगर पैदल जमाअत है तो रास्ते के अन्दर सीखने-सिखाने की फ़िज़ा हो, और बस्ती में दाख़िल होने से पहले ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो लें। फिर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद के अन्दर सुन्नत के तरीक़े से दाख़िल हों। अपना सामान किसी कमरे वग़ैरह में रखें, और मश्विरा के लिये इस्तिन्जा वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर दो रकअत 'तहिय्यतुल् मस्जिद' पढ़कर बैठें, और

मक़ाम के अन्दर जो फ़िक्रमन्द लोग हैं, उनको मश्विरे के अन्दर बुला लें। मस्जिद के इमाम साहिब हों, बैठकर मश्विरा करें। मश्विरे के अन्दर चौबीस घण्टे का प्रोग्राम बना लें।

मश्विरे का उसूल

मश्विरे के अन्दर मक़ामी लोगों से भी राय लें। ज़िम्मेदार मश्विरे के अन्दर जिससे राय माँगे वह दे और जिससे न माँगे वह न दे। फिर ज़िम्मेदार फ़ैसला करे कि क्या करना है। अपनी राय के ख़िलाफ़ अगर मश्विरा है तो भी ख़ुशी के साथ उस काम को करे। और अगर फ़ैसला अपनी राय के मुवाफ़िक़ हो तो डरते रहना कि उसमें कहीं नुक़सान न हो। जो ज़िम्मेदार फ़ैसला करे वह सब की रायों का सम्मान करते हुए किसी की राय की तौहीन न करे। राय का एहतिराम व सम्मान करते हुए फ़ैसला करे। मश्विरे के अन्दर दो बातों का ख़्याल रखा जाये- एक तो यह कि मस्जिद से जमाअ़त नक़द कैसे निकले, दूसरी बात यह कि इस मस्जिद में जमाअ़त कैसे बने? इन दो बातों का मश्विरा करना है।

चौबीस घण्टे का निज़ाम बना लें

मश्विरे में ही चौबीस घण्टे का निज़ाम बना लें। ख़ुसूसी गश्त के अन्दर कौन जायेगा और तालीम किस वक़्त में करनी है। रात के वक़्त में बयान मग़रिब के बाद होगा या इशा के बाद होगा, यह मक़ामी लोग बतायेंगे। बयान किसके ज़िम्मे हो। यह सारी बातों का मश्विरा चौबीस घण्टे का हो जाये।

ख़ुसूसी गश्त

ख़ुसूसी गश्त करने के लिये दुनियावी या दीनी लाईन के जो ज़िम्मेदार लोग हों। आ़लिम या शैख़ हों, उनके पास जाना, उनके वक़्त में उनसे मुलाक़ात करना, कारगुज़ारी सुनाना, और उनसे दुआ़ का लेना। और दुनियावी लाईन के जो ज़िम्मेदार हों उनके पास जाकर छह नम्बरों के

अन्दर रहकर बात करना। किसी क़िस्म के सियासी इख़्तिलाफ़ की बात न करना, न किसी की मुख़ालफ़त की बात करना। बहुत से लोग मुख़्तलिफ़ (अनेक और विभिन्न) काम करते हैं। तो हमें न किसी की हिमायत करना, न किसी की मुख़ालफ़त की बात करना। छह नम्बरों के अन्दर रहकर उस भाई को किसी सूरत से आमादा करने की कोशिश करना। चार महीना, चिल्ला, दस दिन, तीन दिन या कम से कम वह ज़िम्मेदार अपना कोई आदमी लगा दे जो गश्त ही करा दे।

उमूमी गश्त

उमूमी गश्त आपको करना है तो अगर मग़रिब के बाद बयान करना है तो आप अ़सर के बाद सारे मजमे को जमा रखें। मक़ामी लोगों को भी, इसी तरह उनसे अ़सर से इशा तक का वक़्त ले लें। जो दे दे बेहतर है, जो न दे उससे कह दें कि भाई तुम ज़रा आते हुए दूसरे को भी लेते आना। यहाँ तक कि उनकी जमाअ़तें बनायी जायें। जितनी भी जमाअ़तें बनें। जो बाक़ी बचे तो उनको तीन-तीन आदमियों की जमाअ़तें बनाकर अलग-अलग आदमियों की मुलाक़ातों के लिये जाना मुफ़ीद हो तो इसे भी करें। जो उमूमी जमाअ़त बनकर जाये वह दुआ़ माँगकर जाये, नज़रें नीची करके चलें, ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र करें, और यह समझें कि ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है कि दर-दर दावत लेकर जाना यह काम तो नबियों का है। ऐ अल्लाह! हम कहाँ और कहाँ यह काम! सिर्फ़ तेरा फ़ज़्ल और तेरा करम है, तू हमारे इस लगने को क़बूल कर ले।

गश्त की अहमियत ख़त्म न होने पाये। नज़रें नीची हों, ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र हो। एक आदमी बोलने वाला मुक़र्रर कर लें, और सारी जमाअ़त मिलीजुली चले। जो सामने आदमी मिले, उससे बात करे। एक दो मिनट, ज़्यादा लम्बी चौड़ी तक़रीर न हो। ज़ेहन बनाने की बात हो, नक़द उनको उठाकर मस्जिद की तरफ़ लाने की कोशिश की जाये। उन लोगों के साथ बहुत ही अहमियत के साथ बात करे।

उमूमी गश्त में मुतकल्लिम क्या गुफ़्तगू करेगा?

बात क्या करनी है? इसके लिये कोई लफ़्ज़ मुतैयन नहीं। लेकिन अन्दाज़ा आप हज़रात को हम बता दें। इसके आगे पीछे आप बात करें। सलाम करो, मुसाफ़ा करो और उनसे कहो कि भाई आप और हम मुसलमान हैं, हमने कलिमा पढ़ा और कलिमे के अन्दर हमने इक़रार किया कि अल्लाह के हुक्मों पर हम चलेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर हम चलेंगे। इससे अल्लाह हमारी दुनिया और आख़िरत को बनायेगा। लेकिन रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा बग़ैर मेहनत के ज़िन्दगियों में आता नहीं। इस सिलसिले में हमारी जमाअ़त फ़लाँ जगह से आयी है। हमारे कुछ भाई मस्जिद में बैठे हैं। आप भी तशरीफ़ ले चलिये और मग़रिब के बाद तफ़सीली बात होगी।

आप गश्त के लिये जायें तो मस्जिद में कुछ भाईयों को बिठा दें। एक दो साथियों को ज़िक्र में बिठा दें, और साथी हल्क़ा बना लें।

गुफ़्तगू बहुत अख़्लाक़ और नर्मी के साथ हो। अगर कोई आदमी धुतकार दे तो उसे बरदाश्त करें। नबियों ने भी बरदाश्त किया है। बिल्कुल कुछ नहीं कहना, यह बरदाश्त करना, अल्लाह से बहुत कुछ दिलवायेगा।

अब जो शख़्स तैयार हो गया हो। अपने गश्त के साथियों में से एक दो साथियों को उसके साथ लगा दें जो उन्हें लेकर आये। अगर नमाज़ नहीं पढ़ी है तो वुज़ू कराके नमाज़ पढ़ायें फिर हल्क़े में बिठा दें।

उमूमी बयान किस तरह हो?

गश्त की जमाअ़त मग़रिब की नमाज़ होने से पहले वहाँ पहुँच जाये। मग़रिब के बाद बयान है, जिसके ज़िम्मे हो, वह अपनी सुन्नतों को मुख़्तसर करे। खुशू व खुज़ू में फ़र्क़ न आने पाये। (यानी नमाज़ उसके आदाब के साथ मुकम्मल की जाये)। मुख़्तसर होने से कोई खुशू व खुज़ू में फ़र्क़ नहीं आता। और फिर फ़ौरन बयान करने खड़ा हो जाये, दूसरे

जो साथी हैं मजमे को जमा करें बहुत अख़्लाक़ के साथ।

छह नम्बरों के अन्दर रहकर बात करना, और वाक़िआत जो मोतबर किताबों में हैं, उनको बयान करना। हदीसों के अन्दर बयान करने में ख़तरा है कि कहीं मौज़ू (बे असल और गढ़ी हुई) हदीस बयान न हो जाये। इस बिना पर ज़रा ख़ास तौर पर एहतियात करना है। वे लोग जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, अपनी सीधी-सादी बात छह नम्बरों में रहकर जज़्बात को उभारने वाले सहाबा के वाक़िआत जो किताबों में हैं, बयान करें। चार-चार महीने के लिए ख़ुद को दावत व तब्लीग़ की मेहनत के लिये फ़ारिग़ करें। उसके बाद दूसरे लोगों को तैयार करें, इन्शा-अल्लाह जब ख़ुद खड़े होकर बोलेंगे तो दूसरे भी बोलेंगे। फिर चिल्ले के लिये तैयार कर लें, फिर उसके बाद दस दिन। आख़िरी काम आपको यह करना होगा कि मस्जिदवार वहाँ की जमाअ़त बन जाये, जहाँ नहीं बनी है। और जब बन जाये तो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी न रहे, बल्कि अ़मलन वह जमाअ़त काम करे मस्जिदवार जमाअ़त का काम उन्हें बताना। और जिन लोगों ने नाम दिया है, सुबह गश्त करके उनकी वसूलयाबी करना। और यह कोशिश करें कि हर मस्जिद से जमाअ़त निकल जाये। चाहे इसमें एक दो दिन ठहरना ही पड़े।

खाने-पीने की व्यवस्था

अपना खाना पकाने का इन्तिज़ाम साथ में लेकर जाये। ख़ुसूसी गश्त से पहले खाना पकाने का इन्तिज़ाम हो जाये। अगर कोई खाने की बात करे तो उसके लिये न तो क़बूल करना, हर हाल में यह भी नहीं, और न तो रद्द ही करना, हर हाल में यह भी नहीं। दीन का फ़ायदा जिस तरह भी हो, उस तरह मश्विरे से फ़ैसला करे।

पुराने काम करने वालों का फ़र्ज़

इस तरतीब पर हमारा उमूमी गश्त भी हो, बयान भी हो, जमाअ़त हर जगह से निकले। यह चौबीस घण्टे गुज़ारने का वक़्त आप हज़रात के

सामने मुख़्तसर अ़र्ज़ किया। लेकिन हमारे वे पुराने काम करने वाले जो पूरे मुल्क में फैले हुए हैं। हमारे हज़रत जी के भरोसे वाले हैं। वे हज़रात इस बात पर बहुत ही ध्यान दें कि आने वाली इन जमाअ़तों की ख़ूब ख़बर रखें, उनके ऐबों को न देखें, कमज़ोरियों को न देखें। अगर कमज़ोरियाँ हैं उनको इन्तिहाई शफ़क़त व मुहब्बत के साथ उसूल सिखायें।

चन्द बातें सिर्फ़ गिना देता हूँ। सारा मजमा तय करके जाये। एक तो मस्जिदवार जमाअ़तों का बनाना। इसे पूरा मजमा ठान ले। जमाअ़तों में जाने वाले भी और न जाने वाले भी, कोई मुश्किल काम नहीं। यह जमाअ़त जो बनी है, महीने के तीन दिन, हफ़्ता के दो गश्त, रोज़ाना की तालीम मस्जिद और घर की, और चौबीस घण्टे में चन्द मिनट मुज़ाकरा कर लें कि पूरी बस्ती में दीन कैसे आये? दूसरी बात ढाई घण्टे रोज़ाना के हर आदमी मस्जिद की आबादी के लिये दिया करे। और दूसरे से लिया करे ताकि मस्जिद हर वक़्त आदमियों से आबाद हो, और वे फ़िक्र से पूरी बस्ती में काम करें।

काम की अ़मली मश्क़ क्योंकर हो?

देखो एक बात और बतायें। दावत के काम को कैसे करें। हर जगह ये पुराने काम करने वाले अ़मली तौर पर करा देंगे। और फिर पुराने काम करने वालों से नये लिपट जायें और खुशामद करें, इतनी खुशामद करें कि उन पुराने काम करने वालों को शर्म आ जाये और तुम्हें ख़ुद बतायें और फिर पुराने ज़्यादा खुशामद न करायें। इन्शा-अल्लाह हर मस्जिद के अन्दर हो सकता है कि मस्जिदे नबवी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की झलक पैदा हो जाये। और हर बस्ती में मदीना मुनव्वरा की झलक पैदा हो जाये।

औ़रतो और बच्चों का ज़ेहन बनाने की फ़िक्र करें

एक बात और ज़ेहन में रखें कि औ़रतें दुनिया में मर्दों से ज़्यादा हैं, और बच्चे औ़रतों से ज़्यादा, इसलिये अपनी औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन बनाने की फ़िक्र करें। यह हर जगह कहीं भी और ख़ुद भी करें।

जमाअ़तें ज़्यादा से ज़्यादा क्योंकर निकाली जायें?

एक बात और अ़र्ज़ करनी है कि घराने के अन्दर जितने कमाने वाले हैं, जमाअ़तों में आना-जाना ऐसे अन्दाज़ से करें कि आधे जमाअ़तों में फिरें और आधे घर पर कारोबार और मक़ामी ज़रूरतों और काम को संभालें। बरकत देने वाले अल्लाह हैं। एक बात आख़िरी और अ़र्ज़ करनी है कि ये हमारी जमाअ़तें ख़ाली फिरकर वापस न आयें, बल्कि दरमियान में हर बस्ती से जमाअ़त निकालें। अगर आप ऐसा न कर सकें तो भाई कम से कम दर्जा यह है कि पूरे चिल्ले में कम से कम दो तीन जमाअ़तों को ही निकाल लायें चिल्ले की। अगर आपने यह काम कर लिया तो अगर हज़ार जमाअ़तें जा रही हैं और इज्तिमे हों तो ये हज़ार जमाअ़तें चिल्ले वाली जब तक घर होंगी, दो हज़ार दूसरी फिर रही होंगी। अगर यह सिलसिला साल भर चला तो लाखों जमाअ़तें दुनिया में बग़ैर किसी इज्तिमे के फिर रही होंगी। और इज्तिमा से निकलने वाली इनके अ़लावा होंगी।

असल मसला अल्लाह की तरफ़ से है

ये सारी बातें जो बताईं, ये ज़ाहिरी असबाब के तौर पर हैं। लेकिन असल मसला अल्लाह की तरफ़ से है। क़बूलियत अल्लाह की तरफ़ से है। इस क़बूलियत के लिये रातों को उठ-उठकर अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना कि ऐ अल्लाह! करने वाला तू ही है। यह तेरा एहसान है। ऐ अल्लाह! तू क़बूल कर और इसमें ऐसा असर डाल दे कि पूरी दुनिया हर उम्मती हुज़ूरे पाक के काम को अपना काम बना ले, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ग़म को अपना ग़म बना ले। हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बना ले, और बेचैन हो जाये हर उम्मती हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम के लिये। और ऐ अल्लाह! इसमें इतने असरात डाल दे कि पूरी दुनिया के इनसानों के लिये हिदायत के दरवाज़े खुल

जायें। ताकि क़ियामत के दिन जब हम जन्नत में जायें तो पूरे आ़लम के करोड़ों लोगों को लेकर हम जन्नत में जायें। ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं को माँगना। देखो चाहे तुम भाषा नहीं जानते हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला दिलों के हाल को जानता है। गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं को माँगोगे तो इन्शा-अल्लाह जहाँ तुम्हारी हमारी जमाअ़तें नहीं गुज़रेंगी, अल्लाह पाक ऐसा क़ादिरे मुतलक़ है कि वहाँ पर भी हिदायत के दरवाज़े खोल देगा और फिर कानों में आवाज़ें आयेंगी कि फ़लाँ मुल्क अल्लाह की तरफ़ ऐसा छा गया, और फ़लाँ क़ौम अल्लाह की तरफ़ ऐसी छा गयी। ये आवाज़ें आयेंगी और ये आवाज़ें कानों में पड़ेंगी तो तुम्हारी और हमारी ख़ुशी के मारे रातों की नींद उड़ा देंगी। कि या अल्लाह! तूने हमें यह दिन दिखाया।

और जब हुज़ूरे पाक का ग़म होगा तो जहाँ बेदीनी के फैलने की ख़बर आयेगी तो वह हमें बेचैन कर देगी, और रातों को सोने नहीं देगी कि या अल्लाह! तेरा दीन इस तरह कैसे मिट गया?

अल्लाह के करने का ज़ाबता

तो इसके लिये मेरे भाई करने वाली ज़ात अल्लाह की है। और अल्लाह के करने का ज़ाबता (उसूल और नियम) नबियों वाली मेहनत है। और इसके साथ अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाने वाली दुआ़यें हैं। इस वक़्त हमें दुआ़ माँगनी है। इस काम के ऊपर न मालूम कितनी-कितनी आफ़तें पड़ती हैं और न मालूम कितनी परेशानियाँ हमारे इस दावत वाले काम पर आती रहती हैं। तो इसके लिये भी दुआ़यें माँगनी हैं कि ऐ अल्लाह! हम इस काम से निस्बत रखने वाले लोगों की ग़लतियों को तू माफ़ कर दे। और ऐ अल्लाह! इसके ऊपर जो आफ़तें आ रही हों, उनको तू दूर कर दे। और पूरे आ़लम में इस काम को फैला दे। आमीन।